

महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री परित्रासा



श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक

श्री ५ नवतनपुरीधाम

जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री परिक्रमा

श्री किताब इलाही दुलहिन अरस अजीमकी

इसक का प्रकरण

अब कहूं रे इसक की बात, इसक सबदातीत साख्यात ।

जो कदी आवे मिने सबद, तो चौदे तबक करे रद ॥ १

महामति कहते हैं, अब मैं दिव्य प्रेमकी बात करता हूँ. वह साक्षात् शब्दातीत है. यदि वह शब्दकी सीमामें आ जाए तो चौदह लोकोंको निरस्त कर देगा.

ब्रह्म इसक एक संग, सो तो बसत वतन अभंग ।

ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अति रंग ॥ २

ब्रह्म और प्रेम दोनों एक साथ हैं तथा दोनों अखण्ड परमधाममें रहते हैं. ब्रह्मसृष्टि और परब्रह्म भी अङ्ग-अङ्गीभावसे रहते हैं तथा सदा आनन्दके रङ्गमें रङ्गे हुए हैं.

एते दिन गए कै बक, सो तो अपनी बुध माफक ।

अब कथनी कथूं इसक, जाथें छूट जाए सब सक ॥ ३

आज तक अनेक साधकोंने अपनी बुद्धिके अनुसार ब्रह्मविषयक चर्चा की.

किन्तु अब मैं प्रेमके आधार पर इस विषयमें चर्चा करूँगा जिससे सभी शङ्काएँ दूर हो जाएँगी.

वोए वोए इसक न था एते दिन, कैयों ढूँढ्या गुन निरगुन ।

धिक धिक पडो सो तन, जो तन इसक बिन ॥ ४

इस जगतमें आज तक प्रेमकी सुगन्धी भी नहीं थी. इसीलिए अनेक साधकोंने यहाँ पर ब्रह्मको सगुण अथवा निर्गुणके रूपमें ढूँढनेका प्रयत्न किया. वस्तुतः वह जीवन (तन) निरर्थक (धिक्कार) है जिसमें लेशमात्र भी प्रेम न हो.

इसक नाही मिने सृष्टि सुपन, जो ढूँढ्या चौदे भवन ।

इसक धनिएं बताया, इसक बिना पिउ न पाया ॥ ५

मैंने भी चौदह लोकोंमें ढूँढ कर देखा परन्तु स्वप्नकी सृष्टिमें कहीं भी प्रेम प्राप्त नहीं हुआ. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने अवतरित होकर इस जगतमें प्रेमका मार्ग प्रशस्त किया है. वस्तुतः प्रेमके बिना प्रियतम परमात्माको पाया नहीं जा सकता.

इसक है तित सदा अखंड, नाही दुनियां बीच ब्रह्मांड ।

और इसक का नहीं निमूना, दूजा उपजे न होवे जूना ॥ ६

ब्रह्मधाममें तो यह प्रेम सदा सर्वदा अखण्ड स्वरूपमें विद्यमान है परन्तु ब्रह्माण्डके अन्तर्गत स्वप्नकी सृष्टिमें इसका नितान्त अभाव है. इसलिए इस जगतमें प्रेमका कोई उदाहरण नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह न कभी उत्पन्न होता है और न ही कभी पुराना होता है.

इसक है हमारी निसानी, बिना इसक दुलहा मैं रानी ।

इसक बिना मैं भई बिरानी, बिना इसक न सकी पेहेचानी ॥ ७

वस्तुतः यह प्रेम ही हमारी पहचानका लक्षण है. अपने प्रियतम धनीके प्रेमके बिना मैं (इन्द्रावती) तिरस्कृत (रद्द) हो गई हूँ. इतना ही नहीं प्रेमके बिना मैं परायी (बिरानी) हो गई हूँ. क्योंकि इसके बिना मैं अपने प्रियतम धनीको भी पहचान न सकी.

वृथा गए एते दिन, जो गए इसक बिन ।

मैं हुती पिया के चरन, मैं रहे ना सकी सरन ॥ ८

प्रेमके बिना इतने दिन व्यर्थ ही चले गए हैं। मैं अपने सद्गुरुके चरणोंमें ही थी तथापि उनकी छत्रछाया (शरण) को समझ न सकी।

क्यों रह्या जीव बिना जीवन, क्यों न आया हो मरन ।

अंग क्यों न लागी अगिन, याद आया न मूल वतन ॥ ९

आश्चर्य है कि प्राणस्वरूप सद्गुरुके बिना शरीरमें चेतना कैसे टिकी रही, मृत्यु क्यों सम्मुख नहीं आई, इन अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें विरहकी अग्नि क्यों प्रज्वलित नहीं हुई ? मुझे तो अखण्ड परमधामका स्मरण भी नहीं हुआ !

इसक जाने सृष्टि ब्रह्म, जाके नजीक न काहूं भ्रम ।

जब इसक रह्या भराए, तब धाम हिरदै चढ आए ॥ १०

वस्तुतः ब्रह्मात्माएँ ही प्रेमका रहस्य समझ सकती हैं, जिनके निकट किसी भी प्रकारका भ्रम (शङ्का) नहीं आ सकता। जब उनके हृदयमें प्रेम उभर आता है तब उसमें परमधाम भी अङ्कित हो जाता है।

इसक तो कह्या सबदातीत, जो पीउजीकी इसकसों प्रीत ।

देखी इसक की ऐसी रीत, बिना इसक नाही प्रतीत ॥ ११

इसीलिए इस प्रेमको शब्दातीत कहा है क्योंकि अपने प्रियतम धनीको इसीसे प्रीति है। वस्तुतः प्रेमकी रीति ही ऐसी है कि उसके बिना धामधनीके प्रति विश्वास उत्पन्न नहीं हो सकता है।

इसक नेहेचे मिलावे पीउ, बिना इसक न रहे याको जीउ ।

ब्रह्मसृष्टि की एही पेहेचान, आतम इसकै की गलतान ॥ १२

यह प्रेम निश्चय ही प्रियतम परमात्मासे मिलन करा देता है क्योंकि प्रेमका जीव प्रेमके बिना नहीं रह सकता। ब्रह्मसृष्टिकी यही पहचान है कि उनका हृदय सर्वदा प्रेममें ही तल्लीन रहता है।

इसक याही धनिएं बताया, इसक याही सृष्टे गाया ।

इसक याहीमें समाया, इसक याही सृष्टे चित ल्याया ॥ १३

सद्गुरु धनीने इस जगत्में प्रकट होकर प्रेमका यह रहस्य स्पष्ट किया और ब्रह्मसृष्टिने उसकी महिमाका गान किया। वस्तुतः यह प्रेम ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ही समाया हुआ है क्योंकि वे ही इसे अपने हृदयमें धारण कर सकती हैं।

इसक पियाको बतावे विलास, इसक ले चले पीउ के पास ।

इसक मिने दरसन, इसक होए न बिना सोहागिन ॥ १४

प्रेम ही प्रियतम परमात्माके आनन्द विलासका अनुभव करवाता है तथा वही उनके निकट भी पहुँचा सकता है। प्रेमसे ही प्रियतम परमात्माके दर्शन सम्भव है किन्तु यह प्रेम सुहागिनी ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त किसीके हृदयमें नहीं है।

इसक ब्रह्म सृष्टि जाने, ब्रह्म सृष्टि एही बात माने ।

खास रूहों का एही खान, इन अरवाहों का एही पान ॥ १५

ब्रह्मात्माएँ प्रेमके रहस्यको जान सकती हैं और वे ही प्रेमकी बात भी मानती हैं। इन विशिष्ट आत्माओंका आहार भी प्रेम ही है और वे प्रेमका ही पान (रसास्वादन) करती हैं।

पिया इसक रस, ब्रह्म सृष्टि को अरस परस ।

काहूँ और न इसक खोज, औरों जाए न उठाया बोझ ॥ १६

प्रियतम परमात्मा प्रेम रसके रसिक हैं। ब्रह्मसृष्टि भी उसी प्रेममें ओत-प्रोत हैं। इसीलिए संसारके अन्य जीवोंसे प्रेमकी खोज नहीं हो सकती क्योंकि ब्रह्मसृष्टिके अतिरिक्त अन्य कोई भी इसे शिरोधार्य करनेमें समर्थ नहीं हो सकता है।

बात इसक की है अति घन, पर पावे सोई सोहागिन ।

ब्रह्म सृष्टि बिना न पावे, सनमंध बिना इसक न आवे ॥ १७

प्रेमका रहस्य अति गहन है किन्तु ब्रह्मात्माएँ उसे आत्मसात् कर सकती हैं। ब्रह्मसृष्टिके अतिरिक्त इसे कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता और धामधनीके सम्बन्धके बिना यह प्रकट भी नहीं हो सकता है।

धनीजी को इसक भावे, बिना इसक न कछू सोहावे ।

यों न कहियो कोई जन, धनी पाया इसक बिन ॥ १८

धामधनीको प्रेम ही प्रिय है. प्रेमके अतिरिक्त उन्हें कुछ भी ग्राह्य नहीं है. इसलिए कोई भी ऐसा न कहें कि प्रेमके बिना धामधनीको पाया जा सकता है.

इसक बसे पिया के अंग, इसक रहे पिउ के संग ।

प्रेम बसत पिया के चित, इसक अखंड हमेसा नित ॥ १९

यह प्रेम प्रियतम धनीके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें बसा हुआ है और सदा सर्वदा उनके साथ ही रहता है. वस्तुतः धामधनीके हृदयमें ही यह रहता है, इसीलिए इसे अखण्ड कहा गया है.

इसक बतावे पार के पार, इसक नेहेचल घर दातार ।

इसक होए न नया पुराना, नई ठौर न आवत आना ॥ २०

यह प्रेम क्षर तथा अक्षरसे परेका मार्ग बताकर अखण्ड परमधामका अनुभव करवाता है. इसलिए यह न कभी नया होता है और न ही कभी पुराना. परमधामके अतिरिक्त न इसका कोई स्थान है और न ही यह अन्य कहींसे आता है.

इसक साहेब सों नहीं अंतर, जो अरस परस भीतर ।

ए सुगम है सोहागिन, जाको अंकूर याही वतन ॥ २१

प्रेम और ब्रह्म इन दोनोंमें कोई अन्तर नहीं है, दोनों परस्पर ओत-प्रोत हैं. सुहागिनी ब्रह्मात्माओंके लिए यह प्रेम इसलिए सुगम है कि इनका सम्बन्ध ही अखण्ड परमधामसे है.

ए औरों नाही द्रष्ट, औरों छूटे न मोह अहंभृष्ट ।

याको जाने ब्रह्म सृष्टि, जाको एही है इष्ट ॥ २२

स्वप्नवत् जगतके अन्य जीवोंकी दृष्टिमें यह नहीं आता क्योंकि उनसे मोह और अहङ्कार छूट नहीं सकते. इसलिए ब्रह्मसृष्टि ही प्रेमका रहस्य समझ सकती हैं और उनको ही यह इष्ट (प्रिय) भी है.

इसक की बात बड़ी रोसन, जासों सुख लेसी चौदे भवन ।

सो भी सुख नेहेचल, इसक द्रष्टें न रहे जरा मैल ॥ २३

अब तो स्वप्नवत् जगतमें भी प्रेमकी बातें इतनी प्रकाशित हो गई हैं कि जिनसे चौदह लोकोंके प्राणी भी सुख प्राप्त कर सकेंगे. वह सुख भी शाश्वत है क्योंकि प्रेमके समक्ष लेश मात्र भी कलुषता (मलिनता) नहीं रह सकती.

इसक राखे नहीं संसार, इसक अखंड घर दातार ।

इसक खोल देवे सब द्वार, पार के पार जो पार ॥ २४

यह प्रेम संसारका अस्तित्व नगण्य कर अखण्ड परमधामका अनुभव करवाता है तथा क्षर, अक्षर एवं उससे परे अक्षरातीत परमधामके सभी द्वारोंको भी खोल देता है.

इसक घाए करे टूक टूक, अंग होए जाए सब भूक ।

लोहू मांस गया सब सूक, चित चल न सके कहूं चूक ॥ २५

प्रेमकी चोट विरहिणीके शरीरको टुकड़े-टुकड़े कर देती है, जिससे उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग चूर्ण हो जाते हैं तथा रक्त एवं मांस भी सूख जाते हैं. ऐसे प्रेमियोंका चित्त अपने धनीके अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी भ्रमित नहीं हो सकता है.

इसक आगूं न आवे माया, इसके पंड ब्रह्मांड उडाय ।

इसके अस वतन बताया, इसके सुख पेड का पाया ॥ २६

प्रेमके समक्ष माया टिक नहीं सकती. यह तो पिण्ड और ब्रह्माण्डके अस्तित्वको भी नहींवत् (नगण्य) कर देता है. प्रेमने ही अखण्ड परमधामका मार्ग प्रशस्त किया है, जिसके कारण ब्रह्मात्माओंको मूलका सुख प्राप्त हुआ है.

कोई नहीं इसक की जोड, ना कोई बांधे इसक सों होड ।

इसक सुध कोई न जाने, दुनी ख्वाब की कहा बखाने ॥ २७

प्रेमकी तुलना किसी भी वस्तुसे नहीं की जा सकती और न ही कोई वस्तु इसकी प्रतियोगी हो सकती है. स्वप्नवत् जगतके जीवोंको प्रेमकी सुधि ही नहीं है इसीलिए वे इसके महत्त्वका वर्णन नहीं कर सकते हैं.

इसक आवे धनी का चाह्या, इसक पियाजी ने सिखाया ।

पिया इसक सरूप बताया, इसके पिंड ही को पलटाया ॥ २८

धामधनीकी इच्छानुसार ही प्रेम प्रकट होता है और उन्होंने ही हमें इसका अनुभव भी करवाया है. धामधनीको प्रेमका ही स्वरूप कहा गया है. उनका प्रेम हृदयमें आते ही शरीरकी स्थिति बदल जाती है.

इसक सोभा बडी है अत, इसक द्रष्टे न पाइए असत ।

जो कदी पेड होवे असत, इसक ताको भी करे सत ॥ २९

प्रेमकी शोभा अपरम्पार है. उसके समक्ष कोई भी असत्य वस्तु टिक नहीं सकती. यदि कोई जीव मूलतः इसी अनित्य जगतसे उत्पन्न हुआ हो तो उसको भी यह प्रेम अखण्ड कर देता है.

इसक की सोभा कहूं मैं केती, ए भी याही जुबां कहे एती ।

याको जाने सृष्टि ब्रह्म, जाको इसकै करम धरम ॥ ३०

इस प्रकार मैं प्रेमकी शोभाका वर्णन कहाँ तक करूँ ? श्रीराजजीकी कृपासे ही इस नश्वर जिह्वाके द्वारा इतना भी सम्भव हुआ है. वस्तुतः ब्रह्मात्माएँ ही प्रेमके रहस्यको समझ सकती हैं क्योंकि उनका कर्म एवं धर्म ही प्रेम है.

इसक है याको आहार, और इसकै याको बेहेबार ।

इसक है याकी द्रष्ट, ए इसकै की है सृष्टि ॥ ३१

ब्रह्मात्माओंका आहार ही प्रेम है और उनका व्यवहार भी प्रेममय होता है. उनकी दृष्टिमें भी प्रेम ही रहता है क्योंकि वे प्रेमकी ही सृष्टि हैं.

ए तो प्रेम के हैं पात्र, याके प्रेम है दिन रात्र ।

याके प्रेम के अंकूर, याके प्रेम अंग निज नूर ॥ ३२

ब्रह्मात्माएँ सर्वदा प्रेमके पात्र हैं. इसलिए वे दिन-रात प्रेम करती हैं. इनका सम्बन्ध भी प्रेमसे ही है और इनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें प्रेमका ही प्रकाश समाया हुआ है.

याके प्रेम के भूषण, याके प्रेम के हैं तन ।

याके प्रेम के वस्तर, ए बसत प्रेम के घर ॥ ३३

इनका भूषण भी प्रेम है, इनका शरीर भी प्रेममय है, इनके वस्त्र भी प्रेमके

हैं और ये सदा सर्वदा प्रेममय परमधाममें ही रहती हैं।

याके प्रेमै श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान ।

याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होए प्रेम भूल ॥ ३४

इसलिए ये प्रेमका ही श्रवण करती हैं, इनके मुखसे भी प्रेमकी ही वाणी निकलती है। ये सर्वदा प्रेमका ही गायन करती हुई प्रेमसे ही सेवा करती हैं। इनका ज्ञान भी मूलरूपसे प्रेम ही है। इसलिए प्रेममार्ग पर चलते हुए इनसे कोई भी भूल नहीं होती है।

याको प्रेमै सेहेज सुभाव, ए प्रेमै के देखे दाव ।

बिना प्रेम न कछुए पाइए, याके सब अंग प्रेम सोहाइए ॥ ३५

ब्रह्मात्माओंका सहज स्वभाव ही प्रेम है, इसलिए ये सर्वदा प्रेमका ही सुअवसर देखती हैं। वस्तुतः प्रेमके बिना कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। ब्रह्मात्माओंके अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रेमसे ही सुशोभित हैं।

याकी गत भांत सब प्रेम, याके प्रेमै कुसल खेम ।

याके प्रेम इंद्री अंग गुन, बुध प्रकृति नहीं प्रेम बिन ॥ ३६

इनकी गति तथा रीति प्रेममयी है। इनका कुशलक्षेम भी प्रेममय है। इनके गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ, बुद्धि तथा प्रकृति (स्वभाव) में भी प्रेमके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है।

याको प्रेमै को विस्तार, याको प्रेमै को आचार ।

याके प्रेमै के तेज जोत, याके प्रेमै अंग उदोत ॥ ३७

इनके आचार-विचारमें भी प्रेमका ही विस्तार है। इनका जीवन ही प्रेमके तेजपुञ्जसे ओत-प्रोत है तथा इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रेमसे ही प्रकाशित हैं।

याको प्रेमै है रस रंग, याको प्रेम सबों में अभंग ।

याको प्रेम सनेह सुख साज, याको प्रेम खेलन संग राज ॥ ३८

ये प्रेमरसमें ही रङ्गी हुई होती हैं, इन सभीमें प्रेम ही अभिन्नरूपसे विद्यमान है। इनका स्नेह, सुख तथा शृङ्गार भी प्रेममय है तथा ये श्रीराजजीके साथमें भी प्रेममयी लीलाएँ करती हैं।

याके प्रेम सेज्या सिनगार, जाको वार न पाइए पार ।

प्रेम अरस परस स्यामा स्याम, सैयां वतन धनी धाम ॥ ३९

इनकी शय्या तथा शृङ्गार भी प्रेममय है, इनकी शोभाका कोई पारावार ही नहीं है। ये सभी श्यामाश्यामके प्रेमसे ओत-प्रोत हैं तथा इनका घर भी धामधनीका परमधाम ही है।

प्रेम पियाजीके आउध, प्रेम स्यामाजी के अंग सुध ।

ब्रह्म सृष्टि की एही विध, ए दूजे काहूं ना दिध ॥ ४०

अपने प्रियतम धनीको प्राप्त करनेका शस्त्र भी प्रेम ही है, इतना ही नहीं श्रीश्यामाजीके स्वरूपकी सुधि भी प्रेमसे ही होती है। ब्रह्मसृष्टिको ही यह प्रेम प्राप्त हुआ है, उनके अतिरिक्त अन्य किसीको भी यह प्राप्त नहीं हुआ है।

प्रेम सेन्या है अति बडी, जब मूल आउध ले चढी ।

सो रहे न काहूं की पकडी, यासों सके न कोई लडी ॥ ४१

प्रेमकी सेना अति विशाल है। जब यह अपने मूल शस्त्रोंसे सुसज्जित होकर आगे बढ़ती है तो किसीके द्वारा भी रोकी नहीं जा सकती तथा इसके साथ कोई लड़ भी नहीं सकता है।

प्रेम आप पर कोई ना लेखे, बिना धनी काहूं न देखे ।

प्रेम राखे धनी को संग, अपनो भी न देखे अंग ॥ ४२

प्रेमी आत्मा स्व और पर (अपने और पराय) की भावना नहीं रखती। धामधनीके अतिरिक्त उसकी दृष्टिमें अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता है। प्रेमी आत्मा धामधनीको सर्वदा अपने साथ रखती है। उसे अपने शरीरकी भी सुधि नहीं होती है।

और सबन सों चित भंग, एक पिआजी सों रस रंग ।

प्रेम पियाजी के अंग भावे, पिया बिना आपको भी उडावे ॥ ४३

प्रेमी आत्मा सभी भौतिक वस्तुओंसे अपने चित्तको हटा लेती है और एक प्रियतम धनीके प्रेम रङ्गमें ही रङ्गी रहती है। उसको प्रियतम धनीका स्वरूप

ही अच्छा लगता है. इसलिए वह धामधनीके बिना अपने शरीरके अस्तित्वको ही मिटा देती है.

जो कोई पीउ के अंग प्यारा, ताको प्रेम निमख न करे न्यारा ।

प्रेम पिया को भावे सो करे, पिया के दिल की दिल धरे ॥ ४४

जिन आत्माओंको प्रियतम धनीका स्वरूप प्रिय लगता है उनको यह प्रेम कभी भी धामधनीसे दूर होने नहीं देता. प्रेमी आत्माएँ प्रियतम धनीकी इच्छानुकूल कार्य करती हैं तथा प्रियतम धनीके हृदयकी बातें अपने हृदयमें धारण करती हैं.

प्रेम आतम दृष्टि न छोडे, प्रेम बाहेर द्रष्टि न जोडे ।

प्रेम पिया के चितसों चित न मोडे, प्रेम और सबन सों तोडे ॥ ४५

प्रेमी आत्माएँ आत्म-दृष्टिको भी नहीं छोड़ती तथा बाह्य-दृष्टि भी नहीं रखती. ऐसी आत्माएँ अपने चित्तको प्रियतम धनीसे नहीं हटा सकती, भला वे अन्य सभीसे सम्बन्ध तोड़ लेती हों.

पिया के दिल की दिल लेवे, रैन दिन पिया दिल सेवे ।

पिया के दिल बिना सब जेहेर, औरोंसों होए गयो सब बैर ॥ ४६

वे तो अपने प्रियतम धनीके हृदयकी बात ही अपने हृदयमें धारण करती हैं तथा दिन-रात हृदयपूर्वक प्रियतम धनीकी सेवा करती हैं. उनके लिए प्रियतम धनीके हृदयके प्रेमके अतिरिक्त अन्य सब कुछ विषतुल्य है, मानों सभीके साथ उनकी शत्रुता हो गई हो.

पिया के दिल की सब जाने, पियाजी को दिल पेहेचाने ।

अंग पीउजी के दिल आने, पिउ बिना आग जैसी कर माने ॥ ४७

ऐसी आत्माएँ धामधनीके हृदयकी सभी बातें जान सकती हैं तथा अपने हृदयसे स्वयं धामधनीको भी पहचान सकती हैं. वे तो प्रियतम धनीके स्वरूपको अपने हृदयमें धारण करती हैं तथा उनके बिना अन्य सभी वस्तुको अग्निके समान दाहक समझती हैं.

प्रेम अंदर ऐसी भई, नींद माहें की उड कहूं गई ।

गुन अंग इंद्री पख, पिया प्रेमें हुए सब लख ॥ ४८

प्रेमके कारण इन आत्माओंकी स्थिति ही ऐसी हो गई कि इनके हृदयसे अज्ञानतारूपी नींद ही उड़ गई. जिसके कारण इनके गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि भी प्रियतम धनीके प्रेमका अनुभव करने लगे.

सब देखें पिया दिल सामी, दिल देखें अंतरजामी ।

पीउ के दिल की पेहेलें आवें, पिया मुख थें केहेने न पावें ॥ ४९

सभी आत्माएँ अपने प्रियतम धनीको अपने हृदयके सम्मुख देखती हैं. अन्तर्यामी धामधनी भी इनके हृदयका भाव परख लेते हैं. ऐसी आत्माएँ प्रियतम धनीके हृदयकी बातें पहले ही समझ लेती हैं जिससे उनको अपने मुखसे कुछ कहनेकी आवश्यकता ही नहीं होती है.

आतम एक हुई निसंक, ना रही जुदागी रंचक ।

प्रेम दिल भर हुई दिल, पिया प्रेमें रहे हिलमिल ॥ ५०

जब प्रेमका उदय होता है तब निश्चय ही आत्मा और परमात्मा एक हो जाते हैं, क्षण मात्र भी उनका वियोग नहीं होता है. ऐसी आत्माओंके हृदयमें प्रेमका प्रवाह उमड़ने पर वे प्रियतम धनीके प्रेममें एकरस हो जाती हैं.

प्रेम आप न देखे कित, द्रष्ट पियाई देखे जित ।

निज नजर प्रेम खोलत, जाग धाम देखावे सरबत्र ॥ ५१

प्रेमी आत्माएँ कहीं भी स्वयंको प्रियतम धनीसे भिन्न नहीं समझती. उनकी दृष्टिमें सर्वत्र प्रियतम परमात्मा ही दिखाई देते हैं क्योंकि धामधनीका प्रेम ही उनकी आत्म-दृष्टिको खोल देता है. जिससे वे जागृत होकर सर्वत्र धामधनीको ही देखती रहती हैं.

पिया प्रेमै सों पेहेचान, प्रेम धाम के देवे निसान ।

प्रेम ऐसी भांत सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे ॥ ५२

प्रेमके द्वारा ही प्रियतम धनीकी पहचान होती है. प्रेमसे ही परमधामके सभी सङ्केत प्राप्त होते हैं. यह प्रेम हमारे जीवनकी स्थितिको इस प्रकार सुधार देता

है कि स्वप्नवत् जगतमें बैठे हुए ही हमें पारका अनुभव हो जाता है।

पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक ।

जब आतम प्रेमसों लागी, द्रष्ट अंतर तबहीं जागी ॥ ५३

करोड़ों कल्पोंका मार्ग क्यों न हो, प्रेम उसे क्षण मात्रमें पार करवा देता है।
जैसे ही आत्मा प्रेमरङ्गमें रङ्ग जाती है उसी समय उसकी अन्तर्दृष्टि खुल जाती है।

जब आया प्रेम सोहागी, तब मोह जल लेहेरां भागी ।

जब उठे प्रेम के तरंग, ले करी स्याम के संग ॥ ५४

जब सुहागिनी आत्माओंको प्रियतमका प्रेम प्राप्त होता है तब उनके लिए भवसागरकी लहरें छिन्न-भिन्न हो जाती हैं। जैसे ही उनके हृदयमें प्रेमकी तरङ्गें उठने लगती हैं वैसे ही वे अपने प्रियतम श्यामसुन्दरके समीप पहुँच जाती हैं।

पेहेचान हुती न एते दिन, प्रेम नाहीं पिया सों भिन ।

पिया प्रेम पेहेचान जो एक, भेली होसी सबों में विवेक ॥ ५५

आज तक हमें यह ज्ञात नहीं था कि यह प्रेम प्रियतम धनीसे भिन्न नहीं है। जो व्यक्ति प्रियतम धनी एवं प्रेमको एकरूपमें पहचानते हैं उनमें ही विवेक जागृत हुआ है ऐसा माना जाता है।

जब चढे प्रेम के रस, तब हुए धामधनी वस ।

जब उपजे प्रेम के तरंग, तब हुआ धामधनीसों संग ॥ ५६

जब प्रेमरस हृदयमें उमड़ने लगेगा तभी धामधनी वशीभूत होंगे। जब हृदयमें प्रेमकी तरङ्गें उठने लगेंगी तभी धामधनीसे मिलन होगा।

प्रेम नजरों जो कछू आया, ताको इतहीं अखंड पोहोंचाया ।

प्रेम है बडो विस्तार, भव जल हुतो जो खार ॥ ५७

जिन आत्माओं पर धामधनीकी प्रेममयी दृष्टि पड़ती है, वे इस नश्वर जगतमें होते हुए भी अखण्ड परमधामका अनुभव करती हैं। प्रेमका विस्तार ही इतना

विशाल है कि वह इस भवसागरके क्षारको भी मधुर बना देता है।

सो मेट किया सुधा रस, सुख अखंड धनी को परस ।

प्रेमें गम अगम की करी, सो सुध वैराट में विस्तरी ॥ ५८

प्रेमने ही भवसागरके क्षारको दूरकर इसे अमृततुल्य बनाया है। इसके कारण यहीं पर धामधनीके अखण्ड सुखका अनुभव होने लगा। इसी प्रेमने अगम्य परमात्माकी गम बताई और सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें इस ज्ञान (सुधि) का विस्तार हुआ।

प्रेमें करी अलख की लख, त्रैलोकी की खोली चख ।

तब छूट्या सबों से अभख, सब हुए स्याम सनमुख ॥ ५९

प्रेमने अलक्ष्य (अलख) परमात्माकी पहचान करवाई और तीनों लोकोंके प्राणियोंकी आत्म-दृष्टि खोल दी। तब उन सभीसे विषय विकार छूट गए और वे सभी श्याम सुन्दरके सम्मुख हो गए।

जब प्रेम सबों अंग पिया, अपना अनुभव कर लिया ।

तब वार फेर जीव दिया, अब न्यारे न जीवन जिया ॥ ६०

जिसने अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गसे प्रेमका पान किया है, उसीने अखण्ड आनन्दका भी अनुभव कर लिया है। तब उसने अपना जीवन ही प्रियतम परमात्माको समर्पित कर दिया क्योंकि उसके बिना अब वह जीवित ही नहीं रह सकेगा।

मूल अंग आया इसक, दूजा देखे ना बिना हक ।

जब छूटे प्रेम के पूर, प्रगट्या निज वतनी सूर ॥ ६१

जब हृदयमें प्रेम उभर आएगा तब परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देगा। जब हृदयमें प्रेमका प्रवाह प्रवाहित होने लगेगा तब अखण्ड धामके ज्ञानरूपी सूर्य (तारतम ज्ञान) का प्रकाश प्रकाशित हो जाएगा।

जब प्रेम हुआ झकझोल, तब अंतर पट दिए खोल ।

जब चढे प्रेम के पुंज, निज नजरोँ आया निकुंज ॥ ६२

जब प्रेममें तल्लीनता बढ़ने लगेगी तब अन्तर्दृष्टि खुल जाएगी. जब प्रेमकी तरङ्ग बढ़ने लगेगी तब परमधामके कुञ्ज-निकुञ्ज वन दृष्टिगोचर होने लगेंगे.

जब प्रेम हुआ प्रघल, अंग आया धाम का बल ।

तुम यों जिन जानो कोए, बिना सोहागिन प्रेम न होए ॥ ६३

जब प्रेमका प्रवाह सागरकी लहरोंकी भाँति बढ़ने लगा तब परमधामकी शक्तिका अनुभव होने लगा. आप इसे सामान्य घटना न समझें क्योंकि सुहागिनी आत्माओंके अतिरिक्त अन्य किसीके भी हृदयमें यह प्रेम प्रकट नहीं होता है.

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार ।

प्रेम धाम धनी को विचार, प्रेम सब अंगों सिरदार ॥ ६४

प्रेम क्षर, अक्षर और अक्षरातीतके सभी द्वारोंको खोल देता है. प्रेमके कारण ही धामधनीके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है. इसलिए प्रेमको ही परमात्माका सर्वश्रेष्ठ अङ्ग माना गया है.

इसकै में पोहोँचाया, इसकै धाम में ले बैठाया ।

इसकै अंतर आखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई ॥ ६५

धामधनीकी कृपासे ही यह प्रेम प्राप्त हुआ है और इसीने हमें परमधाममें बैठे हुए अनुभव करवाया है. इसने ही हमारी अन्तर्दृष्टि खोल दी तथा धामधनी एवं ब्रह्मात्माओंके दिव्य मिलनके दर्शन करवाए.

कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान ।

ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए ॥ ६६

महामति कहते हैं, तुम अन्य किसी भी वस्तुको प्रेमके समान नहीं समझना. जो आत्माएँ हृदयमें प्रेम धारण कर परमधाममें जागृत होंगी उनको ही धामधनी सर्वप्रथम हृदयसे लगाएँगे.

प्रकरण १ चौपाई ६६

मंगलाचरण धामको वरनन

राग-धन्यासरी

ब्रह्म सृष्टि लीजियो, हां रे सैया ए है अपना जीवन ।

सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्म सृष्टि लीजियो ॥ (टेक) ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! मेरी बात सुनो, मूल घर परमधाम ही अपना जीवन है। इसीको अपने हृदयमें धारण करो.

सास्त्र सबद मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सबदातीत ।

ताको भी कलस हुआ अखंड को, तापर धजा धरुं तिनथें रहित ॥ २

इस संसारमें जितने धर्मशास्त्र एवं सन्त-महापुरुषोंकी वाणी हैं उनमें यह तारतम ज्ञान (वाणी) कलशके समान होनेसे शब्दातीत कहलाता है. इसमें भी परमधामका वर्णन तो कलशके ऊपर चढ़ाए हुए दूसरे कलशके समान है. उसके ऊपर अब मैं प्रेमका ध्वज प्रतिष्ठित कर रहा हूँ.

मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो बचन ।

आदि करके अबलों, सखी कबहूँ न खोले किन ॥ ३

हे ब्रह्मात्माओ ! आज तक वेद तथा कतेब ग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं हुए हैं. आरम्भसे लेकर अभी तक कोई भी इन रहस्योंको स्पष्ट नहीं कर पाया.

सुपन बुध वैकुण्ठ लों, या निरंजन निराकार ।

सो क्यों सुनको उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार ॥ ४

इस जगतके जीवोंमें विद्यमान स्वप्नकी बुद्धि वैकुण्ठ, शून्य निराकार तथा निरञ्जन तक ही पहुँच सकती है. इसलिए हे आत्माओ ! इस बुद्धिके द्वारा शून्यको लाँघकर पार जाया नहीं जा सकता है.

सुपन बुध अटकलसों, वेद कतेब खोजे जिन ।

मगज न पाया माहें का, बांधे माएने बारे तिन ॥ ५

जिन लोगोंने स्वप्नकी बुद्धिके द्वारा वेद और कतेबके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट

करनेका प्रयत्न किया, वे मात्र अनुमान करनेके कारण उन रहस्योंको स्पष्ट नहीं कर सके और शब्दोंकी बारह मात्राओंमें ही सीमित (बँधे) रह गए.

साधु बोले इन जुबां, गावे सबदातीत बेहद ।

पर कहा करे बुध मोह की, आगे ना चले सबद ॥ ६

अनेक साधु जनोंने अपनी नश्वर जिह्वासे शब्दातीत अखण्ड भूमिकाका वर्णन करनेका प्रयत्न किया परन्तु उनकी बुद्धि मोहजगतकी होनेके कारण उनके शब्द क्षर जगतसे पारका वर्णन नहीं कर सके.

पांच तत्त्व मोह अहंकार, चौदे लोक त्रैगुन ।

ए सुंन द्वैत जो ले खडी, निराकार निरंजन ॥ ७

पाँच तत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) तथा तीन गुणसे बने हुए मोह, अहङ्कारयुक्त इन चौदह लोकोंको धारणकर यह शून्यरूपी द्वैत निराकार और निरञ्जनके रूपमें अवस्थित है.

प्रकृति महाप्रलै होवहीं, सब तत्त्व गुन निरगुन ।

द्वैत उडे कछू ना रहे, निराकार निरंजन सुन ॥ ८

जब प्रकृतिका प्रलय अथवा महाप्रलय होता है तब सभी (पाँचों) तत्त्वों सहित सगुण तथा निर्गुण आदिके साथ-साथ यह सम्पूर्ण द्वैत निराकार, निरञ्जन, शून्य आदिका लय हो जाता है.

बानी जो अद्वैत की, सो कहावे सबदातीत ।

सो जागृत बुध अद्वैत बिना, क्यों सुध पावे द्वैत ॥ ९

इन सबसे परे (अखण्ड भूमि) का वर्णन करनेवाली अद्वैत वाणी शब्दातीत कहलाती है. अतः जागृत बुद्धिके बिना यह द्वैतकी बुद्धि कैसे अद्वैत तत्त्वको जान सकती है ?

पैगंमर या तीथंकर, कै हुए अवतार ।

किन बोध न मेट्यो विस्व को, किए नहीं निरविकार ॥ १०

इस जगतमें अनेक पैगम्बर, तीर्थङ्कर तथा अवतार प्रकट हुए हैं किन्तु उन्होंने

भी जगतमें प्रचलित ब्रह्म विषयक भ्रान्तिको मिटाकर किसीको भी निर्विकार नहीं बनाया।

एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन ।

सो बुधजी बुध जागृत ले, प्रगटे पुरी नौतन ॥ ११

आज तक तीनों लोकोंमें स्वप्नकी बुद्धि कार्य कर रही थी। ऐसे समयमें बुद्धावतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तारतम ज्ञानरूपी जागृत बुद्धि लेकर श्री ५ नवतनपुरीधाम-जामनगरमें प्रकट हुए।

अब सो साहेब आइया, सब सृष्टि करी निरमल ।

मोह अहंकार उडाए के, सखी देसी सुख नेहेचल ॥ १२

अब तो ऐसे ब्रह्मस्वरूप बुद्धजी प्रकट हुए हैं जो सभी सृष्टिको निर्मल (शङ्कारहित) कर मोह एवं अहङ्कारको उड़ा देंगे तथा सभीको अखण्ड सुख प्रदान करेंगे।

सो मगज माएने हुकमें, खोले हम सैयन ।

सो कलाम जो हक के, सुख होसी उमत सबन ॥ १३

उनके ही आदेशसे मैंने ब्रह्मात्माओंके समक्ष सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट किए हैं। अब इसी ब्रह्मवाणीके माध्यमसे सभी ब्रह्मात्माएँ अखण्ड सुखका अनुभव करेंगी।

रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम ।

खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृष्टि ब्रह्म ॥ १४

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने मुझे प्रकाशमय कुञ्जीके समान तारतम ज्ञान प्रदान कर इस प्रकार आदेश दिया, 'अब तुम पारके द्वार खोलकर ब्रह्मात्माओंको परमधाममें बुला ले आओ.'

ब्रह्म सृष्टि जाहेर करूं, करसी लीला रोसन ।

अखंड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन ॥ १५

सद्गुरुके आदेशसे अब मैं उन ब्रह्मात्माओंको प्रकट करता हूँ जो परमधामकी

लीलाओंको प्रकाशित करेंगी. क्योंकि अखण्ड परमधामके धनीने स्वयं सद्गुरुके रूपमें यहाँ पर अवतरित होकर परमधामकी पहचान करवाई है.

तीन ब्रह्मांड जो अब रचे, ब्रह्म सृष्टि कारन ।

आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन ॥ १६

धामधनीने ब्रह्मात्माओंके लिए ब्रज, रास एवं जागनी इन तीन ब्रह्माण्डोंकी रचना करवाई एवं स्वयं भी इस जगतमें अवतरित होकर ब्रह्मात्माओंके मनोरथ पूर्ण किए.

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक ।

सो बरकत ब्रह्म सृष्टि की, पावे दीदार सब हक ॥ १७

अब चौदह लोकोंके सभी जीवोंको अखण्ड सुख प्राप्त होगा. ब्रह्मसृष्टिके प्रतापसे सभी जीवोंको परब्रह्म परमात्माके दर्शन होंगे.

ख्वाब की अकल छोड के, कहूं अरस के कलाम ।

हक बका जाहेर करूं, अखण्ड सुख जे ठाम ॥ १८

मैं स्वप्नकी बुद्धिको छोड़कर जागृत बुद्धिके द्वारा अखण्ड परमधाम तथा वहाँके अनन्त सुखोंका वर्णन करता हूँ.

दुनी द्वैत जुबां छोड के, कहूं जुबां अकल और ।

कलाम कहूं अरस अजीम के, महामत बैठे इन ठौर ॥ १९

भौतिक जिह्वा द्वारा होनेवाले वर्णनको छोड़कर अद्वैतकी बुद्धि एवं अद्वैतकी जिह्वासे महामति इसी द्वैतमयी भूमिमें बैठकर अखण्ड परमधामकी बात कर रहे हैं.

ला मकान सुंन निरगुन, छोड फना निरंजन ।

क्षर अक्षर को छोड के, ए ताको मंगलाचरन ॥ २०

क्षर जगत-शून्य, निराकार, निर्गुण, निरञ्जन आदि नश्वरताको छोड़कर क्षर, अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामका यह मङ्गलाचरण है.

मंगलाचरन तमाम

प्रकरण २ चौपाई ८६

और ढाल चली

अब आओ रे इसक भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम ।

करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम ॥ १

महामति कहते हैं, हे प्रेम ! अब तुम मेरे पास आ जाओ जिससे मैं अपनी उत्कण्ठा पूर्ण कर लूँ एवं अपने मूलघर परमधामके दर्शन कर लूँ. साथ ही धामधनीके चरण शरणका आश्रय लेकर उनके साथ प्रेमपूर्वक विलास कर लूँ.

अब बानी अद्वैत मैं गाऊं, निज स्वरूप की नींद उडाऊं ।

सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अक्षर को भी उठाऊं ॥ २

अब मैं अद्वैतकी वाणीका गायन कर ब्रह्मात्माओं (निजस्वरूप) की नींदको उड़ा देता हूँ एवं सभी ब्रह्मात्माओंको एक साथ जागृत कर पश्चात् अक्षर ब्रह्मको भी जागृत कर देता हूँ.

जब प्रलै प्रकृति होई, ना रहे अद्वैत बिना कोई ।

एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित ॥ ३

जब प्रकृतिका प्रलय होता है तब अद्वैत भूमिके अतिरिक्त अन्य सभीका लय होता है. एक अद्वैत भूमि (परमधाम) ही सदा सर्वदा विद्यमान है जहाँ पर परब्रह्म परमात्मा अपनी अङ्गनाओंके साथ नित्य लीलाएँ करते हैं.

अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं ।

अब ऐसी छाक छाकाऊं, अंग असलू इसक बढाऊं ॥ ४

मेरी इच्छा है कि अब मैं इसी अद्वैत भूमिका वर्णन कर सभी ब्रह्मात्माओंको अखण्ड प्रेमका रसास्वादन कराऊँ. उन्हें इस प्रकार प्रेममें मग्न कर दूँ कि उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दिव्य प्रेमकी अभिवृद्धि होती रहे.

धनी धाम देखन की खांत, सो तो चूभ रही मेरे चित ।

किन विध वन मोहोल मंदर, देखों धनीजी की लीला अंदर ॥ ५

धामधनीके साक्षात्कारकी भावना ही मेरे हृदयमें चुभ रही है. मेरी इच्छा है कि परमधामके वन, उपवन, भवन, मन्दिर तथा वहाँ पर होनेवाली

धामधनीकी लीलाका प्रत्यक्ष अनुभव करूँ.

विलास स्वरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत ।

जल जिमी पसू पंखी थिर चर, सब ठौर और अक्षर ॥ ६

परमधाममें धामधनीके आनन्द विलासका अनुभव किए बिना मुझे कैसे शान्ति होगी ? वहाँकी दिव्य भूमिका, जल, पशु, पक्षी, स्थिर-चर तथा अक्षरब्रह्मके लीलास्थलका भी मैं अनुभव कर लूँ.

सब सोभा देखों निज नजर, अपना वतन निज घर ।

धनी केहे केहे चित चढाई, पर नैनो अजू न देखाई ॥ ७

मेरी इच्छा है कि मैं परमधामकी इन सभी शोभाओंको अपनी आँखोंसे देख लूँ. सद्गुरु धनीने इनका वर्णन करते हुए मेरे मनमें चाहना पैदा कर दी परन्तु अभी तक इनके प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हुए है.

तुम दई जो पिया मोहे निध, सो तो संगियों को कही सब विध ।

और हिरदें जो मोहे चढाई, सो भी देऊं इनो को द्रढाई ॥ ८

हे सद्गुरु धनी ! आपने मुझे परमधामकी जो अखण्ड सम्पदा प्रदान की है वह तो मैंने सभी ब्रह्मात्माओंको समझा दी किन्तु आपने मेरे हृदयमें परमधामको जिस प्रकार अङ्कित कर दिया है वह भी मैं उनके हृदयमें दृढ़ करना चाहता हूँ.

अब सुनियो साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनो देख देखाऊं ।

जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए ॥ ९

हे सुन्दरसाथजी ! आप सुनिए, मैं परमधामका वर्णन सुनाता हूँ. उसका प्रत्यक्ष अनुभव करनेके पश्चात् मैं आपको भी प्रत्यक्ष दिखाऊँगा. रङ्गभवनके सम्मुख रत्नोंकी भाँति देदीप्यमान प्रकाशमय दो चबूतरे हैं उनकी उपमा जिह्वाके द्वारा नहीं दी जा सकती.

द्वार आगे चबूतरे तीन, दोए दोए तरफ एक भिन ।

दोनो पर नंगो के फूल, चित निरखे होत सनकूल ॥ १०

रङ्गभवनके द्वारके सम्मुख (आगे) तीन चबूतरोंका वर्णन है. उनमें-से दो

चबूतरे द्वारेके दोनों ओर विद्यमान हैं। उन दोनों पर रत्नजडित सुन्दर फूल सुशोभित हैं। इन्हें देखकर चित्त प्रसन्न होता है।

बेलां कै रंगों कै नकस, देखों एक दूजी पैं सरस ।

ता बीच चरनी केती कै रंग, बेलां कटाव जडित कै नंग ॥ ११

इन चबूतरोंमें अनेक प्रकारकी बेलोंकी चित्रकारी है जो एक दूसरेसे अधिक सुन्दर लगती है। इनके मध्यमें सौ सीढ़ियाँ हैं, उनमें भी अनेक रङ्गोंकी लताओंकी चित्रकारी है एवं अनेक रत्न जड़े हुए हैं।

दोऊ तरफ किनारे कांगरी, कै भांत दोरी नंग जरी ।

दाहिने हाथ भिन चबूतरा, ता बीच गली लगता तीसरा ॥ १२

सीढ़ीके दोनों ओर काँगरीदार कटहरा (कठेड़ा) है जिसमें विभिन्न रङ्गकी डोरी है। डोरीमें भी जरी और रत्न सुशोभित हैं। दाहिनी ओर एक और चबूतरा है। दोनों चबूतरोंके मध्यमें एक गली है। यह चबूतरा भी तीसरे चबूतरेके समान शोभायमान है।

ऊपर दरखत छाया बराबर, सब रही चबूतरे भर ।

चारों तरफों तीन तीन चरनी, किनारे की सोभा जाए न वरनी ॥ १३

इन दोनों चबूतरों पर एक-एक वृक्ष हैं उनकी छाया पूरे चबूतरे पर व्याप्त होती है। दोनों चबूतरोंके किनारकी शोभा अवर्णनीय है उनके चारों ओर तीन-तीन सीढ़ियाँ हैं।

उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज चमके रेजारेज ।

ए जोत आसमान लों करत, जोत आसमान सामी लरत ॥ १४

परमधामकी दिव्य भूमिके तेजका वर्णन कैसे करें ? वहाँकी रेतका एक कण भी अत्यन्त प्रकाशमान होता है। यह प्रकाश पूरे आकाशमें व्याप्त होकर आकाशसे आते हुए प्रकाशसे टकराता है।

सो परे वन पर झलकार, जोत वन की न देवे हार ।

इन मंदिरों को जो उजास, सो तो मावत नहीं आकास ॥ १५

इस प्रकाशसे वन झलहला उठते हैं। उनका प्रकाश भी इससे न्यून (कम)

नहीं है. वनके मन्दिरोंका प्रकाश तो पूरे आकाशमें भी समाता नहीं है.

जोत तेज प्रकाश जो नूर, सब ठौरों सीतल सत सूर ।

जोत रोसन भर्यो आसमान, किरना सके न कोई काहूँ भांन ॥ १६

अखण्ड सूर्यकी भाँति प्रकाशमान इस दिव्य तेजपुञ्जकी आभा सर्वत्र शीतलता प्रसारित करती है. इस प्रकाशकी ज्योति पूरे आकाशमें व्याप्त है. इससे निकली हुई किरणें एक दूसरेको परास्त नहीं कर सकतीं.

सोभा क्यों कहूँ या मुख वन, सो तो होए नहीं वरनन ।

इत सब तत्वों की खुसबोए, सो इन जुबां वरनन क्यों होए ॥ १७

इस प्रकार जिह्वाके द्वारा वनकी शोभाका वर्णन कैसे करें, वह तो सम्भव ही नहीं है. यहाँके सभी तत्त्व अपूर्व सुगन्धसे परिपूर्ण हैं, जिह्वाके द्वारा इनका वर्णन कैसे हो सकता है ?

इत जल वाए के चलत जो पूर, सो मैं क्या कहूँ ताको नूर ।

जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावे कै रंग ॥ १८

यहाँ पर बहता हुआ जल तथा वायुकी गतिके प्रकाशके विषयमें भी मैं क्या कहूँ. जलमें उठती हुई लहरोंकी किरणोंमें भी अनेक रङ्ग दिखाई देते हैं.

चांद सूरज धनी के हजूर, सो मैं क्या कहूँ ताको नूर ।

इत जमुनाजी के सातों घाट, मध्य का जल जो बीच पाट ॥ १९

परमधाममें सूर्य तथा चन्द्र भी धामधनीकी सेवामें (उनके निकट) हैं. उनके प्रकाशके सम्बन्धमें क्या कहा जाए ? यहाँ पर जमुनाजीके किनार पर स्थित सात घाटके मध्यमें जलमें आगे तक पहुँचा हुआ पाटका घाट है.

तापर देहुरी एक, जल पर पाट कठेडा विसेक ।

चारों थंभों के जो नंग, झलके माहें जल के तरंग ॥ २०

उस (पाटके घाट) पर एक देहुरी (छत) है. चबूतरेके तीनों ओर जलके ऊपर विशेष प्रकारका कटहरा शोभायमान है एवं चारों ओरके स्तम्भोंके रत्न यमुनाजीकी तरङ्गोंमें झलकते हैं.

आडे ऊंचे याके तले, चार चार थंभ तीन तीन घडनाले ।

याकी जोत आकास न मावें, किरना फेर फेर जिमी पर आवें ॥ २१

इसके नीचे लम्बाई तथा चौड़ाईमें चार-चार स्तम्भोंके चार हार हैं उनके मध्यमें पानी बहनेके लिए तीन जलद्वार (घडनाले) हैं. इनका प्रकाश पूरे आकाशमें भी समाता नहीं है और इनकी किरणें वारंवार भूमि पर लौट आती हैं.

तिनथें तीन घाट तरफ बाएं, ताकी जुदी तीनों वनराए ।

वन बडा इनथें भी बाएं, पिया सैयां खेलन कबू कबू जाएं ॥ २२

पाटके घाटकी बायीं ओर तीन घाट हैं. तीनोंमें अलग-अलग प्रकारके वृक्ष हैं. उनसे भी बायीं ओर बड़ा वन है. धामधनी वहाँ पर सखियोंके साथ लीलाके लिए कभी-कभी चले जाते हैं.

लंबी डारी ऊंचा वन, कै भांत हिडोले झूलन ।

तीन घाट कहे सो देखाऊं, सुनो तीनों वनों के नाऊं ॥ २३

बड़े वनमें वृक्षोंकी शाखाएँ बहुत ऊँची हैं. उनमें विभिन्न प्रकारके झूले लगे हुए हैं. अब मैं उक्त तीनों घाटोंका वर्णन करता हूँ. उनके तीनों वनोंका नाम इस प्रकार है -

केल लिबोई और अनार, और तीन वन दांहिनी किनार ।

बट नारंगी जांबू वनराए, पाट के घाट अमृत केहेलाए ॥ २४

तीनोंमें केल, निम्बू (लिंबोई) और अनारके वृक्ष हैं. इसी प्रकार दायीं ओर भी तीन वन हैं. उनमें वट, नारङ्गी और जामुनके वृक्ष हैं. मध्यमें स्थित पाटके घाटवाले वनमें आम(अमृत) के वृक्ष हैं.

जल पर डारें लगियां आए, दूजियां भोम तरफ सोभाए ।

जमुनाजी के दोऊ किनारें, वन जल पर लगी दोऊं हारें ॥ २५

यमुनाजीके तटके इन वृक्षोंकी शाखाएँ एक ओर यमुनाजीके जल तक फैली हुई हैं तो दूसरी ओर भूमि पर शोभायमान हैं. यमुनाजीके दोनों किनारोंके वृक्ष जल पर दो हारोंमें दिखाई देते हैं.

आधों आध हुइयां डारें, वन रंग सोभित दोऊं पारें ।

आगे वन के जो मंदर, ताको वरनन करुं क्यों कर ॥ २६

इन वृक्षोंकी आधी शाखाएँ एक ओर भूमिके ऊपर फैली हुई हैं तो आधी दूसरी ओर जलके ऊपर फैली हुई हैं। इस प्रकार यमुनाजीके दोनों किनारों पर वनकी शोभा है। इन वनोंके आगे स्थित मन्दिरों (कुञ्ज-निकुञ्ज) की शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

बेलां वन चढियां इन सूल, हुइयां दिवालें पात फूल ।

गृद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभे जिन संग ॥ २७

इन वनोंमें लताएँ वृक्षों पर इस प्रकार चढ़ी हुई हैं मानों उनके पत्ते और फूलकी ही दीवार बनी हुई है। उन पर चारों ओर रङ्ग-विरङ्गे फूल हैं। ये वृक्ष अलग-अलग पङ्क्तिओंमें सुशोभित हैं।

इत लता चढियां अति घन, ऊपर फूलों के फूले हैं वन ।

जानों जवेर रंग अनेक, कुंदन में जडे विवेक ॥ २८

वृक्षों पर लताएँ सघन रूपमें चढ़ी हुई हैं। उन पर फूल खिले हुए दिखाई देते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण वन ही फूलोंका दृष्टिगोचर होता है। ऐसा लगता है कि सोनेमें अनेक रङ्गोंके रत्न जड़े हुए हों।

बीच जमुनाजी के और मंदर, अति बन सोभित वन के अंदर ।

कै सेज्या बनी फूल वन में, कै रंग हुए सघन में ॥ २९

इस प्रकार यमुनाजी और रङ्गभवन (मन्दिर) के मध्य वनके ऊपर वन सुशोभित हैं। इन वनोंमें फूलोंकी शय्या बनी हुई है। इन सघन वनोंमें भाँति-भाँतिके रङ्ग दिखाई देते हैं।

इत खेलत जुथ सैयन, सदा आनंद इन वतन ।

मिनें राज स्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए ॥ ३०

यहाँ पर सखियाँ समूहमें खेलती हैं। सभी आत्माओंके सुख सागर स्वरूप श्रीराज श्यामाजी उनके मध्यमें क्रीड़ा करते हैं। इस प्रकार परमधाममें सदा आनन्द छाया रहता है।

पेड जुदे जुदे लंबी डारी, छाया घाटी सोभे नीची सारी ।

निकसी एक थें दूजी गली, सो तो तीसरी में जाए मिली ॥ ३१

विभिन्न वृक्षोंकी शाखाएँ नीचे लटक कर सघन छाया देती हैं। इन वृक्षोंके मध्यमें एक मार्गसे दूसरा मार्ग निकलकर तीसरे मार्गमें जाकर मिल जाता है।

कै आवत बीच आडियां, कै सीधियां कै टेढियां ।

वन गलियों में बराबर, ना कहूं अधिक ना छेदर ॥ ३२

इन वृक्षोंकी शाखाएँ कतिपय तिरछी हैं, कतिपय सीधी हैं तो कतिपय टेढ़ी हैं, किन्तु वनके सभी मार्गों पर समान रूपसे छाया हुई है। ये न कहीं अधिक लम्बी हैं और न ही कहीं कम।

ऊपर ढांपियां सारी सनंध, सोभा बनी जो दोरी बंध ।

तले भोम नजर आवे जेती, उजल कहा कहूं जोत सुपेती ॥ ३३

इन सभी शाखाओंने पूरी भूमिको ऊपरसे ढँक लिया है, जिसके कारण बाँधी हुई डोरीकी भाँति ये शाखाएँ समान रूपसे शोभायमान हैं। इन वृक्षोंके नीचेकी भूमिकी ज्योति अत्यन्त उज्ज्वल है। उसका वर्णन कहाँ तक किया जाए ?

जिमी ऊपर तले जो रेती, जानों तितके बिछाए मोती ।

कहूं अति बारीक कहूं छोटे, कहूं बडे बडे रे मोटे ॥ ३४

वृक्षोंके नीचेकी भूमिकी रेती ऐसी लगती है मानों वहाँ पर सर्वत्र मोती बिछे हुए हैं। रेतके ये कण कहीं अति सूक्ष्म हैं, कहीं छोटे हैं तथा कहीं बड़े भी दिखाई देते हैं।

कित जानों हीरा कनी, हर ठौर हर भांत घनी ।

कित दोखूनी तीन चौखूनी, कित फिरती कहूं गोल बनी ॥ ३५

कहीं-कहीं पर रेतके कण इस प्रकार चमकते हैं मानों वे हीरेके कण हों तथा प्रत्येक स्थान पर भाँति-भाँतिसे सुशोभित हों। ये कण कहीं पर दो कोने वाले हैं, कहीं पर तीन कोने वाले हैं तो कहीं पर चार कोनेवाले हैं तथा कहीं गोल भी हैं।

ए विध कहूं मैं केती, सो होए न याकी गिनती ।

वन फूल फूले बहु रंग, झलूब रहे बोए सुगंध ॥ ३६

ये कण इतने प्रकारके हैं कि इनकी गणना ही नहीं हो सकती है। वनमें विभिन्न रङ्गोंके पुष्प खिले हुए हैं तथा वृक्षोंकी शाखाएँ सुगन्धित वायुके साथ झूमती हैं।

एक खूबी और खुसबोए, याकी किन जुबां कहूं मै दोए ।

एक सुगंध दूजा नूर, रह्या सब ठौरों भर पूर ॥ ३७

इनकी शोभा और सुगन्धका वर्णन जिह्वाके द्वारा सम्भव नहीं है। फूलोंकी सुगन्ध तथा उनका प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है।

तलाब जमुनाजी के मध, वन के मंदिर या विध ।

ए खेलन के सब ठौर, तलाब विध है और ॥ ३८

इस प्रकार यमुनाजी तथा ताल (हौजकौसर) के मध्यमें वनके मन्दिर (लता मण्डप) सुशोभित हैं। ये सभी स्थान खेलनेके लिए हैं। तालकी रचना तो कुछ और ही प्रकारकी है।

तलाब वनों लिया घेर, ऊपर देहुरियां चौफेर ।

कै पावडियां जो किनारें, बडा चौक तले जाली वारें ॥ ३९

इस तालको चारों ओरसे वनों (बड़ा वन) ने घेर लिया है। इसकी पाल पर चारों ओर देहुरियाँ हैं। किनारे पर चारों ओर अनेक सीढ़ियाँ हैं। सोलह देहुरीके घाटके नीचे स्थित बड़े चौकके नीचेके जालीद्वारोंसे हो कर यमुनाजीका जल तालमें चला जाता है।

वन लेवत सोभा पालें, कै हिडोले लंबी डालें ।

घाट पाट देहुरी कै रंग, जल सोभा लेत तरंग ॥ ४०

तालकी पाल पर स्थित वन अति सुशोभित हैं। उनके वृक्षोंकी शाखाओं पर झूले लटके हुए हैं। इस प्रकार घाट तथा उसकी छत एवं देहुरीके विभिन्न रङ्गका प्रतिबिम्ब जलके तरङ्गोंमें तरङ्गित होता है।

गेहेरा अति सुंदर जल, बीच में बन्यो है मोहोल ।

जल ऊपर मोहोल जो छाजे, बीच बीच में वन बिराजे ॥ ४१

तालका गहरा जल अति सुन्दर एवं स्वच्छ है। बीचमें एक महल (टापूमहल) है। जलके ऊपर सुशोभित इस महलके बीच-बीचमें वन तथा उपवन भी शोभायमान हैं।

जल मोहोल तले जो खलके, मंदिर कोट प्रकास मनी झलके ।

वन को झुंड पाल पर एक, तले सोभा अति विसेक ॥ ४२

तालका जल टापूमहल (द्वीप प्रासाद) के नीचे टकरानेसे कलकलकी ध्वनि करता है। यहाँके मन्दिर भी करोड़ों मणियोंके प्रकाशसे झलक रहे हैं। तालकी पाल पर पश्चिम दिशामें झुण्डका घाट सुशोभित है। उसके नीचेकी शोभा अति विशिष्ट है।

झुंड तले सोभा कही न जाए, धनी इत विराजत आए ।

धनी बैठत साथ मिलाए, सब सिनगार साज कराए ॥ ४३

झुण्डके घाटके नीचेकी भूमिका (तल्ला) की शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है। यहाँ पर स्वयं श्रीराजजी आकर विराजमान होते हैं। वे ब्रह्मात्माओंके साथ बैठते हैं तथा जलक्रीड़ा कर शृङ्गार करते हैं।

इन ठौर सोभा जो अलेखें, चित सोई जाने जो देखें ।

मध्य वन धाम के गृदवाए, सोभा एक दूजी पे सिवाए ॥ ४४

इस स्थानकी शोभा अपरम्पार है। इसे देखनेवाला हृदय ही इस शोभाको समझ सकता है। परमधाम-रङ्गभवनके चारों ओर स्थित बड़े वनके उपवनोंकी शोभा एक दूसरेसे बढ़कर है।

बट पीपल निकट वनराए, सो देख देख न द्रस्ट अघाए ।

ज्यों ज्यों देखिए त्यों त्यों सोभाए, पेहेले थें पीछे अधिकाए ॥ ४५

रङ्गभवनके निकट दक्षिण दिशामें स्थित वट-पीपलकी चौकीके वट और पीपलके वनको देखकर नेत्र तृप्त नहीं होते हैं। जैसे-जैसे उन्हें देखते हैं वैसे-वैसे उनकी शोभा और अधिक बढ़ती जाती है।

फिरते वन धाम विराजे, ऊपर आए रह्या लग छाजे ।

चारों तरफों फूले फूल वन, कै रंग सोभा अति घन ॥ ४६

रङ्गभवनके चारों ओर वन-उपवन शोभायमान हैं। उनके वृक्षोंकी शाखाएँ रङ्गभवनकी प्रत्येक भूमिका (तल्ला) के छज्जों तक फैली हुई हैं। वनमें चारों ओर फूल खिले हुए हैं। उनके विविध रङ्गोंकी शोभा अद्वितीय है।

वरन्यो न जाए या मुख, चित में लिए होत है सुख ।

वन में खेले टोले टोले, मोर बांदर करत कलोले ॥ ४७

इस शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है, किन्तु चित्तसे चिन्तन करने पर अपार सुखका अनुभव होता है। यहाँ पर मोर, बन्दर आदि अपनी-अपनी टोली बनाकर वनमें क्रीड़ा करते हैं।

मिल मिल करे टहुंकार, मुख मीठी बानी पुकार ।

बांदर ठेकों पर ठेक देत, टेढी उलटी गुलाटें लेत ॥ ४८

मोर परस्पर मिलकर टहुंकार करते हैं और अपनी मधुर वाणीसे धनीकी पुकार करते हैं। बन्दर भी उलटी-सीधी गुलाटें खाकर एक शाखासे दूसरी शाखा पर छलाङ्ग मारते हैं।

तीतर लवा कोकिला चकोर, सबद वाले सामी टकोर ।

सुआ मैना करे चोपदारी, चातुरी इन आगे सब हारी ॥ ४९

तीतर, लवा, कोयल और चकोर एक दूसरेके समक्ष अपने-अपने तान छोड़ते हैं। तोता और मैना प्रतिहारी (चौकीदार) का कार्य करते हैं। इनके चातुर्यके समक्ष सभी पक्षीगण अपनी हार स्वीकार करते हैं।

सखियों के नाम ले ले बुलावें, श्री धनीजी के आगे मुजरा करावें ।

पंखी पीउ पीउ तुहीं तुहीं करे, कै विध धनी को हिरदें धरे ॥ ५०

ये सखियोंके नाम ले-लेकर बुलाते हैं और उन्हें श्रीराजजीके सम्मुख अभिवादनके लिए कहते हैं। सभी पक्षी 'हे धामधनी ! आप ही हमारे सर्वस्व हैं' ऐसी पुकार करते हैं तथा धामधनीके स्वरूपको विभिन्न प्रकारसे हृदयमें धारण करते हैं।

तिमरा भमरा स्वर साधे, गुंजे गान पियासों चित बांधे ।

मृग कस्तूरियां घेरों घेर, करे सुगंध वन चौफेर ॥ ५१

झीङ्गर तथा भँवरे गुनगुनाते हैं एवं अपने धनीके गुण गाते हुए अपना हृदय उनसे बाँध लेते हैं। कस्तुरी मृग भी चारों ओर पङ्क्तिबद्ध रहते हैं। उनकी नाभीसे उठी हुई कस्तुरीकी सुगन्ध वनमें चारों ओर फैल जाती है।

हाथी बाघ चीते स्याहगोस, खेले मिले आतम नहीं रोस ।

हंस गरुड पंखी कै जात, नाम लेऊं केते कै भांत ॥ ५२

हाथी, बाघ, चीते, स्याहगोश (जङ्गली बिल्ली) आदि पशु भी परस्पर मिलकर खेलते हैं। उनके मनमें किसीके प्रति भी रोष (क्रोध) नहीं होता है। हंस, गरुड तथा अन्य विभिन्न प्रकारके पक्षी भी वहाँ पर हैं। उनमें-से किन किनके नाम लिए जाएँ ?

कै मुरग सुतर कुलंग, खेल करें लडाई अभाग ।

सीना कस गुलाटें खावें, कबूतर अपनी गत देखावें ॥ ५३

शुतुरमुर्ग तथा कुरङ्ग (मृग) भी परस्पर मिलकर अनेक प्रकारके खेल खेलते हुए लड़ते हैं। सभी अपनी छाती तानकर गुलाटियाँ भरते हैं। कबूतर भी अपनी गति (कला) का प्रदर्शन करते हैं।

हरन सांम्हर पस्वाडे पाडे, खेलें सब आप अपने अखाडे ।

मुजरे को दोऊ समे आवें, खेल सब कोई अपना देखावें ॥ ५४

हरिण, सांभर (मृग), पसवाड़े और पाड़े आदि पशु अपने अपने अखाड़ोंमें खेलते हैं तथा दोनों समय (प्रातः एवं सायं) श्रीराजजीके अभिवादनके लिए आते हुए अपने-अपने खेलका प्रदर्शन करते हैं।

पसु पंखी अनेक हैं नाम, सोभे केशों पर चित्राम ।

अति सुंदर जोत अपार, याके खेल बोल मनुहार ॥ ५५

ऐसे अनेक प्रकारके पशु-पक्षी हैं। उन सभीके केश और पङ्क्तु चित्रकारीसे सुसज्जित हैं। उनसे निकलता हुआ अपार प्रकाश भी अति सुन्दर है। इनकी क्रीड़ा और वाणी श्रीराजजीकी प्रसन्नताके लिए ही होती है।

जमुनाजी के जो पार, वन पसू पंखी याही प्रकार ।

मोहोल सामी सोभे मोहोल, सो मैं क्यों कहूं या मुख कोल ॥ ५६

यमुनाजीके पार भी इसी प्रकारके पशु-पक्षी क्रीड़ा करते हैं। रङ्गभवनके सम्मुख (अक्षरधाममें) भी महल सुशोभित है। इस जिह्वासे उसकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ?

दरवाजे सामी दरवाजे, नूर सामी नूर विराजे ।

नूर किरना उठे साम सामी, जोत रही सबों ठौर जामी ॥ ५७

दोनों महलोंके द्वार भी आमने-सामने हैं, जैसे एक तेजके समक्ष दूसरा तेज विद्यमान हो। दोनों ओरसे आमने-सामने किरणें उठती हैं। उनकी ज्योतिसे सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त होता है।

लीला दोऊ दोनों ठौर, भांत दोऊ पर नाही और ।

फिरते अक्षर के जो वन, लीला एकै देखियत भिन ॥ ५८

दोनों स्थानों (अक्षरधाम तथा परमधाम) में दोनों प्रकारकी (बाल तथा किशोर) लीला होती है। लीलामें ही दोनों स्वरूप भिन्न-भिन्न प्रतीत होते हैं किन्तु दोनों एक दूसरेसे भिन्न नहीं हैं। वस्तुतः दोनोंकी लीला एक ही है मात्र भिन्न-भिन्न प्रतीत होती है। अक्षर धामके चारों ओर भी वनप्रदेश है।

कै मिलावे सोहने, धनी सैयों के खेलोंने ।

पसू पंखी जूथ मिलत, आगे बडे दरवाजे खेलत ॥ ५९

धामधनी तथा ब्रह्मात्माओंके खिलौनेके समान ये सभी पशु-पक्षी अपने झुण्ड बनाकर प्रेमपूर्वक खेलते हैं। ये सभी पशुपक्षी अपना-अपना समूह बनाकर बड़े द्वारके सम्मुख क्रीड़ा करते हैं।

दोऊ कमाड रंग दरपन, माहें झलकत सामी वन ।

नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कही न जाई ॥ ६०

रङ्गभवनके विशाल द्वारके किवाड़ दर्पण रङ्गके हैं। उनमें सामनेका वन प्रतिबिम्बित होता है। उनकी बेनी (किवाड़के पल्लेकी लकड़ी) पर जड़े हुए विभिन्न प्रकारके रत्नोंकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता।

कै कटाव नकस जवेर, सोभित नंग चौक चौफेर ।

फिरते द्वारने जो मनी, ताकी जोत प्रकास अति घनी ॥ ६१

द्वारके इन किवाड़ों पर अनेक प्रकारके कटाव, चित्रकारी तथा रत्न जड़ायमान हैं। चौकके चारों ओर रत्न सुशोभित हैं। द्वारके चारों ओर मणि जड़ायमान हैं। उनका प्रकाश भी अत्यन्त देदीप्यमान है।

याके तीन तरफ जो दिवाल, कै जवेर भोम रंग लाल ।

गोख खिडकी जाली जवेर, कै जडाव दिवाल चौक चौफेर ॥ ६२

द्वारके ऊपर तथा दोनों ओरकी दीवार पर अनेक प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं। दीवारका रङ्ग लाल है। गवाक्ष तथा खिड़कीमें जाली लगी हुई है। इनके चारों ओरकी दीवार पर भी रत्न जड़े हुए हैं।

गृद झरोखे के थंभ फिरते, जुदी कै जिनसों जोत धरते ।

नव भोम रंग वरनन, तापर खुली चांदनी उठत किरन ॥ ६३

चारों ओरके झरोखोंको घेरकर (फिरते हुए) स्थम्भ हैं। उनमें जड़े हुए विभिन्न प्रकारके रत्न प्रकाशमान हैं। रङ्गमहलकी नवों भूमिका तक इसी प्रकारका वर्णन है। उनके ऊपरकी खुली चाँदनी भी अपने किरणोंसे जगमगाती है।

मंदिर याकी कांगरी करे जोत, जानों तहां की बीज उदोत ।

दरवाजे में ठौर रसोई, जित बडा मिलावा नित होई ॥ ६४

मन्दिरोंके ऊपर लगी हुई रमणीय काँगरी बिजलीकी भाँति चमकती है। मुख्य द्वारके सामने भीतर रसोईकी हवेली है। वहाँ पर नित्य-प्रति सभी आत्माओंका एकसाथ मिलन होता है।

स्याम मंदिर रसोई होत जित, जोडे सेत मंदिर है तित ।

वन थें फिरें संझा जब, इन मंदिरों आरोगे तब ॥ ६५

इस हवेलीके उत्तरपूर्व (ईशान कोण) में साथ लगता हुआ एक श्याम मन्दिर है जहाँ रसोई तैयार होती है। उसके समीप एक श्वेत मन्दिर भी है। संध्याके समय सभी सखियाँ वनसे लौटकर इसी (श्वेत) मन्दिरमें बैठकर भोजन लीला करती हैं।

चरनी आगे मिलावा होत, जुथ लाडबाई धरे जोत ।

साक बांदर जो ल्यावत, आगे सखियां सब समारत ॥ ६६

श्याम और श्वेत मन्दिरोंके मध्यमें स्थित सीढ़ियोंके सम्मुख चौक पर सभी सखियोंका मिलन होता है। लाडबाईके समूहकी सखियाँ बड़ी उमङ्गके साथ भोजनकी सेवामें लगती हैं। सभी सखियाँ मिलकर बन्दरोंके द्वारा वनसे लाया गया शाक सँवारती हैं।

कै चौक चबूतरे अंदर, कै विध गलियां मंदर ।

कै जडाव दिवाल द्वार जोत धरे, ए जुबां वरनन कैसे करे ॥ ६७

रसोईकी हवेलीमें अनेक चौक तथा चबूतरें हैं। अनेक मन्दिरोंके साथ अनेक मार्ग भी हैं। इन मार्गों तथा मन्दिरोंकी दीवारों पर जड़े हुए प्रकाशमान रत्नोंकी शोभाका वर्णन यह जिह्वा कैसे करेगी ?

कै नकस पुतली चित्रामन, कै बेल पसु पंखी वन ।

कंचन कडे जंजीरां जडियां, कै झलकें थंभ सिद्धियां ॥ ६८

विभिन्न प्रकारकी पुतलियाँ भी दीवारों पर चित्रित हैं। वहाँ पर विभिन्न प्रकारकी बेलों तथा पशु-पक्षियोंके चित्र भी अङ्कित हैं। स्वर्ण जड़ित जङ्गीरें तथा कड़े भी सुशोभित हैं। इस प्रकार सीढ़ियाँ तथा स्थम्भ भी झलक रहे हैं।

माहें बस्तां संदूक जोगवाई, सो तो अगनित देत देखाई ।

ताके खिल्ली किनारे भमरिया, ऊपर बस्तां अनेक विध धरियां ॥ ६९

इन हवेलियोंके मन्दिरोंमें विभिन्न प्रकारकी असंख्य वस्तुएँ सन्दूकोंमें रखी हुई हैं। दीवार पर चारों ओर गोल खुँटियाँ हैं उन पर विभिन्न प्रकारकी सामग्रियाँ लटकी हुई हैं।

ए मैं क्यों कर करूं वरनन, तुम लीजो कर चितवन ।

नव भोम सबों के मंदर, देखो बस्तां अपनी चित धर ॥ ७०

हे सुन्दरसाथजी ! मैं इन सामग्रियोंका वर्णन कहाँ तक करूँ ? आप स्वयं ही इनका चिन्तन करें। नवों भूमिका तक सभी मन्दिरोंमें इसी प्रकारकी सामग्रियाँ विद्यमान हैं। इनको अपने हृदयमें धारण करें।

सेज्या सबन के सिनगार, हिरदें लीजो कर निरधार ।

सब जोगवाई है पूरन, कमी नाही काहूमें कीन ॥ ७१

सभी मन्दिरोंमें विद्यमान शय्या तथा शृङ्गारकी सामग्रीको भी आप स्वयं हृदयमें धारण करें। इस प्रकार सर्वत्र सब प्रकारकी सामग्रियाँ परिपूर्ण हैं। कहीं भी किसी भी प्रकारकी कमी नहीं है।

हांस विलास सनेह प्रेम प्रीत, सुख पियाजी को सबदातीत ।

डबे तबके सीसे सिकीयां, कै देत देखाई लटकतियां ॥ ७२

यहाँ पर सर्वत्र आमोद-प्रमोद, स्नेह, प्रेम-प्रीतिकी बातें होती हैं। धामधनीसे प्राप्त सुख साक्षात् शब्दातीत है। इन भवनोंमें विभिन्न प्रकारके डब्बे, रकाबियाँ, शीशे, छीके आदि अनेक वस्तुएँ लटकती हुई दिखाई देती हैं।

चौकियां माचियां सिंघासन, कै हिडोले जंजीर कंचन ।

कै बासन धात अनेक, कै वाजंत्र विविध विसेक ॥ ७३

इनमें विभिन्न चौकियाँ, माचियाँ तथा सिंहासन भी विद्यमान हैं। विभिन्न प्रकारके झूले लटके हुए हैं जिनमें स्वर्णजडित जञ्जीरें हैं। इसी प्रकार विभिन्न धातुओंके अनेक बर्तन भी हैं तथा विभिन्न प्रकारके विशेष वाद्ययन्त्र भी हैं।

कै झीले चाकले दुलीचे विछौंनै, कै विध तलाई सिरानें ।

कै रंग ओछाड गालमसुरे, कै सिरख सोड मन पूरे ॥ ७४

इन भवनोंमें विभिन्न प्रकारकी दरियाँ, गलीचे, विस्तर, गद्दे, रजाइयाँ तथा तकिए भी हैं। विभिन्न रङ्गोंकी चद्दरें तथा छोटे तकियों (गालमसूरियों) के साथ नरम रजाई आदि मनोरथ पूर्ण करनेवाली विभिन्न प्रकारकी सामग्रियाँ विद्यमान हैं।

सेज्या सिनगार के जो भवन, दोए दोए नवों खंड सबन ।

दूजी भोम किनारे बाएं हाथ, कबूं कबूं सिनगार करें इत साथ ॥ ७५

रङ्गभवनकी नवों भूमिकाओंमें सभी सखियोंके लिए शय्या तथा शृङ्गारके लिए अलग-अलग भवन हैं। दूसरी भूमिकामें बायीं ओर (भूलभूलवनी) के मन्दिरके मध्य चबूतरेमें भी कभी-कभी ब्रह्म आत्माएँ शृङ्गार करती हैं।

इत खडोकली जल हिलोलें, धनी साथ झीलें झकोलें ।

इत सिनगार करके खेलें, ठौर जुदे जुदे जुथ मिलें ॥ ७६

यहाँ पर स्थित कुण्ड (खडोकली) में धामधनी तथा ब्रह्मात्माएँ जलक्रीड़ा करते हैं जिससे कुण्डका जल हिलता हुआ झिलमिलाता है। शृङ्गारके बाद विभिन्न जुथ बनाकर सखियाँ इसी भूलभूलवनीमें लीलाएँ करती हैं।

साम सामी मंदिरों के द्वार, नव भोम फिरती किनार ।

ता बीच थंभों की दोए हार, कै रंग नंग तेज अपार ॥ ७७

रङ्गभवनकी नवों भूमिकाओंमें छः छः हजार मन्दिरोंमें चारों ओर फिरते हुए द्वार आमने-सामने सुशोभित हैं। उनके मध्यमें दो पङ्क्तियोंमें स्तम्भ हैं। इनमें जड़े हुए विभिन्न रत्नोंका तेज भी अद्वितीय है।

जेती मैं कही जोगवाई, सो देख देख आतम न अघाई ।

या बाहेर या अंदर, सब एक रस मोहोल मंदर ॥ ७८

इस प्रकार मैंने रङ्गभवनकी विभिन्न सामग्रियोंका जितना वर्णन किया है उनको प्रत्यक्ष देखकर भी आत्मा तृप्त नहीं होती है। इसके बाहर अथवा भीतरके भवन भी सर्वत्र समानरूपसे सुशोभित हैं।

केहेती हों करके हेत, सारे दिन की एही विरत ।

तुम लीजो द्रढ कर चित, अपना जीवन है नित ॥ ७९

मैंने परमधामकी दिनचर्याका वर्णन भी प्रेमपूर्वक किया है। यही अपना नित्य जीवन है इसलिए आप इन्हें अपने हृदय पर दृढ़ता पूर्वक धारण करें।

श्री धाम की आठ पहर की बीतक

तीजी भोम की जो पडसाल, ठौर बडे दरवाजे विसाल ।

धनी आवत हैं उठ प्रात, बन सींचत अमृत अघात ॥ ८०

रङ्गभवनके विशाल द्वारके ऊपर तीसरी भूमिकामें खुला स्थान (पडसाल) है। धामधनी प्रातःसमय यहाँ आते हैं और अपनी अमृतमयी दृष्टिसे सम्मुखके वनोंको सींचकर तृप्त करते हैं।

पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें ।

पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार ॥ ८१

श्रीराजजी यहीं पर पशु-पक्षियोंका अभिवादन स्वीकार करते हैं तथा उन सभीको अपनी शीतल दृष्टिसे सुख प्रदान करते हैं. तत्पश्चात् सभी सखियाँ दालानमें बैठकर श्रीराजजीका शृङ्गार करती हुई उनको प्रसन्न करती हैं.

श्री स्यामाजी मंदिर और, रंग आसमानी है वा ठौर ।

चार चार सखियां सिनगार करावें, स्यामाजी श्री धनीजीके पासें आवें ॥ ८२

दूसरी ओर मन्दिरोंकी दूसरी पङ्क्तिमें श्रीश्यामाजीका आसमानी रङ्गका मन्दिर है. चार-चार सखियाँ श्रीराजजी एवं श्यामाजीका शृङ्गार करती हैं. पश्चात् श्रीश्यामाजी श्रीराजजीके समीप आती हैं.

सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित में लिए होत है सुख ।

चित दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर वेनी गुंथी ॥ ८३

श्रीश्यामाजीकी शोभाका वर्णन इस मुखसे कैसे करें. इसे हृदयमें धारण करने पर ही परमानन्दका अनुभव होता है. सखियाँ हृदयपूर्वक केश सँवारती हुई श्रीश्यामाजीकी माँग बनाती हैं तथा प्रेमसे वेणी गुंथती हैं.

मिनो मिन सिनगार करावें, एक दूजी को भूषण पेहेरावें ।

साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनीजीके मन भावें ॥ ८४

सखियाँ भी परस्पर शृङ्गार करती हैं तथा एक दूसरीको आभूषण पहनाती हैं. श्रीराजजीको जैसा प्रिय लगता है उसी प्रकारका शृङ्गार धारण कर सखियाँ उनके समीप आती हैं.

सैयां लटकतियां करे चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल ।

सैयां आवत बोलें बानी, संग एक दूजी पे स्यानी ॥ ८५

सखियाँ विचित्र (मस्त) चालसे चलती हैं जिससे श्रीराजजीका मन प्रसन्न होता है. सभी सखियाँ एक दूसरीसे चतुर होकर आती हुई अपनी मधुरवाणीसे श्रीराजजीको प्रसन्न करती हैं.

सैयां आवत करें झनकार, पाए भूषन भोम ठमकार ।

झलकतियां रे मलपतियां, रंग रस में चैन करतियां ॥ ८६

सखियाँ चलते समय जब झङ्कार करती हैं उस समय उनके पाँवके भूषणोंसे पूरी तीसरी भूमिका गूँज उठती है। इस प्रकार सखियाँ झूमती हुई बड़ी मस्तीसे चलकर प्रेमरङ्गमें मग्न होती हुई आनन्द लेती हैं।

कंठ कंठ में बांहों धरतियां, चित एक दूजी को हरतियां ।

सुंदरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हांस हंसतियां ॥ ८७

सखियाँ एक दूसरीके गलेमें बाँहें डालकर मनोविनोद करती हुई एक दूसरीके हृदयको आकर्षित करती हैं। इस प्रकार अपने सौन्दर्यकी छटा बिखेरती हुई एक दूसरीके साथ हास्यविनोद करती हैं।

कै फलंग दे उछलतियां, कै फूल लता जो फेरतियां ।

कै हलके हलके हालतियां, कै मालतियां मचकतियां ॥ ८८

कतिपय सखियाँ छलाङ्गें लगाकर उछलती हैं, कतिपय पुष्पलताओंकी भाँति अपने शरीरको घूमाती हैं। कतिपय मस्तानी चालसे धीरे-धीरे चलती हैं तथा कतिपय लटक-मटककर चलती हैं।

कै आवत हैं ठेलतियां, जुथ जल लेहेरां ज्यों लेवतियां ।

कै आवें भमरी फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां ॥ ८९

इस प्रकार चलती हुई सखियाँ एक दूसरेको धकेलती हैं जिससे जलकी लहरोंकी भाँति उछलती हुई प्रतीत होती हैं। अनेक सखियाँ गोल-गोल घुमती हुई आती हैं और एक दूसरी पर गिर जाती हैं।

कै सीधियां सलकतियां, कै विध आवें जो चलतियां ।

सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागें ॥ ९०

अनेक सखियाँ सीधे सरकती हुई आती हैं तो कतिपय विविध चालमें आती हैं। इस प्रकार सभी सखियाँ एक दूसरीसे आगे निकलकर श्रीराजजीके चरणोंमें प्रणाम करती हैं।

इत बडा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई ।

कोई छजों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं ॥ ९१

इस प्रकार तीसरी भूमिकामें सभी सखियोंका महामिलन होता है. इस समय कोई भी सखी इस लाभसे वञ्चित नहीं होती. कोई छज्यों पर, कोई झरोखों पर, कोई महलोंमें तो कोई ऊपरके मन्दिरोंमें बैठ जाती हैं.

इत चार घडी लों बैठें, मेवा मिठाई आरोग के उठें ।

दाहिनी तरफ दूजा जो मंदर, आए बैठें ताके अंदर ॥ ९२

श्रीराजजी यहाँ पर चार घड़ीके लिए बैठते हैं और मेवा, मिठाई आदिका रसास्वादन कर यहाँसे उठते हैं. इसके पश्चात् दायीं ओर दूसरे मन्दिरके अन्दर जाकर विराजमान होते हैं.

नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कै तरंग ।

दोऊ रंगों की उठत झाँई, इन मंदिरों दिवालें के ताई ॥ ९३

इस मन्दिरमें (दोनों ओरके मन्दिरकी) नीले तथा पीले रङ्गकी आभा पड़ती है. उसकी किरणें भी तरङ्गोंकी भाँति उठती हैं. इन दोनों रङ्गोंकी किरणोंसे मन्दिरकी दीवार झिलमिलाती है.

पैठते दाहिने हाथ जो जाहीं, सेज्या है या मंदिर माहीं ।

कै जिनस जडाव सिंघासन, राजस्यामाजी के दोऊ आसन ॥ ९४

इस मन्दिरमें प्रवेश करने पर दायीं ओरके (पीले) मन्दिरमें श्रीराजश्यामाजीके लिए सुखशय्या सुशोभित है. सामने विभिन्न रत्नोंसे जड़ायमान सिंहासन है. उस पर श्रीराजजी तथा श्यामाजीके लिए दो आसन बिछे हुए हैं.

झरोखे को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें ।

संग सखियां केतीक विराजें, या समें श्री मंडल बाजे ॥ ९५

यहाँ पर झरोखेको पीठ देकर तथा मन्दिरके द्वारके सम्मुख होकर श्रीराजजी एवं श्यामाजी सिंहासन पर विराजमान होते हैं. कतिपय सखियाँ चारों ओर बैठ जाती हैं. इस समय श्रीमण्डल नामक वाद्ययन्त्रकी मधुर ध्वनि निकलती है.

नव रंग बाई जो बजावें, मुख बानी रसीली गावें ।

इत बाजत वेन रसाल, वेन बाई गावें गुन लाल ॥ ९६

नवरङ्गबाई श्रीमण्डल वाद्यको बजाती हुई मधुर स्वर निकालकर गायन करती है. यहाँ पर मधुर स्वरमें वंशी भी बजती है. वेनबाई वंशी बजाकर श्रीराजजीका गुणगान करती है.

सखी एक निकसें एक पैठें, एक आवें उठें एक बैठें ।

इन समे भगवानजी इत, दरसन को आवें नित ॥ ९७

इस समय कोई सखी यहाँ पर प्रवेश करती है तो कोई यहाँसे बाहर निकलती है. इस प्रकार कोई सखी आकर बैठती है तो कोई यहाँसे उठकर चली जाती है. इसी समय अक्षरब्रह्म श्रीराजजीके दर्शनके लिए नित्य आते हैं.

झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें ।

इत और न दूजा कोए, स्वरूप एक है लीला दोए ॥ ९८

जैसे श्रीराजजी झरोखेकी ओर दृष्टि डालते हैं उस समय अक्षरब्रह्म उनको प्रणाम कर लौट जाते हैं. वस्तुतः ये अक्षरब्रह्म कोई अन्य नहीं हैं, स्वयं श्रीराजजीके ही स्वरूप हैं. मात्र इनकी लीला ही अन्य प्रकारकी होती है.

भगवानजी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत ।

कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें ॥ ९९

अक्षरब्रह्म बाल लीला करते हैं. वे अपनी प्रकृतिके अनुसार क्षण मात्रमें करोड़ों ब्रह्माण्डोंकी रचना करते हैं तथा दूसरे ही क्षण उन्हें उड़ा भी देते हैं.

और ए तो लीला किसोर, सैयां सुख लेवें अति जोर ।

ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं ॥ १००

इधर श्रीराजजीकी किशोर लीला है. सभी सखियाँ इस लीलासे अपार आनन्दका अनुभव करती हैं. इस लीलाके आनन्दकी बात कहाँ तक करें, इसका कोई पारावार ही नहीं है.

सखियां केतीक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें ।

घडी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढते आवें घरें ॥ १०१

कतिपय सखियाँ वनमें जाती हैं और वहाँसे शाक, पान, मेवा आदि ले कर आती हैं. वे वनमें चार घड़ी तक लीलाएँ कर एक प्रहर दिन व्यतीत होने पर रङ्गमहलमें लौट आती हैं.

ए सब इच्छासों मंगावें, पर सखियों को सेवा भावे ।

सैयां सेवा करन बेल ल्यावें, लेवें एक दूजी पें छिनावें ॥ १०२

धामधनीकी इच्छा मात्रसे सभी वस्तुएँ स्वतः आ जाती हैं किन्तु सखियोंको धनीजीकी सेवा करनेकी इच्छा होती है. इस प्रकार सखियाँ सेवा करनेके लिए सामग्रियाँ लाती हैं साथ ही एक दूसरीसे छिनती हुई आगे चलती हैं.

निकसते दाहिनी तरफ जो ठौर, सैयां आए बैठें चढते दिन पोहोर ।

मिलावा होत दिवालें के आगे, सैयां पान बीडी वालने लागे ॥ १०३

मध्यके मन्दिरसे निकलते समय दायी ओरके (नीले) मन्दिरमें दिनका एक प्रहर व्यतीत होने पर सखियाँ आकर बैठ जाती हैं. वे इस मन्दिरकी दीवारसे लगकर (आगे) बैठती हैं एवं पानका बीड़ा तैयार करती हैं.

मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें ।

डेढ पोहोर चढते दिन, बीडी वाली सैयां सबन ॥ १०४

वे मसालेको सँवार कर पान तैयार करनेके लिए एक दूसरीको देती हैं. इस प्रकार डेढ़ प्रहर दिन व्यतीत होने पर सभी सखियाँ पानका बीड़ा तैयार कर लेती हैं.

बीडियों की छाब लेकर, धरी पलंग तलें चौकी पर ।

श्री राज बैठें बातां करें, श्रीस्यामाजी चित धरें ॥ १०५

पान बीड़ासे भरी टोकरी लेकर सखियाँ पलङ्गके नीचे पड़ी हुई चौकी पर रख देती हैं. उस समय श्रीराजजी बैठे-बैठे मीठी बातें करते हैं एवं श्रीस्यामाजी उन बातोंको हृदयङ्गम करती हैं.

सैयां परसपर करें हांस, लेवें धनीजी को विविध विलास ।

घड़ी दो एक तापर भई, लाडबाई आए यों कही ॥ १०६

सखियाँ परस्पर हास्य-विनोद करती हुई धामधनीके साथ विलासका आनन्द लेती हैं। इस प्रकार दो घड़ी व्यतीत होने पर लाडबाई आकर निवेदन करती है।

श्रीधनीजी की आग्या पाऊं, तो या समें रसोई ले आऊं ।

श्रीधनीजीएं आग्या करी, सैयां चौकी आन आगे धरी ॥ १०७

‘हे धनी ! आपकी आज्ञा हो तो मैं इस समय रसोई ले आऊँ।’ जब धामधनी आज्ञा दे देते हैं तब सखियाँ चौकी लेकर श्रीराजजीके आगे रखती हैं।

सैयां दोए चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई ।

श्रीराज उतारे वस्तर, पेहेनी पिछौरी कमर पर ॥ १०८

सखियाँ बैठनेके लिए दो आसन भी लेकर आई और उन दोनोंको वहाँ पर बिछाया। श्रीराजजीने अपने वस्त्र उतारे और कटि पर पिछौरी धारण की।

श्रीराज चाकले आए, श्रीश्यामाजी संग सोहाए ।

श्रीराज पखालें हाथ, श्रीश्यामाजी भी साथ ॥ १०९

इस प्रकार श्रीराजजी आसन पर विराजमान हुए। श्रीश्यामाजी भी उनके साथ ही सुशोभित हुई। श्रीराजजीने हस्त प्रक्षालन किया, श्री श्यामाजीने भी उनके साथ ही अपने हाथ धोए।

सैयां दौड दौड के जावें, आरोगने की वस्तां ल्यावें ।

मेवा अंन ने साक मिठाई, कै विध सामग्री ले आई ॥ ११०

इस समय सखियाँ दौड़ती हुई जाकर भोजन सामग्री ले आती हैं। वे मेवा, मिष्ठान्न, शाक तथा विभिन्न सामग्री लेकर आती हैं।

एक ले चली साक कटौरी, तापें छीन ले चली दूसरी ।

तिनथें झोंट ले चली तीसरी, चौथी वापें भी ले दौरी ॥ १११

जब एक सखी शाककी कटौरी लेकर चलती है तो दूसरी उसे छीनकर आगे बढ़ती है। तीसरी सखी उससे भी छीनकर आगे निकलती है तो चौथी सखी भी उस कटौरीको छीनकर दौड़ जाती है।

जो कदी छीन लेत हैं जिनपें, पर रोस न काहूं किनपें ।

इतथें जो फिर कर गैयां, तिन और कटौरी जाए लैयां ॥ ११२

इस प्रकार जो सखी जिससे भी सामग्री छीन लेती है उस समय किसी भी सखीको क्रोध नहीं आता है. इधरसे जो सखी लौट आती है वह अन्य कटौरी लेकर आती है.

यों एक एक पें लेवें, हेत एक दूजी को देवें ।

सब मंदिर करें झनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार ॥ ११३

इस प्रकार सखियाँ एकसे कटौरी छीनकर दूसरीको बड़े प्रेमसे देती हैं. चलते समय उनके चरणोंके आभूषण मधुर स्वर करते हैं, मानों वे श्रीराजजीका अभिवादन कर रहे हों.

सैयां दौडत हैं साम सामी, सबद रह्यो सबों ठौर जामी ।

कै स्वर उठत भूखन, पडछंदे परें स्वर तिन ॥ ११४

इस प्रकार सखियाँ दौड़कर जब आमने-सामने आती हैं उस समयकी ध्वनि सर्वत्र व्याप्त हो जाती है. उनके चरणोंके आभूषणोंके शब्द दीवारोंसे प्रतिध्वनित होकर गूँज उठते हैं.

कै विध उठत मीठी बानी, मुख वरनी न जाए बखानी ।

इन समें की जो आवाज, सोभा धाममें रही विराज ॥ ११५

ऐसे वातावरणमें अनेक प्रकारकी मधुर वाणी सुनाई देती है जिसकी प्रशंसा इस मुखसे नहीं हो सकती. इस समय जो स्वर निकलता है उसकी शोभा पूरे धाममें व्याप्त हो जाती है.

दूध दधी ल्याई लाडबाई, सो तो लिए मन के भाई ।

सब खेलें हांसी करें, आए आए धनीजी के आगे धरें ॥ ११६

लाडबाई दूध और दधि ले आती है. श्रीराजश्यामाजी उसे अपनी इच्छानुकूल ग्रहण करते हैं. सभी सखियाँ प्रेम मग्न होकर खेलती तथा हास्य-विनोद करती हुई भोजन सामग्री लाकर धनीजीके सम्मुख रखती हैं.

या समें दौडत भूखन बाजे, पडछंदे भोम सब गाजे ।

झारी लेकर चलू कराई, मुख हाथ रूमाल पोंछाई ॥ ११७

इस समय उनके दौड़ने पर आभूषणोंके स्वर प्रतिध्वनित होनेसे समग्र भूमिका गूँज उठती है। सखियाँ जलपात्र लेकर धनीजीको आचमन कराती हैं तथा रूमालसे हाथ, मुख पोंछ देती हैं।

श्री स्यामाजी चलू करी, दोए बीडी दो मुखमें धरी ।

श्री राज उठ बैठे सिंघासन, संग स्यामाजी उठे ततखिन ॥ ११८

श्रीश्यामाजी भी आचमन करती हैं। श्रीराजजी एवं श्यामाजी अपने मुखमें पानका बीड़ा धारण करते हैं। तत्पश्चात् आसनसे उठकर सिंहासन पर विराजमान होते हैं।

दोऊ आसन जोडे आए, सैयां चौकी चाकले उठाए ।

सैयां तले आरोगने गैयां, आरोग आए पान बीडी लैयां ॥ ११९

श्रीराजजी एवं श्यामाजीके सिंहासन पर आसीन होने पर सखियाँ चौकी और आसन उठाकर यथास्थान रख देती हैं। तत्पश्चात् वे नीचे (प्रथम भूमिकामें) जाकर भोजन करती हैं तथा भोजनके पश्चात् पानका बीड़ा ग्रहण करती हैं।

सेज्या आए श्री जुगल किसोर, तब दिन हुआ दो पोहोर ।

सैयां बैठी जुदे जुदे टोलें, करें रेहेस बातें दिल खोलें ॥ १२०

भोजन लीलाके उपरान्त श्रीराजजी एवं श्यामाजीके शय्या पर विराजमान होने पर मध्याह्नका समय हो जाता है। उस समय सभी सखियाँ अलग-अलग समूहमें बैठकर दिल खोल कर परस्पर प्रेम पूर्वक वार्तालाप करती हैं।

तित कै विध रस उपजावें, कै विलास मंगल मिल गावें ।

कै हंस हंस ताली देवें, यों कै विध आनंद लेवें ॥ १२१

वहाँ पर सखियाँ विभिन्न प्रकारसे आनन्द रस उत्पन्न करती हैं एवं मङ्गल गान करती हुई प्रेम विलास करती हैं। कतिपय सखियाँ करतल ध्वनि करती हैं। इस प्रकार सभी सखियाँ अनेक प्रकारके आनन्दका अनुभव करती हैं।

कै बैठत छज्जों जाए, बैठें अंगसों अंग मिलाए ।

मुख बानीसों हेत उपजावें, एक दूजी को प्रेम बढावें ॥ १२२

कतिपय सखियाँ छज्जों पर जाकर बैठ जाती हैं तो कतिपय परस्पर सटकर बैठ जाती हैं। सभी अपनी सुमधुर वाणीसे प्रेम प्रकट करती हैं तथा एक दूसरीमें प्रेमका विस्तार करती हैं।

रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कह्यो न जाए या मुख ।

सरूप सोभा जो सुंदरता, वस्तर भूखन तेज जोत धरता ॥ १२३

इस प्रकार सभी सखियाँ अनेक प्रकारके सुख प्राप्त करती हैं, जिनका वर्णन इस जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है। सभी सखियोंका सौन्दर्य तथा उनके स्वरूपकी शोभा अद्वितीय है। उनके वस्त्राभूषण भी तेजोमय प्रकाश धारण करते हैं।

कै बैठत मिलावें आए, बैठें अंगसों अंग लगाए ।

सुख एक दूजीको उपजावें, मुख बानीसों प्रीत बढावें ॥ १२४

कतिपय सखियाँ परस्पर मिलकर एक दूसरीसे सटकर बैठ जाती हैं। इस प्रकार सभी एक दूसरीको सुख प्रदान करती हुई अपनी मधुर वाणीसे प्रेमकी अभिवृद्धि करती हैं।

हांस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें ।

यों सुख मिनो मिनें लेवें, सखी एक दूजी को देवें ॥ १२५

सभी सखियाँ हास्य विनोद करती हैं जिससे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें सुख और प्रेमकी अभिवृद्धि होती है। इस प्रकार सभी सखियाँ परस्पर सुख लेती हैं और एक दूसरीको भी देती हैं।

कै बैठत जाए हिडोलें, अनेक करत कलोलें ।

कै बैठत जाए पलंगे, बातां करत मिनों मिनें रंगे ॥ १२६

कतिपय सखियाँ झूलोंमें बैठकर अनेक प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हैं। कतिपय अपनी शय्या पर जाकर बैठती हैं और परस्पर रङ्गभरी वार्तालाप करती हैं।

यों अनेक विधे सुख नित, पियाजीको सदा उपजत ।

सब सैयां पोहोर पीछल, टोले तीसरी भोम आवें चल ॥ १२७

इस प्रकार यहाँ पर नित्य अनेक प्रकारकी लीलाएँ होती हैं जिससे धामधनी भी आनन्दका अनुभव करते हैं। सभी सखियाँ चतुर्थ प्रहरमें अपने समूहके साथ तीसरी भूमिकामें आ जाती हैं।

मंदिर आइयां सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब ।

तब आए सबे सुखपाल, स्यामाजी बैठे संग लाल ॥ १२८

जब सभी सखियाँ तीसरी भूमिकामें आ जाती हैं तब वहाँ पर द्वार खुलते ही उन्हें श्रीराजश्यामाजीके दर्शन होते हैं। उस समय सभी सुखपाल (विमान) चले आते हैं। श्रीश्यामाजी श्रीराजजीके साथ विमानमें विराजमान होती हैं।

दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कै रंग ।

सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन ॥ १२९

एक-एक विमानमें दो-दो सखियाँ विराजमान होकर परस्पर आनन्दमयी बातें करती हैं एवं अपनी इच्छानुसार विमान चलाकर ले जाती हैं।

या जमुनाजी या तलावें, आए खेलें जो मन भावें ।

श्रीराज स्यामाजीके डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे ॥ १३०

यमुनाजी अथवा ताल (हौजकौसर) पर जाकर सभी अपनी इच्छानुसार क्रीड़ा करती हैं वे अपना विमान भी श्रीराज श्यामाजीके निकट ही उतार लेती हैं।

जुथ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें ।

तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब ॥ १३१

इस प्रकार सखियाँ अपने-अपने समूहके साथ वनमें खेलती हुई नए-नए रङ्ग भरती हैं। सभी सखियाँ दिनके चतुर्थ प्रहरमें दो घड़ी शेष रहने तक वहाँ पर खेलती हैं।

सैयां मिलकर पीउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें ।

श्रीराज स्यामाजी उठ कर, उतारे हैं वस्तर ॥ १३२

तत्पश्चात् सभी मिलकर प्रियतम धनीके पास आती हैं और जल क्रीड़ा

करनेकी बात करती हैं. श्रीराजश्यामाजी उठकर वस्त्र उतारने लगते हैं.

पेहेनें वस्त्र जो झीलन, राजश्यामाजी सैयां सबन ।

इत एक घडीलों झीलें, जल क्रीडा कै रंग खेलें ॥ १३३

श्रीराजश्यामाजी एवं सभी सखियोंने स्नानके लिए योग्य वस्त्र धारण किए. यहाँ पर सभीने एक घड़ी तक अनेक प्रकारसे जलक्रीड़ाएँ कीं.

बाकी दिन रह्यो घडी एक, तामें सिनगार किए विवेक ।

हुओ संझाको अवसर, राजश्यामाजी बैठें सिनगार कर ॥ १३४

एक घड़ी दिन शेष रहने पर सभीने विवेकपूर्वक शृङ्गार किया. अब संध्याका समय हो गया है, इस अवसर पर श्रीराजश्यामाजी शृङ्गार कर बैठ जाते हैं.

मिनो मिन सिनगार करावें, एक दूजीके आगे धावें ।

उछरंगतिआं आवें आगे, राजश्यामाजी के पांउ लागें ॥ १३५

सखियाँ भी परस्पर शृङ्गार कर दौड़ती हुई एक दूसरीके आगे आ जाती हैं एवं उमङ्गसे उछलती हुई आकर श्रीराजश्यामाजीके चरणोंमें प्रणाम करती हैं.

पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाह्या त्यों करें ।

कै रंग फूले फूल वास, लेत नए नए वनको विलास ॥ १३६

सखियाँ श्रीराजश्यामाजीके चरणोंमें प्रणाम कर पीछे लौटती हुई इच्छानुकूल क्रीड़ाएँ करती हैं. विभिन्न रङ्गोंके खिले हुए पुष्पोंकी सुरभि (सुगन्ध) से वनका समग्र वातावरण सुगन्धित होता है. इस समय वनमें सभी आनन्दपूर्वक विलास करते हैं.

ससी वन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजारेज ।

करें खेल अति उछरंग, तामें कबूँ कबूँ पियाजीके संग ॥ १३७

रात्रिके समय चन्द्रमाका शीतल प्रकाश पूरे वन पर पड़नेसे भूमिके कण-कण प्रकाशित हो जाते हैं. सभी सखियाँ उसमें उत्साहपूर्वक खेलती हैं. श्रीराजजी भी कभी-कभी उनके साथ क्रीड़ा करते हैं.

इत कै विध मेवा आरोगें, वनहीं को लेवें विभोगें ।

इत नित विलास विसाल, पीछे आए बैठे सुखपाल ॥ १३८

यहाँ पर सभी अनेक प्रकारके मेवे और वनके फलोंका रसास्वाद लेते हैं। इस प्रकार यहाँ नित्यप्रति प्रेम विलास होता रहता है। तदुपरान्त सभी सखियाँ पुनः विमानोंमें आकर बैठ जाती हैं।

इत हुई पोहोर एक रात, सुखपाल चलावें चित चाहत ।

घरों आए सुखपाल सारे, राजस्यामाजी पांचमी भोम पधारे ॥ १३९

इस प्रकार रात्रिका एक प्रहर व्यतीत होता है। सखियाँ अपनी इच्छानुसार विमान चलाती हैं। सभी अपने-अपने विमानमें बैठकर समूहके साथ रङ्गमहलमें लौट आती हैं। पश्चात् श्रीराजजी एवं श्यामाजी पाँचवीं भूमिकामें पधारते हैं।

पंद्रह दिन खेलें वन, पंद्रह दिन सुख भवन ।

अब कहूं भवन को सुख, जो श्रीधनीजी को कह्यो आप मुख ॥ १४०

सखियाँ शुक्ल पक्षमें पन्द्रह दिन तक वनमें क्रीड़ाएँ करती हैं एवं कृष्ण पक्षमें पन्द्रह दिन तक रङ्गमहलमें ही विहार करती हैं। अब मैं रङ्गभवनके उन सुखोंका वर्णन करता हूँ, जिनको स्वयं सद्गुरु धनीने अपने मुखारविन्दसे व्यक्त किया है।

वनथें आए सिनगार कर, संझा तले भोम मंदर ।

आरोग चढे भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुथी ॥ १४१

सभी सखियाँ सन्ध्याके समय वनसे शृङ्गार कर प्रथम भूमिकामें लौटती हैं। यहाँ पर रसोईकी हवेलीमें भोजनलीला कर चौथी भूमिकामें चली जाती हैं जहाँ नवरङ्गबाईका समूह नृत्यलीला करता है।

निरत करें नवरंगबाई, पासे कै विध बाजे बजाई ।

निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें ॥ १४२

नवरङ्गबाई नृत्य करती है। उसके समीप विभिन्न प्रकारके वाद्ययन्त्रोंके स्वर गूँजने लगते हैं। वह नृत्य करती हुई गायन भी करती है। सभी सखियाँ समीपमें बैठकर पूरक स्वर देती हैं।

कर भूखन बाजे चरन, ताकी पडताल परे सब धरन ।

पांड ऐसी कला कोई साजे, सबमें एक घूंघरी बाजे ॥ १४३

उस समय हाथों और पाँवोंमें पहने हुए आभूषणोंके मधुर स्वर गूँजते हैं. उनकी प्रतिध्वनि भूमि पर पड़ती है. नृत्य करते समय वह अपने चरणोंसे कोई ऐसी कला दिखाती है कि सभी आभूषणोंमें मात्र एक घुँघरु ही बजती है.

जब दोए रे दोए बोलावें, तब तैसेही पांड चलावें ।

तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन ॥ १४४

जब सखियाँ चाहती हैं कि दो-दो घुँघरु बजे तब उसीके अनुरूप ही उनके पाँव उठते हैं. इसी प्रकार जब तीन घुँघरुके लिए इच्छा होती है तब तीन ही बजती हैं और चारकी इच्छा होती है तो चार घुँघरु एक साथ बजती हैं. इस प्रकार सभी नृत्य कलामें प्रवीण हैं.

जो बोलावें झाँझरी एक, जानों एही खेल विसेक ।

जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे ॥ १४५

जब एक ही झाँझरी आभूषणकी ध्वनि निकल रही होती है तब भी उसकी कलाको श्रेष्ठ समझा जाता है. इस प्रकार सखियाँ जिन आभूषणोंसे जैसी ध्वनि निकालना चाहती हैं, वे आभूषण वैसी ही ध्वनि करते हैं.

जब बोलावें सरवों अंगे, भूखन बोलें सबें एक संगे ।

जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छवि जुदी सबोंकी सोहावें ॥ १४६

जब वे चाहती हैं कि अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गोंके सभी आभूषण एक साथ बजे तब सभी आभूषण एक साथ ध्वनि करते हैं. जब सबके स्वर अलग-अलग निकालना चाहती हैं तब उन सबका माधुर्य स्वयंमें भी मनमोहक लगता है.

भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान ।

क्यों कर कहूं ए निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत ॥ १४७

इस प्रकार सब भूषण अलग-अलग स्वरोंमें ध्वनित होते हैं. मुखसे बजाए गए वाद्यमें-से एक तान निकलती है. इस नृत्यकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? इसे तो वही जान सकता है जो इस लीलाको हृदयमें धारण करता है.

अनेक स्वरों बाजे बाजें, पडछंदे भोम सब गाजें ।

सुंदरियां सोभा साजें, सो तो धनीजीके आगे बिराजें ॥ १४८

जब अनेक स्वरोंमें वाद्ययन्त्र बजते हैं तब उनकी प्रतिध्वनि पूरी भूमिकामें गूँज उठती है। इस समय सभी सखियाँ सुशोभित होकर प्रियतम धनीके समक्ष आकर बैठ जाती हैं।

निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैयां सब समान ।

इन लीला में आयो चित, छोड्यो जाए न काहूँ कित ॥ १४९

इस समय नृत्य एवं आभूषणोंकी गूँज तथा सखियोंका गायन समान रूपसे मुखरित होता है। इस लीलाको जो हृदयस्थ करता है वह कभी भी अपनी दृष्टिको इससे दूर नहीं करता।

छुटकायो भी ना छूटे, तो आतम द्रस्ट कैसे टूटे ।

इत बोहोत लीला कहूँ केती, सोई जाने लगी जाए जेती ॥ १५०

वस्तुतः इस लीलासे दृष्टि हटाना चाहें तो भी नहीं हटती है। क्योंकि ऐसी स्थितिमें आत्म-दृष्टि कैसे विमुख हो सकती। यहाँ पर ऐसी अनेक लीलाएँ होती हैं, उनका कितना वर्णन किया जाए। जो सखियाँ जिन लीलाओंमें संलग्न होती हैं वे ही उन लीलाओंको भलीभाँति जानती हैं।

थंभ दिवालौं नंगों तेज जोत, जानो निरत सबों ठौर होत ।

पिया पीछल मंदिर सेत दिवाल, तामें कै रंग नंग विसाल ॥ १५१

नृत्यकी इस हवेलीमें जितने स्थम्भ और दीवारें हैं उनमें जड़ायमान रत्नोंके प्रकाशमें ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वत्र नृत्य हो रहा है। धामधनीके सिंहासनके पृष्ठभाग पर स्थित श्वेत दीवार पर विशेष रूपसे अनेक रङ्ग झलकते हैं।

दाहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कै कटाव दिवाल दिल साखी ।

बाई तरफ पीली जो दिवाल, माहें स्याम सेत रंग लाल ॥ १५२

सिंहासनकी दायी ओरके मन्दिरकी दीवार लाक्षा (कथई) रङ्गकी है। उसमें अनेक प्रकारके कटाव और चित्रकारी (नक्कासी) हैं। इसी प्रकार बायीं ओरकी

पीली दीवार पर कहीं श्वेत, कहीं श्याम और कहीं लाल रङ्ग दिखाई देते हैं.

सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत ।

रह्या नूर नजरो वरस, जुबां क्या कहे धनीको रंग रस ॥ १५३

सामनेके मन्दिरकी दीवार हरे रङ्गकी है. एक-दूसरेके सामने स्थित इन मन्दिरोंसे उठती हुई किरणें परस्पर स्पर्धा करती हैं. प्रियतम धनीकी दृष्टिसे प्रकाशकी वर्षा होती है. इस जिह्वाके द्वारा उस प्रेमरसका वर्णन नहीं हो सकता है.

पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख आग्या करके बोलावें ।

इतहीं थें आग्या करी, पांड लाग सेज्या दिल धरी ॥ १५४

इस प्रकार रात्रिके एक प्रहर तक वहाँ पर नृत्य लीला होती है तदुपरान्त श्रीराजजी सभीको बुलाकर आज्ञा देते हैं. सभी सखियाँ श्रीराजजीकी आज्ञा शिरोधार्य करती हुई हृदयमें शयनकी इच्छा धारण कर उन्हें प्रणाम करती हैं.

दर्ई आग्या सबों बड भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी ।

श्रीराजस्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन बधारे ॥ १५५

श्रीराजजी सभीको आज्ञा देते हैं. पश्चात् सखियाँ उनको प्रणाम कर अपने-अपने मन्दिरोंमें जाती हैं. श्रीराजस्यामाजी विश्रामके लिए शय्या पर जाते हैं तब कतिपय सखियाँ उनके वस्त्र तथा आभूषण उतारने लगती हैं.

ए मंदिर रंग परवाली, सो में क्या कहूं ताकी लाली ।

माहें अनेक रंगोंकी जोत, सो मैं कही न जाए उदोत ॥ १५६

यह मन्दिर परवाली रङ्गका है. मैं उसकी लालिमाका वर्णन कैसे करूँ ? इसमें विभिन्न प्रकारके रङ्ग झलकते हैं. मैं उनके प्रकाशका भी वर्णन नहीं कर सकता.

पीछल बीसेक पीउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां ।

पीउजी सबों मंदिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे ॥ १५७

श्रीराजजीकी सेवामें बैठी हुई बीस सखियाँ भी अपने-अपने मन्दिरोंमें लौट

जाती हैं। प्रियतम धनी भी सभी मन्दिरोंमें पधारते हैं। इस प्रकार सभी सखियाँ श्रीराजजीके स्वरूपको हृदयमें धारण कर नित्य शय्या विहार करती हैं।

अब क्यों रे कहूँ प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्यो चितको ।

सुख लेवें सारी रात, तीसरी भोम आवें उठ प्रात ॥ १५८

अब मैं इस अलौकिक प्रेमका वर्णन कहाँ तक करूँ ? जिसके हृदयमें जैसी इच्छा होती है वह वैसा ही आनन्द अनुभव करती है। इस प्रकार सखियाँ पूरी रात अखण्ड सुखका अनुभव कर प्रातःकाल उठकर तीसरी भूमिकामें आती हैं।

अब कहूँ या समें की बात, सो तो अतिबडी विख्यात ।

कोई होसी सनमंधी इन घर, सो लेसी वचन चित धर ॥ १५९

अब मैं इस समयकी शोभाका वर्णन करता हूँ। इसकी महिमा तो और भी अधिक है। जो आत्माएँ परमधामकी होंगी वे ही इन वचनोंको हृदयमें धारण कर सकेंगी।

ए बानी तिछन अति सार, सो निकसेगी वार के पार ।

सनमंधियों की एही पेहेचान, वाके सालसी सकल संधान ॥ १६०

यह वाणी इतनी तीक्ष्ण (विलक्षण) और सारगर्भित है कि ब्रह्मात्माओंके हृदयको बींधकर पार हो जाती है। परमधामकी आत्माओंकी यही पहचान है कि यह वाणी उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग (सन्ध-सन्ध) को बींध देती है।

जाको लगी सोई जाने, मुख वरनी न जाए बखाने ।

खेल मांगके आइयां जित, धनी आएके बैठे तित ॥ १६१

यह वाणी जिनके हृदयको बींध देती है वे ही इसके महत्त्वको समझ सकते हैं। इसलिए इसका वर्णन सम्भव नहीं है। खेल देखनेकी माँगकर हम जहाँ आकर बैठ गईं, श्रीराजजी भी उसी मूलमिलावामें आकर विराजमान हुए।

पासे बैठके खेल देखावें, हांसी करने को आप भुलावें ।

भुलियां आप खसम वतन, खेल देखाया फिराए के मन ॥ १६२

धामधनी अपनी आत्माओंको अपने निकट ही बैठाकर यह खेल दिखा रहे

हैं. हमारी हँसी करनेके लिए ही वे हमें इस खेलमें भूला रहे हैं. धामधनीने ऐसा खेल दिखाकर हमारा मन भ्रमित कर दिया कि हम स्वयंको, धामधनीको तथा परमधामको ही भूल गई.

अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन ।

जित मिल कर बैठियां तुम, याद करो आप खसम ॥ १६३

अब मैं सभी सुन्दरसाथसे आह्वान करता हूँ , मेरे इन वचनोंसे ही तुम परमधाममें जागृत हो सकोगे. जहाँ पर तुम सभी मिलकर बैठे हुए हो अब उस परमधामको, स्वयंको तथा अपने प्रियतम धनीको याद करो.

तले भोम थंभों की जुगत, कही जाए न बानीसों विगत ।

इत बडा चौक जो मध, ताकी अति बडी सोभा सनंध ॥ १६४

रङ्गभवनकी प्रथम भूमिका (मूलमिलावा) में बड़ी युक्ति पूर्वक स्तम्भ सुशोभित हैं. इस वाणीसे उनका वर्णन नहीं हो सकता है. यहाँ पर मध्यमें एक विशाल चौक है जिसकी शोभा ही अद्वितीय है.

आगे पीछे थंभोंकी हार, दाएं वाएं दोऊ पार ।

जोत चारों तरफों जवेर, झलकार छाई चौफेर ॥ १६५

इस मूलमिलावके मध्यमें सिंहासनके आगे-पीछे तथा दायें-बायें स्तम्भोंकी दो पङ्क्तियाँ हैं. रत्नोंके इन स्तम्भोंकी ज्योति चारों ओर झिलमिला रही है.

मंदिर दिवाल्लों थंभों के जो पार, सोभा करत अति झलकार ।

जोत ऊपर की जो आवे, तले की भी सामी ठेहेरावे ॥ १६६

मन्दिरों, दीवारों एवं स्तम्भोंके मध्यमें स्थित सिंहासनकी शोभा चारों ओर झलझलाहट कर रही है. यहाँ पर ऊपर चँदवा एवं नीचे गलीचाकी ज्योति आमने-सामने टकराती है.

इत अनेक विधों के जो नंग, ताकी किरना उठें कै रंग ।

आवत साम सामी अभंग, सो मैं क्यों कहूं नूर तरंग ॥ १६७

यहाँ विभिन्न प्रकारके रत्न जड़ायमान हैं. उनसे भाँति-भाँतिके रङ्गोंकी किरणें उठती हैं और ये किरणें आमने-सामनेसे आकर परस्पर टकराती हैं. मैं

इनकी तेजोमयी तरङ्गोंका वर्णन कैसे करूँ ?

इत याही चौक के बीच, बिछाया है दुलीच ।

दुलीचा भी वाही रसम, ताकी अति जोत नरम पसम ॥ १६८

मूल मिलावकी इस हवेलीके मध्यके चौकमें एक गलीचा बिछा हुआ है। यह गलीचा (दुलीचा) परमधामकी दिव्यताके अनुसार अत्यन्त कोमल एवं प्रकाशमान है।

याकी हंसत बेल फूल रंग, सो भी करत जवेरों सों जंग ।

किरना होत न पीछी अभंग, ए भी सोभित जवेरों के संग ॥ १६९

इस कालीनमें सुशोभित बेलोंके खिले हुए फूल हँसते हुए दिखाई देते हैं। उनकी ज्योति भी रत्नोंसे स्पर्धा करती हुई-सी लगती है। इनसे उठती हुई किरणें निश्चय ही पीछे नहीं हटतीं। इनकी शोभा भी रत्नोंकी किरणोंके समान है।

इत धर्या जो सिंघासन, राजस्यामाजीके दोऊ आसन ।

ताको रंग सोभित कंचन, जडे मानिक मोती रतन ॥ १७०

यहाँ पर स्थित सिंहासनमें श्री राजस्यामाजीके दो आसन विद्यमान हैं। कञ्चन रङ्गका यह सिंहासन मोती एवं माणिक्य जैसे रत्नोंसे जड़ायमान है।

पीछले तीन थंभ जो खडे, ता बीच कै नकसों नंग जडे ।

तकियों के बीच दोऊ सिरे, ताके फूलन पर नंग हरे ॥ १७१

सिंहासनके पृष्ठभागके तीन स्तम्भोंमें भी चित्रकारीके साथ अनेक प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं। तकियोंके दोनों किनारों पर फूल शोभायमान हैं और उनमें हरे रङ्गके रत्न लगे हुए हैं।

उतरती कांगरी जो हार, बनी आसमानी नंग तरफ चार ।

कै बेल फूल जडे मांहीं, ताकी उठत अनेक रंग झाँई ॥ १७२

इन तकियोंकी उतरती-चढ़ती किनारी पर चारों ओर नीले रङ्गके रत्न हैं। इसके साथ अनेक प्रकारकी बेल और फूल भी सुशोभित हैं जिनसे विभिन्न रङ्गोंकी किरणें उठ रही हैं।

कै रंग नंग कहूं केते, हर एक तरंग कै देते ।

बाई बगलों तकिए दोए, बेलां बारीक वरनन कैसे होए ॥ १७३

ऐसे अनेक रङ्गोंके रत्न हैं उनमें-से प्रत्येक रत्नसे किरणोंकी तरङ्गें निकलती हैं। दायीं-बायीं दोनों ओर दो तकिए विद्यमान हैं। इन पर शोभायमान सूक्ष्म बेलोंका वर्णन किस प्रकार हो सकेगा ?

जो जनम सारे लों कहिये, तो एक नकस को पार न पैए ।

पचरंगी पाटी मीहीं भरी, कै विध खाजली माहें करी ॥ १७४

जीवन भर वर्णन करने पर भी इनकी एक चित्रकारीका पार पाया नहीं जा सकता। इनमें पाँच रङ्गोंकी निवारमें बहुत ही सूक्ष्म प्रकारसे चित्रकारी हुई है। इस प्रकार विभिन्न प्रकारसे इसका निर्माण हुआ है।

कै चाकले चित्रकारी, ता पर बैठे श्रीजुगलबिहारी ।

दोऊ स्वरूप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे ॥ १७५

आसनों (चाकलों) में भी विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी है, उनमें श्रीराजश्यामाजी विराजमान होते हैं। इन दोनों युगलस्वरूपको हृदयमें धारण कर आत्मा वारंवार अखण्ड सुखका अनुभव करती है।

आतमसों न्यारे न कीजे, आतम बिन काहूं न कहीजे ।

फेर फेर कीजे दरसन, आतमसे न्यारे न कीजे अधखिन ॥ १७६

इन युगलस्वरूपको क्षणमात्रके लिए भी अपनी आत्मासे दूर न होने दें। इनके विषयमें अपने आत्माके अतिरिक्त अन्य किसीसे कहें भी नहीं। बार-बार इनके दर्शन करते हुए इनको आधे क्षणके लिए भी आत्मासे दूर न होने दें।

पेहेलें अंगुरी नख चरन, मस्तकलों कीजे वरनन ।

सब अंग वस्तर भूखन, सोभा जाने आतम की लगन ॥ १७७

सर्वप्रथम इनके चरणोंकी उङ्गलियोंसे मस्तककी शोभाका वर्णन करते हैं। सभी अङ्गों पर वस्त्र एवं आभूषण सुसज्जित हैं। यह शोभा आत्मिक भावनासे ही अनुभव की जा सकती है।

यों सरूप दोऊ चित में लीजे, अंग वार डार सब दीजे ।

गलित गात सब भीजे, जीव भानं भूँन टूक कीजे ॥ १७८

इस प्रकार इन युगल स्वरूपको हृदयमें धारण कर उन पर स्वयं समर्पित हो जाएँ. प्रेमकी मस्तीमें हृदयको द्रवित करते हुए अपने प्राणोंको ही समर्पित कर दें.

रंग करो विनोद हांस, सांचा सुख ल्यों प्रेम विलास ।

घरों सुख सदा खसम, लेत मेरी परआतम ॥ १७९

प्रेम मग्न होकर अपने प्रियतमके साथ हास्य विनोद करें एवं प्रेम विहारका सच्चा सुख प्राप्त कर लें. इस प्रकार मेरी पर-आत्मा परमधाममें सदा सर्वदा धामधनीके नित्य सुखोंका आनन्द लेती है.

पर इत सुख पायो जो आतम, सो तो कबहूँ न काहूँ जनम ।

इत बैठे धनी साथ मिल, हांसी करनेको देखाया खेल ॥ १८०

इस समय मेरी आत्माने जो सुख प्राप्त किया है वह उसने कभी भी प्राप्त नहीं किया था. यहाँ पर धामधनी सभी ब्रह्मात्माओंके साथ बैठे हुए हैं. उनका उपहास करनेके लिए ही उन्होंने यह खेल दिखाया है.

आगे बारे सहस्र बैठियां हिल मिल, जानो एकै अंग हुआ भिल ।

याके क्यों कहूँ सरूप सिनगार, जाने आतम देखनहार ॥ १८१

श्रीराजश्यामाजीके सम्मुख बारह हजार सखियाँ हिलमिल कर इस प्रकार बैठी हैं मानों सभीका अङ्ग एक ही है. मैं इनके स्वरूप तथा शृङ्गारका वर्णन किस प्रकार करूँ ? उनको देखने वाली आत्मा ही इसका अनुभव कर सकती है.

कै कोट कहूँ जो अपार, जुबां क्या कहेगी झलकार ।

जैसे भूखन तैसे वस्तर, तैसी सोभा सरूप सुंदर ॥ १८२

इस अद्वितीय शोभाको करोड़ों बार कहना चाहें तो भी यह जिह्वा उसकी आभाका वर्णन नहीं कर सकती. जैसे उनके आभूषण हैं वैसे ही वस्त्र भी हैं. उनके सुन्दर स्वरूपकी शोभा भी उसी प्रकारकी है.

इत बडे चौक मिलावें, धनी साथको बैठे खेलावें ।

जो खेल मांग्या है सैन्यन, सो देखाया फिराएके मन ॥ १८३

मूलमिलावाके इस विशाल चौकमें सखियोंको बैठाकर श्रीराजजी यह खेल दिखा रहे हैं. ब्रह्मात्माओंने जिस प्रकारके खेलकी माँग की है उन्होंने उनके मनको भ्रमित कर यहीं पर यह खेल दिखा दिया.

धनी धाम आप बिसरजन, खेल देखाया जो सुपन ।

तामें बांधी ऐसी सुरत, सो अब पीछी क्योंए ना फिरत ॥ १८४

धामधनी, परमधाम तथा स्वयंको भूला देने वाले इस खेलको धामधनीने स्वप्नकी भाँति दिखा दिया. उसमें ब्रह्मात्माओंकी सुरता इस प्रकार बँध गई कि अब वह किसी भी प्रकार नहीं लौट रही है.

धनी दिए दरसन ता कारन, करने को सैयां चेतन ।

धनी आप सैयों को दर्ई सुध, सो हम गावत अनेक विध ॥ १८५

ब्रह्मात्माओंको सचेत करनेके लिए ही धामधनीने इस स्वप्नवत् जगतमें सद्गुरुके रूपमें दर्शन दिया. उन्होंने स्वयं यहाँ पधारकर ब्रह्मात्माओंको यह सुधि प्रदान की है. उसीको मैं अनेक प्रकारसे गायन कर रहा हूँ.

जागियां तो भी खेल न छोड़ें, फेर फेर दुख को दौड़ें ।

धनी याद देत घर को सुख, तोभी छूटे ना लग्यो जो विमुख ॥ १८६

किन्तु हम ब्रह्मात्माएँ जागृत होने पर भी इस स्वप्नवत् खेलको छोड़ना नहीं चाहती और बार-बार इन्हीं दुःखोंके लिए दौड़ती हैं. धामधनी हमें परमधामके सुखोंका स्मरण कराते हैं तथापि हमसे ये दुःख नहीं छूटते हैं. इस प्रकार हम धामधनीसे विमुख हो गई हैं.

अब आप जगाएके धनी, हांसी करसी मिनों मिने घनी ।

अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन ॥ १८७

अब इस अज्ञानमयी निद्रासे जागृत कर धामधनी हमारी विशेष हँसी करवाएँगे. इसलिए मैं सुन्दरसाथको यह बात कह रहा हूँ कि इन वचनोंको सुनकर तुम जागृत हो जाओ.

ए जो किया है तुम कारन, धनी धाम सैयां व रनन ।

जित मिलकर बैठियां तुम, याद करो आप खसम ॥ १८८

इस प्रकार तुम्हारे लिए ही धामधनी, परमधाम तथा ब्रह्मात्माओंका वर्णन किया जा रहा है। जिनके चरणोंमें तुम सभी मिलकर बैठे हो उन धामधनीको याद करो।

करो अंतरगत गम, ए जो जाहेर देखाया हम ।

याद करो वतन सोई, और न जाने तुम बिना कोई ॥ १८९

मैं तुम्हें जो प्रत्यक्ष दिखा रहा हूँ, उसे तुम हृदयङ्गम करो। इसी मूल घर परमधामको याद करो। तुम्हारे बिना अन्य कोई भी इसे जान नहीं सकता है।

तुम मांगी धनीपैं करके खांत, ए जो धनिएं करी इनायत ।

याद करो सोई साइत, ए जो बैठके मांग्या जित ॥ १९०

तुमने स्वयं इच्छा व्यक्त कर धामधनीसे इस खेलकी माँग की। धामधनीने भी तुम्हें अपनी अङ्गना समझकर तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण की है। इसलिए अब उस घड़ीको याद करो जब तुमने मूलमिलावेमें बैठकर यह खेल देखनेकी माँग की थी।

स्यामस्यामाजी साथ सोभित, क्यों न देखो अंतरगत ।

पीछला चार घड़ी दिन जब, ए सोई घड़ी है अब ॥ १९१

वहाँ पर श्रीश्यामश्यामाजी तथा सखियाँ शोभायमान हैं। तुम इस दृश्यको अपनी अन्तरात्मासे क्यों नहीं देखते ? जब हमने खेल माँगा था उस समय चार घड़ी दिन शेष था, अब भी वही घड़ी है।

याद करो जो कहा मैं सब, नींद छोडो जो मांगी है तब ।

याद करो धनीको सरूप, श्रीस्यामाजी रूप अनूप ॥ १९२

मैंने जो कुछ कहा है उसे अब याद करो, उस समय तुमने जो माँगा था उस नींद (माया) को त्याग दो। अब अपने धनीके स्वरूपको याद करो, श्रीश्यामाजीका स्वरूप अनुपम है।

याद करो सोई सनेह, साथ करत मिनों मिने जेह ।

सुख सैयां लेवें नित, अंग आतम जो उपजत ॥ १९३

उस अलौकिक प्रेमका भी स्मरण करो जो सखियाँ परस्पर किया करती हैं। वहाँ पर एक आत्माके हृदयमें जो इच्छा उत्पन्न होती है उसका सुख सभी ब्रह्मात्माएँ नित्यप्रति प्राप्त करती हैं।

रस प्रेम सरूप है चित, कै विध रंग खेलत ।

बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती ॥ १९४

श्री राज श्यामाजीका प्रेम रस स्वरूप है। उसे हृदयङ्गम करो। परमधाममें तुम सभी आनन्दमयी क्रीड़ाएँ करती हो। इस प्रकार इन्द्रावती जाग्रत बुद्धिके द्वारा ब्रह्मात्माओंको जगाती है एवं उन्हें परमधामके अखण्ड सुख दिखाती है।

प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयों को भी पिलावती ।

पियाजी कहें इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती ॥ १९५

सद्गुरुकी आज्ञानुसार इन्द्रावती प्रेमका प्रवाह चलाती है। सभी सखियोंको प्रेम रसका पान कराती है तथा तारतम ज्ञानकी ज्योतिसे सभीकी अन्तरात्माको आलोकित करती है।

तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती ।

सैयां जाने धाममें पैठियां, ए तो घरहींमें जाग बैठियां ॥ १९६

महामति इसी तारतम ज्ञानके द्वारा प्रेमकी तुलना करते हैं एवं उससे परमधामके द्वार खोलते हैं। तब सभी ब्रह्मात्माएँ परमधाममें प्रवेश कर रही अनुभव करती हैं। वस्तुतः वे तो अपने घरमें ही जाग्रत होकर बैठी हुई हैं।

प्रकरण ३ चौपाई २८२

सूरत इसक पैदा होनेकी

तुमको इसक उपजावने, करुं सो अब उपाए ।

पूर चलाऊं प्रेम को, ज्यों याही में छक छकाए ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम्हारे हृदयमें प्रेम प्रकट करनेके लिए अब मैं कोई उपाय करता हूँ। प्रेमकी ऐसी धारा प्रवाहित करता हूँ कि तुम सभी उसमें निमग्न

होकर आनन्दित हो जाओगी.

इसक जिन विध उपजे, मैं सोई देऊं जिनस ।

तब इसक आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस ॥ २

जिस प्रकार तुम्हारे हृदयमें प्रेम उत्पन्न हो जाएगा मैं वही विधि आरम्भ करूंगा. अपने हृदयमें प्रेम प्रकट हो गया है ऐसा तभी समझना जब तुम इसके रसमें आनन्दविभोर हो जाओगी.

ए सुख बिसरे धनीय के, इन सुपन भोममें आए ।

सो फेर फेर याद देत हों, जो गयो तुमें भुलाए ॥ ३

इस स्वप्नवत् जगतमें आकर तुमने धामधनीके अखण्ड सुख भूला दिए हैं. इसलिए मैं तुम्हें बार-बार उनका स्मरण कराता हूँ.

कीजे याद मिलाप धनीय को, और सखियों के सनेह ।

रात दिन रंग प्रेममें, विलास किए हैं जेह ॥ ४

अपने धनीके मिलनकी उन घड़ियोंको याद करो और सखियोंके स्नेहको भी याद करो कि किस प्रकार प्रेमके रङ्गमें रङ्गे हुए तुम अपने प्रियतमके साथ रमण किया करती थीं.

निस दिन रंग मोहोलनमें, साथ स्यामाजी स्याम ।

याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम ॥ ५

हम सभी रङ्गमहलमें रात-दिन श्रीश्यामश्यामाजीके साथ रहती थीं. अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गोंसे उन सुखोंको याद करो जिनको हम आठों प्रहरकी लीलाओंसे प्राप्त किया करती थीं.

चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन ।

निमख एक ना छोडिए, कर मनसा वाचा करमन ॥ ६

अपने चित्तको सचेत कर उन सुखोंको याद करो. यही आत्माकी अमूल्य सम्पदा है. अपने मन, वचन एवं कर्मसे क्षण भरके लिए भी इस निधि को दूर होने मत दो.

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख ।

इसक याहीसों आवहीं, याहीसों होइए सनमुख ॥ ७

इन सुखोंका स्मरण होते रहना ही आत्माकी जागृति है. इसीसे प्रेमका आविर्भाव होगा. इसलिए सर्वदा इसीकी ओर उन्मुख बनीं रहो.

इसक धनीको आवहीं, याही याद के माहिं ।

इसक जोस सुख धनी बिना और पैदा कहूं नाहिं ॥ ८

इन सुखोंका स्मरण करने पर अपने प्रियतम धनीके प्रति प्रेम प्रकट होगा. धामधनीके इन सुखोंको याद किए बिना प्रेम तथा जोश प्रकट नहीं हो सकते.

ताथें पल पलमें ढिग होइए, सुख लीजे जोस इसक ।

त्योँ त्योँ देह दुख उडसी, संग तज मुनाफक ॥ ९

इसलिए प्रति-क्षण अपने प्रियतमके निकट होते हुए उनके आवेश एवं प्रेमका सुख प्राप्त करो. तुम जैसे-जैसे मिथ्याचारका त्याग करोगी वैसे-वैसे तुम्हारे शारीरिक दुःख भी दूर हो जाएँगे.

जोलों इसक न आइया, तोलों करो उपाए ।

योहीं इसक जोस आवहीं, पल में देसी पट उडाए ॥ १०

जब तक तुम्हारे हृदयमें प्रेम प्रकट नहीं होगा तब तक इस प्रकारके प्रयत्न करती रहो. जैसे ही प्रेम और जोश प्रकट होंगे तब पल मात्रमें मायाका आवरण दूर हो जाएगा.

पल पलमें पट उडत है, बढत बढत अनूकरम ।

इसक आए जोस धनी के, उड गयो अंतर भरम ॥ ११

जैसे पल-पलमें मायाका आवरण हटता जाएगा वैसे ही प्रेम भी क्रमशः बढ़ता जाएगा. इस प्रकार धामधनीके प्रेम और जोश प्राप्त होने पर अन्तरात्माके भ्रम दूर हो जाएँगे.

निमख निमख में निरखिए, पट न दीजे पल ल्याए ।

छेटी छिन ना पर सके, तब इसक जोस अंग आए ॥ १२

इसलिए प्रतिक्षण परमधामके सुखोंकी ओर देखती रहो. पलमात्रके लिए भी

अज्ञानके आवरणको आने मत दो. जब एक क्षणके लिए भी अन्तर नहीं रहेगा तभी परब्रह्मके आवेश और प्रेम हृदयमें आ जाएँगे.

इसक पेहेलें अनभवी, निज सरूप निजधाम ।

तिन खिन बेर न होवहीं, धनी लेत असल आराम ॥ १३

सर्वप्रथम प्रेमके द्वारा ही श्रीराजजीके स्वरूप तथा परमधामका अनुभव होने लगेगा तब एक क्षणका भी विलम्ब किए बिना धामधनी तुम्हें अपने हृदयसे लगा लेंगे.

बैठे मूल मेले मिने, धनी आगूं अंग लगाए ।

अंग इसक जो अनभवी, तुम क्यों न देखो चित ल्याए ॥ १४

तुम मूलमिलावामें धामधनीके समक्ष परस्पर अङ्गसे अङ्ग मिलाकर बैठी हुई हो. तुमने वहाँ पर जिस प्रकार प्रेमका अनुभव किया है अब उसे अपने हृदयमें क्यों अनुभव नहीं कर रही हो.

ए वचन विलास जो पेड के, आए हिरदें आतम के अंग ।

तब खिन बेर न लागहीं, असल चित एक रंग ॥ १५

परमधामके प्रेमविलासके इन वचनोंको जब आत्मा हृदयङ्गम करने लगेगी, तब पर-आत्माके साथ एक चित होनेमें उसे क्षण मात्रका भी विलम्ब नहीं होगा.

बैठते उठते चलते, सुपन सोवत जागृत ।

खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब विध इत ॥ १६

इसलिए बैठते, उठते, चलते, फिरते, खाते, पीते, हँसते-खेलते, स्वप्नमें तथा जागृतिमें भी तुम यहाँ पर परमधामके उन सुखोंका अनुभव करती रहो.

एह बल जब तुम किया, तब अलबत बल सुख धाम ।

अरस परस जब यों हुआ, तब सुख देवें स्यामा स्याम ॥ १७

इसके लिए यदि तुमने साहस किया तो तुम्हें निश्चय ही परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव होने लगेगा. इस प्रकार जब आत्मा और पर-आत्मामें

सुखोंका आदान-प्रदान होगा तब श्यामश्यामाजी तुम्हें अखण्ड सुखका अनुभव करवाएँगे.

जिन जानो ढील इसक की, जब रस आयो अंतसकरन ।

तब सुख पाइए धाम के, निस दिन रंग रमन ॥ १८

जब अन्तःकरणमें तीव्र उत्कण्ठा जागृत होगी तब प्रेमके प्रकट होनेमें विलम्ब नहीं होगा. तभी परमधामके सुखोंका अनुभव होगा और तुम दिन-रात उन्हीं सुखोंमें भ्रमण करने लगोगी.

फेर फेर सुरत साधिए, धनी चरित्र सुख चैन ।

इसक आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन ॥ १९

इसलिए बार-बार अपनी सुरताको धामधनीकी आनन्दमयी लीला तथा उनसे प्राप्त होने वाले सुखोंके प्रति केन्द्रित करो. तब प्रेम प्रकट होनेमें कोई विलम्ब नहीं होगा और तुम्हारी अन्तर्दृष्टि भी खुल जाएगी.

फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार ।

फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार ॥ २०

बार-बार धामधनीके स्वरूप तथा उनके आभूषण एवं शृङ्गारके दर्शन करती रहो. इसी प्रकार मूलमिलावामें बैठकर की गई प्रेम-प्रीतिकी बातोंका भी वारंवार स्मरण करती रहो.

फेर फेर देखो धनी हेत की, फेर फेर रंग विलास ।

फेर फेर इसक रस प्रेम की, देखो विनोद कै हांस ॥ २१

धामधनीके प्रेम तथा रङ्गरसपूर्ण विलासके दर्शन बार-बार करती रहो. उनके प्रेमरससे ओत-प्रोत होकर वारंवार हास्य विनोदका भी अनुभव करती रहो.

अंदर धनी के देखिए, एक चित हेत रस रीत ।

क्यों कहूं रंग हांस विनोद की, सुख सनेह प्रेम प्रीत ॥ २२

एकाग्र होकर देखो ! धामधनीके हृदयमें प्रेम, स्नेह एवं एकात्मताकी भावना है. मैं इस रस, रङ्ग और हास्य विनोदका वर्णन कैसे करूँ जिससे हमें सुख,

स्नेह और प्रीतिका अनुभव होता है.

खिन खिन में सुख होएसी, धनी याद किए असल ।

ए सुख आए इसक, बेर ना लगे एक पल ॥ २३

धामधनीके अखण्ड सुखोंका स्मरण करने पर इस नश्वर जगतमें भी क्षण-क्षणमें अखण्ड सुखका अनुभव होगा. ऐसी स्थितिमें अपने जीवनमें ऐसा प्रेम प्रकट होनेमें क्षण मात्रका भी समय नहीं लगेगा.

मैं जो दर्ई तुमें सिखापन, सो लीजो दिल दे ।

महामत कहे ब्रह्मसृष्टि को, सखी जीवन हमारा ए ॥ २४

मैंने तुम्हें जो उपदेश दिया है, उसे अपने हृदयमें धारण करो. महामति ब्रह्मसृष्टियोंको कहते हैं, हे सखी ! यही हमारा जीवन है.

प्रकरण ४ चौपाई ३०६

वन में सरूप सिनगार

वतन आपनो, ब्रह्म सृष्टि को देऊं बताए ।

धाम की सुधि मैं सब देऊं, ज्यों अंतसकरण में आए ॥ १

अब मैं ब्रह्मात्माओंको अपने घर परमधामके दर्शन करवाता हूँ. मैं उन्हें परमधामकी सभी सुधि देता हूँ, जिससे उनके अन्तःकरणमें परमधाम अङ्कित हो जाए.

इन भोम की रेती क्यों कहूँ, उज्जल जोत अपार ।

भोम वन आसमान लों, झलकारों झलकार ॥ २

इस भूमिकाकी रेतीका वर्णन कैसे करूँ ? यह तो अति उज्ज्वल एवं अपार प्रकाशवाली है. भूमिसे लेकर वन, उपवन होते हुए उसका प्रकाश आकाश तक झलकता है.

जोत जरे इन जिमी की, मावत नहीं आसमान ।

तिन जिमी के वन की, जुबां कहा करसी बयान ॥ ३

इस भूमिके कण-कणकी ज्योति भी आकाशमें समाती नहीं है. यह जिह्वा

ऐसी भूमिके वन तथा उपवनका वर्णन कैसे कर पाएगी ?

इन भोम रंचक रेत की, तेज न माए आकास ।

जो नंग इन जिमी के, क्यों कहे जुबां प्रकास ॥ ४

जब इस भूमिकी रेतके कणमात्रका प्रकाश भी आकाशमें नहीं समाता तब इस जिह्वाके द्वारा वहाँके रत्नोंके प्रकाशका वर्णन कैसे हो सकता है ?

जोत जिमी पोहोंचे आसमान लों, आसमान पोहोंचे जोत वन ।

सो छाए रही ब्रह्मांड को, सब ठौरों उठत किरन ॥ ५

यहाँ पर भूमिकी ज्योति आकाशमें पहुँचती है और आकाशसे लौटकर पूरे वन, उपवनमें छा जाती है। इस प्रकार यह ज्योति पूरे परमधाममें व्याप्त होती है जिससे सर्वत्र प्रकाशकी किरणें उठती हैं।

ए मंदिर झरोखे बन पर, झलकत हैं कै नंग ।

वन फूल फल बेलियां, लगत झरोखों संग ॥ ६

परमधामके भवन (रङ्गमहल), झरोखा, वन तथा उपवन सभी रत्नोंकी भाँति चमकते हैं। यहाँ पर वनके पुष्प, फल एवं लताएँ रङ्गभवनके झरोखा तक पहुँचती हैं।

कै रंग नंग झलकत, जिमी झलके दिवालों वन ।

सो छाए रही जोत आसमानमें, पसू पंखी नूर रोसन ॥ ७

रङ्गमहलकी दीवारें तथा परमधामकी भूमि एवं वन पर अनेक रङ्गोंमें विभिन्न रत्न चमक रहे हैं। उनकी ज्योति पूरे आकाशमें व्याप्त होती है। वहाँ पर पशु-पक्षी आदिसे भी प्रकाशमयी किरणें निकलती हैं।

जिमी आकास वृक्ष नूर के, पात फूल फल नूर ।

दिवाल झरोखे नूर के, कहा कहूं नूर जहूर ॥ ८

परमधामकी भूमि, आकाश, वृक्ष तथा उसके पत्ते, पुष्प, फल इत्यादि सभी प्रकाशमय हैं। रङ्गमहलकी दीवारें, झरोखा इत्यादि भी प्रकाशमय हैं। इन सभीके प्रकाशका वर्णन कहाँ तक करूँ ?

जात अलेखे पंखियों, पसू अलेखे जात ।

जात जात अनगिनती, क्यों कर कहूं विख्यात ॥ ९

परमधाममें पक्षियों तथा पशुओंकी विभिन्न जातियाँ हैं। उनकी असंख्य जातियोंका वर्णन होना असम्भव है।

पसू पंखी अति सुन्दर, बोलत अमृत रसान ।

सुन्दरता केस परन की, क्यों कर करों बखान ॥ १०

सभी पशु-पक्षी अति सुन्दर हैं। वे अमृतमयी मधुरवाणी बोलते हैं। उनके केश एवं पङ्खु इतने सुन्दर हैं कि उनकी शोभाका वर्णन ही नहीं हो सकता है।

कै विध बानी बोलहीं, कै विध जिकर सुभान ।

कै दिन रातों रटत हैं, मुख मीठी कै जुबान ॥ ११

वे विभिन्न प्रकारकी वाणी बोलते हुए धामधनीका गुणानुवाद करते हैं। इस प्रकार दिन-रात वे अपनी मधुरवाणीसे प्रियतम धनीका नाम रटते हैं।

मीठे नैन बैन मुख मीठे, सोभा सुंदर अमान ।

जिन विध धनी रीझहीं, खेलें बोलें तिन तान ॥ १२

उनके नेत्र मधुर हैं, उनकी वाणी भी मधुर है, उनके मुखकी शोभा भी अद्वितीय है। धामधनी जिस प्रकार प्रसन्न होते हैं वे उसी प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं तथा उसी प्रकारकी वाणी बोलते हैं।

विचित्र बानी माधुरी, वन में गुंजे करें गान ।

चेतन चैन जो चातुरी, क्यों कर करूं बखान ॥ १३

उनकी विचित्र प्रकारकी वाणीमें भी मधुरता भरी हुई है। जब वे धनीके गुणगान करते हैं तो उनका स्वर पूरे वनमें गूँज जाता है। उनका चातुर्य एवं चैतन्यमयी क्रीड़ाओंकी प्रशंसा किस प्रकार करें ?

आए दरवाजे आगे खडे, खेलोंने अति घन ।

स्याम स्यामाजी साथ को, पसू पंखी लेवें दरसन ॥ १४

खिलौनेके समान ये पशु-पक्षी श्रीराजजीको प्रसन्न करनेके लिए प्रतिदिन

रङ्गमहलके द्वारके सामने चाँदनी चौकमें आकर खड़े होते हैं और श्रीश्यामश्यामाजी तथा सुन्दरसाथके दर्शन करते हैं।

ठौर खेलन के चित धरो, विध विध के वन माहें ।

केहेती हों आगूं तुम, जो हिरदे चढि चढि आए ॥ १५

हे सुन्दरसाथजी ! परमधामके वन-उपवनमें विभिन्न प्रकारके क्रीड़ास्थल हैं, उनको तुम अपने हृदयमें धारण करो। मैं यहाँ पर उन्हींका वर्णन करता हूँ जो मेरे हृदयमें उभर कर आ रहे हैं।

आगूं धाम के वन भला, जमुनाजी सातों घाट ।

तीन बाएं तीन दाहिने, बीच जल कठेडा पाट ॥ १६

रङ्गमहलके सम्मुख सुन्दर वन हैं। यमुनाजीके किनारे पर सात प्रकारके घाट सुशोभित हैं। उन घाटोंमें तीन बायीं ओर और तीन दायीं ओर हैं। बीचका घाट पाटका घाट कहलाता है। उसका कठेड़ा जलकी ओर है।

[पाटका घाट-अमृतवनके मध्यमें स्थित मार्ग (रौंस) के सम्मुख यमुनाजीके तटसे लगता हुआ पाटका घाट जल प्रवाहमें (जलके अन्दर) बना हुआ है। इसमें दो भूमिका (मञ्जिल) एवं तीसरी चाँदनी है। चाँदनीके मध्यमें देहुरी है। प्रथम भूमिकामें नीलमणिके चार-चार स्तम्भोंकी चार पङ्क्तियाँ (कुल सोहल स्तम्भ) हैं। सभी स्तम्भ जलमें डूबे हुए हैं। स्तम्भोंकी चार पङ्क्तियोंके मध्य जलद्वारके रूपमें तीन तोरण (कमान) शोभायमान हैं। इन जलद्वारोंसे जल बहता है, स्तम्भोंके ऊपर छत लगी (पट गया) है। छतके ऊपर नीचेकी भाँति चारों ओर बारह स्तम्भ सुशोभित हैं। यहाँ पर बीचमें चार स्तम्भ नहीं हैं। इन बारह स्तम्भोंमें चारों कोनोंके चार स्तम्भ नीलमणिके हैं मध्यमें पूर्वकी ओर दो स्तम्भ माणिक्यके, दक्षिणकी ओर हीराके, पश्चिमकी ओर पाच रत्नके तथा उत्तरकी ओर पुखराजके हैं। इन स्तम्भोंमें तीनों (यमुनाजीकी) ओर कटहरा शोभायमान है। जलक्रीड़ाके उपरान्त यहाँ पर शृङ्गार होता है। स्तम्भोंके ऊपर छत लगी है। चाँदनीमें पहुँचनेके लिए सीढ़ियाँ हैं। पाटघाटकी ऐसी ही शोभा अक्षरधामकी ओर भी है।]

घाट पाट जल ऊपर, अमृत वन है जाहिं ।

इन वन की सोभा क्यों कहूं, मेरो सबद न पहुँचे ताहिं ॥ १७

यह पाटका घाट यमुनाजीके जलके ऊपर बना हुआ है। उसके साथ अमृत (आमका) वन है। इसकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? मेरे शब्द वहाँ तक नहीं पहुँचते हैं।

झीलन स्यामा संग राजसों, साथें किए जल केल ।

इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेल ॥ १८

इसी घाट पर श्यामाजी तथा सखियाँ श्रीराजजीके साथ जलक्रीड़ा करती हैं। इस समयके आनन्दविलासका वर्णन कैसे किया जा सकता है।

मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार ।

चारों खूटों थंभ नीलवी, अंबर भर्यो झलकार ॥ १९

पाटके घाटमें माणिक्य, हीरा, पाच और पुखराजके स्थम्भ हैं। अक्षरधामकी ओरसे देखने पर यहाँ पर चार द्वार दिखाई देते हैं। चार कोने पर नीलमणि (नीलवी) के चार स्थम्भ हैं। उनका प्रकाश पूरे आकाशमें झलकता है।

ए बारे थंभों चांदनी, सोभित जल ऊपर ।

साथ बैठा सब फिरता, चारों तरफों पसर ॥ २०

इन बारह स्थम्भों पर चांदनी है। वह जलके ऊपर प्रतिबिम्बित (सुशोभित) है। इस घाट पर सभी सखियाँ चारों ओर फैलकर गोलाकारमें बैठती हैं।

सोभा वन संझा समें, फल फूल खुसबोए ।

साथ बैठा पाट ऊपर, बीच सुंदर सरूप दोए ॥ २१

सन्ध्याके समय इन वनोंकी शोभा अद्वितीय होती है। यहाँके फल तथा फूलोंसे सुगन्धि आती है। सखियाँ इस समय पाटके घाट पर बैठती हैं। श्रीराजश्यामाजी उनके मध्यमें विराजमान होते हैं।

बीच बैठक राजस्यामाजी, साथ गृदवाए घेर ।

साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूं इन बेर ॥ २२

श्रीराजश्यामाजी मध्यमें विराजमान होते हैं। उनको चारों ओरसे घेरकर

सखियाँ बैठी हुई होती हैं। वे सभी सम्पूर्ण शृङ्गारसे सजी हुई हैं। इस समय उनकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

साथ बैठा पाट ऊपर, लग कठेडे भराए ।

जोत करी आकास लों, जानो आकास में न समाए ॥ २३

पाटके घाट पर सभी सखियाँ कटहरासे लगकर बैठी हैं। यहाँकी ज्योति आकाशमें पहुँचती है। ऐसा प्रतीत होता है मानों वह आकाशमें भी नहीं समा रही हो।

कै रंग नंग कठेडे, पडत जल में झाँई ।

तेज जोत जो उठत, तले मावें न आकास मांहीं ॥ २४

कटहराके विभिन्न रत्नोंके रङ्गोंका प्रतिबिम्ब यमुनाजलमें पड़ता है। उनसे निकला हुआ प्रकाश वहाँकी भूमि तथा आकाशमें भी नहीं समाता है।

सो झाँई जल लेहेरां लेवहीं, तिनसे लेहेरां लेवें आसमान ।

कै रंग लेहेरें तिनकी, एक दूजी न सके भान ॥ २५

वह प्रकाश जलकी तरङ्गोंके साथ तरङ्गित होता है जिससे आकाश भी तरङ्गित हो रहा हो ऐसा प्रतीत होता है। उन तरङ्गोंके रङ्ग एक दूसरेकी तेजके साथ टकराते हैं।

जल में सिनगार सखियन के, लेहेरां लेवें संग छाहें ।

होए नीचे ऊंचे आसमान लों, केहेनी अचरज न आवे जुबांए ॥ २६

इस प्रकार सखियोंके शृङ्गारकी ज्योति भी यमुनाजलकी तरङ्गोंमें प्रतिबिम्बित होती है। जब ये तरङ्गें ऊँची-नीची होती हैं उस समय यह ज्योति भी आकाश तक पहुँच कर नीचे आती है। इस आश्चर्यजनक स्थितिका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

जेती जुगत पाट ऊपर, सब लेहेरां लेवें माहें जल ।

जानों तले ब्रह्मांड दूजो भयो, भयो आसमान जोत सकल ॥ २७

पाटके घाटमें जितनी शोभा है वह सभी यमुना जलके तरङ्गोंके साथ तरङ्गित होती है। ऐसा लगता है, मानों नीचे यमुनाजल पर कोई दूसरा ही ब्रह्माण्ड

बना हुआ हो और उसकी ज्योति पूरे आकाश तक व्याप्त हो रही हो.

वन पाट जोत आसमान लों, सब देखत जल माहिं ।

एक नयो अचंभो ए बन्यो, केहेनी में आवत नाहिं ॥ २८

पाटके घाट तथा अमृत वनकी ज्योति आकाश तक फैली हुई है तथा यमुना जल पर भी प्रतिबिम्बित दिखाई देती है. ऐसी आश्चर्यजनक स्थिति प्रकट होती है कि उसका वर्णन ही नहीं हो सकता है.

ज्यों ज्यों जल लेहेरां लेवहीं, त्यों त्यों तले ब्रह्मांड डोलत ।

कै विध तेज किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत ॥ २९

यमुनाजलकी लहरें जैसे-जैसे तरङ्गित होती हैं वैसे-वैसे इन वनोंका प्रतिबिम्ब हिलते हुए ब्रह्माण्डकी भाँति प्रतीत होता है. उनसे विभिन्न प्रकारकी किरणें उठती हैं और उनका प्रकाश आकाश तक तरङ्गित होता है.

ए ब्रह्मांड कह्यो न जावहीं, पर समझाए न निमूने बिन ।

सबदातीत के पार की, बात केहेनी झूठी जिमी इन ॥ ३०

वस्तुतः इसे ब्रह्माण्ड नहीं कहा जा सकता किन्तु उपमा दिए बिना समझाना भी कठिन होता है. क्योंकि शब्दातीत परमधामकी बात इस नश्वर भूमिमें कही जा रही है.

हर घाटों सोभा कै विध, कै जुदे जुदे सुख सनंध ।

वन नीके अपना देखिए, रस सीतल वाए सुगंध ॥ ३१

इस प्रकार सभी घाटोंमें विभिन्न प्रकारकी शोभा है. उनसे प्राप्त सुख भी विभिन्न प्रकारके हैं. ये सभी अपने ही वन हैं, उनको भलीभाँति देख लो. उनसे शीतल और सुमधुर वायु बह रहा है.

क्यों कहूं सोभा वन की, और छाए रही फूल बेल ।

तले खेलें सैयां सरूपसों, आवें एक दूजी कंठ मेल ॥ ३२

इन वनोंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? इन पर पुष्प तथा लताएँ छायी हुई हैं. सखियाँ इन लता मण्डपोंके नीचे श्रीराजश्यामाजीके साथ क्रीड़ाएँ करती हैं और परस्पर गले मिलती हैं.

जिमी वन जुबां न आवहीं, तो क्यों कहूं सिनगार जहूर ।

सुंदरता सरूपों की, कै रस सागर भरपूर ॥ ३३

जब भूमि और वनकी शोभा ही जिह्वा द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती तो उनके शृङ्गारका वर्णन कैसे करें ? श्रीराजजी, श्यामाजी एवं सुन्दरसाथके स्वरूपकी सुन्दरतासे मानों अनेक रससागर परिपूर्ण हैं।

अब क्यों कहूं जोत सरूपों की, और सुंदरता सिनगार ।

वस्त्र भूखन इन जिमीके, हुआ आकास उदोतकार ॥ ३४

अब इन स्वरूपोंकी आभा, सुन्दरता एवं सिनगारका वर्णन कैसे करूँ ? दिव्य परमधामके वस्त्र एवं आभूषण भी आकाशको प्रदीप्त करते हैं।

कै रंग के नकस, कै भांत बेल फूल माहिं ।

कै रंग इनमें जवेर, इन जुबां में आवत नाहिं ॥ ३५

इन वस्त्रोंमें विभिन्न रङ्गकी चित्रकारी है, जिसमें भाँति-भाँतिके पुष्प तथा लताएँ चित्रित हैं। इनमें जड़े हुए रत्नोंसे विभिन्न प्रकारके रङ्ग निकलते हैं। जिनका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

इन बेल फूल कै पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कै नंग ।

तिन नंग नंग कै रंग उठें, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ ३६

इन लताओंमें अनेक पुष्प तथा पत्ते हैं। प्रत्येक पत्तोंमें अनेक रत्न जड़े हुए हैं। एक-एक रत्नसे अनेक रङ्गकी किरणें निकलती हैं। ऐसा लगता है, मानों विभिन्न प्रकारके रङ्ग तरङ्गित हो रहे हों।

ए स्वाद आतम तो आवहीं, जो पलक न दीजे भंग ।

अरस परस एक होवहीं, पर आतम आतम संग ॥ ३७

आत्माको इस आनन्दकी अनुभूति तभी होती है जब वह पलमात्रके लिए भी अपनी दृष्टिको यहाँसे दूर नहीं करती। जब आत्मा पर-आत्माके साथ एक रस हो जाती है तभी उसे यह आनन्द प्राप्त होता है।

अब भूखन की मैं क्यों कहूँ, जो इत हैं हेम मनी ।

कै विध की इत धात हैं, नंग जात नहीं गिनी ॥ ३८

अब मैं इन आभूषणोंका वर्णन कैसे करूँ, ये तो स्वर्ण एवं रत्नोंसे बने हुए हैं। वैसे तो परमधाममें अनेक प्रकारके धातु पाए जाते हैं इसी प्रकार रत्नोंकी गणना नहीं हो सकती है।

क्यों कहूँ इन बानी की, मुख से उचरत जे ।

मीठी मीठी मुसकनी, सब भीगे इसक के ॥ ३९

श्रीराजजी अपने मुखारविन्दसे जो वाणी उच्चारण करते हैं उनका वर्णन कैसे किया जाए ? उनकी मधुर मुस्कान तथा प्रेमसे सभी आत्माएँ गलितगात्र हो जाती हैं।

हंसत नेत्र मुख नासिका, श्रवन हंसत चरन ।

भौं भृकुटी गाल अधुर, हंसत सिनगार भूषण ॥ ४०

श्रीराजजीकी मन्द मुस्कान उनके नयन, मुखारविन्द और नासिकामें तो झलकती ही हैं साथ ही उनके श्रवण और चरण भी हँसते हुए प्रतीत होते हैं। उनकी भौएँ, भृकुटी, गाल, अधर तथा आभूषण भी हँसते हुए प्रतीत होते हैं।

चाल चातुरी कहा कहूँ, लटक चटक भरे पाए ।

मटके अंग मरोर के, कछू ए गत कही न जाए ॥ ४१

उनकी गति तथा चातुर्य भी अवर्णनीय है। वे लटक-मटक करते हुए कदम बढ़ाते हैं। वे चलते हुए कमरको इस प्रकार मोड़ते हैं कि उनकी गतिको वर्णन ही नहीं किया जा सकता है।

ए सुख सरूपों की मुसकनी, रंग रस गत मुख बान ।

ए भोम वन धनी धामको, रेहेस लीला नित्यान ॥ ४२

इन स्वरूपके मधुर हास्य, वाणी तथा गति रसरङ्गसे भरी हुई हैं। इस प्रकार परमधामकी भूमि, वन, उपवन एवं रङ्गभवनमें धामधनीकी दिव्य लीलाएँ नित्य होती रहती हैं।

अब क्यों कहूं भूषण की, और क्यों कहूं बानी मिठास ।

क्यों कहूं रेहेस जो पीउ को, जो अंग अंग में उलास ॥ ४३

अब मैं उन आभूषणों तथा उनसे निकलते हुए मधुर स्वरोंका वर्णन कैसे करूँ ? धामधनीकी उन आनन्दमयी लीलाओंका भी कैसे वर्णन करूँ जिनसे हमारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग उल्लसित होते हैं।

इन जिमी इन वन में, करें खेल सरूप जो एह ।

कहा कहूं इन विलास की, जो करत प्रेम सनेह ॥ ४४

धामधनी परमधामकी भूमि तथा वनमें नित्य लीलाएँ करते हैं। इनकी लीला विलास तथा प्रेम एवं स्नेहका वर्णन कैसे किया जाए ?

कै रंग रेहेस संग धनी के, केते कहूं विलास ।

प्रेम प्रीत सनेह कै रीत, मीठी मुसकनी कै हांस ॥ ४५

धामधनीके साथ ब्रह्मात्माओंकी विभिन्न प्रकारकी आनन्दमयी लीलाएँ होती हैं। उस लीला-विलासका भी वर्णन नहीं किया जा सकता। प्रेम-प्रीति, स्नेह तथा मन्द मुस्कान एवं मधुर हास्यकी रीतिका भी वर्णन नहीं हो सकता है।

नैन सों नैन लेत रंग सैन, अरस परस उछरंग ।

उर मुख नेत्र कर कंठ, यों सुख सब विध अंग ॥ ४६

जब धामधनी अपने नेत्रकमलोंसे सखियोंको सङ्केत करते हैं तब सखियोंमें परस्पर उत्साहका वातावरण छा जाता है। धामधनीका वक्षस्थल, मुखारविन्द, नयनसरोज, करकमल, कण्ठ इत्यादि सभी अङ्गोंसे अखण्ड सुख प्राप्त होता है।

बंके नैन समारे सर बंके, बंकी सारस भौं बंकी ।

बंके बैन लगत बान बंके, बंकी चलत बंक लंकी ॥ ४७

धामधनी अपनी तिरछी चितवनसे तिरछें वाण मारते हैं। उस समय उनकी भृकुटी भी धनुषकी भाँति वक्र दिखाई देती है। उनकी वाणी भी अटपटी है एवं वाणकी भाँति सखियोंके हृदयको बीध देती है। धामधनी चलते हुए भी अपने शरीरको वक्र बनाते हैं।

रस लेत धाम के सरूपसों, एक दूजी को ठेल ।

विविध विहार अलेखे अंगो, क्यों कहूं खुसाली खेल ॥ ४८

सभी सखियाँ एक दूसरीसे आगे बढ़ती हुई धामके इन दिव्य स्वरूपोंका आनन्द प्राप्त करती हैं। उनके साथ विभिन्न प्रकारके दिव्य विहार करती हैं। इन आनन्दमयी लीलाओंका वर्णन कैसे करूँ ?

अंग इसक इन भोम के, अलेखे अंग असल ।

कै रंग रस सरूपसों, जुदे जुदे या सामिल ॥ ४९

परमधामकी इन आत्माओंके अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रेमसे परिपूर्ण हैं। इसलिए इनका वर्णन नहीं हो सकता है। ये सभी मिलकर अथवा अलग-अलग रूपमें श्रीराजश्यामाजीके रङ्गरसका अनुभव करती हैं।

कहा कहूं वस्तर भूषन की, नूर रोसन जोत उजास ।

स्याम स्यामाजी साथ की, अंग अंग पूरत आस ॥ ५०

इनके वस्त्र एवं आभूषणोंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? जिनके प्रकाशसे सारी दिशाएँ प्रकाशित होती हैं। श्रीश्यामश्यामाजी सभी सुन्दरसाथके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंके मनोरथ पूर्ण कर देते हैं।

ए जोत में सोभा सुंदर, देखिए हिरदें में आन ।

भर भर प्याले पीजिए, देख केहे सुन कान ॥ ५१

हे सुन्दरसाथजी ! इस दिव्य ज्योतिमें सभी दिशाओंकी सुन्दर शोभाको देखकर उसे अपने हृदयमें धारण करो एवं प्रत्यक्षरूपमें वर्णन किए हुए शब्दोंको प्याले भर-भरकर अपने श्रवणोंसे पान करो।

भोम वन तलाब सोभित, कुंज वन बीच मंदर ।

कहा कहूं गलियन की, छाया प्रेमल सुंदर ॥ ५२

परमधामकी भूमिमें वन, उपवन तथा ताल सुशोभित हैं। साथ ही मन्दिरकी भाँति शोभायमान कुञ्ज-निकुञ्जके मण्डप भी अति सुन्दर हैं। वनकी गलियोंका वर्णन भी कैसे किया जाए ? जिन पर पुष्पोंकी मधुर सुगन्ध छायी हुई है।

नरमाई इन रेत की, उजल जोत सुपेत ।

खुसबोए कही न जावहीं, निकुंज वन या रेत ॥ ५३

यहाँकी रेती भी अति कोमल है. उनकी शुभ्र ज्योति अति उज्ज्वल है. इस प्रकार कुञ्जनिकुञ्ज वन तथा वहाँकी रेतीका वर्णन नहीं किया जा सकता.

सोभा पाल तलाब की, कही न जाए जुबां इन ।

वन देहुरी जल मोहोल की, रोसन रोसन में रोसन ॥ ५४

हौजकौसर ताल तथा उसकी पालकी शोभाका वर्णन भी जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है. यहाँके वन, देहुरियाँ तथा टापु महलका प्रकाश एक दूसरेसे अधिक प्रतीत होता है.

देहुरियां सोभित ताल की, पाल पांवडियां अंदर ।

सोभा कहा कहूं सब जडित की, बीच मोहोल जल ऊपर ॥ ५५

तालके चारों ओर देहुरियाँ शोभायमान हैं. पालसे अन्दरकी ओर नीचे उतरनेके लिए सीढ़ी है. तालके मध्यमें स्थित टापूमहल पर जड़े हुए रत्नोंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

जुदी जुदी जुगतें सोभित, वन मोहोलों लिया घेर ।

गृद झरोखे नवों भोम के, बीच धाम वन चौफेर ॥ ५६

रङ्गभवनके चारों ओर विभिन्न प्रकारके वन, उपवन सुशोभित हैं. रङ्गभवनमें नवों भूमिकाओं तक चारों ओर झरोखे हैं. इस प्रकार मध्यमें रङ्गमहल एवं उसके चारों ओर वन प्रदेश दिखाई देता है.

याही भांत अक्षर की, बीच वन गलियां जानवर ।

खेल खेलें अति सोहने, क्यों वरनों सोभा दोऊ घर ॥ ५७

अक्षरधाम भी इसी प्रकार सुशोभित है. वहाँ पर भी चारों ओर वन है. वनकी गलियोंमें पशु-पक्षी अति सुन्दर क्रीड़ाएँ करते हैं. इस प्रकार इन दोनों धामोंका वर्णन कैसे करूँ ?

साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर ।

क्यों कहूं इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर ॥ ५८

अक्षर धाम एवं परमधाम दोनों आमने-सामने हैं। दोनोंसे निकली हुई प्रकाशकी किरणें इस प्रकार टकराती हैं मानों वे परस्पर युद्ध कर रही हों। इनका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकता है ?

आगूं बडे द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए ।

रंग पांचों नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए ॥ ५९

धामके विशाल द्वारके आगे दोनों ओर बीस (दस-दस) स्तम्भ हैं। इनसे पाँच रङ्गों (हीरा, माणिक्य, पुखराज, पाच एवं निलमणि) की किरणें निकलती हैं जिनकी महिमाका वर्णन नहीं हो सकता है।

द्वार आगूं दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक ।

हरा लाल दोऊ पर दरखत, हक हादी रूहों ठौर सौक ॥ ६०

द्वारके आगे दो चबूतरे हैं। इसी प्रकार नीचे चाँदनी चौकमें भी दो चबूतरे हैं। इन दोनों चबूतरों पर हरा और लाल दो वृक्ष हैं। इनमें श्रीराजश्यामाजी सखियोंके साथ इच्छानुसार प्रसन्न मुद्रामें बैठते हैं।

भोम वन आकास का, अवकास न माए उजास ।

कछुक आतम जानहीं, सो कह्यो न जाए प्रकास ॥ ६१

यहाँकी दिव्य भूमि तथा वनके आकाशका प्रकाश महाकाशमें भी नहीं समाता है। इस प्रकाशका वर्णन नहीं किया जा सकता, आत्मा ही इसे आंशिक रूपमें जान सकती है।

महामत कहे वन धाम का, विध विध दिया बताए ।

जो होसी ब्रह्म सृष्टि का, ए बान फूट निकसे अंग ताए ॥ ६२

महामति कहते हैं, मैंने धामके वन-उपवनोंका विभिन्न प्रकारसे वर्णन किया है। जो ब्रह्मात्माएँ होंगी, उनके हृदयको बाँधकर ये मेरे वचन उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें व्याप्त हो जाएँगे।

प्रकरण ५ चौपाई ३६८

जमुना जोए किनारे सात घाट

केल का घाट

कतरे कै केलन के, लटक रहे जल पर ।

आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर ॥ १

यमुना किनार पर स्थित केलवनके केलके गुच्छे यमुनाजल पर पङ्क्तिबद्ध रूपमें प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। वे न आगे दिखाई देते हैं और न ही पीछे। सभी समानरूपसे सुशोभित हैं।

दिवालां थंभन की, नरमाई अतंत ।

छाया पात गली मंदिरों, तलें उजल रेत चिलकत ॥ २

यमुना जल पर प्रतिबिम्बित केलोंके सुकोमल स्तम्भ दीवारकी भाँति दिखाई देते हैं। इनके पत्तोंकी छाया वन-उपवनकी गलियों एवं मन्दिरों तक पहुँचती। इनके नीचेकी रेती अति उज्ज्वल दिखाई देती है।

कै चौक ठौर खेलनके, छाया पात सीतल ।

खूबी जुबां ना केहे सके, रेत मोती निरमल ॥ ३

केलवनमें खेलनेके लिए विभिन्न चौक हैं, उन पर केलेके पत्तोंकी शीतल छाया रहती है। भूमिकी निर्मल रेती मोतीकी भाँति चमकती है। उसकी विशेषताका वर्णन नहीं किया जा सकता।

कच्चे पक्के केलों कतरे, एक खूबी और खुसबोए ।

जुदी जुदी जिनसों सोभित, सुंदर चौक में सोए ॥ ४

केलेके स्तम्भ पर लगे हुए कच्चे-पक्के केलोंके गुच्छोंमें यह विशेषता है कि उनसे सुगन्ध निकलती है। इनकी विभिन्न प्रकारकी जातियाँ केलवनके सुन्दर चौकोंमें सुशोभित हैं।

सैयां आवत झीलन को, निकस मंदिरों द्वार ।

ए समया कह्यो न जावहीं, सोभा सिफत अपार ॥ ५

जब सभी सखियाँ रङ्गमहलके मन्दिरोंके द्वारोंसे निकल कर जलक्रीड़ाके

लिए इस ओर आती हैं, इस समयकी शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता।

ए घाट पोहोंच्या बडे वन को, जित हिडोलों हींचत ।

उत चल्या किनारे जमुना, हद लिबोई से इत ॥ ६

यह केलका घाट बड़ावन तक फैला हुआ है। यहाँ पर सखियाँ झूलों पर झूलती हैं। यमुना तट तक फैले हुए इस घाटके दक्षिणकी ओर निम्बू (लिंबोई) का घाट है।

घाट लिबोई का

छत्रियां लिबोइन की, सुगंध सीतल अति छाहें ।

पेड जुदे जुदे लंबी डारियां, मिल गैयां माहों माहें ॥ ७

यहाँ पर निम्बूके वृक्ष छत्रीकी भाँति सुशोभित हैं। इनकी सघन छायामें शीतल एवं सुगन्ध वायु बहता है। इन अलग-अलग वृक्षोंकी लम्बी-लम्बी शाखाएँ एक दूसरेके साथ जुड़ी हुई हैं।

कै विध के फल लटकत, जल पर बनी जो हार ।

लटके जवेर जडाव ज्यों, ऐसी वनकी रची किनार ॥ ८

इन वृक्षोंमें असंख्य फल लटके हुए हैं। यमुनाजल पर प्रतिबिम्बित ये फल पङ्क्तिबद्ध दिखाई देते हैं। इस वनका किनार इस प्रकारका है कि यहाँके वृक्षोंसे मानों मोती लटक रहे हों ऐसा प्रतिबिम्ब यमुनाजीमें पड़ता है।

या विध फल छाया मिने, वनमें झूमत अंदर ।

कहूं हारे कहूं फिरते, कै रंग चंद्रवा सुंदर ॥ ९

इस वनकी छायामें इसके फल लटकते हुए दिखाई देते हैं। यहाँके कतिपय वृक्ष पङ्क्तिबद्ध हैं तो कतिपय गोलाकारमें चंद्रवाकी भाँति सुन्दर दिखाई देते हैं।

सोभा तले रेतीय की, कहा कहूं छाया ऊपर ।

कही न जाए लिबोई घाट की, सोभा अचरज तले भीतर ॥ १०

इन वृक्षोंकी सघन छायामें भूमिकी रेती चमकती है। इस प्रकार निम्बूके घाटके आश्चर्यजनक शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता।

पेड जुदे जुदे गेहेरी छाया, सब पेडों छत्री एक ।

देख देख के देखिए, जानों सबसे ए ठौर नेक ॥ ११

यहाँके वृक्ष अलग-अलग होने पर भी इनकी छाया सघन होनेसे ये छत्रीकी भाँति लगते हैं। वारंवार देखने पर ऐसा लगता है यही स्थान सर्वाधिक सुन्दर है।

धाम छोड आगे चल्या, तरफ चेहेबच्चे पास ।

इन वन की सोभा क्यों कहूं, जित नित होत विलास ॥ १२

यह वन रङ्गमहलकी दीवारसे भी आगे सोलह पहल (हास) के कुण्ड (चेहेबच्चा) के साथ लगता हुआ विस्तृत है। इस वनकी शोभाका वर्णन कैसे करें, जहाँ पर नित्यप्रति आनन्द विलास होता है।

जब खेलें इत सखियां, स्याम स्यामाजी संग ।

तब सोभा इन वन की, लेत अलेखे रंग ॥ १३

जब यहाँ पर सखियाँ श्रीश्यामश्यामाजीके साथ क्रीड़ाएँ करती हैं तब इस वनकी सुन्दरता असंख्य गुणा बढ़ जाती है।

घाट अनार का

ए वन खूबी देत है, चल्या दोरी बंध हार ।

फल नकस की कांगरी, लटकत जल अनार ॥ १४

अनारके वृक्षोंके इस वनकी यह विशेषता है कि यहाँके वृक्ष पङ्क्तिबद्ध हैं। इनके फल काँगरीकी भाँति लटके हुए हैं।

केतीक छाया जल पर, केतीक छाया वार ।

ए दोऊ बराबर चली, जमुना बांध किनार ॥ १५

इन वृक्षोंकी थोड़ी छाया यमुनाजल पर पड़ी है तो थोड़ी छाया तट पर है। यमुनाजीके पूरे तट तक यह छाया इसी प्रकार समानान्तर दिखाई देती है।

घाट अनार को अति भलो, एकल छत्री सब जान ।

घट बढ काहूं न देखिए, छाया गेहेरी सब समान ॥ १६

अनारका यह घाट इतना सुन्दर लगता है कि मानों ये सभी वृक्ष मिलकर

एक छत्र बने हुए हैं. इनकी सघन छाया कहीं भी कम या अधिक न होकर सर्वत्र समान रूपसे दिखाई देती है.

जो जहां घाट वन देखिए, जानों एही बन वैसेक ।

एक से दूजा अधिक, सो कहां लों कहूं विवेक ॥ १७

इनकी यह विशेषता है कि जहाँ पर जो घाट तथा वन दिखाई देते हैं वे ही सर्वाधिक विशेष लगते हैं. ये सभी घाट एवं वन एक दूसरेसे अधिक शोभायमान हैं. उनका कहाँ तक वर्णन करें ?

कहूं फूल कहूं फल बने, कहूं पात रहे अति वन ।

जुदी जुदी जुगते मंडप, जानों बहूं रंग मनी कंचन ॥ १८

इस वनमें कहीं फूल, कहीं फल तथा कहीं पत्ते दिखाई देते हैं. इस प्रकार यहाँ पर विभिन्न युक्तिसे मण्डप बना हुआ है जो सोनेके अन्दर जड़े हुए विभिन्न मणिकी भाँति प्रतीत होता है.

इन पेड़ों खूबी क्यों कहूं, देख वन होइए खुसाल ।

रोसन रेत खुसबोए वन, आए लग्या दिवाल ॥ १९

इन वृक्षोंकी विशेषताका वर्णन कैसे करे ? इनको देखते हुए अति प्रसन्नता होती है. चमकती हुई रेती वाला यह सुगन्धित वन रङ्गभवनके दीवार तक पहुँचा हुआ है.

अमृत बन-घाट पाट का

दोऊ पुलों के बीच में, सोभित सातों घाट ।

तीन बाएं तीन दाहिने, बीच थंभ चांदनी पाट ॥ २०

यमुनाजी पर स्थित केल एवं वटके पुलके मध्यमें सातघाट सुशोभित हैं. इनमें तीन दायीं ओर एवं तीन बायीं ओर हैं. मध्यमें पाटका घाट है. उसमें विभिन्न स्तम्भों एवं चाँदनीकी शोभा है.

अमृत वन अति सोभित, घाट पाट का जे ।

आगूं दरवाजे निकट, वन बन्या जो सुंदर ए ॥ २१

इसी पाटके घाट पर अमृत वन सुशोभित है. रङ्गमहलके द्वारके सम्मुख स्थित

यह वन अत्यन्त सुन्दर शोभायुक्त है.

कै रंग के इत वृख हैं, नीले पीले सेत लाल ।

क्यों कहूं सोभा इन मुख, जाकी पूरन सिफत कमाल ॥ २२

यहाँ पर नीले, पीले, श्वेत, लाल आदि अनेक प्रकारके वृक्ष हैं. इनकी शोभा स्वयंमें ही इतनी विलक्षण है कि उनका वर्णन इस जिह्वाके द्वारा कैसे करें ?

अखोड अंजीर वन अमृत, ऊपर छाया अंगूर ।

एक छाया पात दिवाल लों, क्यों कर वरनों ए नूर ॥ २३

इस अमृत वनमें अखरोट एवं अंजीरके वृक्ष भी सुशोभित हैं. इन पर द्राक्षकी लताएँ फैली हुई है. जिनके पत्तोंकी छाया सघन होकर धामके दीवार तक पहुँची हुई है. इसके अलौकिक तेजका वर्णन कैसे किया जाए ?

कै रंग हैं एक पात में, कै रंग हैं फूल फल ।

अब क्यों वरनों मैं इन जुबां, कै वन हैं सामिल ॥ २४

इनके एक पत्तोंमें भी अनेक प्रकारके रङ्ग दिखाई देते हैं. इसी प्रकार फूल एवं फल भी विभिन्न रङ्गके हैं. मैं जिह्वाके द्वारा इनका वर्णन कैसे करूँ ? यहाँ पर विभिन्न प्रकारके वन सम्मिलित हो गए हैं.

केते रंग एक पात में, केते रंग एक फूल ।

केते रंग एक फल में, केते रंग डाल मूल ॥ २५

न जाने यहाँ पर एक पत्तेमें कितने रङ्ग हैं. इसी प्रकार यहाँके एक-एक फूल, फल, शाखाएँ तथा मूलमें भी अनेक प्रकारके रङ्ग प्रतीत होते हैं.

ए वन जोत इन भांत की, रोसन करत आसमान ।

आप अपना रंग ले उठत, कोई सके न काहूँ भान ॥ २६

इस वनसे ऐसी ज्योति निकलती है कि वह पूरे आकाशको प्रकाशित कर देती है. यहाँकी प्रत्येक वस्तु अपना-अपना रङ्ग बिखेरती है किन्तु कोई भी दूसरेके रङ्गको परास्त नहीं कर सकती.

कै मेवे इन वन में, केती कहूं जिनस ।

जुदे जुदे स्वाद कै विधके, जानों एक से और सरस ॥ २७

इस वनमें विभिन्न प्रकारके मेवे भी हैं। मैं उनकी विविधताका कितना वर्णन करूँ ? इनके अलग-अलग प्रकारके स्वाद एक दूसरेसे अधिक रसपूर्ण हैं।

इन पेड़ों खूबी क्यों कहूं, देख वन होइए खुसाल ।

ए रेत रोसन खुसबोए वन, ए निरखत बदले हाल ॥ २८

यहाँके वृक्षोंकी विशेषता कैसे बताएँ ? इनको देखते हुए अति प्रसन्नता होती है। यहाँकी चमकती हुई रेती एवं सुगन्धित वृक्षोंको देखते हुए मनःस्थिति ही बदल जाती है।

घाट जांबू का

निकट घाट पाट के, सोभित है अति वन ।

इन मुख खूबी क्यों कहूं, छत्रियां जांबूअन ॥ २९

पाटके घाटके निकट दूसरा वन शोभायमान है। इसकी विशेषता कैसे बतायी जाए ? यहाँके जामुनके वृक्ष छत्रियोंकी भाँति प्रतीत हो रहे हैं।

गेहेरी छाया अति निपट, देखत नहीं आसमान ।

जमुना धाम के बीच में, ए वन सोभा अमान ॥ ३०

इनकी छाया इतनी सघन है कि इन वृक्षोंके नीचेसे आकाश भी दिखाई नहीं देता है। यमुनाजी एवं रङ्ग भवनके मध्यमें स्थित यह वन अनुपम शोभा युक्त है।

एक मंडप जानो चंद्रवा, कहूं ऊंचा नीचा नाहिं ।

ए सोभा जुबां ना केहे सके, होंस रहत दिल माहिं ॥ ३१

यहाँके वृक्ष एक समान होनेसे एक मण्डप पर सुशोभित चँदवाकी भाँति शोभायमान हैं। यह जिह्वा इनकी शोभाका वर्णन नहीं कर सकती, मात्र हृदयमें वर्णन करनेकी इच्छा ही बनी रहती है।

अनेक रंग इन ठौर के, क्यों कहूं इतका नूर ।

रोसन जिमी प्रफुलित, क्यों कहूं जुबां जहूर ॥ ३२

यहाँकी भूमि विभिन्न रङ्गोंकी हैं। इनके प्रकाशका वर्णन कैसे करें ? विभिन्न

रङ्गोंके प्रकाशसे खिली हुई इस भूमिकी आभाका वर्णन यह जिह्वा कैसे कर सकेगी ?

एह सिफत न जाए कही, जिन वन कबू न जवाल ।

ए जुबां खूबी तो कहे, जो कोई होवे इन मिसाल ॥ ३३

इसकी विलक्षणताका वर्णन शब्दोंमें नहीं हो सकता है क्योंकि इस वनमें किसी भी प्रकारकी अवनति नहीं है. इसकी विशेषताका वर्णन तभी हो सकता है जब इसका कोई अन्य उदाहरण हो.

सिफत न होवे रेत की, ना होवे वन सिफत ।

जो कछू कहूं सो उरें रहे, मेरी जुबां ना पोहोचत ॥ ३४

यहाँकी रेतके कणकी भी विशेषता नहीं बताई जा सकती है और न ही इस वनकी शोभाका वर्णन हो सकता है. मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह बात हृदयमें ही सीमित रह जाती है, मेरी जिह्वा तक ही नहीं पहुँचती है.

घाट नारंगी का

चार हार फल की बनी, जल पर दोरी बंध ।

तलें सात सात की कांगरी, माहें नकस कै सनंध ॥ ३५

यमुनाजल पर प्रतिबिम्बित नारङ्गीके फलोंकी चार हारें पङ्क्तिबद्ध रूपमें दिखाई देती हैं. जिनमें सात-सात फलोंकी कङ्कुरियाँ शोभायमान हैं. लगता है यहाँ पर विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी की गई है.

खुसरंग फल नारंग के, पीलक लिए रंग लाल ।

झाँई उठे माहें जल, ए सोभित इन मिसाल ॥ ३६

मनको प्रसन्न करने वाले नारङ्गीके फल पीले तथा लाल रङ्गके हैं. जब इनका प्रतिबिम्ब यमुनाजलमें पड़ता है तब इनकी शोभाके लिए कोई उपमा ही प्राप्त नहीं होती है.

नारंग वन की छत्रियां, जाए लगीं बट घाट ।

फल फूल पात जडित ज्यों, जानों रच्यो अचंभो ठाट ॥ ३७

नारङ्गी वनकी छत्रियाँ (डालियाँ) बटके घाट तक पहुँची हुई हैं. इसके फल,

फूल तथा पत्ते रत्न जड़ित लगते हैं। इसकी रचना ही स्वयंमें आश्चर्यजनक एवं विलक्षण है।

एकल छाया रेती रोसन, पूरन सिफत कमाल ।

और अनेक वन आगूं भला, ए हद छोड चल्या दिवाल ॥ ३८

इन वृक्षोंकी छाया एक समान है एवं भूमिकी रेती चमकती है इसकी शोभा अति रमणीय है। इसके आगे विभिन्न प्रकारके वन हैं। यह वन रङ्गमहलकी दीवारको छोड़कर आगे तक गया है।

इन वन की सोभा अति बडी, आवत आतम में जोए ।

इन नैन श्रवन के बल थें, मुखसे न निकसे सोए ॥ ३९

इन वनोंकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है जिसकी अनुभूति आत्मासे ही हो सकती है। इन आँखोंसे देखकर, कानोंसे सुनकर जिह्वाके द्वारा इस शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

इन वन सोभा अपार है, कछू आतम उपजत सुख ।

तिनको हिसो लाखमों, कह्यो न जाए या मुख ॥ ४०

इस वनकी अपार शोभाको देखकर आत्माको जिस आनन्दका अनुभव होता है, उसके लाखवाँ अंशका वर्णन भी इस जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

घाट बट को (वटका घाट)

[वटवनके निकट यमुनाजीकी पाल एवं वनकी ओरका मार्ग (वनरौंस) दोनोंमें एक चौक शोभायमान है। इसके मध्य भागमें एक वटवृक्ष है उसके चारों ओर पङ्क्तिबद्ध रूपमें अस्सी (८०) वटवृक्षजटाएँ (वड़वाइयाँ) हैं। मध्यके वृक्षके साथ मिलकर ८१ की संख्या हो जाती है। इनमें नौ-नौ वृक्षोंकी नौ पङ्क्तियाँ हैं मध्यमें मूल वृक्ष शोभायमान है एवं शेष अस्सी वटवृक्षजटाएँ (वड़वाइयाँ) हैं। इनमें सुन्दर तोरण (कमान) शोभायमान है। बीच-बीचमें झूले लगे हुए हैं। पाँचों भूमिकाओंमें ऐसी शोभा है। उनके ऊपर चाँदनी है, उसके चारों ओर कटहरा सुशोभित है। ऊपर जानेके लिए इन्हीं वृक्षों (वटवृक्षजटाओं) में सीढ़ियाँ सुशोभित हैं।]

जो बट बन्यो जमुना पर, अनेक तिनकी डार ।

निपट पसारा इनका, जित बैठ करत सिनगार ॥ ४१

यमुनाके तट पर स्थित वटके वृक्षोंकी शाखाएँ अनेक हैं। जिनकी विस्तृत छायामें बैठकर सखियाँ शृङ्गार करती हैं।

ऊँचा निपट देहूर ज्यों, तले हाथों डारी लगत ।

डारों डारी अति विस्तरी, सुमार न इन सिफत ॥ ४२

इन वटवृक्षोंकी शाखाएँ ऊपरकी ओर मन्दिरके शिखरकी भाँति ऊँची हैं तथा नीचे भूमि तक लटकी हुई हैं जिनका स्पर्श हाथोंके द्वारा हो सकता है। इनकी शाखा-प्रशाखाएँ अत्यन्त विस्तृत हैं। इनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

जानों थंभ दिए बडवाईके, फिरते फिरते हार चार ।

सोभा लेत पात फूल, ए बट बडो विस्तार ॥ ४३

इन वटवृक्षोंकी नीचे फैली हुई शाखाएँ (वडवाईयाँ) चारों ओर स्थम्भोंकी भाँति पङ्क्तिबद्ध फैली हुई हैं। इस वृक्षके पत्ते एवं पुष्प अति शोभायमान हैं। इस प्रकार वटके ये वृक्ष अत्यन्त विशाल हैं।

छत्री पाँच उपरा ऊपर, जानों रचिया भोम समार ।

एक भोम रेती तलें, ऊपर भोम बट चार ॥ ४४

इन वृक्षोंकी शाखाएँ ऊपर-ऊपर ही पाँच भोम तक छत्रियोंकी भाँति फैली हुई हैं। इस प्रकार इन वटवृक्षोंकी प्रथम भूमिकामें नीचे रेती बिछी हुई है एवं ऊपर अन्य चार भूमिकाएँ शोभायमान हैं।

एक पडत झरोखे जल पर, और तरफ सब वन ।

ऊपर भोम धाम देखिए, दसों दिसा नूर रोसन ॥ ४५

इन वटवृक्षोंके झरोखेमें-से पूर्व दिशाके झरोखेका प्रतिबिम्ब जल पर पड़ता है। अन्य तीन दिशाओंमें वन, उपवन दिखाई देते हैं। चाँदनीके ऊपरसे रङ्गमहल दिखाई देता है। इस प्रकार दसों दिशाएँ प्रकाशित होती हैं।

इत बोहोत ठौर खेलन के, कै जिनसें तलें ऊपर ।

बैठत दौडत कूदत, खेलत कै हुनर ॥ ४६

इन वटवृक्षोंके ऊपर-नीचेकी भूमिकाओंमें विभिन्न क्रीड़ास्थल हैं। जहाँ पर सखियाँ उठते-बैठते विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हैं।

ठेकत हैं कै जल में, और कूद चढ़ें कै डार ।

खेल करें कै भांत सों, सब अंगों चंचल हुसियार ॥ ४७

कतिपय सखियाँ इन वृक्षोंसे यमुनाजल पर छलाङ्ग लगाती हैं एवं पुनः दौड़कर शाखाओं पर चढ़ जाती हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हुई सखियाँ अपनी चञ्चलता एवं चातुर्यका प्रदर्शन करती हैं।

तरफ चारों फिरते हिडोले, उपली लग भोम जोए ।

धाम तलाब जमुना नारंगी, सखियाँ हींचत बट पर सोए ॥ ४८

इन वट वृक्षोंकी प्रत्येक भूमिकामें ऊपर तक चारों ओर झूले लगे हुए हैं। इन झूलोंमें झूलती हुई सखियाँ रङ्गभवन, ताल, यमुनाजी सहित नारङ्गी आदि विभिन्न वनोंकी शोभाका दर्शन करती हैं।

अतंत सोभा इन घाट की, छाया चली जल पर ।

ए बट या और वृछ, जल छाए लिया बराबर ॥ ४९

इस घाटकी शोभा अद्वितीय है। यहाँके वृक्षोंकी छाया यमुनाजल पर पड़ती है। यहाँ पर वटवृक्षोंके साथ-साथ अन्य वृक्षोंकी भी छाया यमुनाजल पर समान रूपसे पड़ी हुई दिखाई देती है।

घाट बट को अति बडो, जल लिए चल्थो किनार ।

कै वन इत बहु विध के, जानों बने दोरी बंध हार ॥ ५०

इस वटके घाटका विस्तार बहुत बड़ा है। यहाँके वृक्ष यमुनाजीके तट पर दूर-दूर तक विस्तृत हैं। यहाँ पर विभिन्न प्रकारके वृक्ष हैं। वे सभी एक समान पङ्क्तिमें खड़े हैं।

सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज वन ।

अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमन ॥ ५१

इस प्रकार सातों घाट कहे गए हैं. वटपुलके आगे कुञ्जवन सुशोभित है. महामति ब्रह्मात्माओंको कहते हैं, यही हमारी अमूल्य निधि है.

प्रकरण ६ चौपाई ४१९

कुंज वन मंदिर

सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए ।

दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूं सोभा सोए ॥ १

यमुनाजीके दोनों ओरके पुलमहलके बीचमें सात घाट सुशोभित हैं. इन दोनों पुल महलों पर पाँच भूमिकाएँ एवं छठी चाँदनी हैं. इनकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात ।

पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात ॥ २

दोनों पुलमहलके आमने-सामने झरोखे सुशोभित हैं. इन दोनों पुलोंके मध्यमें तट पर्यन्त विस्तृत यमुनाजीका जल तालकी भाँति शोभायमान है.

तलें दस घडनाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत ।

स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत ॥ ३

इन पुलोंके नीचे दस जलधाराएँ (घड़नालें) हैं. जिन पर नहरोंकी भाँति जल प्रवाहित होता है. इन पुलों पर स्थित भवनमें आकर श्यामश्यामाजी एवं सखियाँ लीलाएँ करते हैं.

खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैयन कों ।

कै विध खेल कहूं केते, आवे ना जुबां मों ॥ ४

इन पुलमहलोंकी लीलाओंमें धामधनी सखियोंको अपार सुख प्रदान करते हैं. यहाँकी विभिन्न लीलाओंका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

इन मोहोल आगूं घाट केलका, इस तरफ आगूं बट घाट ।

तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट ॥ ५

इन पुल महलोंके आगे एक ओर केलका घाट है तो दूसरी ओर वटका घाट है। मध्यसे देखने पर तीन घाट दायीं ओर एवं तीन बायीं ओर दिखाई देते हैं। मध्यमें स्थित पाटका घाट चाँदनी सहित सुशोभित है।

सात घाट को लेयके, आगूं आए अरस द्वार ।

इत पसू पंखी कै खेलत, ए सिफत न आवे सुमार ॥ ६

सातों घाटोंका दिग्दर्शन करवाकर अब परमधाम-रङ्ग भवनके मुख्य द्वारके सम्मुख पहुँच गए हैं। यहाँ पर पशु-पक्षी विभिन्न क्रीड़ाएँ करते हैं। इनकी शोभाका कोई पारावार नहीं है।

चल्या गया वन ताललों, एकल छत्री अति भिल ।

तलाब धाम के बीच में, आगूं निकस्या चल ॥ ७

वटके घाटसे लेकर हौजकौसर ताल पर्यन्त एक छत्रकी भाँति सुशोभित यह कुञ्ज-निकुञ्ज वन रङ्गमहल एवं हौजकौसरके मध्यसे होता हुआ अक्षरधाम तक पहुँचा हुआ है।

जमुना धाम तलाब के, बीच में कै विवेक ।

कुंजवन मंदिर कै रंगों, कहा कहूं रसना एक ॥ ८

यमुनाजीसे लेकर रङ्गभवन एवं तालके मध्य तक विस्तृत इस वनकी विशेषताएँ विभिन्न प्रकारकी हैं। इसमें स्थित विभिन्न रङ्गोंके मन्दिरोंकी शोभाका वर्णन यह जिह्वा नहीं कर सकती।

उज्जल रेती मोती निरमल, जोत को नाही पार ।

आकास न मावे रोसनी, झलकारों झलकार ॥ ९

यहाँ पर मोतीकी भाँति उज्ज्वल एवं निर्मल रेती चमकती है। इसकी ज्योतिका कोई पारावार नहीं है। इसका प्रकाश आकाशमें भी नहीं समाता है, इससे सम्पूर्ण वातावरण ही झिलमिलाता है।

कै पूरे इन वन में, तिनके बड़े द्वार ।

तिन द्वार द्वार कै गलियां, तिन गली गली मंदिर अपार ॥ १०

यहाँ पर विभिन्न प्रकारके मुहल्ले जैसे बने हुए हैं। उनके द्वार भी बड़े-बड़े हैं। उन द्वारोंके सम्मुख विभिन्न गलियाँ हैं और उन गलियोंमें भी अपार मन्दिर हैं।

कै मंदिर इत फिरते, कै चारों तरफों मंदर ।

तिनमें कै विध गलियां, निकुंज वन यों कर ॥ ११

इस प्रकार इस वनके चारों ओर गोलाकार एवं चतुष्कोण मन्दिर हैं। इन गोलाकार मन्दिरोंको निकुञ्ज वन कहा गया है। इनमें भी विभिन्न गलियाँ हैं।

मंदिर दिवालें गलियां, नकस फल फूल पात ।

मंदिर द्वार देख देख के, पलक न मारी जात ॥ १२

इन मन्दिरोंकी दीवारों तथा गलियोंमें फल-फूल एवं पत्तोंकी विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी है। मन्दिरोंके द्वारोंकी शोभा देखकर आँखोंकी पलकें भी बन्द नहीं होती हैं।

कै पूरे कै छूटक, कै गलियों बने हुनर ।

या गलियों या मंदिरों, सब छाया बराबर ॥ १३

यहाँ पर अनेक मन्दिर एक साथ हैं एवं अनेक अलग-अलग भी हैं। उनके मध्यकी गलियाँ कलात्मक हैं। इन गलियों तथा मन्दिरोंमें वृक्षोंकी छाया समान रूपसे विद्यमान है।

इन वन बोहोतक बेलियां, सोभा अति सुंदर ।

फल फूल पात कै रंगों, या बाहेर या अंदर ॥ १४

इन वनोंमें विभिन्न प्रकारकी लताएँ हैं। उनकी शोभा भी अति सुन्दर है। उनके फल, फूल तथा पत्ते विभिन्न रङ्गके हैं। वे बाहर एवं भीतर सर्वत्र शोभायमान हैं।

कै छलकत जल चेहेबच्चों, करत झीलना जाए ।

अतंत खूबी इन वन की, क्यों कहूं इन जुबांए ॥ १५

इन वनोंमें जलसे भरे हुए विभिन्न प्रकारके जलकुण्ड (चेहबच्चे) हैं। वहाँ

पर धामधनी एवं सखियाँ जल क्रीड़ा करते हैं. इस प्रकार इन वनोंकी अद्वितीय शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे करें ?

फूल पात जो कोमल, रगा तिनमें कोई नाहिं ।

तिनके सेज चबूतरे, कई बने जो मोहोलों माहिं ॥ १६

यहाँके वृक्षों एवं लताओंके फूल एवं पत्ते अति कोमल हैं जिनमें रेशाएँ भी नहीं दीखती हैं. महलों तथा चबूतरों पर इनकी अनेक शय्या बनी हुई हैं.

इत कै रंग जवेरन के, तिन कै रंगों कै नूर ।

ए मिसाल इनकी, आकास न माए जहूर ॥ १७

यहाँ पर रत्नजड़ित वृक्षोंसे विभिन्न रङ्गोंकी रश्मियाँ निकलती हैं. इनकी उपमा ही यही है कि इनका प्रकाश आकाशमें भी नहीं समा पाता है.

कै वन स्याह सुपेत हैं, कै वन हैं नीले ।

कै वन लाल गुलाल हैं, कै वन हैं पीले ॥ १८

यहाँ पर कतिपय वृक्ष काले हैं, कतिपय श्वेत हैं तथा कतिपय नीले, पीले, लाल एवं गुलाबी हैं.

कै वन हैं एक रंग के, कै एक एक में रंग दस ।

इन विध कै अनेक हैं, कै जुदे जुदे रंगों कै रस ॥ १९

यहाँ पर अनेक वृक्ष एक रङ्गके हैं तो अनेक वृक्ष ऐसे हैं उनमें-से एक-एकसे दस-दस रङ्ग निकलते हैं. ऐसी विविधतावाले वृक्ष यहाँ अनेक हैं जो विभिन्न रङ्गोंका रसास्वादन कराते हैं.

फल फूल छाया पात की, खुसबोए जिमी और वन ।

आकास भर्यो नूरसों, किया रेत वन रोसन ॥ २०

यहाँ पर फल, फूल एवं पत्तोंसे सघन छाया बनी हुई है जिनसे वनकी भूमि भी सुगन्धित हुई है. इस वनकी रेतकी किरणोंसे सम्पूर्ण आकाश प्रकाशित होता है.

अनेक मेवे कै भांतके, सोए कहूं क्यों कर ।

नाम भी अनेक मेवनके, और स्वाद भी अनेक पर ॥ २१

यहाँ पर विभिन्न प्रकारके मेवे हैं। उनके विषयमें क्या कहा जाए ? उनके नाम भी अनेक हैं और उनके स्वाद भी अनेक हैं।

कै मीठे मीठे मीठरडे, कै फरसे फरसे मुख पर ।

कै तीखे तीखे तीखरडे, कै खटे खटे खटुबर ॥ २२

ये मेवे कई अति मधुर हैं तो कई कषाय स्वादके हैं। कई अति तीखे हैं तो कई खट्टे भी हैं।

इन एक एक में अनेक रस, रस रस में अनेक स्वाद ।

इन विध मेवे अनेक रस, सो कहाँ लों वरनों आद ॥ २३

इन एक-एक मेवेमें अनेक रस हैं और प्रत्येक रसमें अनेक स्वाद हैं। इस प्रकार यहाँ अनेक रसके मेवे हैं जिनका वर्णन कहाँ तक किया जाए ?

कै मेवे हैं जिमी में, कै बेलियों दरखत ।

कै मेवे फल की खलडी, कै रस बीज में उपजत ॥ २४

यहाँ पर अनेक मेवे भूमि पर लगे हैं तो अनेक लताओं एवं वृक्षों पर लगे हुए हैं। इनमें अनेक मेवोंके फलके छिलके रसप्रद हैं तो अनेकके बीजमें रस होता है।

बोहोत रेती इन ठौर है, निपट सेत उजल ।

खेल खुसाली होत है, सखियां पाऊ चंचल ॥ २५

यहाँ पर अत्यधिक रेती बिछी हुई है। वह श्वेत तथा अत्यन्त उज्ज्वल है। जब यहाँ पर सखियाँ खेलती हैं तब उनके चञ्चल चरण थिरकनेसे बड़ा आनन्द होता है।

इत कै चौक छाया मिने, कहूं चांदनी चौक ।

स्याम स्यामाजी सखियन सों, खेल करें कै जौक ॥ २६

इन वृक्षोंकी छायामें अनेक चौक हैं। कहीं-कहीं मन्दिरोंके आगे चाँदनी चौक

जैसी शोभा है, जहाँ पर श्रीश्यामश्यामाजी सखियोंके साथ विभिन्न प्रकारसे आनन्ददायी लीलाएँ करते हैं.

क्यों कहूँ वनकी रोसनी, सीतल वाए खुसबोए ।

ए जुबां ना केहे सके, जो सुख आतम होए ॥ २७

इन वनप्रदेशके प्रकाशके विषयमें क्या कहा जाए ? चारों ओर शीतल एवं सुगन्धित वायु बहता है. यहाँ पर आत्मा जो सुख अनुभव करती है उसे जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

इन वन की हृद धामलों, और झरोखों दिवाल ।

इन वन में कै हिडोले, होत रंग रसाल ॥ २८

इस वनकी सीमा एक ओर अक्षर धाम तक पहुँची है तो दूसरी ओर वट पीपलकी चौकीके साथ लगी है. इनकी शाखाएँ रङ्गभवनकी दीवार एवं झरोखों तक पहुँची हैं. इस वनमें अनेक झूले शोभायमान हैं जिन पर झूलते हुए आनन्दका अनुभव होता है.

चौक चार उपरा ऊपर, बट पीपल बखान ।

बराबर थंभ छातें, ठौर सोभित सब समान ॥ २९

यहाँ पर वट एवं पीपलके वृक्षोंकी ऊँचाई उत्तरोत्तर बढ़ती हुई चार भूमिका तक पहुँची हुई है. स्तम्भके ऊपर बनी हुई छतकी भाँति इन वृक्षोंकी छत सभी स्थानोंमें समानरूपसे सुशोभित है.

घाट के दोऊ तरफ पुल, मिले दोऊ तरफों इन ।

वन नारंगी चंद्रवा, पोहोंच्या दिवालों रोसन ॥ ३०

यमुनाजीके दोनों तट पर स्थित वटके घाटके साथ लगता हुआ एक पुल है जो इन दोनोंको जोड़ता है. इसके साथ नारङ्गीका वन चंद्रवाकी भाँति शोभायमान है जिसका प्रकाश रङ्गमहलकी दीवार तक पहुँचता है.

चार थंभ बराबर सोभित, उपरा लग ऊपर ।

घट बढ ना दोऊ तरफों, ए सोभा अति सुंदर ॥ ३१

वटके घाटमें वट वृक्षके चारों ओर वटवृक्षजटाओं (वड़वाइयों) के चार-

चार स्तम्भ हैं जो उपरा-ऊपर पाँचों भूमिकाओं तक समान रूपसे शोभायमान हैं. यमुनाजीके दोनों ओर स्थित ये वटवृक्ष कोई छोटे बड़े नहीं अपितु सभी समान हैं. इस प्रकार इनकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है.

द्वार समान सब देखत, ऊपर सोभा अपार ।

माहें खट छपरें वन की, हिडोले छातें चार ॥ ३२

इन वृक्षोंके द्वार भी समान दिखाई देते हैं. उनकी अपार शोभा भी उत्तरोत्तर बढ़ रही है. इन वृक्षोंके चारों छतोंमें झूले लगे हुए हैं.

कै हिडोले एक छातें, छातें छातें खट अनेक ।

चारों तरफों हार देखिए, जानों एक एक थें विसेक ॥ ३३

इन वृक्षोंकी एक ही छत पर अनेक झूले लगे हैं. इसी प्रकार प्रत्येक छतमें अनेक झूले हैं. चारों ओर इन झूलोंकी पङ्क्तियोंको देखें तो ये एकसे एक अधिक सुन्दर दिखाई देती हैं.

श्री राजस्यामाजी सखियां, जब इत आए हींचत ।

इन समे वन हिडोले, सोभा क्यों कर कहूं सिफत ॥ ३४

श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ जब यहाँ आकर झूलते हैं इस अवसर पर इन वनोंकी तथा इन झूलोंकी शोभाका वर्णन यह जिह्वा कैसे करेगी ?

जवेर भी रस जिमी के, और जिमीको रस बन ।

नरमाई फूल पात अधिक, ना तो दोऊ बराबर रोसन ॥ ३५

इस दिव्य भूमिके रत्न भी रसप्रद हैं एवं वन भी रसप्रद हैं. इन वृक्षोंके फूल एवं पत्तोंकी कोमलता भी अति अधिक है. मात्र दोनोंके प्रकाशमें ही समानता नहीं है.

चढ आवत बादलियां, सेहेरें घटा तरफ चार ।

इन समें वन सोभित, माहें बिजलियां चमकार ॥ ३६

जब आकाशमें चारों ओरसे मेघकी घटाएँ आच्छादित होती हैं इस समय बिजलीके चमकने पर वनकी शोभा अति सुन्दर दिखाई देती है.

बोए आवें सुगंध सीतल, उछरंग होत मलार ।

गाजत गंभीर मीठडा, इन समें सोहे सिनगार ॥ ३७

वर्षाऋतुमें शीतल एवं सुगन्धियुक्त वायु प्रवाहित होता है। जब मेघ मधुर एवं गम्भीर गर्जना करते हैं उस समय वनराजिकी शोभा अति सुन्दर लगती है।

हंस चकोर मैना कोइली, करें वनमें टहुंकार ।

बोलें बपैया बांबी दादुर, करें तिमरा भमरा गुंजार ॥ ३८

ऐसे समय हंस, चकोर, मैना तथा कोयल अपनी मधुर वाणीमें कलरव करते हैं। पपीहा, बांबी, मेढक, झींगूर एवं भवरें भी कर्णप्रिय स्वरमें गुणगान करते हैं।

हिडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत ।

अखंड सुख धनी धाम बिना, कौन देवे इन समें इत ॥ ३९

इस समय बारह हजार ब्रह्मात्माएँ श्यामश्यामाजीके साथ झूलतीं हैं। ऐसे समयमें धामधनीके अतिरिक्त अन्य कौन अखण्ड सुख प्रदान कर सकता है ?

ए निकुंज वन सब लेयके, जाए पोहोंच्या ताल ।

जमुना धाम के बीच में, ए बन है इन हाल ॥ ४०

यहाँसे होकर कुञ्ज निकुञ्जवनका विस्तार हौजकौसर तालकी ओर पहुँचा है। इस प्रकार यमुनाजी एवं रङ्गभवनके बीचमें यह वन अति शोभायमान है।

जित बोहोत रेती मोती पतले, गडत घूटन लों पाए ।

इत सबे मिल सखियां, रबद गुलाटें खाएं ॥ ४१

यहाँ पर मोतियोंकी भाँति चमकने वाली सूक्ष्म रेती पर जब सखियाँ चलने लगती हैं तब उनके पाँव घुटने तक धँस जाते हैं। यहाँ पर सभी सखियाँ मिलकर स्पर्धा करती हुई छलाङ्गें लगाती हैं।

इत बोहोत रेतीमें सखियां, दौड दौड देत गुलाटें ।

कूदें दौडें ठेकत हैं, रेत उडावें पांड छटें ॥ ४२

इस सघन रेतीमें सभी सखियाँ दौड़ती हुई गुलाटें खाती हैं एवं उछलती हुई छलाङ्गें लगाती हैं और अपने पाँवसे रेत उछालती हैं।

कबूँ दौडत राज सखियां, सबे मिलके जेती ।

हांसी करत जमुना तट, जित बोहोत गडत पांड रेती ॥ ४३

कभी-कभी श्रीराजजी भी सखियोंके साथ मिलकर यहाँ पर दौड़ते हैं। इस प्रकार यमुना तट पर भी, जहाँ रेतीमें पाँव धसते हैं, श्रीराजजी विनोदपूर्ण लीलाएँ करते हैं।

अनेक रामत रेतीय में, बहुविध इन ठौर होत ।

ए वन स्याम स्यामाजीको, है हांसीको उदोत ॥ ४४

इस रेतीली भूमिमें विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ होती हैं। यह कुञ्ज-निकुञ्ज वन श्यामश्यामाजीकी हास्यविनोदपूर्ण क्रीडास्थली है।

कहूँ कहूँ सखियां ठेकत, मांहे रेती रब्द कर ।

पीछे हंस हंस ताली देयके, पडत एक दूजी पर ॥ ४५

यहाँकी रेतीमें कहीं-कहीं पर सखियाँ स्पर्धा करती हुई छलाङ्ग लगाती हैं। फिर प्रसन्न होकर करताली देती हुई एक दूसरी पर गिर पड़ती हैं।

एकल छत्री सब वनकी, भांत चंद्रवा जे ।

फेर फेर उमंग होत है, ठौर छोडी न जाए ए ॥ ४६

यहाँके वन चंद्रवाकी भाँति एक छत्रीके रूपमें दिखाई देते हैं। यहाँ पर क्रीड़ा करनेके लिए बार-बार उत्कण्ठा होती है। इस प्रकार यह स्थान छोड़कर अन्यत्र जाया नहीं जाता है।

फेर फेर इतही दौडत, कहूँ ठेकत दौडत गिरत ।

सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हांसी करत ॥ ४७

इसीलिए सखियाँ बार-बार यहीं दौड़ती हैं तथा छलाङ्ग लगाती हुई गिर जाती हैं। अन्य सभी सखियाँ मिलकर उन सखियोंकी हँसी करती हैं।

केते खेल कहूँ सखियन के, जो करत वन नित्यान ।

खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान ॥ ४८

यहाँ पर नित्यप्रति सखियोंकी ऐसी अनेक क्रीडाएँ होती हैं। जब

श्यामश्यामाजी भी इन क्रीड़ाओंमें सम्मिलित होते हैं तब सखियोंके इस खेलका कोई पारावार ही नहीं रहता है।

महामत कहे ऐ मोमनो, देखो ताल पाल के वन ।

ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन ॥ ४९

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! देखो, अब मैं हौजकौसर तालकी पालमें स्थित वनका वर्णन करता हूँ। इनको हृदयमें धारण कर आनन्दका अनुभव करो।

प्रकरण ७ चौपाई ४६८

हौज कौसर ताल जित जोऐ कौसर मिली

अब कहूं मै ताल की, अंदर आए सको सो आओ ।

जो होवे रूह अरस की, फेर ऐसा न पावे दाओ ॥ १

अब मैं तालका वर्णन कर रहा हूँ, जिनको इसके अन्दर आना हो वे आ सकते हैं। जो परमधामकी आत्माएँ होंगी, उन्हें पुनः ऐसा सुअवसर प्राप्त नहीं होगा।

एक हीरे की पाल है, तिनमें कै मोहोलात ।

गृद देहुरी कै वन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात ॥ २

इस ताल पर एक हीरेकी पाल है। उसमें अनेक भवन हैं। इसके चारों ओर एक सौ अठ्ठाईस देहुरियाँ तथा बड़ेवनके वृक्षोंकी पाँच पङ्क्तियाँ हैं। इस वनके फल, फूल तथा पत्तोंके विषयमें क्या कहें ?

जब आवत इत अरससे, चढिए इन घाट ताल ।

चबूतरे दोए देहुरी, सीढ़ियां चढते होत खुसाल ॥ ३

जब श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ रङ्गमहलसे इधर आते हैं तब वे झुण्डके घाटके द्वारसे सीढ़ियाँ चढ़कर तालकी पाल पर आते हैं। पालके बाह्यभागमें स्थित दो चबूतरे एवं दो देहुरियोंके मध्य शोभायमान सीढ़ियोंसे पाल पर चढ़ते हुए अति प्रसन्नताका अनुभव होता है।

ए जो कही दो देहुरी, तिन बीच पौरी दोए ।

एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं देहुरी सोए ॥ ४

इन दोनों देहुरियोंके बीचमें दो तोरण (कमान) शोभायमान हैं। उनमें-से एक चबूतरेके साथ लगा हुआ है तो दूसरा देहुरीके साथ सुशोभित है।

इतथें सीढियां चढती, ऊपर आए पोहोंची किनार ।

दोऊ तरफ दोए चबूतरे, बीच चौक खूंटों चार ॥ ५

यहाँसे सीढ़ी चढ़कर जब ऊपर पाल तक पहुँचते हैं तो पाल पर सीढ़ीके दोनों ओर दो चबूतरे दिखाई देते हैं। उनके मध्यमें चतुष्कोण चौक है।

ए बडा घाट तरफ अरसके, फिरते तीन घाट तरफ और ।

बने गृदवाए पाल पर, जुदी जिनसों चारों ठौर ॥ ६

रङ्गमहलकी ओरसे देखें तो यह घाट सबसे विशाल दिखाई देता है। इसके तीनों ओर अन्य तीन घाट सुशोभित हैं। इस प्रकार पाल पर चारों ओर स्थित इन घाटोंकी रचना विशेष प्रकार की है।

ताल बीच टापू बन्यो, मोहोल बन्यो तिन पर ।

तिन गृदवाए जल है, खूबी हौज कहूं क्यों कर ॥ ७

तालके मध्यमें एक द्वीप (टापू) शोभायमान है। इस पर एक विशाल भवन सुशोभित है, जिसके चारों ओर जल है। इस प्रकार हौजकौसर तालकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ?

नेक कहूं तिनका बेवरा, चारों तरफ वन पाल ।

अव्वल बडे घाट से, ए जो हौज कौसर कह्या ताल ॥ ८

तथापि मैं उसका संक्षिप्त विवरण दे रहा हूँ। इसकी पालके चारों ओर वन, उपवन हैं। अब सर्व प्रथम इसके बड़े (झुण्डके) घाटसे वर्णन आरम्भ करते हैं।

जो झुंड ताल की पाल पर, ऊंचा अतंत है सोए ।

फेर आए लग्या भोम सों, इन जुबां सोभा क्यों होए ॥ ९

इस तालकी पाल पर स्थित झुण्डके घाटके वृक्ष अति (पाँचवीं भूमिका तक)

ऊँचे हैं। इनकी शाखाएँ प्रत्येक भूमिकामें परस्पर जुड़ती हैं। नश्वर जिह्वाके द्वारा इस शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

एह झुंड है घाट पर, और पाल ऊपर सब बन ।

फिरता आया झुंड लों, पोहोंच्या पांवडियों रोसन ॥ १०

इस घाट पर वृक्षोंका झुण्ड है। शेष पालके ऊपर सभी वृक्ष समान रूपसे हैं। ये वृक्ष पालको घेरकर झुण्ड तक पहुँचे हैं। जहाँ पर सीढ़ी प्रकाशित हो रही है।

और झूंड जो दूसरा, तरफ दाहिनी सोए ।

छे छतें सिढियों पर, बांदी मिल कर दोए ॥ ११

दायीं ओर भी इसी प्रकार वृक्षोंका दूसरा झुण्ड है। दोनों ओरके वृक्षोंने मिलकर सीढ़ियोंके ऊपर छः छत बनाई हुई है। जिनकी पाँच भूमिका और छठी चाँदनी हैं।

जो कहे झुंड दोऊ तरफ के, दोए दोए चबूतरे किनार ।

चौथे हिसे चबूतरे, हार फिरवली खूटों चार ॥ १२

दोनों ओरके दोनों चबूतरेके किनार पर वृक्षोंके झुण्ड सुशोभित हैं। पालके चतुर्थ भाग (२५० मन्दिर) में स्थित इन चबूतरोंके चारों कोनोंको घेर कर वृक्षोंकी यह पङ्क्ति आई है।

चौक बीच आए जब देखिए, दोऊ तरफ बने दोऊ द्वार ।

दोए द्वार दोए सिढियों, चौक सोभित अति अपार ॥ १३

चबूतरोंके मध्यमें स्थित चौकमें आकर जब देखें तो दोनों ओर दो द्वार दिखाई देते हैं। दोनों द्वारोंमें दो सीढ़ियाँ हैं। इस प्रकार इस चबूतरेकी शोभा अनुपम है।

एक एक बाजू चबूतरे के, तिनके हिसे चार ।

दो हिसे खूंट दो दिवालों, और दो हिसे बीच द्वार ॥ १४

इस चबूतरेके चारों दिशाओंके किनारको चार-चार भागोंमें विभक्त करते हैं तो दोनों कोनेके दो भागोंमें वृक्षोंकी पङ्क्ति दीवारकी भाँति है और शेष दो भाग (१२५ मन्दिर) में द्वार है।

चारों खूने दोए चबूतरे, दोऊ तरफों चौथे हिसे ।

तरफ आठ पेड दिवाल ज्यों, सोभा कही न जाए मुख ए ॥ १५

इन दोनों चबूतरोंके चारों कोनोंके चार-चार भागोंमें अर्थात् आठ भागोंमें दीवारकी भाँति वृक्ष हैं उनकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

इसी भांत दोऊ चबूतरे, चारों खूंटों पेड दिवाल ।

जब देखिए बीच चबूतरों, चार द्वार इसी मिसाल ॥ १६

इसी प्रकार दोनों चबूतरोंके चारों कोनों पर वृक्षोंकी आठ दीवारें हैं। जब इन चबूतरोंके मध्यमें आकर देखेंगे तो वहाँ पर (चारों दिशाओंमें) चारों द्वार अनुपम दिखाई देते हैं।

खूंट आठों दोऊ चबूतरे, और आठों बने द्वार ।

सोलें दिवालें हुई सबे, सोभा लेत पेडों हार ॥ १७

इस प्रकार दोनों चबूतरोंमें कुल आठ कोण एवं आठ द्वार हैं तथा वृक्षोंकी सोलह दीवारें हैं जो अति सुन्दर रूपमें सुशोभित हैं।

जानो तीनों चौक बराबर, बारे द्वार देखाई देत ।

चार चार द्वार चबूतरे, दो सीढियों पर सोभा लेत ॥ १८

इस घाट पर स्थित चबूतरे और उनके मध्यका चौक तीनों एक समान लगते हैं। इन तीनोंमें प्रत्येकमें चार-चार इस प्रकार कुल बारह द्वार दिखाई देते हैं। दो बड़े द्वार (२५० मन्दिरके) सीढियोंके ऊपर सुशोभित हैं।

दस द्वार हुए हिसाब के, हुए बारे देखन मों ।

देखे बीच तीनों चौक से, ए किन मुख खूबी कहों ॥ १९

इस प्रकार गिनतीमें तो दश ही द्वार होते हैं किन्तु तीनों चौकोंमें अलग-अलग खड़े होकर देखने पर ये द्वार बारह दिखाई देते हैं। इनकी शोभा कैसे बताई जाए ?

दोऊ तरफ देहुरियां पाल पर, पेड सीढियों के लगती ।

दो सीढी ऊपर आगूं द्वारने, चौक आगूं देत खूबी ॥ २०

इस पाल पर घाटकी सीढियोंके दोनों ओर दो देहुरियाँ सुशोभित हैं, जो पेड़

और सीढ़ियोंसे लगती हुई हैं। देहुरीके दोनों द्वारके आगे सीढ़ियाँ हैं, उनके आगे सुन्दर चौक शोभायमान है।

एक तरफ एक सीढ़ियों, सामी दूजी के मुकाबिल ।

इसी भांत तरफ दूसरी, सोभा कहा कहे इन अकल ॥ २१

एक देहुरीका एक द्वार सीढ़ियोंकी ओर है। इसी भाँति दूसरी देहुरीका भी एक द्वार सीढ़ियोंकी ओर है, इस प्रकार दोनों द्वार आमने-सामने हैं। इसकी शोभाका वर्णन स्वप्नकी बुद्धिसे कैसे हो सकेगा ?

एक एक सीढ़ियों पर, तरफ दूसरी पेड दिवाल ।

तरफ तीसरी पाल पर, चौथी तरफ मोहोल ताल ॥ २२

देहुरीके द्वारोंकी एक ओर सीढ़ियाँ हैं तो दूसरी ओर वृक्षोंकी दीवार है। तीसरी ओर पाल है तथा चौथी ओर द्वीप (टापू) भवन है।

दो देहुरी सोभा लेत हैं, ताल के खूंटों पर ।

द्वार सामी टापूअ के, दोरी बंध बराबर ॥ २३

इस प्रकार तालके घाटके कोने पर दो देहुरियाँ शोभायमान हैं। इस घाटका द्वार तथा सामने द्वीप (टापू) महलका द्वार दोनों एक ही पंक्तिमें समान रूपसे विद्यमान हैं।

दोऊ तरफों दो देहुरी, उतरती जल पर ।

तिन आगूं दोए चबूतरे, सो आए छत अंदर ॥ २४

पाल पर सीढ़ीके दोनों ओर दो देहुरियाँ हैं। उनके मध्यसे जलकी ओर सीढ़ियाँ उतरती हैं। उसके आगे दोनों ओर दो चबूतरे हैं। उनके ऊपर छत शोभायमान है।

ए जो कही दोए देहुरी, बीच ऊपर दोए मेहेराब ।

तीनों घाट इन विध, सोभित बिना हिमाब ॥ २५

इन दोनों देहुरियोंके नीचे दो कमान हैं। उनके ऊपर ये दो देहुरियाँ सुशोभित हैं। इस प्रकार ये तीनों घाट (झुण्डका, तेरह देहुरीका एवं नवदेहुरीका) शोभायमान हैं। इनकी शोभाका कोई पारावार नहीं है।

ए जो पांवडियां घाटों पर, जडाव ज्यों झलकत ।

अनेक रंगों किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत ॥ २६

इन घाटोंकी सीढ़ियाँ रत्न जड़ितकी भाँति झलकती हैं। उनसे विभिन्न रङ्गोंकी किरणें उठती हैं जिससे सम्पूर्ण आकाश तरङ्गित होता है।

और सीढ़ियां जो बाहरकी, छत आई लग तिन ।

बने छज्जे उपरा ऊपर, ठौर खुसाली खेलन ॥ २७

पालके बाहरकी ओरकी संक्रमणी सीढ़ियाँ पालकी छत तक आई हुई हैं। इस प्रकार झुण्डके घाट पर उपरा-ऊपर पाँच भूमिकाओं तक वृक्षोंके छज्जे हैं। ये सभी स्थान आनन्दपूर्वक खेलनेके लिए हैं।

ए घाट अति सोहना, चबूतरे बुजरक ।

अति विराज्या झुंड तले, ऊपर छतें इन माफक ॥ २८

यह घाट अति सुन्दर है। इसके चबूतरे भी श्रेष्ठ हैं। वृक्षोंके झुण्डके नीचे इसकी शोभा अनुपम है। इसके ऊपर भी सुन्दर छत है।

जब हक आवत तालको, आए बिराजत इत ।

सो खेल जल का करके, ऊपर सौकको बैठत ॥ २९

जब श्रीराजजी ताल पर आते हैं, तो यहाँ पर विराजमान होते हैं। वे जलक्रीड़ा कर प्रसन्नताके लिए यहाँ पर बैठते हैं।

पीछे तलें या ऊपर, रंग भर रूहें खेलत ।

ए खुसाली खावंदकी, जुबां क्या करसी सिफत ॥ ३०

सखियाँ घाटके ऊपर, नीचे तथा पृष्ठभागमें आनन्द पूर्वक खेलती हैं। श्रीराजजीकी प्रसन्नताके लिए ही सखियाँ यहाँ पर क्रीड़ा करती हैं। इस शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है।

कै रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात ।

अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात ॥ ३१

यहाँके वृक्षोंमें विभिन्न प्रकारके रङ्ग हैं। इसी प्रकार उनके पत्ते, फल तथा

फूलमें भी विभिन्न प्रकारके रङ्ग हैं। इनका वर्णन भी अखण्ड भूमिमें ही हो सकता है।

इन ठौर रेती नहीं, एक जवेर को बंध ।

खुसबोए नूर अतंत, क्यों कहूं सोभा सनंध ॥ ३२

यहाँ पर रेती नहीं है। यह पाल एक ही हीरेका है। इसका प्रकाश अति सुगन्धित है। इसकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

पाल हीरे की उज्जल, ऊपर रोसन बन छाँहे ।

तिनसे पाल सब रोसन, जिमी हरी पाच देखाए ॥ ३३

हीरेकी यह पाल अति उज्ज्वल है। इसके ऊपर जब वृक्षकी छाया पड़ती है उस समय यह सारी पाल पाचकी भाँति हरे रङ्गकी दिखाई देती है।

ए वन बाईं तरफ का, बन्या दोऊ भर पाल ।

देत नूर आकास को, सोभा लेत अति ताल ॥ ३४

पालकी बायीं ओरके (बड़े वनके) वृक्षोंने दोनों ओरसे पालको घेर लिया है। इनका प्रकाश आकाश तक छा जाता है, जिसके कारण तालकी शोभामें वृद्धि हो जाती है।

अंदर देहुरियां पाल पर, ऊपर वन विराज्या आए ।

ए सोभा वन लेत है, ए खूबी कही न जाए ॥ ३५

पालके अन्दर (जल) की ओर देहुरियाँ हैं। ऊपर वनराजि छाया हुई है। इससे वनकी शोभामें और अभिवृद्धि होती है। इसकी विशेषताका वर्णन नहीं हो सकता है।

ऊपर पाल जो देहुरी, फिरती आगूं गृदवाए ।

तिन सबों आगूं चबूतरा, तिन दोऊ तरफो उतराए ॥ ३६

इस पाल पर चारों ओर देहुरियाँ हैं। उनके आगे चबूतरे हैं। उन पर नीचे उतरनेके लिए दोनों ओर सीढ़ियाँ शोभायमान हैं।

यों देहुरी सब चबूतरों, तिन सीढियां सबकों ।

हर देहुरी हर चबूतरे, सीढियां दोऊ तरफों ॥ ३७

इस प्रकार सभी देहुरियोंके सामने एक-एक चबूतरे हैं तथा उन सभी चबूतरोंके साथ सीढियाँ हैं। प्रत्येक देहुरीके साथ चबूतरा है और प्रत्येक चबूतरेके दोनों ओर सीढियाँ हैं।

दो सीढियों के बीच में, तलें चबूतरे द्वार ।

तिन सब सीढियों परकोटे, चढती कांगरी दोऊ किनार ॥ ३८

दो सीढियोंके मध्यमें एक चबूतरा है उस पर चार स्तम्भ उठकर एक देहुरी बनी है। जिसके चारों दिशाओंमें चार द्वार हैं। इन सीढियोंके साथ ही एक परकोटा है तथा दोनों किनारों पर कांगरी हैं।

सीढियों पर जो चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब ।

मेहेराब आगूं जो चबूतरा, सोभित है ढिग आब ॥ ३९

देहुरियोंके आगेके चबूतरोंसे नीचे उतरती हुई सीढ़ी नीचे चौक तक पहुँचती है। उसके आगे कमान हैं। इन कमानोंके आगे एक ५०० मन्दिरका चबूतरा है। वह तालके जल तक पहुँचा है।

दो दो सीढियों के बीच में, ए जो छोटे कहे दो द्वार ।

तिन पर अजब कांगरी, अति सोभित पाल अपार ॥ ४०

दोनों ओरकी सीढियोंके मध्यमें दो-दो छोटे द्वार हैं। उनके ऊपर अद्भुत काँगरी है। पाल पर इनकी शोभा अत्यधिक होती है।

पाल ऊपर जो देहुरी, बीच कठेडा सबन ।

ए बैठक सोभा लेत है, कहा कहूं जुबां इन ॥ ४१

पालके ऊपरकी देहुरीमें कठेड़ा शोभायमान है। यहाँ पर श्रीराजश्यामाजीकी अति सुन्दर बैठक है। इस जिह्वके द्वारा उसका वर्णन नहीं हो सकता है।

घाट बाईं तरफ नव देहुरी का

घाट बाईं तरफका, चौथे हिसे तक ।

ऊपर झुंड विराजिया, अति सोभा बुजरक ॥ ४२

झुण्डके घाटकी बायीं ओर (उत्तर दिशामें) पालके चतुर्थ भागमें नव देहुरीका

घाट है. यहाँ पर वृक्षोंका झुण्ड शोभायमान है. उसकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

ऊपर बनी नव देहुरी, फिरते आए तलें आठ थंभ ।

अदभूत बन्या है कठेडा, ए बैठक अति अचंभ ॥ ४३

पालके ऊपर एक चबूतरा (७५० X २५० मन्दिरका) है उसके किनार पर आठ स्तम्भ है. उनके ऊपर छत है. उसके ऊपर नौ देहुरियाँ हैं एवं नीचे चबूतरेके स्तम्भोंके मध्य अद्भूत कटहरा है. इस प्रकार यह बैठक आश्चर्यजनक है.

उतरती दोए देहुरी, तिन तले दोए चबूतर ।

बीच उतरती सिढियां, तले चौक पानी भीतर ॥ ४४

इस घाटमें भी दोनों देहुरीके मध्यसे सीढ़ी उतरती है. नीचे जाकर उसके दोनों ओर दो चबूतरे हैं. उनके मध्यसे सीढ़ी उतरकर जलके अन्दरके चबूतरे तक जाती है.

फेर कहूं इनका बेवरा, ज्यों जाहेर सबों समझाए ।

अब कहूं इन भांतसों, ज्यों मोमिनों हिरदें समाए ॥ ४५

अब पुनः नवदेहुरीका विवरण देते हैं, जिससे सभीको प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाए. अब मैं इस प्रकार कहूँगा जिससे यह दृश्य ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अङ्कित हो जाएगा.

पेड चार चारों तरफों, छाया सोभा लेत अतंत ।

हार किनार बराबर, इत ज्यादा दो दरखत ॥ ४६

इस घाटके चारों कोनोंमें चार वृक्ष हैं, जिनकी छाया अति सुन्दर है. किनारे पर समान वृक्षोंकी पङ्क्तियाँ हैं. वहाँ पर दो वृक्ष (पूर्व व पश्चिमके दो स्तम्भ) अधिक हैं.

नव चौकीका मोहोल जो, ए बडी ठौर बीच पाल ।

चौथा हिंसा पाल का, हुई देहुरी आगूं पडसाल ॥ ४७

इस प्रकार पालके मध्य नौ देहुरीका भवन बड़ा सुन्दर है. पालके चतुर्थ भागमें स्थित इस भवनके आगे खुलास्थान (पड़साल) है एवं उसके आगे देहुरियाँ हैं.

इतथें उतरती सिढियां, दाएं बाएं दो देहुरी ।

हुए तीनों चौक बराबर, सीढियां इतथें तले उतरी ॥ ४८

इस पड़सालसे आगे सीढियाँ उतरती हैं, जिनकी दायीं तथा बायीं ओर दो देहुरियाँ हैं. नीचे जाकर तीनों चौक समान रूपसे हैं. यहींसे जलकी ओर नीचे उतरनेके लिए सीढ़ी है.

देहुरी तले जो चबूतरे, चौक दूजा याही बराबर ।

जल ऊपर जो चबूतरा, आई सिढियां इत उतर ॥ ४९

इन देहुरियोंके नीचे जो दो चबूतरे हैं, उनके समान ही सीढ़ीका चौक भी है. यहाँसे उतरी हुई सीढियाँ जलके ऊपर स्थित चबूतरे तक आती हैं.

अब घाट छोड़ आगे चलें, क्यों कहूं खूबी ए ।

एक छाया सब पाल पर, और छाया पाल से उतरती जे ॥ ५०

अब इस घाटको छोड़कर आगे बढ़ते हैं. आगे पालकी शोभा अति सुन्दर है. किनारे पर स्थित वृक्षोंकी छाया पाल पर समान रूपसे छाई हुई है एवं पालसे नीचे तालकी ओर भी यह छाया पहुँची हुई है.

और हार दोऊ उतरती, लगती तीसरी तले डून ।

इन विध पेड़ बराबर, गृदवाए सबन ॥ ५१

चौरस पालके नीचे ढलकती पाल पर (एक तल्ला नीची) वृक्षोंकी दो पङ्क्तियाँ हैं. उनके आगे (एक तल्ला नीची) अन्य दो वृक्षोंकी पङ्क्तियाँ हैं (जिसे वनकी रौंस कहते हैं). इस प्रकार तालके चारों ओर बड़े वनके वृक्षोंकी पाँच हार एवं वनके रौंसकी दो हार समान रूपसे दिखाई देती हैं.

डारी लटकी जल पर, पेड़ गृद देहुरी हार ।

और पेड़ डारों डारी मिली, यों फिरती पाल किनार ॥ ५२

चौरस पालके वृक्षोंकी शाखाएँ जल तक झुकी हुई हैं. देहुरीके साथ-साथ वृक्ष भी चारों ओर पङ्क्तिबद्ध हैं. इस प्रकार पालके चारों ओरके वृक्षोंकी शाखाएँ एक दूसरेके साथमें मिली हुई दिखाई देती हैं.

घाट सोले देहुरी का

जमुना तरफ ताल के, जित जल भिल्या माहें जल ।

देहुरियां इन बंध पर, जल पर सोभित मोहोल ॥ ५३

हौजकौसर तालके पूर्व दिशाकी ओरसे यमुनाजीका जल आकर तालके जलमें मिलता है. सङ्गम (बन्ध) पर देहुरियाँ हैं जो जल पर स्थित भवनकी भाँति सुशोभित हैं.

तलें जाली द्वारें पाल में, जित जल रह्या समाए ।

इत बैठ झरोखों देखिए, जानों पूर आवत है धाए ॥ ५४

यहाँ पालके नीचे जालीदार चार जलद्वार हैं. यहींसे जल तालमें प्रवेश करता है. जलके ऊपर शोभायमान झरोखोंमें बैठकर देखनेसे जलका प्रवाह तीव्र गतिसे दौड़ता हुआ आ रहा दिखाई देता है.

चार देहुरियां लग लग, चारों तरफों चार चार ।

सोले बंध पर देहुरी, थंभ पचीस पांच पांच हार ॥ ५५

यहाँ पर चारों ओर एक-दूसरेके निकट चार-चार देहुरियाँ हैं. इन देहुरियोंके नीचे पाँच-पाँच हारके पच्चीस स्तम्भोंकी छत पर सोलह चौक हैं, जिनके ऊपर ये सोलह देहुरियाँ शोभायमान दिखाई देती हैं.

पचीस थंभ ऊपर कहे, तलें सोले थंभ गृदवाए ।

सो पोहोंचे दूजी भोम लों, भोम बीचकी अति सोभाए ॥ ५६

यहाँ पर घाटके ऊपरी भागमें पच्चीस स्तम्भ हैं तथा नीचे चारों ओर सोलह स्तम्भ हैं, वे दूसरी भूमिका (तल्ला) तक पहुँचे हुए हैं. इस प्रकार बीचमें बनी हुई यह भूमिका अति मनोहारी है.

इत कठेडा चारों तरफों, बीच कठेडा और ।

इन बीच चारों हांसों कुंड बन्या, जल जात चल्या इन ठौर ॥ ५७

इन सोलह स्तम्भोंके चारों ओर कटहरा है. इनके मध्यमें आठ स्तम्भोंमें लगा हुआ एक और कटहरा है. एवं मध्यमें चार पहलवाला जलका कुण्ड है. यहाँसे होकर जल तालकी ओर बहता है.

इत खुली भोम जल ऊपर, चारों तरफों बराबर ।

चारों हिसे हर तरफों, आधी खुली जिमी जल पर ॥ ५८

इस कुण्डमें जलके ऊपरकी खुली छत चारों ओर समान रूपसे है. यमुनाजीके जलके ऊपर मध्यमें आधा भाग खुला है और दोनों ओर मिलाकर आधा भाग ढँका हुआ है अर्थात् चार भागोंमें दो भाग ढँके हुए हैं और दो भाग खुले हैं.

ऊपर बैठक तलें जल, ए जो कहा कठेडा गृदवाए ।

इत आए जब बैठिए, तलें जल अति सोभाए ॥ ५९

कुण्डके चारों ओरसे तथा झरोखेकी ओरसे बने हुए कटहरेके मध्यभागमें जलके ऊपर छतमें बैठनेका स्थान है और नीचेसे पानी बहता है. जब यहाँ आकर सभी ब्रह्मात्माएँ बैठती हैं तब नीचेका बहता हुआ जल अति सुन्दर दिखाई देता है.

चारों तरफों कुंड ज्यों, इत देत खूबी अति जल ।

हाए हाए ए बात करते मोमिन, रूह क्यों न जात उत चल ॥ ६०

इस कटहरेसे चारों ओर देखने पर कुण्डकी भाँति दिखाई देने वाला बहता हुआ जल अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होता है. खेदकी बात है कि इस अनुपम शोभाका वर्णन करने पर भी ब्रह्मात्माओंका ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है.

चार देहुरी आगूं चबूतरा, तिन तले घडनाले चार ।

तिन बीच चारों झरोखे, करें पानी ऊपर झलकार ॥ ६१

यमुनाजीकी ओरसे देखने पर चबूतरेके ऊपर चार देहुरियाँ दिखाई देती हैं. नीचेसे चार जलद्वारों (घड़नालों) द्वारा जल बहता है. चार देहुरियों तथा चारों जलद्वारोंके मध्य चार झरोखे हैं. उनका प्रतिबिम्ब जल पर पड़नेसे वे झलहलाते हुए दिखाई देते हैं.

आगूं पांच थंभ ऊपर चबूतरा, इसी भांत झरोखों पर ।

सोभा लेत चारों झरोखे, थंभ तलें ऊपर बराबर ॥ ६२

इन जलद्वारोंके पाँच स्तम्भोंके ऊपर कमर भर ऊँचा ३४ स्तम्भोंका चबूतरा है। उसके दोनों ओर (पूर्व-पश्चिममें) झरोखें हैं। दोनों ओरके ये चार-चार झरोखे अति सुन्दर सुशोभित हैं। यहाँके ऊपर-नीचेके स्तम्भ भी समान शोभायुक्त हैं।

ऊपर दोऊ तरफों सीढियाँ, दोऊ तरफ उतरते द्वार ।

इत आया तले का चबूतरा, परकोटे सोभें दोऊ पार ॥ ६३

झरोखेके दोनों ओर सीढियाँ हैं। उसके दोनों ओर दो द्वार शोभायमान हैं। उससे नीचे उतरकर दूसरे राँस (चबूतरे) तक जाया जा सकता है। दोनों सीढियों पर परकोटे सुशोभित हैं।

जो अंदर चारों घडनाले, आगूं चबूतरा जल पर ।

तलें जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर ॥ ६४

चार जलद्वारों द्वारा यमुनाजीका जल तालमें प्रवेश करता है। इन जलद्वारोंके ऊपर एक चबूतरा है। नीचे जलद्वारों द्वारा जल प्रवाहित हो रहा है। इस प्रकार इस घाटकी शोभा अद्वितीय है।

सीढियों ऊपर जो चबूतरा, बने चारों झरोखे जे ।

इत आगूं सबनके कठेडा, अति बन्या ताल पर ए ॥ ६५

जलके चबूतरेके ऊपर सीढ़ी है, उसके ऊपरके चबूतरेके साथ झरोखे हैं। सभी झरोखोंमें कटहरा है। ताल पर प्रतिबिम्बित होकर वे अत्यन्त सुशोभित होते हैं।

सोभा जल जो लेत है, भर्यो नूर रोसन आकास ।

बीच लेहेरें लगेँ मोहोलनको, ए क्यों कहूं खूबी खास ॥ ६६

तालका जल इतना सुशोभित है कि उसका प्रकाश पूरे आकाशमें व्याप्त होता है। उसकी लहरें मध्यमें स्थित द्वीप भवन (टापू महल) में टकराती हैं। इस अद्वितीय शोभाका वर्णन कैसे करें ?

खेलत जुदी जुदी जिनसों, इत पांउं ना भोम लगत ।

इत खेलें रूहें पाल पर, कै विध दौडत कूदत ॥ ६७

इस घाटमें विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ होती हैं। उस समय ब्रह्मात्माओंके चरण भूमि पर नहीं लगते (ऊपर-ऊपर ही चलतीं) हैं। इस प्रकार पाल पर सखियाँ दौड़ती, उछलती हुई विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ा करती हैं।

ए भोम इन विध की, पांउ न खूंचत रेत ।

खेलत हैं इत रूहें, नए नए सुख लेत ॥ ६८

यह भूमिका इस प्रकारकी है कि यहाँकी रेती पाँवमें नहीं चुभती है। यहाँ पर क्रीड़ा करती हुई ब्रह्मात्माएँ नित्य नूतन सुख प्राप्त करती हैं।

आगूं बन इन घाट के, अतंत सोभा लेत ।

तीसरे घाट के झुंड में, खेलें खावंद रूहें समेत ॥ ६९

इस घाटके आगे बड़े वनके वृक्ष अत्यन्त सुशोभित दिखाई देते हैं। इस तृतीय (सोलह देहुरीके) घाटके झुण्डमें श्रीराजजी ब्रह्मात्माओंके साथ विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ करते हैं।

घाट तेर देहुरी का

देहुरी चौथे घाटकी, देखें पाइएत हैं सुख ।

झुंड बन्या इन ऊपर, खूबी क्यों कर कहूं या मुख ॥ ७०

हौजकौसर तालके इस चतुर्थ घाटकी देहुरीको देखकर मन बड़ा आनन्दित होता है। यहाँ पर वृक्षोंका झुण्ड है। इनकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकता है ?

चौक पर फिरती चांदनी, आठ देहुरी गिरदवाए ।

पांच देहुरी बीचमें, तले आठ थंभ सोभाए ॥ ७१

यहाँ पाल पर स्थित चबूतरेके ऊपर चारों ओर चाँदनी है। उसके अन्दर चारों ओर आठ देहुरियाँ हैं एवं मध्यमें पाँच देहुरियाँ हैं। इन देहुरियोंके नीचे आठ स्तम्भ शोभायमान हैं।

तले फिरता कठेडा, चारों तरफों द्वार ।

तले उतरती सीढ़ियां, जल माहें करें झलकार ॥ ७२

इस चबूतरेके चारों ओर एक कटहरा है तथा चारों ओर द्वार हैं। नीचे जलकी ओर जानेके लिए सीढ़ियाँ हैं, जिनकी शोभा जलमें प्रतिबिम्बित होती है।

जल पर दोए चबूतरे, ऊपर चढती देहुरी दोए ।

आए पहाँची थंभनको, अति सोभा घाट पर सोए ॥ ७३

यहाँ जलके ऊपर दो चबूतरे हैं। उनके ऊपर दो देहुरियाँ हैं जो चार-चार स्तम्भोंके ऊपर बनी हुई हैं। इस घाट पर इन सभीकी शोभा अति सुन्दर देखाई दे रही है।

फेर इन का भी कहूं बेवरा, ज्यों हिरदे आवे मोमन ।

ए चौथा घाट अति सोहना, सुख होए अरस रूहन ॥ ७४

अब मैं पुनः इसका वर्णन कर रहा हूँ, जिससे ब्रह्मात्माओंके हृदयमें यह शोभा अङ्कित हो जाए। इस चतुर्थ घाटकी अनुपम शोभाको देखकर परमधामकी सभी ब्रह्मात्माएँ आनन्दका अनुभव करती हैं।

तेरे चौकी बीच पालके, आगे पालैकी पडसाल ।

गिरद चौकी चार वृछकी, सोभित झुंड कमाल ॥ ७५

पालके किनार पर एक चूबतरा है, उसमें तेरह चौकियाँ (देहुरियाँ) हैं। इनके आगे पालका खुला स्थान (पडसाल) है। चार वृक्षोंके मध्यमें तेरह देहुरीकी चौकी सुशोभित है। वृक्षोंका यह झुण्ड अति सुन्दर है।

उतरी सीढ़ियां पडसालसे, चौक हुआ बीच इत ।

दोऊ चौक दाएँ बाएँ बने, बीच दोए देहुरी जित ॥ ७६

इस खुलेस्थानसे सीढ़ियाँ उतर रहीं हैं। इनके मध्यमें एक चौक स्थित है। इसकी दायीं तथा बायीं ओर दो चौक हैं। इन दोनोंके ऊपर दो देहुरियाँ हैं।

इतथें आगूं सीढ़ियां, दोऊ चबूतरों बराबर ।

इत चौक होए सीढ़ी उतरी, तले आए मिली चबूतर ॥ ७७

इन देहुरियोंसे आगे देहुरीके समान एक-एक चबूतरे हैं। उनसे नीचेकी ओर सीढ़ी उतर कर नीचेके चबूतरे तक पहुँचती है।

मोमिन होए सो देखियो, तुमारा दिल कहा अरस ।

चारों घाट लीजो दिलमें, दिल ज्यों होए अरस परस ॥ ७८

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम्हारे हृदयको परमधाम कहा है, इसीलिए तुम इस दृश्यको देखो ! इन चारों घाटोंको हृदयमें अङ्कित करो, जिससे तुम्हारा हृदय इन शोभाओंसे ओत-प्रोत हो जाए.

ए पाल सारी इन भांतकी, कै विध खेल होत इत ।

या घाटों या पाल पर, हक रूहें खेल करत ॥ ७९

यह सम्पूर्ण पाल ही इस प्रकार सुशोभित है कि यहाँ पर विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ होती हैं. यहाँके घाटों तथा पाल पर धामधनी एवं ब्रह्मात्माएँ विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ करते हैं.

खूबी अजब इन वन की, जो वन ऊपर पाल ।

देहुरियां उलंघ के, डारें लटक रहीं माहें ताल ॥ ८०

पालके ऊपर स्थित वनकी शोभा अनुपम है. यहाँके वृक्षोंकी शाखाएँ पाल पर स्थित देहुरियोंको भी पार कर तालके जल तक लटकती हैं.

ऊपर पाल तलाब के, ऊंचा बन अमोल ।

जिनकी लंबी डारियां, तिनमें बने हिडोल ॥ ८१

इस प्रकार हौजकौसर तालकी पाल पर स्थित वनमें ऊँचे-ऊँचे वृक्ष हैं. उनकी शाखाएँ भी लम्बी हैं. उन पर झूले लटके हुए हैं.

अंदर किनारे पाल पर, देहुरियां बराबर ।

सोभित किनारे गिरदवाए, अति सोभा सुंदर ॥ ८२

पालके अन्दरकी ओर देहुरियाँ समानरूपसे सुशोभित हैं. जिनसे पालके चारों ओरके किनारेकी शोभा अति सुन्दर दिखाई देती है.

ऊपर वन बुजरक, कै हिडोलों हींचत ।

कै डारी बन झूमत, कै विध खेल करत ॥ ८३

तालकी पाल पर स्थित ये वन अति सुन्दर हैं. उनकी शाखाओंमें लगे हुए

झूलों पर सखियाँ झूलती हैं. कतिपय सखियाँ वृक्षोंकी शाखाओंमें झूलती हुई विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हैं.

फिरते आए घाट लग, चारों घाट बराबर ।

कम ज्यादा इनमें नहीं, अब देखो पाल अंदर ॥ ८४

इस प्रकार पाल पर स्थित वनकी यह शृङ्खला चारों घाटों पर एक समान दृष्टिगोचर होती है. इनमें न कहीं न्यूनता है और न ही कहीं अधिकता है. अब पालके अन्दरकी शोभाका दर्शन करते हैं.

पाल अंदरकी मोहोलात

आगूं फिरता चबूतरा, हाथ लगता आब ।

लग लग द्वार ऊपर बने, जिन विध होत मेहेराब ॥ ८५

पालके अन्दरकी ओर चारों ओर एक चबूतरा है. उससे एक हाथ नीचे तालका जल लहराता है. इस चबूतरेके साथ पालके अन्दर जानेके लिए तोरण (कमान) की भाँति द्वार हैं.

ताल में द्वार लग लग, पौरें बनी बीच पाल ।

झलकत हैं थंभ अगले, सोभा लेत है ताल ॥ ८६

तालके पालमें प्रविष्ट होनेके लिए बने हुए द्वार पर तोरण (मेहराब) शोभायमान हैं. इनके स्तम्भ जलमें प्रतिबिम्बित होकर तालकी शोभा बढ़ा रहे हैं.

अब क्यों कहूं पाल अंदरकी, कै थंभ कै मोहोलात ।

कै देहेलाने कै मंदिर, ए खूबी कही न जात ॥ ८७

इस प्रकार पालके अन्दरकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? यहाँ पर अनेक स्तम्भ हैं, अनेक भवन हैं, अनेक दालान हैं एवं अनेक मन्दिर हैं. इनकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता.

थंभ दोए हारें बनी, अंदर मोहोल कै और ।

कै बैठकें जुदी जुदी जिनसों, कहां लग कहूं कै ठौर ॥ ८८

पालके अन्दर दोनों किनारों पर दो पङ्क्तियोंमें मन्दिर हैं. इन मन्दिरोंके

मध्यमें स्तम्भोंकी दो पङ्क्तियाँ हैं। इनके मध्यमें विश्रामके लिए अनेक मनोहर स्थल हैं, इनका वर्णन कहाँ तक करें ?

एह जुगत सब पालमें, गिनती न होए हिसाब ।

थंभ द्वार जो झलकत, सो कहा कहे जुबां ख्वाब ॥ ८९

पालके अन्दरकी रचना इतनी युक्तिपूर्वक है कि उसकी गणना ही नहीं हो सकती। यहाँके द्वार एवं स्तम्भ इतने सुन्दर प्रकाशित होते हैं कि उनका वर्णन स्वप्नवत् देहकी जिह्वा द्वारा नहीं हो सकता है।

और सीढियां चारों घाटकी, इत दरवाजे नाहिं ।

तित मोहोलात हैं अंदर, बिना हिसावें माहिं ॥ ९०

इन चारों घाटों पर सुशोभित सीढियोंमें पालके अन्दर जानेके लिए द्वार नहीं है। पालके अन्दर अनेक भवन हैं, जिनकी गणना नहीं हो सकती है।

चारों हिमे ताल के, मोहोल बने इन ठाट ।

और झुंड ऊपर चारों चौकके, ए जो बने चारों घाट ॥ ९१

इस सरोवरके चारों भागोंमें ऐसे ही शोभायुक्त भवन हैं। इसी प्रकार चारों चौकोंके ऊपर वृक्ष समूह है। इस प्रकार चारों घाट अति सुन्दर सुशोभित हैं।

घाट झुंड तलाब के, पांवडियां तरफ जल ।

देहुरियां आगे चबूतरे, सोभित इन मिसल ॥ ९२

इस तालके घाटों पर स्थित वृक्षसमूहके निकट जलकी ओर उतरती हुई सीढ़ी है। उसके साथ-साथ देहुरियाँ एवं इनके आगे चबूतरे हैं। उनकी शोभा भी अद्वितीय है।

चौक थंभ कठेडे, बैठक चारों घाटन ।

जो वन खूबी पाल पर, सो क्यों कहूं जुबां इन ॥ ९३

इन चारों घाटों पर चौक, स्तम्भ, कटहरा एवं विश्रामके लिए अनेक मनोहर स्थल हैं। पाल पर स्थित इन वनोंकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

फेर कहूं पाल ऊपर, जो देखी माहें दिल ।

सो कहूं मै अरस रूहनको, देखें मोमिन सब मिल ॥ ९४

अब मैं पुनः अपनी अन्तरात्मासे अनुभव कर परमधामकी ब्रह्मात्माओंके समक्ष पालके ऊपरकी रचनाका वर्णन करता हूँ। सभी ब्रह्मात्माएँ मिलकर इसका साक्षात् अनुभव करें।

देहुरी आगूं चबूतरे, खुले झरोखे ताल पर ।

सबों विराजत कठेडा, नूर भराए रह्यो अंबर ॥ ९५

पाल पर देहुरीके आगे स्थित चबूतरेकी शोभा खुले झरोखेके समान ताल पर स्पष्ट दिखाई देती है। इन सभी चबूतरों पर कटहरा है, उनका प्रकाश आकाश पर्यन्त व्याप्त है।

चारों घाटों के बीच बीच, गिरदवाएँ देहुरियां सब ।

याही विध आगूं सबों, ऊपर बन छाए रही छब ॥ ९६

चारों घाटोंके मध्यभागमें चारों ओरसे देहुरियाँ सुशोभित हैं। इन सभीके ऊपर वनकी छाया आच्छादित होती है।

जो फिरते आए चबूतरे, दोरी बंध बराबर ।

ऊपर वन सोभे दोरी बंध, कहूं गेहेरा नहीं छेदर ॥ ९७

देहुरियोंके सामने स्थित चबूतरे पङ्क्तिबद्ध हैं। इसी प्रकार पालके ऊपर खड़े वृक्ष भी पङ्क्तिबद्ध सुशोभित हैं। उनकी छाया भी न कहीं अधिक है और न ही कहीं कम है।

सब खुले झरोखे ढांपके, वन झलूब आया जल पर ।

ए सोभा अति देत है, जो देखिए रूहकी नजर ॥ ९८

ताल पर स्थित सभी खुले झरोखे वृक्षोंकी छायासे ढँके हुए हैं। इन वृक्षोंकी शाखाएँ झुक कर जल तक आई हुई हैं। आत्म-दृष्टिसे देखने पर यह शोभा अद्वितीय लगती है।

ऊपर देहुरी तलें चबूतरे, तिन तलें सब मेहेराब ।

परकोटे तलें छोटे द्वारने, फिरता बन सोभे तलें आब ॥ ९९

पाल पर स्थित प्रत्येक देहुरीके सामने चबूतरे हैं एवं उनके नीचे तोरण (मेहराब) सुशोभित हैं। सीढ़ियों पर परकोटा है एवं नीचे छोटे द्वार हैं। इस प्रकार चारों ओरके वनके वृक्षोंकी छायासे ढँका हुआ नीचेका जल अति सुन्दर लगता है।

आब ऊपर जो चबूतरा, फिरते देखिए छोटे द्वार ।

दे परिकरमा आइए, देख आइए घाट चार ॥ १००

जलके ऊपर स्थित चबूतरेसे पालकी ओर जानेके लिए छोटे-छोटे द्वार हैं। हे ब्रह्मात्माओ ! चारों घाटोंकी परिक्रमा करते हुए इस मनोहर दृश्यको हृदयङ्गम करें।

महामत कहे मोमिनको, गेहेरा गंभीर जल देख ।

टापू बन्यो बीच हौजके, सोभित अति विसेख ॥ १०१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! इस सरोवरके गहन एवं शुभ्र जल पर दृष्टिपात करें। इसके मध्यभागमें एक द्वीप है, उसकी शोभा अति अद्वितीय है।

प्रकरण ८ चौपाई ५६९

हौजके बीच मोहोलात चौंसठ पांखडी की

बन्यो तालके बीचमें, चारों तरफों जल ।

वन झरोखे गिरदवाय, सोभित बाग मोहोल ॥ १

हौजकौसर तालके मध्य भागमें द्वीपके समान एक भवन शोभायमान है, जिसके चारों ओर जल है। तालके चारों ओर वन उपवन झरोखे तथा विभिन्न भवनोंकी शोभा है।

अब कहूं ताल के मोहोल की, जल गिरदवाए गेहेरा गंभीर ।

लेहेरें लगें बीच गुरजके, जल खलकत उजल खीर ॥ २

अब तालके मध्य स्थित भवनका वर्णन करते हैं जिसके चारों ओर गहन

जल है. उज्ज्वल एवं दूधके समान शुभ्र जलकी लहरें इस भवनके गुर्जों को भी स्पर्श करती हैं.

ज्यों एक फूल चौंसठ पांखड़ी, चार द्वार बने गिरदवाए ।

गुरज साठ बने तिन पर, ए खूबी कही न जाए ॥ ३

एक फूलके चौंसठ पुष्पदल (पङ्खुड़ियाँ) की भाँति इस द्वीप भवन (टापूमहल) के चारों ओर चार द्वार एवं साठ गुर्ज सुशोभित हैं. इनकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता.

एक टापू बन्यो बीच जलके, मोहोल गुरज तिन पर ।

देहुरियां ताल किनार पर, फिरती पाल बराबर ॥ ४

जलके बीचमें स्थित इस द्वीपके भवनोंमें अनेक शिखर हैं. तालके चारों ओर पाल पर एक सौ अठ्ठाईस देहुरियाँ हैं. जो पूर्णतः एक समान दिखाई देती हैं.

ए चौक बने चारों तरफों, और पाल ऊपर चार घाट ।

चारों द्वार टापूअके, बने सनमुख ठाट ॥ ५

इस तालके पाल पर चारों ओर चार चौक तथा उन पर चार घाट शोभायमान हैं. इस द्वीप भवनके चारों द्वारोंके सम्मुख स्थित ये चार घाट अति रमणीय हैं.

देहुरियां घाटन पर, चारों जुदी जिनस ।

देख देख के देखिए, जानों एक पैं और सरस ॥ ६

इन चारों घाटों पर स्थित देहुरियाँ भिन्न-भिन्न प्रकारकी हैं. इन्हें जितना देखते हैं उतना ही ये एक दूसरेसे अधिक सुन्दर प्रतीत होती हैं.

पाल टापू हीरे एक की, तिनमें कै मोहोलात ।

अनेक रंग नंग देखत, असल हीरा एक जात ॥ ७

यह द्वीप तथा इसकी पाल एक ही हीरेकी है. उसमें अनेक भवन हैं. उनमें अनेक रङ्गोंके रत्न जड़ायमान दिखाई देते हैं किन्तु वास्तवमें यह हीरा एक ही प्रकारका है.

जब खूबी ताल यों देखिए, चढ चांदनी पर ।

फिरती पाल बन देहुरी, जल सोभित अति सुंदर ॥ ८

इस द्वीपप्रासादकी छत पर चढ़कर जब तालकी छटा देखते हैं तो वहाँसे चारों ओर पाल पर स्थित देहुरियाँ, वन तथा तालका जल अति सुन्दर दिखाई देता है।

तलें सोभा चारों द्वारने, आगूं कठेडे बैठक ।

आराम लेवें इन ठौरों, जब कबहूं आवें इत हादी हक ॥ ९

इस द्वीप महलके चारों द्वारोंकी शोभा अति सुन्दर है। उनके आगे कटहरा एवं विश्राम स्थल हैं। जब यहाँ श्रीराजजी एवं श्रीश्यामाजीका आगमन होता है तब वे इस स्थल पर बैठकर विश्राम करते हैं।

बीच बीच में वन विराजत, गुरज छज्जे जल पर ।

छे छज्जे फिरते बने, सब गुरजों यों कर ॥ १०

इस द्वीपमहलके चारों ओर गुर्ज तथा छज्जे हैं। उनके मध्यमें वन प्रदेश है। यहाँ पर एक-एक गुर्जके तीन-तीन छज्जे जलकी ओर हैं तथा वनकी ओर छः छज्जे हैं। इस प्रकार सभी गुर्जोंमें छज्जे सुशोभित हैं।

तीन छतें चौथी चांदनी, सब गुरजों पर इत ।

तलें छज्जे जल हाथ लग, ऊपर अति सोभित ॥ ११

द्वीपके भवनोंमें गुर्जों सहित तीन तल्ले और चौथी चाँदनी हैं। नीचेकी भूमिकाके छज्जोंके नीचे जल चबूतरा सुशोभित है। उसके एक हाथ नीचे जलका संस्पर्श होता है।

ए टापू जिमी जवेरकी, बीच बीच बन्या बन ।

दोनों तरफों छजे बने, ऊपर बन रोसन ॥ १२

इस द्वीपकी सम्पूर्ण भूमि रत्न जड़ित-सी है। बीच-बीचमें वन भी सुशोभित है। यहाँके भवनोंके गुर्जोंके दोनों ओर छज्जे हैं तथा मध्य भागमें वन सुशोभित है।

तीनों तरफों गुर्ज के, छजे बने यों आए ।

उपरा ऊपर भी तीन हैं, क्यों कहूं सोभा ताए ॥ १३

गुर्जोंके तीनों ओर तीन छज्जें हैं. इसी प्रकार तीनों भूमिकाओंके गुर्जोंमें तीन-तीन छज्जे हैं. उनकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता.

तीन तीन छजे तरफ जलके, छे छजे वन पर ।

अंदर गृदवाए मोहोलात, बीच बैठक चबूतर ॥ १४

गुर्जोंकी तीनों भूमिकाओंके तीन-तीन छज्जे जलकी ओर हैं एवं छः-छः छज्जे वनकी ओर हैं. इनके अन्दर चारों ओर भवन हैं एवं बीचमें विश्रामस्थलके रूपमें एक चबूतरा है.

दो गुर्जों बीच मंदिर, हर मन्दिर झरोखे ।

तीन तीन उपरा ऊपर, बने तीनों भोमों के ॥ १५

दो गुर्जोंके मध्यमें एक-एक मन्दिर विद्यमान हैं. प्रत्येक मन्दिरमें (द्वारपर) झरोखे हैं. इस प्रकार उत्तरोत्तर तीनों भूमिकाओंमें तीन झरोखे शोभायमान हैं.

गुर्ज गुर्ज तीन द्वारने, तीनों भोमों में ।

कै एक ठौरों चरनियां, ऊपर चढिये जिनों से ॥ १६

तीनों भूमिकाओंमें गुर्जोंकी तीनों दिशाओंमें तीन-तीन द्वार हैं. वहाँ पर ऊपर चढ़नेके लिए कई स्थानों पर सीढ़ियाँ भी हैं.

सामी और हार बनी, मंदिर सामी मंदर ।

तिनमें साठ बाहेर, और साठ भए अंदर ॥ १७

इस द्वीपमें एक ही पङ्क्तिमें साठ मन्दिर विद्यमान हैं. इन मन्दिरोंके सम्मुख अन्दरकी ओर भी साठ मन्दिर पङ्क्तिबद्ध हैं. मध्यमें एक पङ्क्ति स्तम्भोंकी है. इन दोनों पङ्क्तियोंमें स्थित मन्दिरोंके द्वार आमने-सामने दिखाई देते हैं.

बीच चेहेबचा जल का, कै फुहारे छूटत ।

फिरते द्वार इन चौक के, बोहोत सोभा अतंत ॥ १८

मध्यमें विश्रामके लिए चबूतरे हैं उनके मध्य भागमें जलकुण्ड (चेहेबच्चा)

है. उसमें अनेक फुहारे हैं. इस चबूतरेके चारों ओर स्थित मन्दिरके द्वार अत्यन्त शोभायुक्त हैं.

तीनों भोम चबूतरे, और फिरते मंदिर द्वार ।
बीच बैठक चबूतरे, बने थंभ तरफ हार ॥ १९

तीनों भूमिकाओंके मध्यमें एक-एक चबूतरा है. उसके चारों ओर मन्दिरोंके द्वार सुशोभित हैं. चबूतरेके मध्य भागमें विश्रामस्थल है. उस पर पङ्क्तिबद्ध रूपमें स्तम्भ शोभायमान हैं.

कही फिरती हार थंभन की, द्वार द्वार आगूं दोए ।
हर मंदिर दो द्वारने, सोभा लेत अति सोए ॥ २०

इन पङ्क्तिबद्ध मन्दिरोंके द्वारोंके सम्मुख चारों ओर स्तम्भोंकी पङ्क्तियाँ हैं. प्रत्येक मन्दिरके दोनों द्वारोंके सम्मुख स्तम्भोंकी पङ्क्तियाँ अत्यन्त सुशोभित हैं.

साठ गुरज फिरते कहे, गिरद चांदनी दिवाल ।
सो ए कमर के ऊपर, खूबी लेत कांगरी लाल ॥ २१

इस द्वीपको घेरकर साठ गुर्ज हैं. उनकी छतके किनार पर चारों ओर कमर भर ऊँची दीवार है. उस पर लालरङ्गकी कांगरी सुशोभित है.

ऊपर चांदनी कठेडा, बीच जोड सिंघासन ।
राज स्यामाजी बीचमें, फिरती बैठक रूहन ॥ २२

चाँदनी पर चारों ओर कटहरा है एवं मध्यमें चबूतरे पर रत्नजडित सिंहासन है. जिस पर श्रीराजश्यामाजी विराजमान होते हैं तथा उनके चारों ओर सखियाँ बैठती हैं.

कबूं मिलावा नजीक, मिल बैठें गिरदवाए ।
छोटा तखत दुलीचे पर, बैठी रूहें अंगसों अंग लगाए ॥ २३

यहाँ पर सखियाँ कभी-कभी श्रीराजश्यामाजीके चारों ओर अति निकट बैठती हैं. यहाँ सुन्दर कालीन बिछा हुआ है, उस पर छोटा सिंहासन (तखत) सुशोभित है. कालीन पर सखियाँ एक दूसरेके साथ सटकर कर बैठती हैं.

कबूँ कबूँ बैठियां कुरसियों, रूहें बारे हजार ।

कबूँ दो दो एक कुरसी पर, कबूँ हर कुरसी चार चार ॥ २४

कभी-कभी ये बारह हजार आत्माएँ अलग-अलग कुर्सियों पर बैठती हैं। कभी-कभी एक-एक कुर्सी पर दो-दो भी बैठती हैं तो कभी-कभी एक-एक कुर्सी पर चार-चार भी बैठ जाती हैं।

कबूँ दो दो सै एक कुरसियों, बैठें साठों गुरजों गिरदवाए ।

सो कुरसी दिवालों लगती, यों बैठक कठेडे भराए ॥ २५

कभी-कभी तो एक-एक कुर्सी पर दो-दो सौ सखियाँ बैठती हैं। इस प्रकार चारों ओरके साठ गुर्जोंको घेरकर सखियाँ बैठती हैं। ये कुर्सियाँ दीवारके साथ लगी हुई हैं। इस प्रकार कटहरा तक भरकर बैठक होती है।

बीच तखत विराजत, सबथें ऊँचा गज भर ।

बैठक हक बडी रूह, सोभा लेत सब पर ॥ २६

मध्यभागमें गजभर ऊँचा चबूतरा है। उसके मध्यमें सिंहासन शोभायमान है। उस पर श्रीराजजी श्यामाजीके साथ बैठते हैं। उनकी शोभा चारों ओर छ जाती है।

हक बडी रूह बैठें तखत पर, फिरती रूहें बैठत ।

दो दो सै बीच गुरज के, बारे हजार रूहें इत ॥ २७

श्रीराजजी एवं श्यामाजी सिंहासन पर विराजमान होते हैं, उनके चारों ओर सखियाँ बैठती हैं। एक-एक गुर्जोंमें दो-दो सौकी गणनासे साठ गुर्जोंमें कुल बारह हजार सखियाँ यहाँ पर विराजमान होती हैं।

चांद चौदमी रात का, बैठें चांदनी नूरजमाल ।

सनमुख सबे बैठाए के, करें खावंद रूहें खुसाल ॥ २८

शुक्ल पक्षकी चतुर्दशीकी रातमें चन्द्रमाकी शुभ्र चाँदनीमें श्रीराजश्यामाजी यहाँ पर विराजमान होते हैं एवं सभी सखियोंको चारों ओर बैठाकर उन्हें अति आनन्दित करते हैं।

अमृत खसम रूहन पर, नूर नजरोँ सींचत ।

सो रस रूहें रब का, सनमुख रोसन पीवत ॥ २९

यहाँ पर विराजमान होकर श्रीराजजी अपनी कृपादृष्टिसे सभी ब्रह्मात्माओं पर

अमृतका सिञ्चन करते हैं. ब्रह्मात्माएँ भी अपने प्रियतमके सम्मुख बैठकर उन्मुक्त होकर प्रेमरसका पान करती हैं.

पूरन पाँचों इन्द्री सरूपें, एक एकमें पाँच पूरन ।

हर एकमें बल पाँच का, हर एक में पाँच गुन ॥ ३०

इन सभी ब्रह्मात्माओंके चिन्मय शरीरमें पाँचों इन्द्रियाँ पूर्ण रूपसे हैं. उनकी प्रत्येक इन्द्रियमें पाँचों इन्द्रियोंकी शक्ति एवं गुण भी विद्यमान हैं.

एक एक जाहिर सब में, एक एक में चार बातन ।

इन विध रूहें मुतलक, असल अरसके तन ॥ ३१

इन सब शरीरोंमें स्थित पाँचों इन्द्रियोंमें एक-एक गुण प्रकट रूपमें हैं तो प्रत्येकमें अन्य चार-चार गुण परोक्ष रूपमें हैं. इस प्रकार परमधामकी इन आत्माओंके चिन्मय शरीरकी यह वास्तविकता है.

अरस तन रूहें आतमा, तरफ सबों बराबर ।

पूरन कहावें याही बातसे, सब विधों ए कादर ॥ ३२

परमधामकी इन सभी ब्रह्मात्माओंके चिन्मय शरीर परमधाममें समान रूपमें हैं. इन पाँचों इन्द्रियोंके गुणों तथा शक्तिकी विशेषताके कारण ही इनकी इन्द्रियाँ पूर्ण तथा सब प्रकारसे सक्षम कहलाती हैं.

सरूप बैठे सब मिलके, घेर के गिरदबाए ।

सबों सुख पूरन हक का, रूहें लेवें दिल चाहे ॥ ३३

सभी सखियाँ श्रीराजजीको चारों ओरसे घेरकर बैठती हैं तथा उनसे अपनी इच्छानुकूल सभी सुख प्राप्त करती हैं.

अब और देऊँ एक निमूना, इनको न पोहोंचे सोए ।

पर कहे बिना रूहन के, दिल रोसन क्यों होए ॥ ३४

मैं पुनः एक अन्य उदाहरण भी देता हूँ. यद्यपि उनकी उपमा नहीं दी जा सकती तथापि वर्णन किए बिना हृदय कैसे प्रकाशित हो सकता है ?

एक जरा इन जिमी का, ताको नूर न माए आकास ।

तिन जिमीके जवेरको, होसी कौन प्रकास ॥ ३५

परमधामकी दिव्य भूमिके एक कणका प्रकाश भी आकाशमें समाता नहीं तो फिर वहाँके रत्नोंके प्रकाशकी स्थिति कैसी होगी ?

सो जवेर आगूं रूहन के, कैसा देखावें नूर ।

ज्यों सितारे रोसनी, बल क्या करे आगूं सूर ॥ ३६

वे प्रकाशमान रत्न भी ब्रह्मात्माओंके समक्ष सूर्यके समक्ष नक्षत्रगणोंकी भाँति निस्तेज दिखाई देते हैं.

आगूं रूह सूरत सूर के, जवेर गए ढंपाए ।

तो सोभा हक जात की, क्यों कर कही जाए ॥ ३७

इस प्रकार सूर्यके समान देदीप्यमान ब्रह्मात्माओंके चिन्मय शरीरके प्रकाशसे वहाँके सभी रत्नोंका प्रकाश निस्तेज हो जाता है. ऐसी ब्रह्मात्माओंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

जो रूहें अंग अरस के, तिन चीज न कोई सोभाए ।

वाहेदत में बिना वाहेदत, और कछू ना समाए ॥ ३८

परमधामकी इन दिव्य आत्माओंके लिए अन्य किसी भी वस्तुकी उपमा नहीं दी जा सकती. क्योंकि अद्वैत भूमिकामें अद्वैत वस्तुके अतिरिक्त अन्य किसीकी भी उपमा नहीं दी जा सकती है.

वस्तर भूखन हक जातके, सो हक जातै का नूर ।

कोई चीज अरस अंग को, कर ना सके जहूर ॥ ३९

ब्रह्मात्माओंके वस्त्र तथा आभूषणोंमें भी उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गका ही प्रकाश प्रकाशित होता है. इसलिए परमधामके इन स्वरूपोंको कोई भी वस्तु प्रकाशित नहीं कर सकती है.

सोभा अंग अरस के, या वस्तर या भूखन ।

होवे दिल चाह्या कै विधका, सोभा सिनगार माहें छिन ॥ ४०

परमधामके इन स्वरूपोंके प्रत्येक अङ्गकी शोभा हो या वस्त्र एवं आभूषणकी

शोभा हो, एक-एक क्षणमें उनकी इच्छाके अनुकूल सम्पूर्ण शृङ्गार ही बदल जाता है.

सो हेम नंग अति उत्तम, इन रूहों के माफक ।

वस्त्र भूखन साजके, जाए देखें नजर भर हक ॥ ४१

इस दिव्य शृङ्गारके स्वर्ण तथा रत्न भी ब्रह्मात्माओंकी भाँति अति उत्तम हैं. ऐसे वस्त्र एवं आभूषणोंसे सुसज्जित होकर ब्रह्मात्माएँ आँखोंसे भरकर श्रीराजजीके दिव्य स्वरूपका दर्शन करती हैं.

ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठी अपना नूर ।

सो आगूं हक बडी रूह नूर के, ए क्यों कर कहूं मजकूर ॥ ४२

जब ब्रह्मात्माएँ ही ऐसे दिव्य शृङ्गारकी शोभा धारण कर अपना प्रकाश विखेर रहीं हैं तो श्रीराजजी एवं श्यामाजीके चिन्मय प्रकाशका वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

तखत बीच रूहों चांदनी, बैठे बडी रूह खावंद ।

सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चंद ॥ ४३

चाँदनी पर स्थित चबूतरेके मध्य भागमें श्रीराज-श्यामाजी सिंहासन पर विराजमान हैं. उनके निकट सखियाँ बैठी हुई हैं. जब चन्द्रमाकी शुभ्र चाँदनी उस स्थान पर पड़ती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि एक प्रकाशमय स्तम्भकी रचना हो गई हो.

जेती फिरती चांदनी, भरयो नूर उदोत ।

ले सामी चंद रोसनी, भयो थंभ एक जोत ॥ ४४

इस प्रकार चन्द्रमाकी किरणें जब चाँदनी पर पड़ती हैं तो ऐसा आभास होता है कि दोनों ओरके संयुक्त प्रकाशसे एक स्तम्भ निर्मित हो गया है.

इन नूर थंभकी रोसनी, पडी ताल पर जाए ।

जल थंभ कियो आसमान लों, घेर्यो चंद गिरदवाए ॥ ४५

इस प्रकाशमय स्तम्भकी किरणें जब ताल पर प्रतिबिम्बित होती हैं तो ऐसा

प्रतीत होता है जैसे जलमें भी एक स्तम्भ बन गया हो और उसने पूरे चन्द्रमाको घेर लिया हो.

जंग करे जो थंभ की, अरस जोतसों आए ।

मिली जोत जिमी वन की, ए नूर आसमान क्यों समाए ॥ ४६

इस प्रकाशमय स्तम्भकी ज्योति चन्द्रमाकी ज्योतिके साथ मानों युद्ध कर रही हो ऐसा प्रतीत होता है. जब भूमि तथा वनकी ज्योति भी इसमें सम्मिलित होती है तब उसका प्रकाश आकाशमें भी समाता नहीं है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, जो होवे अरवा अरस ।

सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस परस ॥ ४७

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! जो परमधामकी आत्माएँ होंगी वे प्रियतम परमात्माकी प्रेमसुधाका प्याले भर-भर कर पान करते हुए धामधनीके साथ प्रेमका आदान-प्रदान करेंगी.

प्रकरण ९ चौपाई ६१६

फूलबाग

और पीछल पाल तलाब के, कै बन शोभा लेत ।

ए वन आगूं फिरवल्या, परे धामलों देखाई देत ॥ १

हौजकौसर तालके पृष्ठभागमें अनेक शोभाओंसे युक्त वनप्रदेश है. इसका विस्तार आगे बढ़ता हुआ रङ्गमहल पर्यन्त दिखाई देता है.

तालको बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए ।

कै मेवे केते कहूं, अगनित गिने न जाए ॥ २

यह वन तालको घेरकर धाम मन्दिरके दीवार पर्यन्त पहुँचा है. इसमें विभिन्न प्रकारके मेवे हैं. इनकी गणना नहीं की जा सकती.

तरफ पिछल धाम के, अंन वन मेवे अनंत ।

फल फूल पात कंदमूल, ए कहाँलों को गिनत ॥ ३

रङ्गमहलके पृष्ठभागमें स्थित अन्न वनमें भी अनन्त मेवे हैं. उनके फल, फूल,

पते एवं कन्दमूल आदिकी गणना कहाँ तक करें ?

ऊपर झरोखे धाम के, वन आए लग्या दिवाल ।

वाही छाया तले रेती रोसन, जैसा आगे कहा वन हाल ॥ ४

रङ्गमहलकी दीवारके पृष्ठभागमें स्थित झरोखों तक यह वन विस्तृत है। यहाँके वृक्षोंकी छायामें यहाँकी रेती उपर्युक्त अन्य वनोंकी भाँति प्रकाशित होती है।

बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दिवाल ।

जब आवत हैं इन छज्जों, रूहें इत होत खुसाल ॥ ५

रङ्गमहलकी पश्चिम दिशामें दीवार एवं झरोखोंसे संलग्न फूलबाग है। जब सखियाँ इन झरोखोंके छज्जों पर आती हैं तो इस उपवनकी शोभाको देखकर उनका मन पुलकित हो उठता है।

लग लग होए के बैठत, ऊपर छज्जों के आए ।

आगूं उठत ऊंचे फुहारे, जल झलकत मोती गिराए ॥ ६

सभी सखियाँ इन छज्जों पर एक साथ मिलकर बैठती हैं। उनके सम्मुख ऊँचे-ऊँचे फुहारे उठते हुए दिखाई देते हैं। उनसे गिरती हुई जलकी बूँदें मोतीकी भाँति चमकती हैं।

आगूं सबन के फुहारे, और आगूं सबों के फूल ।

देख देख ए चेहेबच्चे, सबे होत सनकूल ॥ ७

उन छज्जोंके सम्मुख फुहारे हैं और फूल भी खिले हुए दिखाई देते हैं। इन जलकुण्डोंको देख-देखकर सभी सखियोंका मन प्रसन्न होता है।

छलकत छोले चेहेबच्चे, नेहरें चलत तेज नूर ।

सो बिचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर ॥ ८

इन जलकुण्डोंका जल छलकता हुआ दिखाई देता है। इनसे तेजोमयी नहरें निकलती हैं। वे पूरे बगीचेमें फैलकर भरपूर सिञ्चन करती हैं।

जो लगा चबूतरे चेहेबच्चा, बुजरक बडा विसाल ।

उतरता जल इतथें, नेहरें चलत इन हाल ॥ ९

इन जलकुण्डोंमें सोलह हाँसका एक और जलकुण्ड है। वह धाम दीवार

चबूतरेके साथ लगा हुआ है. उसमें-से जल निकलकर सभी नहरोंमें प्रवाहित होता है.

विचरत जल चेहेबच्चों, सो सिरें लगे पोहोंचत ।

इसी भांत झरोखे बगीचे, माहें रूहें केल करत ॥ १०

इस प्रकार जलकुण्डोंसे विचरण करता हुआ जल उपवनके एक कोनेसे दूसरे कोने तक पहुँचता है. सभी सखियाँ भी इसी भाँति विचरण करती हुई झरोखे एवं उपवनमें विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हैं.

इन ऊपर छज्जे विराजत, सिरें लगे एकै हार ।

ऊपर खूबी इन विध, सोभा लेत किनार ॥ ११

रङ्गमहलके पृष्ठभागमें एक कोनेसे लेकर दूसरे कोने तक पङ्क्तिबद्ध छज्जे सुशोभित हैं. इनमें बैठकर सखियाँ आनन्द लेती हैं. इन छज्जोंके किनारे भी अत्यन्त शोभायुक्त हैं.

इत खेलत कै जानवर, मृग मोर बांदर ।

कै मुरग तीतर लवा लरें, कै विध कबूतर ॥ १२

इस उपवनमें विभिन्न प्रकारके पशु पक्षी- मृग, मोर, वानर, मुर्गे, तीतर, लवा, कबूतर आदि विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं.

कै विध देत गुलाटियां, कै उलटे टेढे चलत ।

कै कूदें फांदें उड़ें लड़ें, कै विध खेल करत ॥ १३

इनमें-से कतिपय गुलाटियाँ भरते हैं, कतिपय उलटे-सीधे चलते हैं, कतिपय छलाङ्ग लगाते हैं, कूदते हैं, उड़ते हैं तथा लड़ते भी हैं. इस प्रकार ये सभी विभिन्न क्रीड़ाएँ करते हैं.

एक नाचें गावें स्वर पूरें, एक बोलत बानी रसाल ।

नए नए रूप रंग ल्यावहीं, किन विध कहूं इन हाल ॥ १४

इनमें-से कतिपय नृत्य करते हैं, कतिपय मधुर वाणीसे गाते हैं तथा कतिपय पूरक स्वर देते हैं. इस प्रकार खेल करते हुए नया-नया रूप एवं रङ्ग धारण करते हैं. इसका वर्णन कैसे किया जाए ?

और केते कहूं जानवर, छोटे बड़े करें खेल ।

ए खुसाली खावंदकी, रूहों करावें इसक केल ॥ १५

अन्य कितने पशु-पक्षियोंका वर्णन करें ? ऐसे छोटे-बड़े सभी पशु-पक्षी विभिन्न क्रीड़ाएँ करते हैं। ये सभी धामधनीकी प्रसन्नताके लिए हैं। धामधनी ब्रह्मात्माओंको आनन्दित करनेके लिए इनसे विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करवाते हैं।

ए खेलोंने खावंद के, सब विध के सुखकार ।

कोई विद्या छिपी ना रहें, जाने खेल अपार ॥ १६

धामधनीके खिलौनेके समान ये पशु-पक्षी अपनी कलाओंसे विभिन्न प्रकारका सुख प्रदान करते हैं। इनमें किसी भी विद्या (कला) की कमी नहीं है। ये ऐसे असंख्य खेल जानते हैं।

जित तलें दस खिडकियां, इतथें रूहें उतरत ।

फिरत सैर इन वन को, जब कबूं आवें हक इत ॥ १७

रङ्गभवनके पृष्ठभागमें १५० मन्दिरोंके अन्तर पर दो मन्दिरोंके बीचकी दीवारमें दस खिड़कियाँ हैं। सखियाँ इनके नीचे स्थित सीढ़ियोंसे उतर कर नूरबागमें चली जाती हैं। जब कभी श्रीराजजी इधर आते हैं तो इस उपवनमें परिभ्रमण भी करते हैं।

कै वन हैं फूलन के, इन वन को नहीं सुमार ।

कै भातें रंग कै जुगतें, कै कांगरियां किनार ॥ १८

यहाँ पर अनेक उपवन फूल ही फूलके हैं, जिनका कोई पारावार नहीं है। इनमें विभिन्न प्रकारके रङ्ग युक्तिपूर्वक सुसज्जित हैं तथा किनारे पर काँगरी सुशोभित है।

हिसाब नहीं फूलन को, हिसाब ना चित्रामन ।

हिसाब नहीं खुसबोए को, हिसाब ना रंग रोसन ॥ १९

यहाँ पर न फूलोंका कोई पारावार है और न ही चित्रकलाका। इसी प्रकार यहाँकी सुगन्धि तथा विभिन्न प्रकारके रङ्गोंकी छटाका भी कोई पारावार नहीं है।

कै मेवे फलन के, कै मेवे हैं फूल ।

कै मेवे डार पात के, कै मेवे कंदमूल ॥ २०

यहाँके वृक्षोंमें-से कतिपयमें फलके रूपमें तो कतिपयमें फूलके रूपमें मेवे लगे हुए हैं। इसी प्रकार कतिपय वृक्षोंकी शाखाएँ तथा पत्ते मेवेके रूपमें हैं तो कतिपय कन्दमूल मेवेके रूपमें हैं।

कै वन आगू आए मिल्या, जो वन बडा कहियत ।

ऊंचे वृख अति सुंदर, जित हिडोलों हींचत ॥ २१

यहाँके अनेक उपवन आगे जाकर बड़ावन तक पहुँचते हैं। उनमें अति सुन्दर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष भी हैं उनमें लगे हुए झूलों पर सखियाँ झूलती हैं।

कै वृख कै हिडोले, जुदी जुदी कै जिनस ।

स्याम स्यामाजी साथजी, सुख लेवें अरसपरस ॥ २२

यहाँ पर अनेक वृक्षोंमें अनेक झूले लगे हुए हैं। इन विभिन्न झूलोंमें श्रीराज श्यामाजी एवं सखियाँ झूलते हुए परस्पर आनन्दका अनुभव करते हैं।

कहूं कहूं लंबे हिडोले, कहूं तिनसे बडे अतंत ।

कहूं कहूं छोटे बने, कै जुदी जुदी जुगत ॥ २३

इन वृक्षों पर कहीं-कहीं बड़े लम्बे झूले लगे हुए हैं। कहीं पर उनसे भी बड़े हैं। कहीं पर छोटे-छोटे भी हैं। इस प्रकार ये झूले युक्तिपूर्वक लटके हुए हैं।

कहूं सेज्या हिडोले, कहूं हिडोले सिंघासन ।

कहूं कहूं खडियां हींचत, यों खेल होत इन बन ॥ २४

कतिपय झूलोंमें शय्या विद्यमान है तो कतिपय झूलोंमें सिंहासन है। कतिपय झूलोंमें सखियाँ खड़ी होकर झूलती हैं। इस प्रकार इन उपवनोंमें विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ होती हैं।

एक सोए हिडोले लेवहीं, एक बैठके हींचत ।

एक उठे एक बैठत है, यों जुगल केल करत ॥ २५

यहाँ पर कोई एक सखी सोती हुई झूला झूलती है तो दूसरी बैठकर झूलती

है. कोई एक उठकर तो दूसरी बैठकर झूलती है. इसप्रकार सखियाँ युगल बनकर लीलाएँ करती हैं.

इन वन जिमी की रोसनी, मावत नहीं आकास ।

इन रोसन हिडोलों हींचत, क्यों कहूं खूबी खास ॥ २६

यहाँकी भूमि तथा वृक्षोंका प्रकाश आकाशमें भी समाता नहीं है. इन प्रकाशमान झूलोंमें सखियाँ झूलती हैं उनकी विशेषताओंका वर्णन कैसे किया जाए ?

इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या वन इत ।

महामत कहे इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत ॥ २७

रङ्ग भवनकी उत्तर दिशाकी ओर स्थित लालचबूतरा पर्यन्त यह बड़ावन विस्तृत है. महामति कहते हैं, इस बुद्धिसे उसकी अनुपम शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

प्रकरण १० चौपाई ६४३

लाल चबूतरा

बड़े जानवरों के मुजरे की जागा

ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल ।

इत छाया बड़े बन की, ए बैठक बड़ी विसाल ॥ १

यह विशाल लाल चबूतरा रङ्गभवनकी उत्तर दिशामें वायव्यकोणसे १२०० मन्दिर तक धामकी दीवार के साथ-साथ लगा हुआ है. इस पर बड़ेवनके वृक्षोंकी छाया पड़ती है. यहाँ पर श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके लिए बैठनेका विशाल स्थान है.

सोभा लेत अति कठेडा, तमाम चबूतर ।

तलें लगते दरखत, सब पेड बराबर ॥ २

पूरे (१२०० x ३० मन्दिरके) चबूतरे पर कठेडा बना हुआ है. चबूतरेके नीचे सभी वृक्ष पङ्क्तिबद्ध तथा समान रूपमें दिखाई देते हैं.

पेड लंबे उपली छतलों, छत्रियां छज्जों पर ।

लंबे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला लेत जानवर ॥ ३

यहाँके वृक्ष अति ऊँचे हैं। छज्जों तथा छत्रीके रूपमें बने हुए ये वृक्ष रङ्गभवनकी चाँदनी तक पहुँचे हुए हैं। इनकी शाखाएँ लालचबूतरेके ऊपर छतकी भाँति छायी हुई होनेसे चबूतरेमें बैठनेका सुन्दर स्थान बन जाता है जहाँ पर बैठकर श्रीराजश्यामाजी पशुपक्षियोंकी क्रीड़ा देखते हैं।

जवेर खाब जिमीके, ए खूब खाब में लगत ।

ए झूठ निमूना क्यों देऊँ, अस बकाके दरखत ॥ ४

इस स्वप्नवत् भूमिके सभी रत्न यद्यपि यहाँ पर मूल्यवान लगते हैं तथापि स्वप्नकी इन वस्तुओंका उदाहरण अखण्ड परमधामके वृक्षोंके लिए नहीं दिया जा सकता है।

रोसनी इन दरखत की, पेड डार या पात ।

नूर इन रोसनका, अवकासमें न समात ॥ ५

इन वृक्षोंका प्रकाश चाहे वह तना, शाखाएँ अथवा पत्तेका ही क्यों न हो किन्तु पूरे आकाशमें भी समा नहीं पाता है।

एक डार जरे की रोसनी, भराए रही आसमान ।

तो कौन निमूना इन का, जो दीजिए इन के मान ॥ ६

इन वृक्षोंकी शाखाओंके एक अंश मात्रका प्रकाश भी पूरे आकाशको व्याप्त करता है तो फिर इनकी तुलनाके लिए कौन-सा उदाहरण प्रस्तुत किया जाए ?

जिमी रंचक रेत की, कछू दिया न निमूना जात ।

तो क्यों कहूँ फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात ॥ ७

जब इस भूमिकी रेतके एक कण मात्रका भी उदाहरण नहीं दिया जा सकता तो यहाँके वृक्षों उनके फल, पुष्प, पत्ते तथा भवन एवं झरोखा आदिका उदाहरण कैसे दिया जाए ?

ऊपर तमाम चबूतरें, बिछाया है दुलीच ।

दोऊँ तरफों बेठीं रूहें, हक हादी सिंघासन बीच ॥ ८

इस पूरे चबूतरे पर एक सुन्दर कालीन बिछा हुआ है। इसके मध्यमें स्थित

सिंहासन पर श्रीराजश्यामाजी विराजमान होते हैं एवं उनकी दोनों ओर सखियाँ आसीन होती हैं।

बैठे तिन सिंघासन, हक अपना मिलवा ले ।

इन अंग की अकलें, क्यों कहूं खूबी ए ॥ ९

श्रीराजश्यामाजी ब्रह्मात्माओंके साथ यहाँ पर सिंहासनमें विराजमान होते हैं उनकी इस दिव्य शोभाका वर्णन नश्वर शरीरकी बुद्धिके द्वारा किस प्रकार हो सकता है ?

बैठे जुगलकिसोर, ऊपर दोऊ के छत्र ।

आगे जिकर करें कै विधसों, और बजावें बाजंत्र ॥ १०

श्री राजश्यामाजी सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके ऊपर दो छत्र शोभायमान हैं। उनके सन्मुख आकर पशुपक्षी विभिन्न प्रकारसे उनका गुणगान करते हैं एवं विभिन्न वाद्ययन्त्र भी बजाते हैं।

आवत मोहोलें मुजरे, इतका जो लसकर ।

ताके एक बाल के नूरसों, रही भराए जिमी अंबर ॥ ११

सभी पशुपक्षी अपने दल-बलके साथ धामधनीके दर्शनके लिए रङ्गभवनके निकट स्थित इस चबूतरे पर आते हैं। उनके रोम-रोमसे प्रस्फुटित प्रकाशसे भूमि तथा आकाश जगमगाता है।

देखावत रूहन को, पसू पंखी लराए ।

हंसत हक अरवाहोंसों, नए नए खेल खेलाए ॥ १२

धामधनी इन पशुपक्षियोंको लड़ाते हुए ब्रह्मात्माओंको उनका युद्ध दिखाते हैं। इस प्रकार नई-नई क्रीड़ाएँ दिखाते हुए धामधनी ब्रह्मात्माओंसे हास्यविनोद करते हैं।

कै गरुड गरजें लडें, कै मोर मुरग कुलंग ।

लडें चढें ऊंचे आसमानलों, फेरके लडें जंग बंग ॥ १३

इन पशुपक्षियोंमें गरुड, मोर, मुर्गा तथा कुलङ्ग आदि कतिपय गर्जना करते

हैं तो कतिपय परस्पर युद्ध करते हैं. कतिपय ऊँचे आकाश तक उड़ान भरते हैं एवं पुनः भूमि पर आकर अपनी युद्धकलाका प्रदर्शन करते हैं.

केसरी कावली हाथी, बाघ बीघ बांदर ।
पस्व घोड़े दीपड़े, लडें सूअर सांम्हर ॥ १४

यहाँ पर केशरी सिंह, बड़े-बड़े हाथी, बाघ, भेड़िया, वानर, पशु, घोड़े, चिता, सुकर तथा बारसिंहा (साम्भर) आदि परस्पर युद्धकलाके द्वारा धामधनीको प्रसन्न करते हैं.

चीते चीतल बैल बकर, लडें बरबरे हरन ।
जरख चरख रोझ रीछड़े, लडत आवें अरन ॥ १५

इसी प्रकार चीते, चीतल, बैल, गाय, हरिण आदि भी अपनी कलाका प्रदर्शन करते हैं. इसी प्रकार जरख, चरख, नीलगाय, भालू तथा जङ्गली भैस भी युद्धकलाका प्रदर्शन करते हैं.

लोखरी कूकरी जंबुक, लडत हैं मेढे ।
खरगोस बिली मूसक, लडें छिकारे गैंडे ॥ १६

छोटे पशुओंमें लोखरी, कुत्ते, सियार, भेड़, खरगोश, बिल्ली, चूहे आदि तथा छिकारा, गैंडे जैसे बड़े पशु भी परस्पर अपनी कलाओंका प्रदर्शन करते हैं.

कै जातें पसुअन की, और कै जातें जानवर ।
हिसाब न आवे गिनती, ए खेल कहूं क्यों कर ॥ १७

यहाँ पर छोटे-बड़े पशु-पक्षियोंकी विभिन्न जातियाँ हैं, जिनकी कोई गणना नहीं हो सकती है. वे सभी विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं.

कै रिझावें लड के, कै नाच मिलावें तान ।
कै उडें कूंदे फांदहीं, कै बोलत मीठी बान ॥ १८

इन पशुपक्षियोंमें कतिपय अपनी युद्ध कलासे, कतिपय नाच एवं गानसे, कतिपय उछलकूद तथा छलाङ्गसे एवं कतिपय अपनी मधुर वाणीसे श्रीराजजीको प्रसन्न करते हैं.

कै देत गुलाटियां, कै साधत स्वर समान ।

कै खेलें चलें टेढे उलटे, कै नई नई मुख बान ॥ १९

इनमें-से कतिपय गुलाटियाँ खाते हैं, कतिपय अपने स्वरकी साधना करते हैं. कतिपय उलटे-सीधे चलते हैं तथा खेलते हैं एवं कतिपय अपने मुखसे नवीन वाणीका उच्चारण करते हैं.

कै नाचत हैं पांउसों, कै नचावें पर ।

कै नाचत हैं उडते, कै हाथ चौंच सिर लर ॥ २०

कतिपय अपने पैरोंसे नृत्य करते हैं, कतिपय अपने पङ्खु फड़फड़ाकर नृत्यकला दिखाते हैं. कतिपय उड़ान भरते हुए नाचते हैं तो कतिपय अपने हाथोंसे, चौंचसे तथा सिरसे लड़ते हुए अपनी कलाका प्रदर्शन करते हैं.

कै हंसावत हकको, भांत भांत खेल कर ।

कोई हिकमत छिपी ना रहे, ए ऐसे पसू जानवर ॥ २१

इस प्रकार अनेक पशुपक्षी भाँति-भाँतिकी क्रीड़ाओंके द्वारा श्रीराजजीको प्रसन्न करते हैं. यहाँ पर ये सभी पशुपक्षी इस प्रकार अपनी कलाका प्रदर्शन करते हैं, उनकी कोई भी कला छिपी नहीं रहती है.

क्यों कहूं इन सुखकी, जो इन मेले में बसत ।

ए सोई रूहें जानहीं, जो इन हक की सोहोवत ॥ २२

मैं इस समयके आनन्दका वर्णन कैसे करूँ ? जो आत्माएँ ऐसे समयमें धामधनीके समीप बैठी हुई होती हैं वे ही इसका अनुभव कर सकती हैं.

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत मुख बोल ।

क्यों देऊं निमूना इनका, याको रूहें जाने तौल मोल ॥ २३

इस समय धामधनी अपनी मधुर वाणीसे ब्रह्मात्माओंको जो आनन्द प्रदान करते हैं उसका वर्णन कैसे किया जाए ? इसका उदाहरण भी कैसे दें ? मात्र ब्रह्मात्माएँ ही इसका मूल्याङ्कन कर सकती हैं.

क्यों कहूं इन सुखकी, जो धनी देत कर हेत ।

आराम इन इसक का, सोई जानें जो लेत ॥ २४

धामधनी ब्रह्मात्माओंको बड़े प्रेमसे आनन्दित करते हैं। मैं उस सुखका वर्णन कैसे करूँ ? इस अलौकिक प्रेमको वही ब्रह्मात्मा समझ सकती है जो इसे ग्रहण करती है।

क्यों कहूं सुख सनमुख का, जो पिलावें नैनोसों ।

ए सोई रूहें जानहीं, रस आवत हैं जिनकों ॥ २५

मैं श्रीराजजीके सान्निध्यके सुखका वर्णन कैसे करूँ ? वे अपनी प्रेमभरी दृष्टिसे अमृतका सिञ्चन करते हैं। जिन ब्रह्मात्माओंको इस आनन्दरसकी अनुभूति होती है वे ही इस सुखको जान सकती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, धनी लेवें इसकसों ।

ए सोई रूहें जानहीं, हक देत हैं जिनकों ॥ २६

इस समय ब्रह्मात्माएँ धामधनीसे जो आनन्द प्राप्त करती हैं उसका वर्णन कैसे किया जाए ? वस्तुतः वे ही इसे जान सकती हैं जिनको धामधनी यह आनन्द प्रदान करते हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, हक देत कर प्रीत ।

जो ए प्याले लेत हैं, सोई जानें रस रीत ॥ २७

इन सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए जो धामधनी बड़े प्रेमसे प्रदान करते हैं। जो इन प्रेमभरे प्यालोंको ग्रहण करती हैं वे ब्रह्मात्माएँ ही आनन्दकी रीतिको समझ सकती हैं।

क्यों कहूं सुख नजीक का, जो इन हक की सोहोबत ।

ए सोई रूहें जानहीं, जो लेवें हर बखत ॥ २८

उस सामीप्य सुखका वर्णन भी कैसे करूँ ? जो धामधनीके सान्निध्यमें बैठनेसे प्राप्त होता है। इसको भी वे ही ब्रह्मात्माएँ जान सकती हैं जो सदैव इसे प्राप्त करती हैं।

क्यों कहूं इन सुख की, जासों हक रमूज करत ।

ए सोई रूहें जानहीं, जिनका बासा इत ॥ २९

ब्रह्मात्माओंके उस सुखका वर्णन कैसे करूँ ? जिनके साथ श्रीराजजी हास्य-विनोद करते हैं. वस्तुतः परमधाममें रहनेवाली आत्माएँ ही इसे जान सकती हैं.

क्यों कहूं इन सुख की, जासों हक करें इसारत ।

ए सोई रूहें जानहीं, सामी सैनसे समझावत ॥ ३०

ब्रह्मात्माओंके इन सुखोंका वर्णन कैसे करें जिनको स्वयं श्रीराजजी सङ्केत (इशारा) करते हैं. इन सुखोंको वे ही ब्रह्म आत्माएँ जानती हैं जो श्रीराजजीके सङ्केतोंको समझ कर स्वयं भी सङ्केतके द्वारा उनको समझाती हैं.

क्यों कहूं इन सुख की, जो हक देत दायम ।

ए सोई रूहें जानहीं, जो पिएं सराब कायम ॥ ३१

इस आनन्दका वर्णन कैसे किया जाए, जो श्रीराजजी नित्यप्रति प्रदान करते हैं. इसे वे ही ब्रह्मात्माएँ जान सकती हैं, जिन्होंने सदैव श्रीराजजीकी प्रेमसुधाका पान किया है.

क्यों कहूं इन सुख की, जासों हक करत हैं हांस ।

ए सोई रूहें जानहीं, जो लेत खुसाली खास ॥ ३२

ब्रह्मात्माओंके इन सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए जिनके साथ श्रीराजजी हास्य विनोद करते हैं इस विशेष आनन्दका अनुभव करनेवाली ब्रह्मात्माएँ ही इसे समझ सकती हैं.

क्यों कहूं इन सुख की, जाए हक लेत बोलाए ।

सनमुख बातें करके, अमीरस नैन पिलाए ॥ ३३

ब्रह्मात्माओंके आनन्दका वर्णन कैसे किया जाए ? जिनको स्वयं श्रीराजजी अपने निकट बुलाते हैं और अपने सम्मुख बैठकर वार्तालाप करते हुए नेत्रोंसे अमृत रसका पान कराते हैं.

क्यों कहूं इन रूहन की, जासों धनी बोलत सनमुख ।

नहीं निमूना इनका, एही जानें ए सुख ॥ ३४

उन आत्माओंके सुखकी महिमा कैसे गायी जाए ? जिनको श्रीराजजी सम्मुख

बैठाकर वार्तालाप करते हैं। इन सुखोंके लिए अन्य कोई उदाहरण ही नहीं है। स्वयं ब्रह्मात्माएँ ही इनको जान सकती हैं

क्यों कहूँ इन सुख की, जो प्यारी पीउके दिल ।

समनुख बातां करत हैं, इन खावंद सामिल ॥ ३५

प्रियतम धनीके हृदयमें बसी उन ब्रह्मात्माओंके सुखका वर्णन कैसे किया जाए ? जो श्रीराजजीके सन्मुख बैठकर परिसम्वाद करती हैं।

क्यों कहूँ ताके सुख की, हक बातें करें दिल दे ।

ए रूहें प्याले जानहीं, जो हाथ धनी के ले ॥ ३६

उनके आनन्दका वर्णन कैसे किया जाए? जिनके साथ स्वयं श्रीराजजी प्रेमपूर्ण हृदयसे बात करते हैं। जो ब्रह्मात्माएँ धामधनीके हाथोंसे इस प्रेमसुधाका पान करती हैं, वे ही इस सुखको जानती हैं।

क्यों कहूँ इन सुख की, जाको निरखत धनी नजर ।

प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर ॥ ३७

धामधनी जिनको अपनी प्रेममयी दृष्टिसे देखते हैं, उन ब्रह्मात्माओंके सुखका वर्णन कैसे करें ? ब्रह्मात्माएँ भी स्वयं अपना प्रेमरूपी प्याला भर-भर कर श्रीराजजीके समक्ष प्रस्तुत करती हैं।

क्यों कहूँ इन सुख की, जो हकसों नैनो नैन मिलाए ।

फेर फेर प्याले लेत हैं, आगूँ इन धनी के आए ॥ ३८

मैं ब्रह्मात्माओंके इन सुखोंका वर्णन कैसे करूँ ? जो धामधनीके नयनोंसे अपने नयन मिलाती हैं एवं धामधनीके समक्ष आकर वारंवार प्रेमसुधाके प्याले लेती रहती हैं।

क्यों कहूँ इन सुख की, जो दूर बैठते हैं जाए ।

तितथें धनी बोलाए के, ढिग बैठावत ताए ॥ ३९

धामधनी जब दूर बैठी हुई ब्रह्मात्माको अपने निकट बुलाकर समीपमें ही बैठाते हैं। उस समयके आनन्दकी बात कैसे बतायी जाए ?

क्यों कहूं इन सुखकी, जाको देत धनी चित ।

सो धनी आगूं आए के, सामी मीठी बान बोलत ॥ ४०

उस ब्रह्मात्माके सुखका वर्णन कैसे किया जाए जिसको धनी हृदयसे चाहते हैं और वह भी धामधनीके समक्ष आकर मधुर वाणी बोलती है.

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें हक नैन ।

खावंद नजीक बोलाएके, बोलत मीठे बैन ॥ ४१

ब्रह्मात्माओंके उस सुखका वर्णन कैसे किया जाए, जब वे वारंवार धामधनीके नयनोंकी ओर देखती हैं. धामधनी भी उन्हें निकट बुलाकर उनके साथ मीठी बातें करते हैं.

क्यों कहूं सुख नजीकियों, जाको देखे हक नजर ।

बातें इसक पिउ अंगे, पिएं प्याले भर भर ॥ ४२

धामधनीके सान्निध्यमें रहनेवाली ब्रह्मात्माओंके सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए, जिनको धामधनी अपनी सुमधुर दृष्टिसे देखते हैं. वे अपने धामधनीके साथ प्रेमपूर्ण वार्ता करती हैं एवं उनके प्रेमरूपी सुधाका प्याला भर-भरकर पान करती हैं.

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें मुख पीउ ।

नैन बैन सुख देत हैं, चूभ रेहेत माहें जीउ ॥ ४३

धामधनीके मुखारविन्दके दर्शन वारंवार करनेवाली ब्रह्मात्माओंके सुखका वर्णन कैसे करें ? धामधनी अपनी मधुर दृष्टिपात एवं मधुरवाणीका जो सुख उन्हें प्रदान करते हैं, वह हृदयको विदीर्ण कर देता है.

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो हक बडी रूह अंग नूर ।

आठों जाम इन पीउसों, हंस हंस करें मजकूर ॥ ४४

धामधनीकी अङ्गना श्यामाजीकी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माओंके इन सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए, जो आठों प्रहर धामधनीके साथ हंस-हंसकर वार्तालाप करती हैं.

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो इन पीउ के आसक ।

भर भर प्याले लेवहीं, फेर फेर देवें हक ॥ ४५

धामधनीकी अनुरागिनी इन आत्माओंके सुखका वर्णन कैसे करूँ ? जो धामधनीसे प्राप्त प्रेमरूपी सुधाको प्याले भर-भरकर पीती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लगे इन हक के कान ।

करें मजकूर मजाक सों, साथ इन सुभान ॥ ४६

ब्रह्मात्माओंके इन सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए, जब धामधनी उनकी बात अपने कानोंसे सुनकर उनके साथ हास्य विनोद करते हैं।

क्यों कहूं सुख इन रूहन के, जासों खेलें हंसे सनमुख ।

पार नहीं सोहाग को, इन पर धनी को रूख ॥ ४७

धामधनी जिनके साथ हास्यविनोदकी लीलाएँ करते हैं उन ब्रह्मात्माओंके आनन्दका वर्णन कैसे करें ? उनकी सुहागका कोई पारावार नहीं है। उन पर धामधनीकी विशेष कृपा होती रहती है।

क्यों कहूं सुख रूहन के, इन पीउसों रस रंग ।

आठों जाम आराम में, एक जरा नहीं दिल भंग ॥ ४८

अपने धनीके प्रेमरसरङ्गमें भीगी हुई ब्रह्मात्माओंके आनन्दका वर्णन कैसे किया जाए, जो आठों प्रहर इसी आनन्दमें मग्न रहती हैं। क्षण मात्रके लिए भी उनका हृदय धामधनीसे विमुख नहीं होता है।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों पोहोर पीउ पास ।

रात दिन सोहोबत में, करें हांस विलास ॥ ४९

आठों प्रहर धामधनीके समीपमें रहनेवाली ब्रह्मात्माओंके सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए, जो रात दिन उनके सान्निध्यमें रहकर उनके साथ हास्य विनोद करती रहती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों जाम दिन रात ।

प्रेम प्रीत सनेह की, भर भर प्याले पिलात ॥ ५०

उन ब्रह्मात्माओंके आनन्दके विषयमें क्या कहा जाए जिनको धामधनी आठों

प्रहर (दिन-रात) प्रेम, प्रीति, स्नेह एवं कृपा रूपी प्याले भर-भरकर पिलाते रहते हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जिन का साकी ए ।

हक प्याले इसक के, भरभर रूहों को दे ॥ ५१

स्वयं श्रीराजजी (साकी-पिलाने वाले बनकर) जिन ब्रह्मात्माओंको प्रेमसुधाका पान कराते हैं, उनके सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए ? धामधनी अपने हाथोंसे प्रेमके प्याले भर-भरकर उन्हें देते हैं।

क्यों कहूं इस सुख की, जो सदा सोहोबत हक जात ।

जो इसक आराम में, सो क्यों कहूं इन मुख बात ॥ ५२

उन ब्रह्मात्माओंके सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए, जिनको सर्वदा श्रीराजजीका सान्निध्य प्राप्त है एवं जो श्रीराजजीके प्रेममें ही विश्रान्तिका अनुभव करती हैं। इस जिह्वाके द्वारा उनकी चर्चा कैसे करें ?

क्यों कहूं इन सुख की, जिन का हक खावंद ।

आठों जाम रूहन पर, हक होत परसंद ॥ ५३

जिनके स्वामी स्वयं धामधनी अक्षरातीत हैं उन ब्रह्मात्माओंके सुखोंका वर्णन कैसे करें ? वे आठों प्रहर ब्रह्मात्माओंसे प्रसन्न रहते हैं।

क्यों कहूं इन सुख की, जो ख्वाब में गैयां भूल ।

याद देने सुख अरस के, हकें भेज्या एह रसूल ॥ ५४

ब्रह्मात्माएँ इस स्वप्नवत् जगतमें आकर परमधामके जिन अखण्ड सुखोंको भूल गई हैं, उसका वर्णन कैसे किया जाए ? परमधामके इन सुखोंका स्मरण करवानेके लिए ही धामधनीने इस जगतमें रसूलको भेजा है।

क्यों कहूं सुख हांसीय को, जो ख्वाब में दैयां भुलाए ।

ऊपर फेर फेर याद देत हैं, पर फरामोसी क्यों ए न जाए ॥ ५५

परमधामके हास्यविनोदसे प्राप्त सुखोंका वर्णन कैसे करें ? जिनको इस स्वप्नवत् जगतमें आकर हम भूल गए हैं। धामधनी स्वयं सद्गुरुके रूपमें

पधारकर हमें बार-बार स्मरण करवाते हैं तथापि अज्ञानताका यह आवरण किसी भी प्रकार दूर नहीं होता है.

क्यों कहूं सुख इन का, जासों हक हांसी करत ।

ए विध कहूं मैं कितनी, जो रूहों हक खेलावत ॥ ५६

इन आत्माओंके सुखकी बात क्या करें जिनसे स्वयं धामधनी हास्य विनोद करते हैं. धामधनी जिन ब्रह्मात्माओंको स्वयं खेल खेला रहे हैं उनके विषयमें मैं कहाँ तक कहूँ ?

क्यों कहूं इन रूहन की, हक देखावें कै सुख ।

दई सुख बका लज्जत, ख्वाब देखाए के दुख ॥ ५७

इन ब्रह्मात्माओंके विषयमें क्या कहा जाए, जिनको धामधनी अनेक प्रकारके सुख दिखाते हैं. स्वप्नवत् जगतको दिखाकर धामधनीने इन ब्रह्मात्माओंको अखण्ड सुखका अनुभव करवाया है.

क्यों कहूं इन रूहन के, जो लेवत आठों जाम ।

बिना हिसाबें दिए आराम, हक का एही काम ॥ ५८

इन ब्रह्मात्माओंके विषयमें क्या कहा जाए, जो आठों प्रहर धामधनीसे अखण्ड सुख प्राप्त करती हैं. धामधनी भी उन्हें असंख्य सुख प्रदान करते रहते हैं क्योंकि उनका कार्य ही यही है.

वास्ते इन रूहन के, परहेज लिया हकें ए ।

आठों जाम फेर फेर देऊं, सुख अरस बका जे ॥ ५९

इन ब्रह्मात्माओंके लिए ही धामधनीने यह नियम लिया है कि वे आठों प्रहर उन्हें परमधामके असीम सुख प्रदान करते रहें.

अब क्यों कहूं इन सुख की, लिया ऐसा परहेज हक ।

जैसा बुजरक साहेब, सुख भी तिन माफक ॥ ६०

इन सुखोंके विषयमें क्या कहा जाए, जिनको प्रदान करनेके लिए धामधनीने ऐसा नियम लिया है, धामधनी जैसे महान हैं उनसे प्राप्त सुख भी उनकी महत्ताके अनुरूप ही अति श्रेष्ठ है.

ए सुख इन केहेनीय में, क्योंए किए न आवत ।

देखो दिल विचार के, कछू तब पाओ लज्जत ॥ ६१

धामधनीके द्वारा प्राप्त होनेवाले इस आनन्दको अनेकों प्रयत्नोंसे भी व्यक्त नहीं किया जा सकता. हृदयपूर्वक विचार करने पर ही इस दिव्य आनन्दका थोड़ा-सा अनुभव हो सकता है.

आराम अरस बका मिने, हक दिल दे देवें सुख ।

तो ए सुख इन आकार से, क्यों कर कहूं इन मुख ॥ ६२

श्रीराजजी अखण्ड परमधाममें अपने हृदयका असीम आनन्द प्रदान करते हैं. इन अखण्ड सुखोंका वर्णन लौकिक तनकी जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकता है ?

ठौर बका अरस कहा, और खावंद नूर जमाल ।

इन दरगाह रूहों के सुख, क्यों कहूं फैल हाल ॥ ६३

परमधाम स्वयं अखण्ड भूमिका है और उसके स्वामी अक्षरातीत धामधनी हैं. ऐसे दिव्य धामकी ब्रह्मात्माओंका व्यवहार एवं मनःस्थितिका वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

ए सुख रूह कछू जानहीं, पर केहेनी में आवत नाहें ।

ख्वाब वजूद की अकलें, क्यों कर आवे जुबाएं ॥ ६४

इन सुखोंका अल्प अनुभव भी आत्मा ही कर सकती है. वाणीके द्वारा वे व्यक्त नहीं हो सकते हैं. स्वप्नवत् जगतके तन और बुद्धि द्वारा इनको जिह्वा तक लाना सम्भव ही नहीं है.

अरस अजीम का खावंद, रमूज करे दिल देय ।

अपने अरस अरवाहोंसों, क्यों कहे जुबां इन देह ॥ ६५

दिव्य परमधामके स्वामी परब्रह्म परमात्मा अपनी आत्माओंके साथ स्वयं हृदयपूर्वक वार्तालाप करते हैं. उसका वर्णन नश्वर देहकी जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

क्यों कहूं सुख हांसीय का, वास्ते हांसी किए फरामोस ।

फेर फेर उठावें हांसीय को, वह टलत नहीं बेहोस ॥ ६६

उस हास्यविनोदके सुखका वर्णन भी कैसे हो सकता है, जिस हँसीके लिए ही धामधनीने भ्रमरूपी नींदका यह आवरण डाला है। वस्तुतः हँसी करनेके लिए ही धामधनी सद्गुरुके रूपमें हमें वारंवार जागृत करना चाहते हैं तथापि हमारी भ्रमरूपी निद्रा नहीं टूटती है।

आप फरामोसी देय के, ऊपर से जगावत ।

क्यों जागें बिना हुकमें, हक इन विध हांसी करत ॥ ६७

धामधनी स्वयं भ्रमरूपी निद्राका आवरण डालकर हमें ऊपरसे जागृत कर रहे हैं। वस्तुतः उनकी आज्ञाके बिना हम कैसे जागृत हो सकते हैं ? इस प्रकार श्रीराजजी हमारे साथ उपहास कर रहे हैं।

ए हांसी फरामोसीय की, होसी बडो विलास ।

जागे पीछे आनंद को, अंग न मावत हांस ॥ ६८

भ्रमरूपी निद्राके कारण होनेवाली इस हँसीसे जागृत होने पर बड़ा आनन्द होगा क्योंकि जागृत होने पर यह आनन्द रोम-रोममें भी नहीं समा सकेगा।

अनेक सुख देने को, साहेबें दर्ई फरामोसी ।

जगावते भी जागे नहीं, एही हांसी बडी होसी ॥ ६९

इस प्रकार अनेक सुख प्रदान करनेके लिए धामधनीने हमारे हृदय पर नींदका आवरण डाला है। उनके द्वारा वारंवार जागृत करने पर भी हम जागृत नहीं हो रहे हैं। यही हमारे लिए सबसे बड़ा उपहासका विषय बन जाएगा।

अनेक सुख दिए अरस में, सुख फरामोसी नहीं कब ।

हंस हंस गिर गिर पडसी, ए सुख ऐसा देखाया अब ॥ ७०

धामधनीने हमें परमधाममें अनेक प्रकारके सुख प्रदान किए किन्तु भ्रमरूपी निद्राका सुख कभी भी नहीं दिया था। उन्होंने अभी ऐसा सुख दिखाया है जिससे हम हँसते हुए स्वयं ही लोटपोट हो जाएँगी।

छिन एक विरहा ना सहें, सो सौ बरस सहें क्यों कर ।

फरामोसी इन हक की, कोई हांसी ना इन कदर ॥ ७१

जो ब्रह्मात्माएँ क्षणमात्रके लिए भी अपने धनीका विरह सहन नहीं कर सकतीं, वे सौ वर्षतक कैसे सह सकती हैं ? धामधनीने ऐसा आवरण डाल दिया कि (हम इतने दिनों तक धनीका वियोग सहन करते रहे) इससे बढ़कर अन्य कोई उपहास ही नहीं हो सकता है.

ए सुख आनंद फरामोस को, कह्यो जाय ना अलेखे ए ।

ए सुख जागे पीछे चाहे नहीं, सुख दिए फरामोसी जे ॥ ७२

भ्रमरूपी निद्रामें भी ऐसा अपार आनन्द प्रदान किया कि जिसका वर्णन ही नहीं हो सकता है. भ्रमका आवरण डाल कर धामधनीने हमें ऐसा सुख प्रदान किया कि जागृत होने पर इसकी भी चाहना ही नहीं रहेगी.

सुख तो अलेखे पाइया, पर इन सुख ऐसी बात ।

एक बल पड्या आए बीच में, तथें ए सुख रूहें न चाहत ॥ ७३

परमधाममें हमें अनेक प्रकारके अखण्ड सुख प्राप्त हुए किन्तु इस स्वप्नवत् जगतको दिखाकर जो सुख प्रदान किया है इसकी विशेषता यह है कि यहाँ पर आने पर धामधनी और हमारे बीच जगत (माया) का व्यवधान पड़ जानेसे धामधनीका वियोग हो गया है. इसलिए आत्माएँ पुनः ऐसे सुखोंकी चाहना नहीं रखती हैं.

अनेक हांसी होएसी, अनेक उपजसी सुख ।

इसक तरंग कै बढसी, ऐसा देखाया फरामोसी दुख ॥ ७४

जागृत होने पर अनेक प्रकारकी हँसी होगी एवं उससे अनेक प्रकारके सुख भी प्राप्त होंगे. धामधनीने इस भ्रमपूर्ण जगतमें ऐसे दुःख दिखाए हैं कि जागृत होने पर हमारे हृदयमें प्रेमकी तरङ्गें बढ़ने लगेंगी.

कै सुख हांसी फरामोस के, कै हजूर सुख खिलवत ।

कै सुख पसू पंखियन के, कै सुख मोहोलों बैठत ॥ ७५

धामधनीने उपहास करनेकी दृष्टिसे हमें भ्रमपूर्ण जगतमें भेजकर भी अनेक

सुख प्रदान किए हैं. परमधाम मूलमिलावामें अपने निकट बैठाकर तथा विभिन्न महलोंमें बैठाकर पशुपक्षियोंकी क्रीड़ा दिखाकर भी उन्होंने हमें अपार सुख प्रदान किए हैं.

कै सुख चबूतर के, कै कठेडे गिलम ।

कै सुख बीच तखत के, कै सुख देत बैठ खसम ॥ ७६

लालचबूतरा पर कटहराके बीचमें बिछाए गए कालीन पर भी हमें धामधनीने अनेक सुख प्रदान किए हैं. इसी प्रकार चबूतरेमें स्थित सिंहासन पर विराजमान होकर भी वे हमें अखण्ड सुख प्रदान करते रहते हैं.

कै सुख ऊपर बैठक के, कै सुख दरखतों छत ।

कै सुख तलें बडे वृख के, झूमत हैं ऊपर मोहोलात ॥ ७७

लालचबूतरे पर स्थित विश्रामस्थल पर, वृक्षोंकी छत तथा बड़े वृक्षोंकी छायामें बैठकर धामधनीने हमें अनेक सुख प्रदान किए हैं. जिन वृक्षोंकी शाखाएँ रङ्गभवनके ऊपर तक लगी हुई हैं.

फेर कहूं सुख तलें वन के, ए वन बडा विस्तार ।

भर चबूतरे आगूं चल्या, मिल्या मधुवन किनार ॥ ७८

मैं पुनः इन वनोंके वृक्षोंकी छायाके सुखोंका वर्णन करता हूँ. यह वन बड़ा विस्तृत है. लाल चबूतरासे होकर यह मधुवनके किनार तक पहुँचा हुआ है.

मधुवन की किन विध कहूं, वन जाए लग्या आसमान ।

पुखराज अरस के बीच में, ए सिफत न होए बयान ॥ ७९

मधुवनकी शोभाका वर्णन कहाँ तक करूँ ? इसके वृक्ष ऊँचे आकाशको स्पर्श करते हैं. पुखराज पर्वत तथा रङ्गमहलके मध्यमें स्थित इस वनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

लिबोई केल के घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत ।

बुजरक वन मधुवन का, मिल्या जोए किनारों जित ॥ ८०

इस मधुवनका एक किनार केल व निम्बूके घाट तक पहुँचा हुआ है. इसी

प्रकार इस श्रेष्ठ वनका दूसरा किनारा यमुनाजीके तट तक पहुँचा हुआ है।

और फिरवल्या पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर ।

चढ पुखराज जब देखिए, आए तलें रह्या हजूर ॥ ८१

पुनः यह मधुवन पुखराज पर्वतके चारों ओर व्याप्त होकर दूरतक फैला हुआ है। पुखराज पर्वत पर चढ़कर देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह वन नीचे अति निकट तक आया हुआ है।

सुख हक का महामत जानहीं, या जानें मोमन ।

दूजा नहीं कोई अरसमें, बिना बुजरक रूहन ॥ ८२

धामधनीसे प्राप्त इन सुखोंको या महामति जानते हैं या ब्रह्मात्माएँ जान सकती हैं। इन श्रेष्ठ ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त परमधाममें अन्य कोई नहीं है।

प्रकरण ११ चौपाई ७२५

फेर कहूं तले वनकी, जो वन बडा विस्तार ।

भर चबूतरे आगूं चल्या, जाए पोहोंच्या केलके पार ॥ १

अब मैं पुनः लालचबूतरेके नीचे बड़ावनके विस्तारका वर्णन करता हूँ। यह दूर-दूर तक फैला हुआ है। पूरे चबूतरेको व्याप्त कर केल वनको भी पार करता हुआ यह उससे भी आगे तक पहुँचा है।

जो वन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन ।

छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों वन ॥ २

लाल चबूतरेके आगे ताड़वन है, उसमें एक खड़ोकलीका जलकुण्ड (चेहेबच्चा) है। उसकी शोभा अद्वितीय है। इस कुण्डके तीनों ओर वन है, उसकी छाया जल पर पड़ती है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए ।

इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए ॥ ३

इस जलकुण्डकी चौथी ओर धाम मन्दिरकी दीवारमें झरोखे हैं। वे जलकुण्डकी ओर होनेसे जलके ऊपर शोभायमान हैं। इस जलकुण्डकी

शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है.

कै वन हैं इत ताड के, कै खजूरी नारियर ।

और नाम केते लेऊं, बट पीपर सर ऊमर ॥ ४

यहाँ पर ताड़के अनेक वृक्ष हैं. इसी प्रकार खजूर, नारियल, वट-पीपल, सर, ऊमर (गुलर) आदि अनेक वृक्ष भी सुशोभित हैं. उनमें-से किन-किनका नाम लिया जाए ?

ए वन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट ।

जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबंध ठाट ॥ ५

यह वन बहुत सघन है. इसका विस्तार इतना है कि यह लाल चबूतरसे होता हुआ केलके घाट तक पहुँचा हुआ है. इस केल वनकी छाया यमुनाजीके जलके किनारे सीधी पड़ितबद्ध है.

जोए जमुना का जल, पहाड से उतरत ।

तले आया कुंड में, पहाड से निकसत ॥ ६

यमुनाजीका जल पुखराज पर्वतकी चाँदनीसे नीचे उतरकर पुखराजके तालसे होता हुआ अधबीचके कुण्डमें प्रवेश करता है.

जमुनाजी के मूल में, पहाड बन्यो चबूतर ।

आगूं कुंड दूजा भया, जहां से जल चल्या उतर ॥ ७

यमुनाजीके उद्गम स्थान पर पुखराज पर्वतमें एक चबूतरा है. उससे नीचे उतरकर अधबीचके कुण्डसे होते हुए यमुनाजल आगे दूसरे कुण्ड (मूलकुण्ड) में पहुँचता है.

पेहेलें कुंड चबूतरा, दूजा आगूं सोए ।

चारों तरफों बैठक, जल उजल खुसबोए ॥ ८

पहले अधबीचका कुण्ड एवं ढँपा चबूतरा आता है. उससे आगे मूलकुण्ड सुशोभित है, जहाँ पर चारों ओर बैठनेका स्थल है. यहाँ पर जल उज्ज्वल तथा सुगन्धियुक्त है.

चारों तरफ चबूतरा, जमुना दोऊ किनार ।

ए कुंड हुए दोऊ इन विध, चली देहुरी दोऊ हार ॥ ९

मूलकुण्डमें चारों ओर चबूतरा है। वहाँसे यमुनाजी निकलती हैं, उनके दोनों तट पर भी चबूतरे हैं। इस प्रकार मूलकुण्ड तथा अधबीचके कुण्डका वर्णन है। मूलकुण्डसे निकलने पर यमुनाजीके दोनों तटों पर पङ्क्तिबद्ध देहुरियाँ सुशोभित हैं।

केतेक लग ढांपी चली, तरफ दोऊ थंभ हार ।

इन आगूं जुदी जिनस, चली देहुरी दोऊ किनार ॥ १०

यहाँ पर कुछ दूरी तक यमुनाजी ढँकी हुई बहती हैं। यमुनाजीके दोनों किनारों पर पङ्क्तिबद्ध रूपमें स्तम्भ हैं। इससे आगे यमुनाजी दूसरे ढङ्गसे (खुले रूपमें) प्रवाहित होती हैं जहाँ दोनों तटों पर देहुरियाँ सुशोभित हैं।

ऊपर ढांप्या पुल ज्यों, सोभा लेत सुंदर ।

ऊपर देहुरी जडाव ज्यों, जल खलकत चल्या अंदर ॥ ११

यमुनाजीका जल पुलकी भाँति ढँका हुआ होने पर भी अति सुन्दर सुशोभित है। ऊपर रत्न जड़ित (पन्द्रह) देहुरियाँ हैं एवं नीचे यमुनाजीका जल कलकल ध्वनि करता हुआ बहता है।

चार थंभ हारें चली, ऊपर ढांपी तरफ दोए ।

यों चल आई दूरलों, ए जल जमुना जोए ॥ १२

यमुनाजीके दोनों तट पर दो-दो स्तम्भोंकी हार आनेसे दोनों तट ढँके हुए-से लगते हैं। इस प्रकार यमुनाजी दूर तक बहती हुई आई हैं।

दोऊ किनारें बैठक, वन गेहेरा गृदवाए ।

अति सोभा इत जोए की, इन जुबां कही न जाए ॥ १३

दोनों तटों पर पालमें बैठनेके लिए विश्रामस्थल हैं। चारों ओर सघन वन है। इस प्रकार यमुनाजीकी शोभा अति सुन्दर है जिसका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता।

दोऊ तरफ जो देहुरी, कै कंगूरे कलस ऊपर ।

इत बैठक अति सुंदर, चल आए दोऊ चबूतर ॥ १४

दोनों तटोंके चबूतरे पर स्थित देहुरियोंके ऊपर कंगूरे एवं कलश शोभायमान हैं। ये विश्रामस्थल अति सुन्दर हैं। ये चबूतरे आगे तक पहुँचे हुए हैं।

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर ।

एक देहुरी एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर ॥ १५

मूलकुण्डसे पूर्वकी ओर बहती हुई यमुनाजी घूमकर ताल (दक्षिण) की ओर चली जाती हैं। इस मोड़से पुल तक दोनों किनारों पर क्रमशः एक देहुरी-एक चबूतरा शोभायमान है।

ए वन की शोभा क्यों कहूं, पेड चले आए बराबर ।

दोऊ तरफों जुगते, आई देहुरियां ऊपर ॥ १६

यहाँ पर बड़े वनके दो हार वृक्षोंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? ये वृक्ष समान रूपसे दिखाई देते हैं। यमुनाजीके दोनों ओर स्थित देहुरियों पर इनकी छाया पड़ती है।

इत लंबा वन आए मिल्या, जमुना भर किनार ।

इतथें छत्री ले चल्या, पोहोंच्या पहाड के पार ॥ १७

यहाँ पर यमुनाजीके तट तक आकर महावनके वृक्ष मिलते हैं। पड़ितबद्ध होनेसे ये वृक्ष छत्रीके समान दिखाई देते हैं एवं पुखराज पर्वतसे भी आगे तक पहुँचते हैं।

दोऊ किनार सीधी चली, आए पोहोंच्या केल घाट ।

एक चौक देहुरी इतलों, ए बन्यो जो ऐसो ठाट ॥ १८

यमुनाजी दक्षिणकी ओर मुड़कर दोनों किनारोंके बीच सीधी ढङ्गसे बहती हुई केलके घाटके निकट पहुँचती हैं। इनके दोनों किनारों पर एक देहुरी एवं एक चबूतरा अति सुन्दर ढङ्गसे सुशोभित हैं।

छूटक छूटक देहुरी, सातों घाटों मांहे ।

दोऊ किनारें जडाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए ॥ १९

यमुनाजीके तटके सातों घाटों पर (जहाँ दो घाटोंका सङ्गम है) अलग-अलग

देहुरियाँ सुशोभित हैं. दोनों किनारों पर स्थित ये देहुरियाँ रत्न जड़ित प्रतीत होती हैं. इनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता.

इतथें चले ताललों, एक देहुरी एक चबूतर ।

दोऊ तरफ़ या विध, जोए हौज मिली यों कर ॥ २०

यहाँसे यमुनाजी तालकी ओर चली जाती हैं. वटके पुलसे मोड़तक दोनों किनारों पर एक देहुरी एवं एक चबूतरेकी शोभाके साथ आगे बहती हुई हौजकौसरमें समा जाती हैं.

महामत कहे ऐ मोमिनो, मैं बोलत बुध माफक ।

ख्वाब मन जुबानसों, क्यों कर वरनों हक ॥ २१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! मैं अपनी बुद्धिके अनुसार वर्णन कर रहा हूँ. स्वप्नके मन एवं जिह्वाके द्वारा अखण्ड धामका वर्णन कैसे हो सकता है ?

प्रकरण १२ चौपाई ७४६

मोहोल पहाड पुखराजी

राग-मारू

सुख लीजो मोमिनो, पहाड मोहोल के आराम ।

अरस अजीम के कायम, निस दिन एही ताम ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! परमधामके इस पर्वतके समान विशाल प्रासाद (महल) के आनन्दका अनुभव करो. परमधामका यह आनन्द नित्य एवं अखण्ड है. इसका अनुभव करना ही हमारा दैनिक आहार है.

हौज जोए अरस जिमिएं, जो फुरमान में फुरमाए ।

पहाड मोहोल पेड इन का, सो हक हुकमें देऊं बताए ॥ २

परमधामकी यमुनाजी तथा हौजकौसर तालके विषयमें सद्गुरुने जैसे बताया है कुरानमें भी उसी प्रकार कहा गया है. अब मैं श्रीराजजीकी आज्ञासे पुखराज पर्वत तथा वृक्ष (पेड़) की भाँति सुशोभित प्रासाद (महल) आदिका वर्णन करने जा रहा हूँ.

एक जवेर इन जिमी पर, बीच अरस एक नंग ।

बोहोत नाम जवेरों के, जुदे नाम जुदे रंग ॥ ३

परमधामकी दिव्य भूमि पर यह एक ही रत्न (पुखराज) का विशाल महल (पर्वतकी भाँति) है। यद्यपि यहाँ पर विभिन्न प्रकारके रत्न हैं उनके नाम तथा रङ्ग भी विभिन्न प्रकारके हैं।

सो बडा पहाड एक नंग का, तिनमें कै मोहोलात ।

चौडा ऊंचा तेज में, क्यों कहूं अरस की बात ॥ ४

एक ही रत्न (पुखराज) के इस विशाल पर्वतमें अनेक प्रासाद (महल) हैं। इस पर्वतकी चौड़ाई, ऊँचाई तथा उज्ज्वलताके विषयमें क्या कहा जाए ? यह तो परमधामकी बात है।

गृद मोहोल बराबर, तरफ तलें संकडा ।

मोहोल बढते बराबर, चढते अति चौडा ॥ ५

इस पर्वतके चारों ओर एक समान प्रासाद शोभायमान हैं। इन प्रासादोंमें नीचेके भवन थोड़े सँकड़े हैं। जैसे ही ऊपर बढ़ते जाते हैं वैसे ही इनकी चौड़ाई उत्तरोत्तर बढ़ती चली जाती है।

गृदवाए फेर देखिए, आकास न माए झलकार ।

मोहोलातें सब नूर की, जुबां कहा केहेसी विस्तार ॥ ६

चारों ओर देखने पर इनका झलकता हुआ प्रकाश आकाशमें भी नहीं समा रहा हो ऐसा दृष्टिगोचर होता है। यहाँके सभी भवन तेजोमय हैं। उनके विस्तारका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

हरे पीले लाल उज्जल, संग श्रोवन नूर अमान ।

एक जवेर इन भोम का, भर्या रोसन नूर आसमान ॥ ७

यहाँ पर पर्वतकी स्वर्णमयी आभामें हरा, पीला, लाल एवं श्वेत रङ्ग दिखाई देते हैं। इस भूमिके एक रत्नका प्रकाश भी पूरे आकाशको व्याप्त करता है।

कै विध के इत मोहोल हैं, सब रंग के इत वन ।

कै जल धारे फुहारे, रस मेवे स्वाद सबन ॥ ८

यहाँ पर ऐसे अनेक प्रासाद हैं एवं विभिन्न प्रकारके रङ्गोंकी छटा वाले वन

भी हैं. निरन्तर जलधारा प्रवाहित करने वाले अनेक फुहारे भी हैं तो रसपूर्ण स्वादिष्ट मेवे भी हैं.

ए परवत इन भांत का, नैनों निमख न छोड़्या जाए ।

क्यों कहूं खूबी इन जुबां, देखत रह्या हिरदें भराए ॥ ९

यह पर्वत इतना नयनरम्य है कि आँखोंसे पलमात्रके लिए भी ओझल नहीं किया जा सकता. जिह्वाके द्वारा इसकी शोभाका वर्णन कैसे करें, देखने मात्रसे ही आत्मा तृप्त हो जाती है.

ऊपर श्रोवन सिखर तलें, सोभित जल उतरत ।

खूबी खुसबोए वन में, आए मिल्या ताल जित ॥ १०

इस पर्वतका शिखर स्वर्णके समान चमकता है. वहाँसे उतरती हुई जलधारा मनोहर लगती है. यहाँके वन, उपवनमें विभिन्न प्रकारकी सुगन्धि फैलाता हुआ यमुनाजीका जल बहकर पुखराजी तालमें मिल जाता है.

खूबी इन पहाड की, ऊंचा माहें आकास ।

कै मोहोल बैठक रोसनी, ज्यों रोसन धाम प्रकास ॥ ११

इस पर्वतकी विशेषता यह है कि यह ऊँचे आकाश तक पहुँचा हुआ है. यहाँके प्रासाद एवं बैठकका प्रकाश रङ्ग भवनके प्रकाशके समान दिखाई देता है.

दूरथें अति सुंदर, आए देखें सोभा अतंत ।

ए जुबां इन पहाड की, क्यों कर करे सिफत ॥ १२

दूरसे देखने पर इस पर्वतकी छटा मनोहारी लगती है. निकटसे देखने पर तो यह और भी सुन्दर दिखाई देता है. इस अद्वितीय पर्वतकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकता है ?

कै बैठक तलें ऊपर, कै ठौर तले कराड ।

सोभा जल वन सोभित, अतंत खूबी इन पहाड ॥ १३

इस पर्वतमें नीचे तथा ऊपर अनेक विश्राम स्थल हैं. नीचे अनेक स्थलों

पर कन्दराएँ (गुफा) हैं। यहाँके वन तथा यहाँसे बहता हुआ यमुनाजीका जल इसकी शोभामें अभिवृद्धि करते हैं।

उपरा ऊपर भोम अनेक, अति बिराजे सोए ।

खूबी इन मोहोलन की, देख देख मन मोहे ॥ १४

इसमें उत्तरोत्तर अनेक भूमिकाएँ सुशोभित हैं। यहाँके प्रासादोंका वैभव देखकर मन मोहित हो जाता है।

जड्या पहाड जानो सोनेसों, जुदे जुदे जवेरन ।

ए मोहोल अति सोभित, बडी बैठकें रोसन ॥ १५

ऐसा प्रतीत होता है कि यह पर्वत स्वर्णमण्डित हो एवं उसमें विभिन्न प्रकारके रत्न जड़े हुए हों। यहाँके प्रासाद भी अति शोभायमान हैं एवं उन पर देदीप्यमान विश्रामस्थल भी हैं।

माहें कै नेहरें चलें, सब पहाड में फिरत ।

कै फुहारे चेहेबच्चे, सब ठौरों खूबी करत ॥ १६

इस पर्वतके अन्दर अनेक नहरें चलती हैं एवं पर्वतके चारों ओर घूमती हैं। यहाँ पर अनेक जलकुण्ड एवं फुहारे लगे हुए हैं। ये सभी पर्वतकी शोभामें अभिवृद्धि करते हैं।

ए मोहोल बडे अति सुंदर, एक दूजे थें चढत ।

ज्यों ज्यों ऊपर चढिए, त्यों त्यों खूबी बढत ॥ १७

यहाँ पर बने हुए विशाल भवन एक दूसरेसे बढ़कर अति सुन्दर लगते हैं। जैसे-जैसे इस पर्वत पर ऊपर चढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे इसकी सुन्दरता अधिक दृष्टिगोचर होती है।

ए मोहोल बैठन के, अति बडियां पडसाल ।

बोहोत देखी मैं बैठकें, पर ए सोभा अति कमाल ॥ १८

इन प्रासादों पर बैठनेके लिए विशाल खुलास्थान है। मैंने परमधाममें अन्य भी अनेक विश्रामस्थलोंका अनुभव किया है किन्तु इस स्थानकी शोभा तो अति अद्भुत है।

ऊपर चौक लग चांदनी, अतंत है विसाल ।

नजर न पीछी फिर सके, देख देख होइए खुसाल ॥ १९

यहाँ पर नीचेसे लेकर ऊपर चाँदनी तक ऐसे अत्यन्त विशाल चौक हैं. इनको देखकर हृदय इतना तृप्त होता है कि इससे दृष्टिको हटानेका मन ही नहीं होता है.

कोटक कचेहेरी बनी, फिरतियां गृदवाए ।

ए सुंदरता इन जुबां, मोपें कही न जाए ॥ २०

यहाँ पर चारों ओर करोड़ों बैठकें हैं. इनके अनुपम सौन्दर्यका वर्णन जिह्वा द्वारा नहीं हो सकता है.

ज्यों ज्यों नैनों देखिए, त्यों त्यों लगत सुंदर ।

न्यारी नजर न होवहीं, चूभ रह्या रूह अंदर ॥ २१

जैसे-जैसे इनको देखते जाते हैं वैसे-वैसे ये अधिक सुन्दर लगते हैं. इनसे दृष्टि ही अलग होना नहीं चाहती है. इनकी सुन्दरता हृदयमें चुभ कर रह जाती है.

अति बडे सुभट सूरमें, सेन्यापती सिरदार ।

मेला होत है इन मोहोलों, कै जातें जिनसें अपार ॥ २२

यहाँ पर पशु-पक्षियोंके बड़े-बड़े सुभट एवं शूरवीर शिरोमणि सेनापति सहित विभिन्न जातिके असंख्य पशुपक्षियोंका मेला होता है.

रूहें राजस्यामाजी विराजत, निपट सोभा है इत ।

ऊपर तले बीच सुंदर, खूबी खुसाली करत ॥ २३

यहीं पर श्रीराजश्यामाजी सखियों सहित विराजमान होते हैं. इसलिए इसकी शोभा अद्वितीय है. इस पर्वत पर ऊपरसे नीचे तक सर्वत्र आनन्द ही आनन्द दृष्टिगोचर होता है.

इत सिखरें सब पहाड की, जानो जवेर सब नूर ।

सिखरें सब आसमान लों, जानो के गंज जहूर ॥ २४

यहाँ पर पर्वतके शिखरोंसे मानों रत्नोंका प्रकाश निकल रहा है ऐसा प्रतीत

होता है मानों आकाशको स्पर्श करने वाले इन शिखरोंसे तेजपुञ्ज निकल रहा हो.

इन मोहोलों में देखिए, अतंत सोभा थंभन ।

उपरा ऊपर देखिए, जुबां कहा करे वरनन ॥ २५

यहाँके भवनोंमें अति सुन्दर स्तम्भ दिखाई देते हैं. जैसे-जैसे उत्तरोत्तर देखते जाते हैं उनके अनुपम सौन्दर्यका वर्णन जिह्वा द्वारा नहीं हो सकता है.

फिरता पेड जो पहाड का, तले बन्या संकडा ए ।

फिरते थंभ चौडे चढे, जाए फैल्या आसमान में जे ॥ २६

इस पर्वतके चारों ओर वृक्षोंकी भाँति स्तम्भ दिखाई देते हैं. ये स्तम्भ नीचे सँकड़े हैं और ऊपर चौड़े होते हुए आकाश तक पहुँचे हुए हैं.

ऐसे ही थंभ तिन पर, चौडा अति विस्तार ।

या विध चढता चढ्या, गृदवाए बनी किनार ॥ २७

इसी प्रकार ये स्तम्भ उत्तरोत्तर चौड़े होनेसे विस्तृत होते हुए चले जाते हैं. चारों ओर किनारे पर छज्जेकी भाँति बननेसे इनका विस्तार बढ़ता चला जाता है.

ज्यों ज्यों मोहोल ऊंचे चढे, तिन चौगृद थंभ हार ।

चौडा ऊंचा चढता, चढता चढ्या विस्तार ॥ २८

जैसे-जैसे ये प्रासाद ऊपरकी ओर चढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे उनके चारों ओर पङ्क्तिबद्ध स्तम्भ दिखाई देते हैं. इस प्रकार पुष्कराज पर्वतका विस्तार ऊँचाई पर निरन्तर बढ़ता जला गया है.

चढते मोहोल मोहोलन पैं, जाए लग्या आसमान ।

चढती सोभा सुंदर, ए क्यों कर कहे जुबान ॥ २९

एक प्रासादके ऊपर दूसरा प्रासाद इस प्रकार चढ़ते हुए यह पर्वत ऊँचे आकाशको स्पर्श करता है. इसकी शोभाका विस्तार बढ़ता चला गया है यह जिह्वा इसका वर्णन कैसे कर सकेगी ?

मोहोल बडे सोभा बडी, थंभ फिरते दोरी बंध ।

जोतें जोत जगमगें, क्यों कहूं सोभा सनंध ॥ ३०

इस प्रकार इस पर्वत पर जैसे-जैसे प्रासाद बढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे उसकी शोभा भी बढ़ती जाती है। इन प्रासादोंके चारों ओर पङ्क्तिबद्ध स्तम्भ हैं। उनमें जगमगाते हुए प्रकाशकी शोभाका वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

तलें से ऊपर लग, मोहोल झरोखे पडसाल ।

कै चौक थंभ कचेहेरियां, कै देहेलानें दिवाल ॥ ३१

इस पर्वत पर नीचेसे ऊपर तक प्रासाद, झरोखे एवं बैठनेका खुला स्थान (पडसाल) है। इसी प्रकार चौक, स्तम्भ, विश्रामस्थल, दालान तथा दीवार आदि भी अनेक हैं।

मोहोलन पर मोहोल वि स्तरे, सोभा चढती चढती अतंत ।

कोई मोहोल बडे इन भांत के, सब नजरों आवत ॥ ३२

जिस प्रकार प्रासादोंके ऊपर प्रासादोंका विस्तार होता गया है उसी प्रकार उनकी शोभा भी बढ़ती चली गई है। इस प्रकारके अनेक बड़े-बड़े प्रासाद यहाँ पर दृष्टिगोचर होते हैं।

फिरते मोहोल अति बने, कै मोहोलातें जे ।

कै रंगों चरनी बनी, सब एक जवेर में ए ॥ ३३

चारों ओर छज्जे बढ़ जानेसे यहाँ पर छोटे-बड़े अनेक प्रासाद शोभायमान दिखाई देते हैं। साथ ही अनेक रङ्गोंकी सीढ़ियाँ हैं। ये सभी एक ही रत्नके हैं।

हजार हांसों सोभित, तापर गुरज विराजत ।

मोहोल माहें विध विध के, बैठक झरोखे जुगत ॥ ३४

इस पर्वतकी चाँदनी हजार पहल (हाँस) की है। इसमें चारों ओर हजार गुर्ज शोभायमान हैं। मध्यमें विभिन्न भवन हैं, जिनमें अनेक प्रकारके विश्रामस्थल एवं झरोखे सुशोभित हैं।

हजार हांसों हजार रंग, हर हांस हांस नया रंग ।

थंभ रोसन जिमी लग चांदनी, करत मिनों मिने जंग ॥ ३५

इन हजार हाँसोंमें हजार रङ्ग दिखाई देते हैं। प्रत्येक हाँसका रङ्ग अलग-

अलग है. यहाँ पर स्तम्भोंका प्रकाश भूमिसे लेकर चाँदनी तक एक-दूसरेसे स्पर्धा करता हुआ दिखाई देता है.

ऊपर चौड़ा तलें संकड़ा, दोरीबंध देखत ।

तलें से ऊपर लग देखिए, गृदवाए सब सोभित ॥ ३६

ऊपरसे चौड़ा एवं नीचे संकड़ा दिखाई देने वाले इस पर्वत पर पङ्क्तिबद्ध स्तम्भ दिखाई देते हैं जो नीचेसे ऊपर तक चारों ओर सुशोभित हैं.

मोहोल चारों तरफों, हजार हांसों माँहें ।

ए मोहोल पहाड जवेर के, क्यों केहेसी जुबांएं ॥ ३७

इन हजार हाँसोंमें भी चारों ओर प्रासाद हैं. पुखराज पर्वतके ये सभी प्रासाद रत्न जड़ित-से लगते हैं. यह जिह्वा इनकी शोभाका वर्णन नहीं कर सकती है.

बराबर दोरीबंध ज्यों, फिरती पहाड किनार ।

सो इन मुख सोभा क्यों कहूं, झलकारों झलकार ॥ ३८

ये प्रासाद इस पर्वतके चारों ओर (चाँदनीमें) पङ्क्तिबद्धरूपमें होनेके कारण अति सुन्दर दिखाई देते हैं. जगमगाते हुए इन प्रासादोंकी शोभाका वर्णन इस जिह्वाके द्वारा कैसे करें ?

एक नकस वरनन ना कर सकों, ए अति बडो बयान ।

ए मोहोल पहाड अरस के, कहा कहे एह जुबान ॥ ३९

यहाँ पर एक चित्रकारीका भी वर्णन नहीं हो सकता, यह तो विशाल पर्वत है. इसलिए परमधामके पर्वत समान दिव्य प्रासाद एवं उसके भवनोंका वर्णन यह जिह्वा कैसे कर सकेगी ?

गुरज हजार बीच चाँदनी, सब गुरज बराबर ।

कै कोट जुबां इन खूबीकी, सिफत न सके कर ॥ ४०

पुखराज पर्वतकी हजार हाँसकी चाँदनी पर स्थित हजार गुर्ज एक समान दिखाई देते हैं. इनकी शोभाका वर्णन करोड़ों जिह्वासे भी नहीं हो सकता है.

तले चार गुरज बिलंद हैं, थंभ होत ज्यों कर ।

चारों भोमसे छत लग, आए पोहोंचे ऊपर ॥ ४१

इस पर्वतमें नीचे स्तम्भोंकी भाँति चार विशाल गुर्ज हैं. इनमें चार भूमिकाके ऊपरसे छज्जे आरम्भ होकर बढ़ते हुए ऊपर चाँदनी तक पहुँचते हैं.

सो याही छत को लग रहे, ज्यों एक मोहोल चार पाए ।

पेड पांचमा बीच में, मोहोल पांचों जुदे सोभाए ॥ ४२

ये चारों स्तम्भ छत तक पहुँचे हुए होनेसे ऐसा लगता है कि एक प्रासादके चार स्तम्भ हों. इन चारोंके बीचमें पाँचवाँ स्तम्भ भी वृक्षकी भाँति स्थित है. इस प्रकार ये पाँचों स्तम्भ सहित यह पर्वत प्रासादकी भाँति सुशोभित होता है.

सो पांचों माहें मोहोलात हैं, रंग नंग जुदी जिनस ।

देख देख पांचों देखिए, एक पें और सरस ॥ ४३

इन पाँचों स्तम्भोंमें विभिन्न प्रासाद शोभायमान हैं उनके रङ्ग तथा रत्न अलग-अलग प्रकारके हैं. इन पाँचोंकी शोभा देखते ही बनती है. ये सभी एक दूसरेसे अधिक सुन्दर लगते हैं.

कहा कहूं क्यों कर कहूं, एक जुबां मोहोल अनेक ।

इन झूठी जिमी के साजसों, क्यों कहूं अरस विवेक ॥ ४४

इनकी शोभाके विषयमें क्या कहें, किस प्रकार कहें ? कहनेवाली यह जिह्वा एक है किन्तु प्रासाद अनेक हैं. इस मिथ्या भूमिके साधनोंसे परमधामका विवेकपूर्वक वर्णन कैसे करूँ ?

तले से ऊपर लग, थंभ झरोखे देहेलान ।

ए बैठकें बका मिने, रूहें संग सुभान ॥ ४५

इस पर्वत पर नीचेसे लेकर ऊपर तक स्तम्भ, प्रासाद, झरोखे तथा दालान हैं. परमधामकी इन बैठकोंमें श्रीराजश्यामाजी सखियोंके साथ विराजमान होते हैं.

ए पांचों फेर के देखिए, खोल के रूह नजर ।

ले भोम से लग चाँदनी, खूब ऊपर खूबतर ॥ ४६

इन पाँचों स्तम्भोंको आत्म-दृष्टिसे देखें तो नीचेसे लेकर ऊपर चाँदनी तक

इनकी शोभा निरन्तर बढ़ती हुई दिखाई देती है।

एक तरफ अरस हौज के, तरफ दूजी हौज जोए ।

और दोए तरफ दोए चरनियां, ज्यों जडित जगमगे सोए ॥ ४७

इन स्तम्भोंमें एक स्तम्भ दक्षिणमें रङ्गमहल व हौजकौसर तालकी ओर है। दूसरा पूर्वमें पुखराज ताल एवं यमुनाजीकी ओर है। उत्तर तथा पश्चिम दोनों ओर सीढ़ियाँ हैं। वे तेजोमय प्रकाशसे जगमगा रहीं हैं।

ए छठा पहाड हौज जोए का, ताके तले बडो विस्तार ।

आए पोहोंच्या अधिक ऊपर, इत मिल गया इन के पार ॥ ४८

यमुनाजीके उद्गम स्थान पुखराजी तालका यह महल छठे पर्वतकी भाँति सुशोभित है, उसके नीचे बंगलाजीका बड़ा विस्तार है। इसके छज्जे बढ़ते-बढ़ते बहुत ऊँचे चले गए हैं और पुखराजके छज्जोंके साथ मिल गए हैं।

तले छे जुदे रहे, ऊपर पहाड मोहोल एक ।

और दोए कही जो घाटियां, भए आठ ऊपर इन विवेक ॥ ४९

नीचे वृक्षाकार छः स्तम्भ पृथक्-पृथक् दिखाई देते हैं। किन्तु ऊपर जाकर पर्वतकी भाँति एक ही विशाल प्रासाद हो जाता है। उत्तर और पश्चिमकी ओर दो घाटियाँ (सीढ़ियाँ) हैं। इस प्रकार इन आठ पर्वतोंका विवेचन हुआ है।

चरनी दोए बडी कही, जो बडे गुरज दरम्यान ।

आइयां जिमी से ऊपर लग, क्या करसी जुबां बयान ॥ ५०

ये दोनों सीढ़ियाँ बड़ी कहलाती हैं जो भूमिसे लेकर ऊपर चढ़ती हुई चाँदनीके दो गुर्जों तक चली जाती हैं। इनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

बडियां ऊंची आसमना लों, और खूबी देत अति जोर ।

जोत जवेर अति झलकत, किनार दोऊ सीधी दौर ॥ ५१

ये सीढ़ियाँ भूमिसे आकाशकी ओर बहुत ऊँचाई तक गई हुई हैं। इनकी शोभा अति सुन्दर है। इनके दोनों किनारों पर जड़े हुए पङ्क्तिबद्ध रत्नोंकी ज्योति पूरे वातावरणमें झलकती है।

दोऊ सीढियों के सिरे पर, दोऊ दरवाजे बुजरक ।

दोऊ तरफों दो दिवाले, सो भी वाही माफक ॥ ५२

पुखराजकी चाँदनी पर दोनों सीढियोंके उपरके सिरे पर दो बड़े द्वार हैं। इन सीढियोंके दोनों ओर दो दीवारें भी उन्हींके अनुरूप अति श्रेष्ठ हैं।

दोए द्वार इत और हैं, इन चांदनी चार द्वार ।

सो चारों तरफों जगमगे, सोभा अलेखे अपार ॥ ५३

इन दो द्वारोंके अतिरिक्त पूर्व और दक्षिणमें अन्य दो द्वार भी हैं। इस प्रकार चाँदनी पर चार द्वार सुशोभित हैं। चारों ओरसे चमकते हुए इन द्वारोंकी अब्धुत शोभा अवर्णनीय है।

गुरज दोए हर द्वारने, इत बडे दरबार ।

सो तेज जोत नूर को, कह्यो न जाए सुमार ॥ ५४

इस विशाल चाँदनीमें दोनों बड़े द्वारोंके समक्ष दो-दो गुर्ज शोभायमान हैं। इनके ज्योतिर्मय तेजपुञ्जकी आभा अनन्त है, उसकी कोई गणना नहीं हो सकती।

ए जो गृदवाए मोहोल चांदनी, बीच मोहोल गुरज हजार ।

जोत बीच आसमान के, मावत नहीं झलकार ॥ ५५

चाँदनी पर स्थित बड़े-बड़े प्रासादोंके बीचमें हजार गुर्ज शोभायमान हैं। इनका ज्योतिर्मय प्रकाश भी आकाशमें समाता नहीं है।

ए अति बडे मोहोल किनारें, और कंगूरे अति सोभित ।

सोभा इन मोहोलन की, जुबां कहा करसी सिफत ॥ ५६

चाँदनीके किनार पर स्थित इन विशाल प्रासादोंके ऊपर देहुरी, कलश तथा कंगूरे शोभायमान हैं। इन प्रासादोंकी शोभा जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती।

हौज जोए इन पहाड से, सो पीछे कहूं सिफत ।

बडे मोहोल पर मोहोल जो, ए खूबी आकास में अतंत ॥ ५७

इस पुखराज पर्वतसे निकली हुई यमुनाजी तथा पुखराजी तालके विषयमें

मैं इसके पश्चात् वर्णन करूँगा. इस पर्वत पर प्रासादके ऊपर स्थित प्रासाद (आकाशी महल) की अनन्त शोभा आकाशमें फैली हुई है.

इन मोहोल ऊपर जो चाँदनी, तिन पर जो मोहोलात ।

सो विस्तार हे अति बडा, या मुख कह्यो न जात ॥ ५८

इन विशाल प्रासादोंके ऊपर चाँदनी पर स्थित प्रासादों (आकाशी महलों) का विस्तार अति बड़ा है. उसका वर्णन नहीं हो सकता है.

इन पहाड ऊपर मोहोलात जो, ऊंचा बडा विस्तार ।

गृद झरोखे ऊपर तले, याकों, क्यो कर होए निरवार ॥ ५९

इस पुखराज पर्वतके ऊपर स्थित ऊँचे प्रासादोंका विस्तार अति बड़ा है. नीचेसे लेकर ऊपर तक इनके चारों ओर झरोखे शोभायमान हैं. इनकी शोभाका निरूपण कैसे किया जाए ?

चारों तरफों दरवाजे, आगूं चौखूँटे चबूतर ।

थंभ चार हर चबूतरे, मोहोल इन आठों पर ॥ ६०

इन प्रासादोंके चारों ओर चार द्वार हैं. उनके आगे चतुष्कोण वाले चबूतरे हैं. प्रत्येक चबूतरे पर चार-चार स्तम्भ हैं. इस प्रकार इन आठों स्तम्भ पर गुर्जकी भाँति प्रासाद शोभायमान हैं.

चारों तरफों द्वारने, और चारों खूंटों गुरज चार ।

कहा कहूं अंदर मोहोल की, जिनको नहीं सुमार ॥ ६१

इन प्रासादोंके चारों ओर चार बड़े द्वार हैं. उनके चारों कोणों पर चार गुर्ज हैं. इनके मध्यमें स्थित प्रासादोंकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है क्योंकि उनका कोई पारावार ही नहीं है.

इन के आठ चूबतरे, तिन आठों पर आठ गुरज ।

आकास में जाए जगमगे, करे जंग जोत सूरज ॥ ६२

इन चारों द्वारोंके सम्मुख जो आठ चबूतरे हैं उन पर आठ गुर्ज शोभायमान

हैं। इनका प्रकाश आकाशमें जाकर जगमगाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानों सूर्यकी ज्योतिके साथ स्पर्धा कर रहा हो।

इन आठों बीच चार द्वारने, कै सोभा लेत अपार ।

कठेडा आठों चबूतरे, तरफ चारों चार द्वार ॥ ६३

इन आठों गुर्जोंके मध्यमें स्थित चार द्वार भी अति शोभायमान हैं। आठों चबूतरों पर कटहरा है तथा चारों दिशाओंमें चार द्वार हैं।

चार गुरज चार खूंट के, माहें मोहोल फिरते गृदवाए ।

फिरते झरोखे सिरें लगे, आसमानमें पोहोंचे आए ॥ ६४

चाँदनीके प्रासादके चारों कोनों पर पाँच पहलके चार गुर्ज हैं। इनके अन्दर चारों ओर प्रासाद हैं। उनके चारों ओरके झरोखोंका प्रकाश आकाश तक पहुँचता है।

आठों खाँचों के गुरज जो, छ्यानबे गुरज कहे ।

बारे गुरज अव्वल कहे, सब एक सौ आठ भए ॥ ६५

इन आठों खाँचोंमें बारह-बारह गुर्ज हैं। इन ९६ गुर्जोंके अतिरिक्त अन्य बारह गुर्जोंका वर्णन पहले किया गया है। इस प्रकार कुल १०८ गुर्ज हैं।

सब मोहोल अति सुंदर, चौ खूंटे एक सौ चार ।

चार गृद चार खूंट के, एक सौ आठ यों सुमार ॥ ६६

सभी प्रासाद अति सुन्दर हैं। इनके बाह्य किनारे पर चारों ओर १०४ गुर्ज हैं तथा चार गुर्ज पहलके चार कोनों पर हैं। इस प्रकार कुल १०८ गुर्ज सुशोभित हैं।

दिवालां आकासलों, करे जोत जोत सों जंग ।

बिलंद झरोखे कै थंभ, हिसाब ना जिनस रंग ॥ ६७

इनकी दीवारोंका प्रकाश आकाशमें एक दूसरेके साथ स्पर्धा करता हुआ प्रतीत होता है। यहाँ पर स्थित बड़े-बड़े झरोखे तथा स्तम्भोंमें असंख्य रङ्गोंका समावेश है, जिनकी कोई गणना ही नहीं है।

चारों तरफों मोहोलात के, क्यों कहूं खूबी ए ।

कै रंग नंग थंभ जवेर के, चारों तरफों झरोखे ॥ ६८

इन प्रासादोंके चारों ओर विभिन्न रङ्गोंके रत्न जड़ित स्तम्भ हैं। इनके चारों ओर झरोखे हैं। इनकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

एक सौ आठ गुरज जो, ऊपर जाए लगे आसमान ।

कलस रोसन कै तिन पर, सो जाए न कहे जुबान ॥ ६९

ऊपर्युक्त एक सौ आठ गुर्ज आकाशको स्पर्श कर रहे हों ऐसा लगता है। उन पर स्थित कलशके प्रकाशका वर्णन भी जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

माहें मोहोल कै विधके, कै कचेहेरी देहेलान ।

कै मंदिर हवेलियां, क्यों कर कहूं बयान ॥ ७०

अन्दर हवेलियों (प्रासादों) के अनेक बैठक तथा दालान हैं। साथ ही अनेक मन्दिर तथा भवन भी शोभायमान हैं। इनका वर्णन कहाँ तक किया जाए ?

कै अंदर नेहरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे ।

खुसबोए फूल मेवे कै, माहें बैठक कै बगीचे ॥ ७१

यहाँ पर प्रासादों (हवेलियों) के अन्दर अनेक नहरें तथा जलकुण्ड हैं। अन्दरकी ओर अनेक उपवन तथा बैठक स्थल भी हैं। यहाँके फूल तथा मेवाकी सुगन्ध चारों ओर फैलती है।

बाहेर देखाई माफक, अंदर बडा विस्तार ।

पहाड ऊपर या मोहोल में, आवत नहीं सुमार ॥ ७२

इन प्रासादोंके बाह्यभागकी शोभाके अनुरूप ही अन्दरके विस्तृत भागकी शोभा है। इस प्रकार इस पर्वतके ऊपर तथा नीचे प्रासादोंका कोई पारावार ही नहीं है।

बडे द्वार बडे चबूतरे, इत सोने के कमाड ।

जडाव चारों द्वार ने, एक जवेर मोहोल पहाड ॥ ७३

चारों दिशाओंमें चार बड़े द्वार हैं। उनके सामने बड़े-बड़े चबूतरे हैं। इन

द्वारोंके किवाड़ स्वर्णमण्डित हैं. चारों द्वार रत्नजडित हैं. यह पर्वत तथा इसके प्रासाद सभी एक ही रत्नके हैं.

इन मोहोलों हक आवत, सुख देने रूहों सबन ।

सुख इत के दिए जो ख्वाब में, सो जानें रूहें मोमन ॥ ७४

श्रीराजजी ब्रह्मात्माओंको आनन्द प्रदान करनेके लिए इन प्रासादों पर आते हैं. इस नश्वर जगतमें भी धामधनीने इन सुखोंका अनुभव करवाया है. वस्तुतः ब्रह्मात्माएँ ही इन सुखोंको समझ सकती हैं.

चरनी आठों चबूतरों, और ऊपर आठों के छत ।

बड़े छज्जे चारों द्वार पर, सब फिरते छज्जे मोहोलात ॥ ७५

चारों द्वारोंके सम्मुख स्थित आठ चबूतरों पर चढ़नेके लिए सीढ़ी है. इन आठों चबूतरोंके ऊपर छत है. चारों द्वारों पर बड़े-बड़े छज्जे हैं. इस प्रकार ये सभी छज्जे पूरे प्रासादके चारों ओर दिखाई देते हैं.

कै कलस कै कंगूरे, आसमान में रोसन ।

खूबी हक के अरस की, इत क्यों कहूं जुबां इन ॥ ७६

यहाँके गुर्जों पर अनेक कलश तथा कंगूरे शोभायमान हैं. उनका प्रकाश आकाशमें छा जाता है. परब्रह्म परमात्माके इस दिव्यधामकी शोभाका वर्णन नश्वर जिह्वा द्वारा कैसे किया जाए ?

जवेर अरस जिमी के, और सोना भी जिमी अरस ।

जिमी रेत या दरखत, सब अरस जिमी एक रस ॥ ७७

परमधामकी भूमिके रत्न, स्वर्ण अथवा रेती एवं वृक्ष आदि सभीमें एकरसता पाई जाती है.

अरस करफ दाहिनी, तरफ सामी ताल जोए ।

बाई तरफ और पीछली, ए कही सीढियां दोए ॥ ७८

इस पुखराज पर्वतके दक्षिणकी (दायीं) ओर रङ्ग भवन है. उसके सन्मुख पूर्वकी ओर यमुनाजी तथा पुखराजी ताल है. बायीं ओर उत्तरमें एवं पीछे

पश्चिममें दोनों ओर दो सीढ़ियाँ (घाटियाँ) सुशोभित हैं.

अब कहूँ इन का बेवरा, ए सब मोहोलात नंग एक ।

ए लीजो नीके दिल में, केहेती हों विवेक ॥ ७९

मैं पुनः यहाँका विवरण दे रहा हूँ. इस पर्वतके सभी प्रासाद एक ही रत्नके हैं. इनकी अद्वितीय शोभाको हृदयमें धारण करो, मैं विवेक पूर्वक यह वर्णन कर रहा हूँ.

ए चारों तरफ कहे पहाड के, बीच गुरज बडे थंभ चार ।

ए आठ निसान गृद के, लीजो रूहें दिल विचार ॥ ८०

इस पुखराज पर्वतकी चारों दिशाओंमें चार बड़े-बड़े स्तम्भ (गुर्ज) हैं. इनके अतिरिक्त मध्यमें एक स्तम्भ है. साथ ही दो सीढ़ी (घाटी) एवं एक ताल है. इस प्रकार हे ब्रह्मात्माओ ! इन आठों चिन्होंको तुम अपने हृदयमें धारण करो.

और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर ।

देत खूबी बीच आकास के, अवकास सबे जहूर ॥ ८१

उक्त आठोंके ऊपर प्रासादोंके ऊपर प्रासाद (आकाशी महल) शोभायमान हैं. वे प्रकाशके ऊपर प्रकाशकी भाँति सुशोभित हैं. इस प्रकार पूरे आकाशको प्रकाशित करता हुआ यह पर्वत विशेष शोभायुक्त है.

एक सौ आठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसन ।

कंगूरे कलस ऊपर कै, देख होत खुसाल मोमन ॥ ८२

इस पर्वतकी चाँदनीमें आकाशी महलके ऊपर एक सौ आठ गुर्ज हैं. उनका प्रकाश चारों ओर फैला हुआ है. इन गुर्जोंके ऊपर अनेक कलश तथा कँगूरे हैं. उन्हें देखकर ब्रह्मात्माएँ प्रसन्न होती हैं.

इन मोहोलों बीच इमारतें, हिसा कोटमा कह्या न जाए ।

ए खूबी सबदातीत की, लीजो रूह के दिल लगाए ॥ ८३

इन प्रासादोंके मध्यमें स्थित भवनोंके करोड़वें भागका भी वर्णन नहीं हो सकता है. हे ब्रह्मात्माओ ! इस शब्दातीत शोभाको अपने हृदयमें धारण करो.

आगूं जल अति सोभित, तलें गृदवाए पाल ।

तिन पर बन बिराजत, क्यों कहूं खूबी इन ताल ॥ ८४

इन भवनोंके आगे पुखराजी तालका जल अति शोभायुक्त है. तालके चारों ओर पाल है. उस पर वन सुशोभित है. इस प्रकार इस तालकी शोभाका वर्णन कैसे करें ?

ए जवेर अरस जिमी के, सबद में न आवत ।

ऐ मोमिनो देखो रूहसों, ए जुबां न पोहोंचे सिफत ॥ ८५

परमधामकी भूमिके रत्नोंका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है. हे ब्रह्मात्माओ ! अपनी आत्मासे उनका दर्शन करो. यह जिह्वा इनकी महिमाको व्यक्त नहीं कर सकती है.

नसीहत लै जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए ।

अरस हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए ॥ ८६

जिन ब्रह्मात्माओंने सद्गुरुकी शिक्षा (तारतम ज्ञान) ग्रहण की है, वे ही इस दिव्य भूमिके विषयमें जान सकती हैं. परमधाम, हौजकौसर ताल, यमुनाजी आदिकी पहचान ब्रह्मात्माओंको ही हो सकती है.

जो अरवाहें अरस की, सो यामें खेलें रात दिन ।

ऊपर तले माहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन ॥ ८७

जो परमधामकी ब्रह्मात्माएँ होंगी वे दिन-रात इसी भूमिमें रमण करती हैं. ब्रह्मात्माएँ ही यहाँ पर नीचेसे ऊपर तक तथा भीतरसे बाहर तक अर्थात् इस पर्वतके कण-कणसे परिचित हैं.

महामत कहे ऐ मोमिनों, क्यों कहूं पहाड सिफत ।

ए लज्जत तिन को आवहीं, जाए हक बका निसबत ॥ ८८

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! इस पुखराज पर्वतकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? जिनका सम्बन्ध धामधनी तथा अखण्ड परमधामसे है उनको ही इसका आनन्द प्राप्त होता है.

प्रकरण १३ चौपाई ८३४

मोहोल के तले ताल जो, तुम देखो अरस अरवाए ।

रहिये संग सुभानके, छोडिए नहीं पल पाए ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! बीस भूमिकाके प्रासादोंके नीचे पुखराजजी ताल है, उसे तुम आत्म-दृष्टिसे देखो. अपने प्रियतमके चरणोंमें रहते हुए क्षणभरके लिए भी उनसे अलग मत होना.

ऊपर पहाड के ताल जो, बोहोत बडो विस्तार ।

तले बडे मोहोलात के, सो नेक कहूं बिचार ॥ २

पुखराज पर्वतके प्रासादोंसे घिरे हुए इस पुखराजी तालका विस्तार बहुत बड़ा है. बड़े-बड़े प्रासादोंके नीचे यह ताल शोभायमान है. उसका थोड़ा-सा वर्णन करता हूँ.

बडे देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार ।

हक हादी रूहन की, नाही सिफत सुमार ॥ ३

यहाँ पर बारह हजार ब्रह्मात्माओंको बैठनेके लिए बड़ी-बड़ी बैठकें एवं दालान (दहलानें) हैं. यहाँ श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी बैठक होती है. इसकी शोभाका कोई पारावार नहीं है.

थंभ बडे जवेरन के, कहूं सो केते रंग ।

बोहोत छज्जें कै रंगों के, करे जोत जोत सों जंग ॥ ४

यहाँ पर रत्नोंके बड़े-बड़े स्तम्भ हैं. उनके कितने रङ्गोंका वर्णन करूँ ? इनमें भिन्न-भिन्न रङ्गोंके अनेक छज्जे भी हैं. उनसे उठने वाली ज्योति परस्पर स्पर्धा करती है.

कै छज्जें ताल ऊपर, पडत जल में झांई ।

मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं ॥ ५

तालके ऊपर स्थित प्रासादोंमें अनेक छज्जे हैं. उनका प्रतिबिम्ब जलमें पड़ता है. इन सभी प्रासादोंका प्रतिबिम्ब जलमें दिखाई देता है, इस शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

अंदर मोहोल नेहरें चलें, चारों तरफों फिरत ।

इन सबमें सोभा देय के, पुखराजें पोहोंचत ॥ ६

आकाशी महलकी चाँदनीसे बहता हुआ जल नीचेके प्रासादोंमें आता है। इसलिए इन प्रासादोंके अन्दर नहरोंके द्वारा चारों ओर जलका प्रवाह होता है। यह जल सभी प्रासादोंमें प्रवाहित होता हुआ पुखराजी तालमें समाहित हो जाता है।

तीनों तरफों ताल के, जुदी जुदी मोहोलात ।

बड़े छज्जे तरफ पहाड के, दोऊ बाजू दरखतों छत ॥ ७

इस पुखराजी तालके तीनों ओर अलग-अलग बड़े प्रासाद हैं। पर्वतकी ओर प्रासादोंके बड़े-बड़े छज्जे दिखाई देते हैं तथा दोनों ओर वृक्षोंकी छत शोभायमान है।

मोहोल दोऊ छातों पर, तिन परे भी बडे बन ।

एवन मोहोल अति बिलंद, पर नेक करूं रोसन ॥ ८

दोनों ओरकी पाल (छत) पर भी प्रासाद हैं। उनके दोनों ओर बड़ावन (के पाँच-पाँच वृक्षोंकी हार) है। यहाँके प्रासादों तथा वनकी शोभा बहुत बड़ी है किन्तु मैं उसका थोड़ा-सा ही वर्णन कर रहा हूँ।

दोऊ बाजू वन मोहोल दोऊ, परे दोऊ तरफों दरखत ।

पीछे मोहोल पर बडे मोहोल, तिनकी जुदी बडी सिफत ॥ ९

इन प्रासादोंके दोनों ओर बड़ेवनके वृक्षोंकी हार है तथा पीछे पश्चिमकी ओर प्रासादके ऊपर प्रासाद हैं। उनकी शोभा अति सुन्दर है।

आगूं दोऊ सिरें गुरज दोए, माहें छज्जें कै किनार ।

दोऊ बीच में पानी उतरत, गिरत चादरें चार ॥ १०

इस पुखराजी तालके प्रासादोंके सामने (पूर्वकी ओर) दोनों किनारों पर दो गुर्ज हैं। इनके किनारों पर छज्जे हैं। इन दोनों गुर्जोंके मध्यसे नहरों द्वारा बहता हुआ जल चार धाराओं (चादरों) के रूपमें नीचे गिरता है।

सो चारों जुदी जुदी, उपरा ऊपर भी चार ।

सोभा लेत और गरजत, सो सोलें भई सुमार ॥ ११

इन चारों जलधाराओंमें प्रत्येकसे चार-चार इस प्रकार सोलह धाराओंके रूपमें होकर जल गिरता है. इस समय जलकी गर्जना कर्णप्रिय लगती है.

दोऊ गुरज बीच बडे देहेलान, जित सोलें जाली द्वार ।

थंभ झरोखे दोऊ तरफों, ए सोभा अति अपार ॥ १२

अधबीचके कुण्डके द्वारोंकी दोनों ओर दो बड़े गूर्ज हैं. उनके मध्यमें बड़ा दालान है. यहीं पर स्थित सोलह जलद्वारोंसे होकर जल अधबीचके कुण्डमें गिरता है. इनके दोनों ओर स्थित स्तम्भ तथा झरोखे अत्यन्त शोभा युक्त हैं.

तलें बैठ जब देखिए, जानों गुरज लगे आसमान ।

क्यों कहूं इन मोहोलात की, खेलें रूहें हादी सुभान ॥ १३

नीचे विशेष प्रासाद (खास महल) में बैठकर जब ऊपर देखते हैं तब ये गुर्ज ऊँचे आकाशको स्पर्श करते हुए दिखाई देते हैं. इन प्रासादोंका वर्णन कैसे करें जहाँ पर स्वयं श्रीराजजी श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके साथ विभिन्न लीलाएँ करते हैं.

मोहोल बडे बीच गुरजों के, खूबी लेत तरफ दोए ।

एक खूबी तरफ ताल के, दूजी ऊपर चादरें सोए ॥ १४

इन गुर्जोंके दोनों ओर स्थित बड़े प्रासाद दोनों ओरसे ही सुशोभित हैं. ये भवन, पुखराजी ताल तथा अधबीचके कुण्डकी ओर जहाँसे अलग-अलग धाराओंके रूपमें गिरता हुआ जल शोभायुक्त लगता है.

तलें चारों सीढी जुदी जुदी, पीछे करत पानी मार ।

सो चारों उपरा ऊपर, पडत इन विध धार ॥ १५

अधबीचके कुण्डमें स्थित चार पृथक्-पृथक् सीढ़ियोंकी भाँति ऊपरकी चार भूमिकाओंमें-से प्रत्येक भूमिकासे चार-चार (इस प्रकार सोलह) जलधाराएँ गिरती हैं.

सो धारें पडत बीच कुंड के, कुंड पर मोहोल गूदवाए ।

दोऊ बाजूं छातें दरखत, पीछे मोहोल मिले आए ॥ १६

ये जलधाराएँ अधबीचके कुण्डमें गिरती हैं। उसके चारों ओर प्रासाद शोभायमान हैं। दोनों ओर वृक्षोंकी छत है। वह पश्चिमकी ओर पुखराजी तालके प्रासादोंके साथ मिल जाती है।

चारों तरफ झरोखे कुंड के, बीच चादरें खूबी देत ।

बड़े देहेलान कचेहेरियां, हक रूहें खुसाली लेत ॥ १७

इस कुण्डके चारों ओर मन्दिरोंके झरोखे हैं। मध्यमें बहती हुई जलधाराएँ अति शोभायमान हैं। यहाँ पर स्थित बड़ी-बड़ी बैठकें एवं दालानों पर बैठकर श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ आनन्दका अनुभव करते हैं।

खास मोहोल कुंड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल ।

सो जल उतरत पहाडसे, चढ गिरत ऊंचे नल ॥ १८

इस कुण्डके ऊपर विशेष प्रासाद (खासमहल) हैं। वहाँ पर छलकती हुई जलकी धाराओंकी लहरें मनोहारी लगती हैं। यह जल पुखराजकी चाँदनीसे उतर कर नलों द्वारा जलधाराओंके रूपमें कुण्डमें गिरता है।

बंगले

विराजे बंगले, ए जो मोहोल तले ताल ।

बारे हजार बडी रूह ले, हकसों खेलत माहें हाल ॥ १९

पुखराजजी तालके नीचे स्थित बड़े प्रासादों (बङ्गलों) में श्रीश्यामाजी अपनी बारह हजार अङ्गनाओंको लेकर श्रीराजजीके साथ विभिन्न लीलाएँ करती हैं।

पहाड तलें कै कुंड हैं, कै विध पानी फिरत ।

कै जिनसें केती कहूं, नेहेरें साम सामी चलत ॥ २०

इस पुखराजी तालके नीचे अनेक जलकुण्ड हैं। उनसे विभिन्न धाराओंमें जल प्रवाहित होता है। न जाने यहाँ पर कितनी नहरें आमने-सामने चलती रहती हैं।

कै नेहरें फिरें माहें फिरतियां, कै आडियां आवत ।

एक बडी नेहेर बाहेर निकसी, सो पानी पूर ज्यों चलत ॥ २१

यहाँ पर कतिपय नहरें चारों ओर तथा कतिपय तिरछी बहती हैं। इन सबका जल एक बड़ी नहरमें मिल कर तीव्र गतिसे बहता हुआ कुण्डमें गिरता है।

खास वृख कै विध के, सो केते कहूं विवेक ।

तलें पहाड छाया मिने, जानों ए वृख अति विसेक ॥ २२

यहाँ पर बङ्गलों और जलकुण्डोंके चारों ओर बड़े वनके पाँच-पाँच हार वृक्ष हैं। इनकी शोभाका वर्णन कहाँ तक करूँ ? पुखराज पर्वतकी छायामें इन वृक्षोंकी शोभा अत्यधिक दर्शनीय होती है।

वन सुंदर अति उत्तम, सोभा लेत ए ठौर ।

ए वन छाया का देखे पीछे, जानो ऐसा न कोई और ॥ २३

यहाँ पर ये पाँच-पाँच हार वृक्ष अत्यन्त सुशोभित हैं। इस वन-प्रदेशकी छायाको देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इसके अतिरिक्त अन्य कोई मनोहर स्थल ही नहीं है।

थंभ बडे बडी जाएगा, पहाड तलें चहुं ओर ।

ए खूबी कही न जावहीं, वन सोभित नेहरें जोर ॥ २४

पुखराजी तालके नीचे प्रासादों (बंगलों) के चारों ओर बड़े-बड़े स्तम्भ (फीलपाए) सुशोभित हैं। यहाँकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकत है। यहाँ पर विभिन्न नहरें तथा वन सुशोभित हैं।

बीच बीच दोरी बंध, अडतालीस बंगले ।

हर हारें अडतालीस, ए बैठक पहाड तले ॥ २५

इनके मध्यमें अडतालीस भवन (बङ्गले) पङ्क्तिबद्ध रूपमें सुशोभित हैं। पुखराजी तालके नीचेके प्रदेशमें वर्गाकार भूमि पर प्रत्येक पङ्क्तिमें अडतालीस प्रासाद (बंगले) सुशोभित हैं।

बराबर नेहरें चेहेबच्चे, और बराबर दरखत ।

झूठी जुबां इन देहकी, क्यों कर कहे ए जुगत ॥ २६

यहाँ पर एक समान पङ्क्तिमें नहरें तथा जलकुण्ड हैं। उनके समानान्तर

वृक्षोंकी पङ्क्तियाँ हैं. नश्वर देहकी जिह्वा इस युक्तिपूर्ण रचनाका वर्णन कैसे कर सकती है ?

चारों तरफों बराबर, ऊपर लगे पहाड सों आए ।

जुदे जुदे जवेरन के, नूर पहाड तले न समाए ॥ २७

चारों ओरसे समान दृष्टिगोचर होने वाले ये वर्गाकार भूमिके ४८ बंगले पुखराजी ताल तक पहुँचते हैं. विभिन्न रत्नोंके इन बंगलोंका प्रकाश पुखराजी तालके नीचे नहीं समाता है.

छात पांचमी पहोंची पहाडलों, बडे बंगले बडी दिवाल ।

बडे छज्जे चारों तरफों, सुख पाइए जो आवे हाल ॥ २८

इन बंगलोंकी पाँचवीं छत पुखराजी ताल तक पहुँचती है. ये बंगले तथा इनकी दीवार अत्यन्त बड़ी हैं. इनके चारों ओर छज्जे हैं. इनकी सुन्दरता हृदयमें अङ्कित होने पर परमसुखका अनुभव होता है.

कै रंगों जरी पसमी, कै दुलीचे रंग केते ।

सोभित हैं सबों बैठकें, कै नकस बेल फूल जेते ॥ २९

इन सभी प्रासादों (बंगलों) के मध्यमें स्थित चबूतरों एवं विश्राम स्थलों पर विविध रङ्गोंके कोमल कालीन बिछे हैं. उन पर लताओं तथा पुष्पोंकी अनेक चित्रकारियाँ हैं.

दो तीन चार पुडे चौकियां, कै जवेरों झलकत ।

सीसे प्याले डबे तबके, कै बस्तां धरियां इत ॥ ३०

इन प्रासादों (बंगलों) के चारों ओर स्तम्भों तथा मन्दिरोंकी पङ्क्तियोंमें कहीं पर दोमार्ग (दो पुडे), कहीं तीनमार्ग (तीन पुडे) तथा कहीं चार मार्गोंके चौक हैं. उनमें विभिन्न रत्नोंकी आभा झलकती है. इन मन्दिरोंमें शीशे, प्याले, डब्बे तथा तस्तरियाँ आदि विभिन्न प्रकारकी सामग्रियाँ विद्यमान हैं.

कै सादे सिंघासन, कैयों ऊपर छत्र ।

कै ठौर कदेले कुरसियां, कै तखत खूबतर ॥ ३१

मध्यमें स्थित चबूतरों पर कहीं पर साधारण तथा कहीं पर छत्रीदार सिंहासन

हैं। विभिन्न स्थानों पर बैठनेके लिए आरामदायी (कदेले) कुर्सियाँ तथा छोटे सिंहासन (तख्त) शोभायमान हैं।

कै एक ठौर हिडोले, कै सेज बिछौने पलंग ।

कै जुदे जुदे जवेर, करत मिनो मिने जंग ॥ ३२

यहाँ पर कतिपय स्तम्भों पर झूले लगे हुए हैं तथा कतिपय मन्दिरोंमें पलङ्ग पर शय्या बिछी है। उनमें जड़ायमान विभिन्न प्रकारके रत्न एक दूसरेसे स्पर्धा करते हुए अपनी छटा विखेरते हैं।

कै सोभित है सांकले, माहें डबे पुतलियां तबक ।

इत रूहें संग स्यामाजी, बीच विराजत हक ॥ ३३

विभिन्न मन्दिरोंमें लगे हुए झूलोंकी जञ्जीरें सुशोभित हो रहीं हैं। यहाँ पर डिब्बे, पुतलियाँ तथा तस्तरियाँ रखी हुई हैं। यहाँ पर श्रीराज-श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके मध्यमें विराजमान होते हैं।

कै सिढियां सोवरनकी, कै हीरा मानिक पुखराज ।

उपली भोमें चौकी पर, कै धरे संदूकें साज ॥ ३४

यहाँके भवनोंकी सीढ़ियाँ स्वर्णमण्डित हैं। उनमें हीरा, माणिक्य, पुखराज आदि रत्न जड़े हुए हैं। ऊपरकी भूमिकामें चौकियों पर अनेक प्रकारकी सामग्रियाँ सन्दूकोंमें रखी हुई हैं।

कै सोभित साखें कमाडियां, जोर जवेर झलकार ।

घोडे कडे बेनी जंजीरां, रोसन करत अपार ॥ ३५

अनेक क्वाडोंके मूल भागोंमें रत्नादि झंकृत हो रहे हैं। इन क्वाडोंके कड़े, घोड़ी (अर्घला) बेनी तथा शृङ्खला (जञ्जीर) आदिसे अपार प्रकाश निकलता है।

हर बंगले विस्तार बडा, आगूं बडे दरबार ।

कै मोहोलों कै मंदिरों, कहां कहां लग कहूं न सुमार ॥ ३६

प्रत्येक प्रासाद (बंगला) का विस्तार बहुत बड़ा है। उनके समक्ष बड़े सभागृह (दरबार) हैं। इनके अन्दर छोटे भवन तथा मन्दिर आदि हैं। इनकी गणना नहीं की जा सकती।

ए वन जवेर अरसके, खूबी कहा कहे जुबान ।

बीच बैठक चबूतरे, सुख रूहें संग सुभान ॥ ३७

परमधामके इन वन तथा रत्न आदिकी शोभाका वर्णन इस जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है। यहाँ पर बीच-बीचमें स्थित चबूतरों पर बैठकर ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके साथ अपार आनन्दका अनुभव करती हैं।

चारों तरफों नेहरें चलें, बीच कठेडे चबूतर ।

चेहेबच्चे बीच बीच वन, ए सिफत कहूं क्यों कर ॥ ३८

बड़े प्रासादों (बंगलों) के मध्यमें स्थित चबूतरोंके चारों ओर नहरों द्वारा जल प्रवाहित होता है। चबूतरोंके किनारे पर कटहरा है। वनमें बीच-बीचमें अनेक स्थानों पर जल कुण्ड हैं। इन सभीकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

कै मोहोल नेहरें किनारें, कै बनमें बिराजत ।

भांत भांत कै विध के, ए किन विध करूं सिफत ॥ ३९

यहाँ पर कतिपय प्रासाद नहरोंके किनारों पर तथा कतिपय वन प्रदेशमें सुशोभित हैं। इनकी विविधता तथा सुन्दरताका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

वन मोहोल नेहरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए ।

ए अरस जवेर देख्या चाहे, सो ए वन देखो आए ॥ ४०

यहाँ पर कहीं वन हैं, कहीं प्रासाद हैं तो कहीं पर नहरें चल रही हैं। इस प्रकार इस दिव्य भूमिकी महिमा नहीं गाई जा सकती। जो परमधामके इन रत्नोंको देखना चाहते हैं वे सर्व प्रथम इन वन प्रदेशको देखें।

जैसा पहाड तैसी जिमी, और तैसे ही दरखत ।

ए मोहोल ऐसे जवेरनके, जुबां क्यों कर करे सिफत ॥ ४१

यहाँ पर जैसी शोभा पुखराज पर्वतकी है उसीके अनुरूप उसके आसपासकी भूमिकी तथा वहाँके वृक्षोंकी भी है। यहाँके प्रासाद भी ऐसे रत्नोंके हैं जिनकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

ए नूर खूबी इतकी इतहीं, इनका निमूना सोए ।

और सबद तो निकसे, जो और ठौर कोई होए ॥ ४२

यहाँके प्रकाशकी शोभा यहीं पर मिलती हैं, अन्यत्र इसका उदाहरण नहीं दिया जा सकता है. परमधामके अतिरिक्त अन्य किसी स्थानका अस्तित्व होता तभी अन्य शब्दका प्रयोग किया जा सकता.

ए दरखत नेहरें चेहेबच्चे, बीच खेलन ठौर कमाल ।

याही विध बडे पहाड लग, सुख रूहें नूर जमाल ॥ ४३

ये वृक्ष, नहरें, जलकुण्ड तथा उन सभीके मध्यमें क्रीड़ाके लिए अद्वितीय रमणीय स्थल हैं. इस प्रकारकी सुन्दरता पुखराज पहाड़ तक छायी हुई है. यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके साथ आनन्दका अनुभव करती हैं.

पेहेली तरफ का जो वन, बडे मेहेराब आगूं दरखत ।

ए वन मेवे केते कहूं, अरस अजीम की न्यामत ॥ ४४

पुखराज पर्वतके सम्मुख स्थित वन प्रदेश (महावन) में वृक्षोंके बड़े-बड़े तोरण (मेहेराब) हैं. इस वनमें अनेक प्रकारके मेवे लगे हुए हैं. ये सब परमधामकी अमूल्य निधियाँ हैं.

जहां लों नजरों देखिए, ए बडे वृख अति विस्तार ।

मेवे मोहोल छातें बनी, ना कछू पसु पंखी को पार ॥ ४५

यहाँ पर जहाँ तक दृष्टि पड़ती है वहाँ तक बड़े वृक्षोंका ही विस्तार है. इन मेवोंके वृक्षोंमें विभिन्न प्रकारके प्रासाद तथा उनकी छतें हैं. यहाँ पर पशु-पक्षियोंका भी कोई पारावार नहीं है.

सोई जिमी उज्जल अति सोभित, ए जो पहाड नजीक या दूर ।

आकास भर्यो रोसनी, कहां लग कहूं ए नूर ॥ ४६

पुखराज पर्वतके समीप अथवा दूरकी भूमि अति उज्ज्वल होनेसे अत्यन्त शोभायुक्त है. इसके प्रकाशसे सम्पूर्ण आकाश आच्छादित हुआ है. उसका वर्णन कहाँ तक करें ?

आकास भरयो खुसबोए सों, वाए तेज खुसबोए ।

जित तित सब खुसबोए, बोए चांद सूर दोए ॥ ४७

समग्र आकाश सुगन्धिसे परिपूर्ण (भरा हुआ) है। यहाँ पर वायु तथा प्रकाशमें भी सुगन्ध है। इस प्रकार सर्वत्र सुगन्ध ही सुगन्ध व्याप्त है। यहाँ तककी सूर्य और चन्द्रमासे प्रदीप्त होता हुआ प्रकाश भी समग्र वातावरणको सुगन्धित करता है।

पेड बोए पात बोए, बोए फल फूल डार ।

जल जिमी खुसबोए को, कछू आवे नहीं सुमार ॥ ४८

इस दिव्य भूमिके वृक्ष, उनके पत्ते, फल, फूल तथा शाखाएँ सभी सुगन्धसे परिपूर्ण हैं। इस भूमि पर बहते हुए निर्मल और स्वच्छ जलकी सुगन्धका भी कोई पारावार नहीं है।

जित देखूं तित खुसबोए, पहाड जवेर बोए नूर ।

रस धात रेजारेज जो, खुसबोए सबे जहूर ॥ ४९

जहाँ भी देखते हैं वहीं सुगन्धि है। यहाँ तककी पर्वत, रत्न तथा उनके प्रकाशमें भी सुगन्ध है। रस, धातु तथा वहाँके कण-कणका प्रकाश भी सुगन्धिसे परिपूर्ण है।

कै रेहेत अंदर जानवर, कै विध बोलें बान ।

ए खूबी खुसाली हककी, जुदी जुदी कै जुबान ॥ ५०

यहाँके वनोंमें अनेक पशु-पक्षी रहते हैं। वे मधुर वाणी बोलते हैं। इनका चातुर्य परब्रह्म परमात्माको प्रसन्न करनेके लिए ही होता है। इसलिए वे अलग-अलग वाणी बोलते हैं।

पसु सबे खुसबोए सों, खुसबोए सबे जानवर ।

तन बंध बंध खुसबोए सों, बोए बाल पर पर ॥ ५१

यहाँके पशु-पक्षी आदि सभी सुगन्धसे परिपूर्ण हैं। उनका शरीर ही नहीं उनके अङ्गके रोम-रोम तथा पङ्क्तियोंके बाल तक भी सुगन्धसे परिपूर्ण हैं।

वस्तर भूखन रूहन के, ताकी क्यों कहूं खुसबोए ।

इन खूबी खुसबोए को, सबद न पोहोंचे कोए ॥ ५२

ब्रह्मात्माओंके वस्त्र एवं आभूषणोंकी सुगन्धका तो वर्णन ही कैसे किया जाए ? इस सुगन्धकी विशेषताका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है।

हकीकत तले पहाड की, ए जो नेक कही जुगत ।

ए विस्तार इत बोहोत है, जुबां कर न सके सिफत ॥ ५३

इस प्रकार पुखराज पर्वतके नीचेके भागका संक्षिप्तरूपमें युक्तिपूर्वक वर्णन किया गया। इसका विस्तार तो अनन्त है। यह जिह्वा इसकी विशेषताका वर्णन नहीं कर सकती।

जिन जानो रूहन को, अरस में सेवक नाहिं ।

हुकमे काम करावत, जो आवत दिल माहिं ॥ ५४

यह नहीं समझना कि परमधाममें ब्रह्मात्माओंके लिए कोई सेविकाएँ नहीं हैं। उनके मनमें जो भी इच्छा उत्पन्न होती है वे सभी कार्य श्रीराजजीका आदेश स्वतः करवा लेता है।

एक एक मोमिन के, अलेखे सेवक ।

बडी साहेबी बका मिने, बंदे तिन माफक ॥ ५५

यहाँ पर एक-एक ब्रह्मात्माओंके लिए अनेक सेविकाएँ हैं। परमधाममें ब्रह्मात्माओंकी महिमा अपरम्पार है। इसलिए उनकी सेविकाएँ भी उनके अनुरूप ही महिमायुक्त होती हैं।

पुतलियां जवेरन की, सोभा सुंदरता अत ।

कहूं केती सेवा बंदगी, सब आग्या सों करत ॥ ५६

वहाँ पर रत्नोंकी पुतलियों (सेविकाओं) की सुन्दरता भी अद्भुत है। उनकी सेवा, वन्दना आदिके विषयमें क्या कहा जाए ? आज्ञामात्रसे ही समस्त कार्य सम्पन्न करती हैं।

या विध सब जानवर, और केते कहूं पसुअन ।

सब विध करें बंदगी, जैसा सोभित जिन ॥ ५७

यही स्थिति यहाँके पशु-पक्षियोंकी भी है। वे सभी अपनी शोभाके अनुरूप

वन्दना करते हैं.

हुकमें होवे सब बंदगी, आगूं इन रूहन ।
हंसे खेलें नाचें गाएं, कै विध करें रोसन ॥ ५८

ब्रह्मात्माओंके आदेश मात्रसे ये पशु-पक्षी उनकी सेवा करते हैं. सभी पशु-पक्षी इनके समक्ष हँसकर, खेलकर, नाचकर तथा गाकर अपनी कलाओंका प्रदर्शन करते हैं.

पसू पंखी जवेरन के, अति सोभा अरस में लेत ।
सब सेवा करें रूहन की, इत ए काम कर देत ॥ ५९

यहाँके पशु-पक्षी भी रत्नोंके समान होनेसे अत्यन्त शोभायुक्त हैं. ये सभी ब्रह्मात्माओंकी सेवामें संलग्न रहते हैं. उनके सभी कार्य ये ही कर देते हैं.

कै पुतलियां जवेरन की, खडियां तले इजन ।
हजार दौडे एक हुकमें, आगूं इन रूहन ॥ ६०

यहाँ पर रत्नोंकी अनेक पुतलियाँ हैं. वे ब्रह्मात्माओंकी आज्ञा प्राप्त करनेके लिए उनके समक्ष खड़ी रहती हैं. ब्रह्मात्माओंका एक आदेश प्राप्त करने पर ही वे हजारोंकी संख्यामें उनके समक्ष उपस्थित हो जाती हैं.

हर रूहों आगे दौडहीं, कै खूबी लेत खुसाल ।
रात दिन कबूं न काहेली, रहें हमेसा बीच हाल ॥ ६१

ये पुतलियाँ (खूब खुशालियाँ) प्रत्येक ब्रह्मात्माके सामने दौड़कर उनको प्रसन्न करती हैं. रात-दिन दौड़ने पर भी उनको आलस्य नहीं आता है. वे सदा-सर्वदा इसी प्रकार रहती हैं.

बंदियां खूब खुसालियां, जाए फिरें ज्यों मन ।
काम कर दसों दिस, आए खडियां वाही छिन ॥ ६२

ये सभी सेविकाएँ (खूब खुशालियाँ) मनकी गतिके अनुसार दसों दिशाओंमें दौड़कर कार्य करती हैं एवं पुनः क्षणमात्रमें ब्रह्मात्माओंकी सेवामें उपस्थित हो जाती हैं.

ए दौड़ें रूहों के मन ज्यों, खडियां हुकम बरदार ।

एक रूह मनमें चितवे, वह जी जी करें हजार ॥ ६३

ये सभी ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुरूप दौड़ती हैं एवं आज्ञा प्राप्त करनेके लिए उनकी सेवामें उपस्थित हो जाती हैं। यदि एक ब्रह्मप्रिया भी मनमें इच्छा व्यक्त करती है तो ये हजार सेविकाएँ उसे पूर्ण करनेके लिए 'हाँ-जी' कहती हुई दौड़ कर आ जाती हैं।

मुख केहेने की हाजत ना पड़े, जो उपजे रूहों के दिल ।

सो काम कर ल्यावें छिन में, ऐसा इनों का बल ॥ ६४

ब्रह्मात्माओंके हृदयमें उत्पन्न हुई इच्छाको वाणीके द्वारा व्यक्त करनेकी भी आवश्यकता नहीं होती है। इन सेविकाओंमें ऐसी क्षमता है कि वे क्षणमात्रमें ही ब्रह्मात्माओंके सभी कार्य सम्पन्न कर लेती हैं।

सरूप रूहों के दिलके, जो कछुए मनमें चाहें ।

ऊपर तले माहें बाहेर, एक पल में काम कर आए ॥ ६५

वस्तुतः ये सभी ब्रह्मात्माओंके मनके स्वरूप हैं। अतः ब्रह्मात्माओंके मनमें जो इच्छा उत्पन्न होती है, वह चाहे ऊपर नीचे अथवा बाहर-भीतर किसी भी स्थानकी क्यों न हो उसे पलमात्रमें पूर्ण कर देती हैं।

कै ले खडियां रूमाल, कै ले खडियां पान डब्बे ।

बंदियां बारे हजार की, आगूं अलेखे ॥ ६६

इनमें-से कतिपय सेविकाएँ रूमाल लेकर तो कतिपय पानके डब्बे लेकर खड़ी होती हैं। इन बारह हजार ब्रह्मात्माओंकी असंख्य सेविकाएँ प्रत्येक क्षण उनकी सेवामें लगी रहती हैं।

कै वस्तां आगूं ले खडियां, वस्तर भूखन कै साज ।

ए साहेबी अरस अजीम की, ए नाहीं ख्वाब के राज ॥ ६७

ये सेविकाएँ अनेक प्रकारके वस्त्र आभूषण एवं शृङ्गारकी वस्तुएँ लेकर ब्रह्मात्माओंकी सेवामें तत्पर रहती हैं। यह तो परमधामकी दिव्य भूमिका वैभव है, स्वप्नके संसारमें यह सम्भव ही नहीं है।

ए खूबी इन अरस की, क्यों कहूं इन जुबान ।

कायम सुख साहेबी, ए होए रूहों बीच बयान ॥ ६८

परमधामकी इन विशेषताओंका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।
ब्रह्मात्माओंके समक्ष ही इन अखण्ड सुखोंकी महिमाका वर्णन हो सकता है।

ए बातें केती कहूं, अरस के जो सुख ।

साहेबी इन रूहन की, इत वरनन याही मुख ॥ ६९

इस प्रकार परमधामके अनन्त सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए ? ब्रह्मात्माओंके
इस वैभवका वर्णन करनेके लिए यहाँ पर यही (नश्वर) जिह्वा है।

जो जवेर बंदे रूहन के, देखो तिन को बल ।

जानत हो इन विध को, देखियो अपनी अकल ॥ ७०

ब्रह्मात्माओंकी सेवाके लिए तत्पर रहनेवाली इन रत्ननिर्मित सेविकाओं
(पुतलियों) की शक्ति भी अनन्त है। यह सब ज्ञान तुम्हारे पास है अब जागृत
बुद्धिसे इसका अनुभव करो।

मैं तुमें पूछों मोमिनों, जो तुम हो अरस के ।

तुम अपनी रूहसों विचार के, जवाब द्यो मुझे ए ॥ ७१

हे ब्रह्मात्माओ ! मैं तुमसे पूछता हूँ, यदि तुम परमधामकी हो तो अपनी
आत्मासे विचार कर मुझे उत्तर देना।

उडत पर के वाउसे, कोट ब्रह्मांड देवे उडाए ।

एक छोटी चिडिया अरस की, ताकी लडाई क्यों कही जाए ॥ ७२

परमधामके एक पक्षीके उड़ान भरते समय केवल पङ्क्तियोंकी फड़फड़ाहट
मात्रसे ही करोड़ों ब्रह्माण्ड लय हो जाते हैं। वहाँकी छोटी-सी चिड़ियाकी
युद्ध कला भी शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती।

कोट ब्रह्मांड परके वाउ से, अरस चिडिया देवे उडाए ।

तो इन अरस के फील को, बल देखो चित ल्याए ॥ ७३

जब परमधामके एक छोटे-से पक्षीके पङ्क्तु फड़फड़ाने मात्रसे करोड़ों ब्रह्माण्ड

उड़ जाते हैं तो वहाँके हाथियोंकी शक्ति (बल) के विषयमें जरा विचार तो करो.

खरगोस एक जवेर का, चले रूह के मन सों ।

बड़ा फील लड़े अरस का, कहो कौन जीते इनमें ॥ ७४

वहाँके रत्नोंका एक खरगोश भी ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुरूप चलता है. जब किसी बड़े हाथीसे इसका द्वन्द्व होता है तो कहो, इनमें-से कौन विजयी होगा ?

रूहों दिल चाहे बोलत, दिल चाही सोभा सुंदर ।

दिल चाहे पेहेरे भूषन, दिल चाहे वस्तर ॥ ७५

ये पशुपक्षी ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुसार बोलते हैं तथा अपनी वेशभूषा बनाते हैं. ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुकूल ही ये वस्त्र तथा आभूषण धारण करते हैं.

करें दिल चाही सब बंदगी, चित चाह्या चलत ।

दिल चाहे बल तेज जोत, सब दिल चाही सिफत ॥ ७६

ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुसार ही ये उनकी सेवा करते हैं तथा चलते फिरते हैं. अपने बल और तेजका प्रदर्शन करते हुए ये ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुसार ही उनकी प्रशंसा भी करते हैं.

सब वस्तां आगे ले खडियां, ज्यों पातसाही लवाजम ।

आगूं चेतन दिल से, खडियां सनमुख एक कदम ॥ ७७

ये सभी ब्रह्मात्माओंके सम्मुख विभिन्न प्रकारकी वस्तुएँ लेकर खड़े होते हैं, मानों किसी सम्राटके समक्ष उनके सेवक खड़े होते हों. इस प्रकार ब्रह्मात्माओंके समक्ष ये सभी सचेत होकर एक पैर पर खड़े रहते हैं.

रूप रंग रस दिल चाहे, दिल चाही चित चितवन ।

दिल चाही अकल इंद्रियां, करें दिल चाही रोसन ॥ ७८

इनके रूप, रङ्ग, स्वभाव, हृदय, विचार, बुद्धि तथा गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि सभी ब्रह्मात्माओंकी इच्छाके अनुरूप हैं. इस प्रकार ये सभी उनके अनुकूल ही कार्य करते हैं.

ए जो खूब खुसाली सूरतें, सो सब रूहों के दिल ।

ए जो हर रूहों के आगे खडी, बांध अपनी मिसल ॥ ७९

इन सेविकाओं (खूबखुशालियों) के स्वरूप भी ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुकूल होते हैं। इसलिए ये प्रत्येक ब्रह्मात्माओंके समक्ष अपने दल-बलके साथ खड़ी रहती हैं।

क्यों कर कहूं ए साहेबी, ए जो रूहें करत अरस माहिं ।

हकें कै देखाए ब्रह्मांड, पर कोई पाइए ना निमूना क्यांहि ॥ ८०

परमधाममें ब्रह्मात्माओंके प्रभुत्व (ऐश्वर्य) के विषयमें क्या कहा जाए ? परब्रह्म परमात्माने यद्यपि (व्रज, रास, जागनी आदि) अनेक ब्रह्माण्डोंके अनेक खेल दिखाए परन्तु इनकी महिमाका उदाहरण कहीं भी नहीं मिलता।

झूठ आगे सांच के, क्यों आवे सरभर ।

नाहीं क्यों कहे आगूं है के, लगे ना पटंतर ॥ ८१

वस्तुतः सत्यके समक्ष असत्यकी तुलना कैसे हो सकती है ? इन नित्य वस्तुओंके समक्ष अनित्य वस्तुओंकी तुलना ही नहीं की जा सकती है।

ए जो दुनियां खेल कबूतर, साहेबी आगूं रूहन ।

ए खरगोस रूहों के दिल का, लडें साथ अरस फीलन ॥ ८२

ब्रह्मात्माओंके ऐश्वर्यके समक्ष नश्वर जगतके जीव जादूगरके जादुई कबूतरके समान नगण्य हैं। किन्तु परमधाममें ब्रह्मात्माओंकी इच्छानुसार वहाँका एक खरगोश भी हाथीके साथ द्वन्द्व करनेमें समर्थ हो जाता है।

ए जो फौज रूहों के दिलकी, सो आवत सांच समान ।

तिन आगे त्रैगुन यों कर, ज्यों चली जात खेल की जहान ॥ ८३

ब्रह्मात्माओंकी इच्छामात्रसे अस्तित्वमें आया हुआ इन सेविकाओंका समूह भी सत्य ब्रह्मात्माओंकी भाँति दौड़ता हुआ चला आता है। उनके समक्ष त्रिगुण स्वरूप भी नश्वर संसारके जीवोंके सदृश अस्तित्वहीन लगते हैं।

उपजत रूहों के दिल से, राखत ऐसा बल ।

कै कोट ब्रह्मांड के खावंद, चले जात माहें एक पल ॥ ८४

यद्यपि ब्रह्मात्माओंके हृदयसे ही इन सेविकाओंका अस्तित्व प्रकट होता है। तथापि इनमें इतना सामर्थ्य है कि इनके समक्ष करोड़ों ब्रह्माण्डोंके स्वामी भी पल मात्रमें ही उड़ जाते हैं।

ए सुध अरस में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन ।

तो खेल हकें देखाइया, ऊपर मेहेर करी मोमन ॥ ८५

परमधाममें इन ब्रह्मात्माओंको अपनी महिमाकी सुधि नहीं थी। इसलिए इस नश्वर संसारमें उन्हें अपनी प्रभुताकी पहचान करवानेके लिए श्रीराजजीने उन पर कृपा कर यह खेल दिखाया है।

नजरों होत अक्षर के, कोट चले जात माहें छिन ।

मैं सुन्या मुख धनी के, खेल पैदा फना रात दिन ॥ ८६

अक्षरब्रह्मकी दृष्टिके ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्डोंका सर्जन एवं विसर्जन (लय) पल मात्रमें होता है। मैंने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके मुखारविन्दसे ऐसा सुना है कि ऐसे ब्रह्माण्डोंका उदय और लय अहर्निश होता रहता है।

एक इन वचन का बसबसा, तबका रेहेता था मेरे मन ।

लखमीजी का गुजरान, होत है विध किन ॥ ८७

तभीसे मेरे मनमें एक उत्कण्ठा उत्पन्न हुई कि जब अक्षरब्रह्म अहर्निश ब्रह्माण्डोंका सर्जन एवं विसर्जन करते हैं तो उनकी लक्ष्मीजी किस प्रकार निर्वाह करती होगी ?

खेल दुनियां अरस खेलोंने, करें बाल चरित्र भगवान ।

या खेल या बिन साहेबी, होए लखमीजी क्यों गुजरान ॥ ८८

परमधामकी ब्रह्मात्माओंके लिए संसारका यह खेल खिलौनेके समान है। जिसको अक्षरब्रह्म अपनी बाल लीलाके द्वारा बनाते रहते हैं। जब अक्षरब्रह्म इतने व्यस्त होते हैं तो उनकी प्रभुता या लीलाके बिना अक्षरधाममें लक्ष्मीजीका निर्वाह कैसे होता होगा ?

सो संसे मेरा मिट गया, हक इलमें किए बेसक ।

दिलमें संसे क्यों रहे, जित हकें अपनी करी बैठक ॥ ८९

अब मेरा यह संशय मिट गया है. धामधनीने अपना ब्रह्मज्ञान देकर मुझे सन्देह रहित बना दिया. जिस हृदयको स्वयं धामधनीने अपना आसन बनाया है उसमें अब संशय कैसे रह सकते हैं.

अरस कहा दिल मोमिन, दिया अपना इलम सहूर ।

सक ना खिलवत निसबत, ताए काहे न होवे जहूर ॥ ९०

ब्रह्मात्माओंके हृदयको ही परमधाम कहा गया है. स्वयं धामधनीने सद्गुरुके रूपमें आकर मुझे ब्रह्मज्ञान दिया एवं यह समझ दी. अब मुझे उनके साथका सम्बन्ध तथा मूलमिलावाके विषयमें कोई संदेह नहीं रहा. जिसको यह अमूल्य निधि मिल गई हो उसके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश कैसे नहीं होगा ?

जैसी साहेबी रूहन की, विध लखमीजी भी इन ।

वाहेदत में ना तफावत, पर ए जाने रूहें अरस तन ॥ ९१

ब्रह्मात्माओंकी जैसी प्रभुता है वैसा ही ऐश्वर्य महालक्ष्मीका भी है. अद्वैत भूमि परमधाममें किसी भी प्रकारका अन्तर नहीं होता है किन्तु परमधामकी आत्माएँ ही इस तथ्यको समझ सकती हैं.

ए बातें बका अरस की, बिना रूहें न जाने कोए ।

ए बातें खुदाए की, और तो जाने जो दूसरा होए ॥ ९२

अखण्ड परमधामके इस रहस्यको ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं जानता है. पूर्णब्रह्म परमात्माके इस रहस्यको ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त यदि कोई दूसरा होता तभी तो जान सकता.

निपट बडे सुख अरस के, इत आवत नहीं जुबांएं ।

देख माया निमूना झूठ का, याकी बातें करसी अरस माहें ॥ ९३

परमधामके सुख निश्चय ही अनन्त हैं. इसलिए वे जिह्वा द्वारा व्यक्त नहीं हो सकते. संसारके इन मायावी उदाहरणोंको देखकर हम परमधाममें इनकी बातें करेंगे.

महामत कहे हुकमें इलम, जो हक सिखावें कर हेत ।

सो केहेवें आगूं तन अरस के, अपने दिल अरसमें लेत ॥ १४

महामति कहते हैं, धामधनीने मुझे प्रेमपूर्वक अपना आदेश एवं ज्ञान प्रदान किया है। उसे मैं ब्रह्मात्माओंके समक्ष व्यक्त करता हूँ। ब्रह्मात्माएँ उसे अपने हृदयधाममें ग्रहण करेंगी।

प्रकरण १४ चौपाई १२८

जमुनाजीका मूलकुंड, कठेडा, चबूतरा, ढांपी, खुली सात घाट

किनारें मोहोल जोए के, तुम मिल देखो मोमन ।

पाउ पलक न छोडिए, अपना एही जीवन ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम सभी मिलकर यमुना तट पर स्थित प्रासादों (महलों) को देखो। क्षण भरके लिए भी इस अनुपम सौन्दर्यसे दृष्टि मत हटाओ, यही हमारे जीवनका आधार है।

अब जल तले जो आइया, उतर कुंड से जे ।

केताक फैल्या तलें दरखतों, और निकसी नेहेर बडी ए ॥ २

यमुनाजीका यह जल अधबीचके कुण्डसे प्रवाहित होकर नीचे उतरते हुए दोनों किनारोंके वृक्षोंके मध्यसे होकर एक बड़ी नहरकी भाँति पूर्व दिशाकी ओर आगे बढ़ रहा है।

जोए जमुनाका जल जो, पहाड से निकसत ।

सो पोहोंच्या तलें चबूतरे, ए बैठक अति सोभित ॥ ३

यमुनाजीका यह जल पुखराज पर्वतसे निकलकर ढँके हुए चबूतरेके नीचेसे होता हुआ आगे बढ़ता है। इस चबूतरे पर बैठनेके लिए सुन्दर स्थान है।

तीनों तरफों कठेडा, ऊपर छाया दरखत ।

सो छाया मोहोलों पर छई, ए रूहें लेवें लज्जत ॥ ४

इस चबूतरेके तीनों ओर कटहरा है। ऊपरसे वृक्षोंकी छाया पड़ रही है। चौथी ओर यह छाया किनारेके प्रासादों (महलों) पर भी छाई हुई है। यहाँ बैठकर ब्रह्मात्माएँ आनन्दका अनुभव करती हैं।

जोए जमुना के मूल में, उतर जल चबूतर ।

और कुंड एक इत बन्यो, जहां से जल चल्या उतर ॥ ५

यमुनाजीका यह जल मूल रूपमें पुखराजकी तलहटीसे पूर्वकी ओर प्रवाहित होता हुआ ढँके हुए चबूतरेसे उतर कर (बहता हुआ) आगे मूलकुण्डमें पहुँचता है और वहाँसे भी उतर कर यमुनाजीके रूपमें प्रवाहित होता है।

इत भी चारों तरफों बैठक, सोभा लेत अति सोए ।

तीनों तरफों कठेडा, जल उज्जल खुसबोए ॥ ६

इस मूलकुण्डके चारों ओर बैठक है। इसकी शोभा अद्वितीय है। इसके तीनों ओर कटहरा है। वहाँ पर उज्ज्वल जलकी सुगन्धि आती है।

जुदे जुदे रंगों जवेर ज्यों, कहा कहूं झलकार ।

ए कुंड कठेडा चबूतरा, सिफत न आवे सुमार ॥ ७

यह कटहरा रत्नोंकी भाँति विभिन्न रङ्गका है। इसके प्रकाशका वर्णन कहाँ तक करें। इस प्रकार मूलकुण्ड, चबूतरा तथा उसके कटहराकी शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है।

अब कुंड से पुल आगूं चल्या, ढांपिल दोऊ किनार ।

दोऊ तरफों बैठकें, थंभ चले दोऊ हार ॥ ८

मूलकुण्डसे निकल कर कुछ दूर तक यमुनाजी ढँकी हुई चलती है। उनके दोनों किनारे ढँके हुए हैं। दोनों किनारोंके चबूतरों पर बैठकें हैं। इनके स्तम्भ दोनों पङ्क्तियोंमें दिखाई देते हैं।

बडे दरखत कुंडलों, ऊपर छाया सीतल ।

अब दरखत मोहोलों माफक, दोऊ तरफों बीच जल ॥ ९

यहाँ पर बड़े वृक्षोंकी शीतल छाया चबूतरेको व्याप्त कर (मूल) कुण्ड पर्यन्त पहुँची है। ये वृक्ष भी प्रासादोंकी भाँति दोनों ओर समान रूपसे चलते हैं। मध्यमें यमुनाजीका जल प्रवाहित होता है।

इत दोऊ तरफों कठेडा, ऊपर सोभित जल निरमल ।

जहां लग जल ढांप्या चल्या, जुबां कहा कहे इन अकल ॥ १०

यमुनाजीके दोनों किनारों (पाल) पर निर्मल जलके ऊपर कटहरा सुशोभित है। जहाँ तक यह जल ढँका हुआ प्रवाहित होता है, उसकी अद्वितीय शोभाका वर्णन इस बुद्धिके द्वारा नहीं हो सकता है।

दोऊ तरफों दोए चबूतरे, दोऊ तरफ कठेडे दोए ।

बीच थंभ लगते चले, सोभा देत अति सोए ॥ ११

यमुनाजीके दोनों किनारों पर पालरूप दो चबूतरे हैं। इनके दोनों ओर कटहरा है। बीच-बीचमें स्तम्भ भी हैं उनकी शोभा भी अब्धुत दिखाई देती है।

ऊपर देहुरियां झलकत, जवेर अति सुंदर ।

ए खूबी कही न जावहीं, जल खलकत चल्या अंदर ॥ १२

इन स्तम्भोंके ऊपर रत्न जड़ित सुन्दर देहुरियाँ हैं। नीचेसे कलकल ध्वनि करता हुआ जल प्रवाहित होता है। इस शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता।

कै विध विध के कलस कै, कै किनारें कै जिनस ।

झलकार न माए आकास, कै कटाव कै नकस ॥ १३

इन देहुरियों पर विभिन्न प्रकारके कलश हैं। किनारों पर इनकी शोभा अनुपम है। इन पर अनेक चित्रकारियाँ हैं कि उनका प्रकाश आकाशमें भी नहीं समाता है।

बडी रूह रूहें सामिल, हक बैठत इन ठौर ।

ए खूबी कहूं मैं किन जुबां, इतथें जिनस चली और ॥ १४

यहाँ पर श्रीश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके साथ बैठती हैं। मैं इस समयकी शोभाका वर्णन किस जिह्वासे करूँ ? यहाँसे आगेकी शोभा तो कुछ निराली ही है।

चार थंभ हारें चलीं, ऊपर ढांपिल तरफ दोए ।

यों चल आई दूर लों, ए जल जमुना जोए ॥ १५

यमुनाजीके दोनों किनारों पर दो-दो स्तम्भोंकी (कुल चार) पङ्क्तियाँ हैं।

दोनों ओरकी पाल ऊपरसे ढँकी हुई है, मध्यमें बहती हुई यमुनाजी दूर तक पहुँची हुई है.

दोऊ किनारें बैठक, वन गेहेरा गृदवाए ।

अति सोभा इन जोए की, इन जुबां कही न जाए ॥ १६

दोनों किनारों पर विश्राम स्थल (बैठक) हैं. उनको घेरकर सघन वन प्रदेश है. यहाँ पर यमुनाजीकी शोभा अद्वितीय है, उसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

दोऊ तरफों जो देहुरी, कै कंगूरे कलस ऊपर ।

इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर ॥ १७

दोनों ओर स्थित देहुरियोंके ऊपर कंगूरे तथा कलश शोभायमान हैं. यहाँ पर बैठनेके लिए सुन्दर स्थान है. दोनों ओर (पालरूप) चबूतरे भी शोभायमान हैं.

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर ।

एक मोहोल एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर ॥ १८

अब यहाँसे यमुनाजी दक्षिणकी ओर मुड़कर हौजकौसर तालकी ओर चली जाती हैं. यहाँसे दोनों किनारों पर क्रमशः एक प्रासाद तथा एक चबूतरा बने हुए हैं. इनकी शोभा अनुपम है.

इन बन की सोभा क्यों कहूं, पेड चले आए बराबर ।

दोऊ तरफों जुगतें, मोहोल आए ऊपर ॥ १९

यमुनाजीके किनारोंके साथ चले आ रहे वृक्ष पङ्क्तियोंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? यह शोभा दोनों किनारों पर एक जैसी ही है. इन वृक्षोंकी शाखाएँ यमुना तटके प्रासादोंके ऊपर छायी हुई हैं.

ए लंबे वन को जाए मिल्या, जमुना भर किनार ।

इतथें छत्री ले चल्या, जाए पोहोंच्या नूर के पार ॥ २०

यमुनातटके बड़े वनके ये वृक्ष महावन तक फैले हुए हैं. इन वृक्षोंकी छत्रियाँ यहाँसे लेकर अक्षरधामसे भी परे तक पहुँची हुई हैं.

दोऊ किनारें सीधी चली, पोहोंची पुल केल घाट ।

एक मोहोल चौक इतलों, आगूं चल्या और ठाट ॥ २१

दोनों किनारोंके मध्यमें सीधी प्रवाहित होती हुई यमुनाजी केलके पुल तथा केलके घाट तक पहुँचती हैं। यहाँ तक क्रमशः एक प्रासाद और एक चबूतर हैं। इससे आगेकी शोभा कुछ और ही है।

पेहेलें बेवरा सातों घाट का, और जोए हौज मिलाए ।

पीछे पुल मोहोल हक के, सो फेर नीके देऊं बताए ॥ २२

सर्वप्रथम मैंने यहाँके सातों घाटोंका तथा जहाँसे होकर यमुनाजी हौजकौसर तालमें मिलती हैं उसका विवरण दिया है। तदुपरान्त दोनों पुलों पर स्थित धामधनीके प्रासादोंका भी संक्षिप्त वर्णन करता हूँ।

दोऊ पुल के बीच में, सातों घाट सोभित ।

पांच पांच भोम छठी चांदनी, इन मोहोलोंकी न होए सिफत ॥ २३

दोनों पुलोंके मध्यमें सातों घाट सुशोभित हैं। इन दोनों पुलोंके प्रासाद पाँच भूमिका तथा छठी चाँदनी पर्यन्त ऊँचे हैं। उनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

छूटक छूटक देहुरी, सातों घाटों मांहे ।

दोऊ किनार जडाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए ॥ २४

सातों घाटोंमें प्रत्येक घाटके सन्धि पर अलग-अलग देहुरियाँ हैं। यमुनाजीके दोनों किनार रत्न जड़ित लगते हैं। उनकी अद्भुत शोभाका वर्णन नश्वर जिह्वाके द्वारा कैसे किया जाए।

इतथें चली ताललों, एक मोहोल एक चबूतर ।

दोऊ तरफों ढांपी चली, जोए हौज मिली यों कर ॥ २५

यहाँसे प्रवाहित होती हुई यमुनाजी हौजकौसर ताल पर्यन्त चली जाती हैं। दोनों किनारों पर मोड़तक क्रमशः एक प्रासाद एवं एक चबूतरा हैं। अब यहाँसे आगे (दोनों किनारोंकी देहुरियों तथा स्तम्भोंसे ढँकी हुई-सी) प्रवाहित होकर हौजकौसरमें मिल जाती हैं।

वन दोऊ किनारें ले चल्या, ऊपर बराबर जल ।

कोई आगे पीछे दोऊ में नहीं, एक दोरी पात फूल फल ॥ २६

दोनों किनारों पर बड़े वनके वृक्ष पङ्क्तिबद्ध खड़े हैं। जल पर प्रतिबिम्बित ये वृक्ष समान दिखाई देते हैं। इनमें कोई भी आगे पीछे नहीं है। इतना ही नहीं इनके पत्ते, फूल एवं फल भी पङ्क्तिबद्ध हैं।

या विध कुंडसे ले चली, अति खूबी दोऊ किनार ।

जल ऊपर लटकत चली, दोरी बंध दोऊ हार ॥ २७

इस प्रकार यमुनाजी मूलकुण्डसे प्रवाहित हुई हैं। उनके दोनों तट अति सुन्दर हैं। इन दोनों किनारोंके पङ्क्तिबद्ध वृक्षोंकी शाखाएँ जलके ऊपर लटकती हुई दिखाई देती हैं।

जो रंग जित सोभा लेवहीं, जित चाहिए फल फूल ।

डार पात सब जुगतेँ, कहा कहे जुबाँ ए सूल ॥ २८

इन वृक्षोंमें जहाँ पर जैसा रङ्ग सुशोभित हो सकता है वहाँ पर उसी रङ्गके फल, फूल आदि शोभायमान हैं। इसी प्रकार वृक्षोंकी शाखाएँ एवं पत्ते भी युक्तिपूर्वक सुसज्जित हैं। यह जिह्वा उनके प्रकारका वर्णन कैसे कर पाएगी ?

दरखत सबे खुसबोए के, खुसबोए जिमी और जल ।

वाए तेज खुसबोए सों, तो कहा कहूं पात फूल फल ॥ २९

यहाँके सभी वृक्ष सुगन्धित हैं। इतना ही नहीं यहाँकी भूमि, जल, वायु, तेज आदि भी सुगन्धित हैं। फिर फल, फूल, पत्ते आदिकी तो बात ही क्या करें ?

जिमी आकास जोत में, तेज जोत जल वन ।

नूर देहुरी किनार दोऊ, अवकास न माए रोसन ॥ ३०

यहाँकी भूमि, आकाश, जल तथा वनप्रदेश सभी ज्योतिर्मय हैं। यमुनाजीके दोनों किनारों पर सुशोभित देहुरियाँ भी प्रकाशमय हैं। उनका प्रकाश आकाशमें भी समाता नहीं है।

दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साध ।

चल कुंडसे मरोर सीधी चली, मरोर हौज मिली आए आध ॥ ३१

दोनों तटोंके मध्यसे यमुनाजी पङ्क्तिबद्ध प्रवाहित हो रहीं हैं। मूलकुण्डसे पूर्वकी ओर होती हुई ईशान कोणसे मुड़कर ये दक्षिणकी ओर आगे बढ़ती हुई सातों घाटोंको पार कर पुनः पश्चिमकी ओर मुड़कर हौजकौसर तालमें समाहित होती हैं।

महामत कहे ऐ मोमिनो, मैं बोलत बुध माफक ।

ख्वाब मन जुबान सों, क्यों करूं वरनन हक ॥ ३२

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! मैं अपनी बुद्धिके अनुरूप इन दृश्योंका वर्णन कर रहा हूँ। स्वप्नके मन तथा वाणीके द्वारा अखण्ड परमधामका वर्णन कैसे हो सकता है ?

प्रकरण १५ चौपाई १६०

पुल मोहोल दोऊ जवेर के

तुम देखो दिल में, अरवाहें जो अरस ।

हक देखावत नजरोँ, घडनाले नेहेरें दस ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम अन्तर्हृदयसे देखो। धामधनी तुम्हें यमुनाजीके दोनों पुलोंके नीचे दस नहरें तथा जलद्वारोंको दिखा रहे हैं।

मेहेर करी मेहेबूबने, मोहोल देखे ऊपर जोए ।

ए सुख कहूं मैं किनको, मोमिन बिना न कोए ॥ २

धामधनीने मुझ पर अपार कृपा की है जिसके कारण मैंने यमुनाजीके ऊपर पुल पर स्थित प्रासादोंके दर्शन किए। मैं इस आनन्दको किससे कहूँ, ब्रह्मात्माओंके बिना कोई भी इसका अनुभव नहीं कर सकता है।

तलें ताक अति सोभित, साम सामी बार ।

जल छोडे ना हद अपनी, निकसत सामी द्वार ॥ ३

दोनों पुलोंके नीचे एक दूसरेके सामने द्वारकी भाँति सुन्दर तोरण (मेहराब)

हैं. यमुनाजीका जल अपनी सीमाओंमें बहता हुआ इन्हीं द्वारोंके सामनेसे होकर निकलता है.

नेहेरें आवत जिन द्वार की, निकसत सामी द्वार ।

तलें मोहोल के आए के, जल चल्या जात है पार ॥ ४

यमुनाजीका यह जल नहरकी भाँति एक द्वारसे होकर सामने वाले दूसरे द्वारको भी पार करता हुआ आगे बहता है. इस प्रकार पुल प्रासादोंके नीचेसे बहता हुआ यह जल पार (आगे) तक पहुँचता है.

मोहोल पांचों भोम के, सोभित बराबर ।

दोऊ तरफों देखत, पुल मोहोल पानी ऊपर ॥ ५

इन दोनों पुलोंके प्रासाद पाँचों भूमिकाओं तक समानरूपसे सुशोभित हैं. यमुनाजीके दोनों ओरके पुलके प्रासाद जलके ऊपर प्रतिबिम्बित होते हैं.

दोऊ मोहोलों के बीच में, पानी तलें आए निकसत ।

ए मोहोल नूर जमाल के, जुबां कहा करे सिफत ॥ ६

इन दोनों प्रासादोंके मध्यमें दोनों पुलोंके नीचेसे जल प्रवाहित होता है. ये दोनों प्रासाद अक्षरातीत धनीके हैं, इसलिए इनकी महिमाका वर्णन कैसे हो सकता है ?

सामी अरस द्वार के, बीच अमृत वन पाट ।

तीन बाएं तीन दाहिने, ए बेवरा सातों घाट ॥ ७

रङ्गभवनके द्वारके सामने मध्यमें अमृतवन तथा पाटका घाट है. उसकी दायीं ओर तथा बायीं ओर तीन-तीन घाट हैं. इस प्रकार सातों घाटका विवरण है.

लगता बट घाट के, चारों खूटों चार हार ।

सो चारों तरफों बराबर, दो जल पर दो किनार ॥ ८

वट घाटके समीप वटका पुल है, उसके चारों ओर छज्जे निकले हैं. जिन पर स्तम्भोंकी हार आई है, इन हारोंमें दो हारें उत्तर, दक्षिण दिशामें जल

पर हैं तथा दो हरें पुलके पूर्व व पश्चिम दिशामें किनार पर अर्थात् जलमार्ग पर आई हैं।

और मोहोल घाट केल के, सो भी जिनस इन ।

ए दोऊ मोहोल अति सुंदर, करत साम सामी रोसन ॥ ९

केलके घाट पर शोभायमान पुल प्रासादकी रचना भी इसी प्रकारकी है। ये दोनों प्रासाद अति सुन्दर हैं तथा आमने-सामने प्रकाशित होते हैं।

साम सामी थंभ झरोखे, और सामें बडे देहेलान ।

क्यों कहूं सिफत इन जुबां, जोए ऊपर मोहोल सुभान ॥ १०

इन दोनों पुलों पर स्तम्भ झरोखे तथा दालान एक दूसरेके सामने शोभायमान हैं। यमुनाजीके इन पुलों पर स्थित धामधनीके इन प्रासादोंकी भव्यताका वर्णन कैसे किया जाए ?

चारों तरफों मोहोल छज्जे, तामें एक तरफ भया नूर ।

तरफ दूजी अरस अजीम, दोऊ तरफों जल जहूर ॥ ११

इन प्रासादोंके चारों ओर छज्जे हैं। इनके पूर्वमें अक्षरधाम तथा पश्चिममें रङ्ग महल है। उत्तर तथा दक्षिण दोनों दिशाओंमें यमुनाजीका जल शोभायमान है।

पांच भोम छठी चांदनी, ए खूबी अति सोभित ।

ए हद इन मोहोलन की, जुबां क्या करसी सिफत ॥ १२

इन प्रासादों पर पाँच भूमिकाएँ तथा छठी चाँदनी है। इनकी शोभा अति सुन्दर है। इन प्रासादोंकी सीमाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता।

सात घाट बीच में लिए, दोए मोहोल दोऊ किनार ।

पुल पूरे जल ऊपर, ले वारसे लग पार ॥ १३

इन दोनों पुलोंके मध्यमें सात घाट विद्यमान हैं तथा दोनों किनारों पर ये प्रासाद सुशोभित हैं। यमुनाजलके ऊपर इस पारसे उस पार तक दोनों पुल सुशोभित हैं।

दोऊ तरफों वृख अति सुंदर, दोऊ तरफों मोहोल सुंदर ।

बीच जोए सातों घाटों, दस नेहेरें चलें अंदर ॥ १४

यमुनाजीके दोनों किनारों पर दोनों ओर अति सुन्दर वृक्ष हैं. दोनों ओर स्थित प्रासाद भी अति सुन्दर हैं. दोनों ओर शोभायमान सातों घाटोंके मध्यमें दस नहरोंके रूपमें यमुनाजी प्रवाहित होती हैं.

ए अरस जिमी के जवेर, ए जवेर मोहोल नूर तिन ।

जोत बीच आसमान में, मावत नहीं रोसन ॥ १५

परमधामकी दिव्य भूमिके रत्न तथा रत्नोंके प्रासाद आदिका प्रकाश अति देदीप्यमान है. इनकी किरणें सम्पूर्ण आकाशमें भी नहीं समाती हैं.

नूर तजल्ला नूर के, बीच में ए मोहोलात ।

ए सुख बका के क्यों कहूं, इन मोहोलों खेलें हक जात ॥ १६

रङ्गभवन तथा अक्षरधामके मध्यमें यमुनाजीके पुल पर स्थित इन प्रासादोंकी शोभा अद्वितीय है. यहाँ पर धामधनी तथा ब्रह्मात्माएँ विभिन्न लीलाएँ करते हैं. इन अखण्ड सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए ?

हक ए सुख देवें हादी को, और देवें रूहन ।

ए सुख अरस अजीम के, क्यों कहूं जुबां इन ॥ १७

धामधनी श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको यह सुख प्रदान करते हैं. परमधामके इन सुखोंके विषयमें नश्वर जिह्वाके द्वारा क्या कहा जाए ?

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए सुख अपने अरस के ।

एक पलक छोडे नहीं, भला चाहे आपको जे ॥ १८

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! ये सुख अपने परमधामके हैं. जो आत्माएँ अपना हित चाहती हैं वे इन शाश्वत सुखोंको क्षणमात्रके लिए भी नहीं छोड़ती हैं.

प्रकरण १६ चौपाई १७८

पार जोए के वन खूबी

पार जमुना जो वन, इसी भांत दिल आन ।

दोरी बंध वन ले चल्या, डारी सब समान ॥ १

यमुनाजीके पार अक्षरधामकी ओरके वन प्रदेशको भी इसी प्रकार हृदयङ्गम करें. यमुनाजीके किनारे पङ्क्तिबद्ध वृक्षोंकी शाखाएँ सर्वत्र एक समान दृष्टिगोचर होती हैं.

जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही वन ।

जित जमुना तलें आए मिली, देखो किनार एही रोसन ॥ २

जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक यही वन दिखाई देता है. यमुना तट पर शोभायमान इस वनके वृक्षशाखाओंके नीचे यमुनाजी प्रवाहित होती हैं.

दोऊ किनारें वन सोभित, चल्या जल जमुना ले ।

रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए ॥ ३

जल प्रवाहित होता है. इस जलकी ज्योति आकाशमें भी समाती नहीं है. इस अलौकिक प्रकाशका वर्णन कैसे हो सकता है ?

चल्या अक्षर के मोहोल लों, एकल छत्री नूर ।

जैसा वन इत धाम का, ए भी तैसा ही जहूर ॥ ४

यह वन अक्षरधामके प्रासाद तक पहुँचा हुआ है. इसके वृक्षोंकी शाखाएँ छत्रीके समान दिखाई देती हैं. रङ्गभवनकी ओरके वृक्षोंकी भाँति ही यहाँके वृक्ष भी तेजोमय हैं.

मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर ।

सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर ॥ ५

अक्षरधामके प्रासादोंके चारों ओर जहाँ तक दृष्टि पहुँचती है वहाँ पर सर्वत्र इस वनके वृक्ष व्याप्त हैं. वहाँ पर सर्वत्र इनका ही प्रकाश दिखाई देता है. उसका वर्णन कहाँ तक करें ?

सुंदर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गूदवाए ।

नव भोम विराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए ॥ ६

अक्षर धामके प्रासादका द्वार तेजोमय है। प्रासादके चारों ओर प्रकाशमय झरोखे हैं। नव भूमिकायुक्त इस प्रासादका प्रकाश सर्वत्र व्याप्त होता है।

इसी भांत है चांदनी, ऐसी कांगरी ऊपर ।

इतथें जब देखिए, तब आवत धाम नजर ॥ ७

रङ्गभवनकी चाँदनीकी भाँति ही यहाँकी भी चाँदनी है। इसके ऊपर काँगरी भी शोभायमान हैं। यहाँसे खड़े होकर दृष्टिपात करने पर रङ्गभवन स्पष्ट दिखाई देता है।

दोऊ दरवाजे साम सामी, सोभित दोरी बंध ।

नूर नूर विलंद की, जुबां कहा कहे ए सनंध ॥ ८

दोनों प्रासादोंके द्वार आमने-सामने एक ही पङ्क्तिमें सुशोभित हैं। इस प्रकार अक्षरधाम तथा परमधामकी शोभाका वर्णन ही नहीं हो सकता है।

एकल छाया वन की, जहां लों नजर देखत ।

तोलों फेर सब देखिया, सोभा सबमें अतंत ॥ ९

यहाँके वनके वृक्षोंकी छाया सर्वत्र छत्रीके समान दिखाई देती है। जहाँ तक दृष्टि पड़ती है सर्वत्र इनकी अनन्त शोभा समान रूपसे दिखाई देती है।

खूबी इन भोम वन की, जानों फेर फेर देखूं धाए ।

देख देख के देखिए, तो नजर न काढी जाए ॥ १०

यहाँकी दिव्य भूमि तथा वनकी सुन्दरता बार-बार देखने जैसी है। बारंबार देखने पर भी वहाँसे दृष्टि नहीं हटती है।

सब एक वन छाँहेडी, श्रीधाम के गूदवाए ।

गूदवाए जमुना तलाब के, नूर अक्षर पोहोंचे आए ॥ ११

परमधामके चारों ओर सर्वत्र वृक्षकी छाया एक समान है। यहाँ तक कि यमुनाजी तथा तालके चारों ओर पङ्क्तिबद्ध खड़े वृक्षोंकी समान छाया अक्षरधाम तक पहुँची हुई है।

वन नूर के फिरवल्या, एही छाया है तित ।

इन जुबां ए वरनन, क्यों कर करूं सिफत ॥ १२

अक्षरधामके चारों ओर भी यह वन व्याप्त है। वहाँ भी इसकी छाया इसी प्रकारकी है। इनकी शोभाका वर्णन नश्वर जिह्वाके द्वारा कैसे करें ?

अनेक पसू इन वन में, अनेक हैं जानवर ।

खेलत बोलत गुंजत, करत चकोसर ॥ १३

इस वनमें अनेक प्रकारके पशु तथा पक्षी विचरण करते हैं। वे अनेक प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हुए अपनी-अपनी बोलीमें बोलते हैं, गुँजते हैं तथा कोलहाल करते हैं।

कै खूबी पसू केसन की, कै खूबी जानवर पर ।

कै सुन्दर सोभा नकस, ए जुबां कहे क्यों कर ॥ १४

इन पशुओंके रोम-रोमकी शोभा एवं पक्षियोंके पङ्खकी शोभा अपरम्पार है। इन पर की गई चित्रकारीकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

कै मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान ।

अति सुंदर है सोहने, क्यों कर कीजे बयान ॥ १५

ये पशुपक्षी अपने मुखसे मधुर वाणी बोलते हैं। उनके रङ्ग तथा आकृति अति सुन्दर हैं। इस सौन्दर्यका वर्णन कैसे किया जाए ?

कै खेलत करत लडाइयां, कै कूदत कै फांदत ।

उडके कै देखावहीं, कै बानी बोल रिझावत ॥ १६

इनमें-से अनेक पशुपक्षी क्रीड़ा करते हुए द्वन्द्व भी करते हैं। कतिपय उछलते-कूदते हुए उड़ान भरते हैं तथा अपनी मधुरवाणीसे धामधनीको प्रसन्न करते हैं।

पसू पंखी सब वन में, घेरों घेर फिरत ।

कै तले कै वन पर, कै विध खेल करत ॥ १७

इस प्रकार ये सभी पशुपक्षी वनमें चारों ओर विचरण करते हैं। इनमें-से

कतिपय वृक्षोंकी छायामें तो कतिपय वृक्षों पर चढ़कर विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं.

राजस्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन वन ।

ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक छिन ॥ १८

श्रीराजश्यामाजी भी ब्रह्मात्माओंके साथ इन वनोंमें आकर लीलाएँ करते हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! मैंने इन सभी स्थानोंका वर्णन किया है, उन्हें एक क्षणके लिए भी भूलना नहीं.

धनी कबूँ देखें फेर दौड़ते, कबूँ बैठ चले सुखपाल ।

ए वन जमुनाजीय का, एही वन फिरता ताल ॥ १९

धामधनी कभी-कभी यहाँ पर दौड़ते हुए दिखाई देते हैं तो कभी-कभी सुखपालमें बैठकर विचरण करते हुए दिखाई देते हैं. यह वन यमुनाजीसे लेकर हौजकौसर तालके चारों ओर फैला हुआ है.

कबूँ राज आगूँ दौड़त, ताली स्यामाजी को दे ।

पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हांसी का जे ॥ २०

कभी-कभी श्रीराजजी यहाँ पर लीला करते हुए श्रीश्यामाजीको ताली देकर आगे दौड़ते हैं. उनके पीछे-पीछे सभी सखियाँ हँसती-खेलती हुई दौड़ती हैं.

महामत कहे सुनो साथजी, छिन वन छोडो जिन ।

या मंदिरों संग धनीय के, विलसो रात और दिन ॥ २१

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! क्षणभरके लिए भी वनकी इन लीलाओंका विस्मरण मत करो एवं यहाँके मन्दिरों तथा प्रासादोंमें धामधनीके साथ रात-दिन आनन्द विलास करो.

प्रकरण १७ चौपाई १९९

परिकरमा बडी फिराक (वियोग) की

क्यों दियो रे विछेहा दुलहा, छूटी हक खिलवत ।

हम अरवाहें जो अरस की, फेर कब देखें हक सूरत ॥ १

हे धामधनी ! आपने हमें यह वियोग क्यों दिया ? जिससे हमारा अन्तरङ्ग

स्थान मूलमिलावा ही हमसे छूट गया. हम परमधामकी आत्माएँ अपने धनीके दर्शन पुनः कब कर सकेंगी ?

बेसक इलम दिया अपना, आप आए के इत ।

ना रह्या धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत ॥ २

आपने सद्गुरुके रूपमें स्वयं यहाँ आकर हमें सन्देश निवारक तारतम ज्ञान दिया. साथ ही अपने मूल सम्बन्धकी पहचान भी करवा दी, जिससे हमारे मनकी सभी भ्रान्तियाँ दूर हो गई.

खेल देखाए उरझाए हमको, सो फेर दिया छुडाए ।

ना तो ऐसा फरेब, कबूँ किन छोड्या न जाए ॥ ३

पहले तो आपने हमें नश्वर जगतका खेल दिखाकर मायामें उलझा दिया फिर सद्गुरुके रूपमें पधारकर इन बन्धनोंसे मुक्त किया. अन्यथा ये मिथ्या बन्धन कभी भी किसीसे नहीं छूट सकते.

हम वास्ते रसूल भेजिया, और भेज्या अपना फुरमान ।

सो इत काहूँ न खोलियां, मिली चौदे तबक की जहान ॥ ४

आपने हमारे लिए रसूलको भेजकर अपना सन्देश दिया. चौदह लोकोंकी सृष्टिमें किसीने भी आपके इस सन्देशको स्पष्ट नहीं किया.

सो कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, दई महंमद हकी सूरत ।

कह्या आखर आवसी अरस रूहें, खोलो तिन बीच मारफत ॥ ५

आपने ही इन रहस्योंको स्पष्ट करनेके लिए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके हाथ तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी भेजी. उन्होंने यह कुञ्जी मुझ (मुहम्मदकी हकी सुरत) को प्रदान की. साथ ही यह भी कहा, 'अन्तिम समयमें ब्रह्मात्माएँ तुम्हें मिलेंगी. उनके समक्ष इन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करना.'

खिलवत संदेसे दिए रूहअल्ला, जो मेहेर कर केहेलाए ।

किन खोले न द्वार अरस के, मोकों सब विध दई समझाए ॥ ६

इस प्रकार सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने मुझ पर अपार कृपा करते हुए परमधामका गूढ़ रहस्य प्रदान किया. आज तक किसीने भी परमधामके द्वार नहीं खोले

थे. सद्गुरुने मुझे इन विषयोंमें स्पष्ट समझाया.

मुझे संदेसे खिलवत के, सब रूहअल्ला दई सिखाए ।

बेसक इलम अरस का, मोहे सब विध दई बताए ॥ ७

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने मुझे धामधनीके साथ हुई एकान्त चर्चाके गूढ़ रहस्य स्पष्ट समझा दिए. इस प्रकार सन्देह निवारक तारतम ज्ञान प्रदान कर उन्होंने मुझे परमधामके सभी रहस्य स्पष्ट कर दिए.

छूटी रूहों को अरस की, मूल मेले की लज्जत ।

इसक न आवे क्यों हमको, जाकी नूर जमाल सों निसबत ॥ ८

वस्तुतः नश्वर संसारमें आने पर ब्रह्मात्माओंको परमधामके शाश्वत आनन्दकी विस्मृति हो गई. अन्यथा अभी तक हमारे हृदयमें परमधामका प्रेम क्यों प्रकट नहीं हुआ, जबकि हमारा सम्बन्ध अक्षरातीत धामधनीके साथ है.

फेर दई हकें मेहेर कर, मूल मेलेकी लज्जत ।

क्यों न जागें रूहें ए सुनके, जाकी इन हकसों निसबत ॥ ९

इस प्रकार धामधनीने हम पर अपार कृपा करते हुए परमधामका मूल आनन्द पुनः प्रदान किया. जिनका सम्बन्ध साक्षात् धामधनीके साथमें है, ऐसी ब्रह्मात्माएँ इन वचनोंको सुनकर क्यों जागृत नहीं होती हैं ?

बेसक इलम रूहों पाइया, अजू नजर क्यों ना खोलत ।

क्यों न आवे हमको इसक, जाकी अरस अजीम निसबत ॥ १०

अब तो ब्रह्मात्माओंने सन्देह निवारक ज्ञान प्राप्त किया है तथापि अभी तक वे अपनी आखें क्यों नहीं खोल रहीं हैं ? जिनका सम्बन्ध अक्षरातीत परमधामसे है ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अभी तक शाश्वत प्रेम क्यों प्रकट नहीं हो रहा है ?

पेहेचान हुई सब विध की, पाई हक मारफत ।

क्यों न आवे इसक हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत ॥ ११

पूर्णब्रह्म परमात्माका ज्ञान प्राप्त होने पर हमें परमधामकी प्रत्येक वस्तुकी सुधि

हुई तथापि जिनका सम्बन्ध साक्षात् अक्षरातीतके साथ है, ऐसी ब्रह्मात्माओंको वह प्रेम प्राप्त नहीं हो रहा है

हजूर छिन एक ना हुई, इत चली जात मुदत ।

ए क्या हक को खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत ॥ १२

परमधाममें तो हम धामधनीके चरणोंसे क्षण मात्रके लिए भी दूर नहीं हैं किन्तु संसारमें दीर्घकाल व्यतीत हो गया है। क्या धामधनीको यह सब ज्ञात नहीं है ? हमारा मूल सम्बन्ध अब कहाँ चला गया ?

जो सुख अरस अजीम के, सो देखाए दुनीमें इत ।

भेज्या इलम बका अपना, वह कहां गई निसबत ॥ १३

धामधनीने इस नश्वर संसारमें भी परमधामके अलौकिक आनन्दका अनुभव करवाया। उन्होंने यहाँ पर अपना शाश्वत ज्ञान भिजवाया तथापि उनके साथका हमारा सम्बन्ध कहाँ छूट गया है ?

बेसुध चौदे तबकों, तामें हमको बेसक किए इत ।

सुख अरसोंके सब दिए, कर ऐसी हक निसबत ॥ १४

चौदह लोकोंके प्राणी बेसुधियोंमें पड़े हुए थे। ऐसी स्थितिमें तारतम ज्ञान प्रदान कर धामधनीने हमें सन्देह रहित बना दिया एवं परमधामके सभी शाश्वत सुख प्रदान किए। इस प्रकार धामधनीने अपने प्रगाढ़ सम्बन्धका परिचय दिया है।

हम पर अरस में हंसने, माया देखाई तीन बखत ।

इसक हमारा देखने, वह कहां गई निसबत ॥ १५

परमधाममें हमारी हँसी करनेके लिए धामधनीने हमें (ब्रज, रास एवं जागनी) इस प्रकार तीन बार मायाका खेल दिखाया। हमारा प्रेमका सामर्थ्य देखनेके लिए ही उन्होंने ऐसा किया है। हम उनके सम्बन्धको कैसे भूल गई ?

चौदे तबक आडे देयके, सो नजीक छिपे क्यों कित ।

निपट सेहेरग से नजीक, वह कहां गई निसबत ॥ १६

चौदह लोकोंका व्यवधान डालकर वे हमारे निकट ही कहाँ छिप गए हैं ?

वस्तुतः धामधनी प्राणनलीसे भी अति निकट हैं तथापि उनके साथका हमारा वह सम्बन्ध कहाँ छूट गया है ?

किन तरफ हमारे तुमहो, किन तरफ तुमारे हम ।

बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड बैठे कदम ॥ १७

हमें तो यह भी सुधि नहीं कि आप हमसे कौन-सी दिशाकी ओर बैठे हैं तथा हम आपसे किस ओर बैठे हैं ? आप और हमारे बीच ब्रह्माण्डका यह व्यवधान क्यों पड़ गया एवं हम कैसे आपके चरणोंको पकड़ कर बैठी हुई हैं ?

पेहेलें क्यों फरामोसी देयके, रूहें डारी माहें छल ।

पीछे ताला कुंजी दोऊ दिए, दर्ई खोलने की कल ॥ १८

पहले भ्रमका आवरण डालकर ब्रह्मात्माओंको क्यों छलरूपी संसारमें भेज दिया ? फिर इस आवरणको दूर करनेके लिए तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी तथा जागृत बुद्धि प्रदान की.

किन विध दर्ई तुम बेसकी, सक रही न किन सबद ।

दुनियां चौदे तबकमें, सुध परी न बांधी हद ॥ १९

हे धामधनी ! आपने हमें कैसी निःसन्देहता प्रदान की है जिससे हममें अब किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं रहा है. इन चौदह लोकोंके प्राणीको तो क्षर ब्रह्माण्डकी भी सुधि नहीं है, आपने उनके लिए ऐसी सीमा निर्धारित कर दी है.

हमको सक ना हदमें, ना कछू बेहद सक ।

सक रही न पार बेहद की, दिया बेसक इलम हक ॥ २०

हमें तो न इस क्षर ब्रह्माण्डके विषयमें सन्देह है और न ही अक्षर (बेहद) के विषयमें सन्देह है. इसी प्रकार हमें अक्षरसे परे अक्षरातीतके विषयमें भी कोई सन्देह नहीं है, ऐसा सन्देह निवारक ज्ञान आपने हमें प्रदान किया है.

ए विध रूहें देखी जिनों, सो केहेनीमें आवत नाहें ।

कछू वास्ते हम रूहनके, हुकम कहावत जुबांए ॥ २१

इस प्रकार ब्रह्मात्माओंने तारतम ज्ञानके द्वारा जो प्रत्यक्ष अनुभव किया है, उसका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है. धामधनीका आदेश ही ब्रह्मात्माओंके लिए यह थोड़ा-सा वर्णन करवा रहा है.

ए हक की मैं हुकम ले, कै विध बका द्वार खोलत ।

याद देने अरस अजीममें, होत सब वास्ते उमत ॥ २२

धामधनीके आदेशको शिरोधार्य कर मैं विभिन्न प्रकारसे अखण्डके द्वार खोल रहा हूँ. ब्रह्मात्माओंको अखण्ड परमधामका स्मरण दिलानेके लिए ही मुझसे इस प्रकारका वर्णन हो रहा है.

हम तो इत आए नहीं, अरस एक दम छोड़्या न जाए ।

जागे पिछे दुलहा, हम देख्या खेल बनाए ॥ २३

वस्तुतः हम ब्रह्मात्माएँ इस जगतमें आई ही नहीं हैं. क्षणमात्रके लिए भी हमसे परमधाम छोड़ा नहीं जा सकता. जागृत होने पर ही यह ज्ञात हुआ कि हमें दिखानेके लिए ही धामधनीने इस नश्वर जगतकी रचना करवायी है.

अरस निसबत हक की, खेल में आए बिना लेत सुख ।

हिकमत देखन हक हुकम की, कही न जाए या मुख ॥ २४

इस संसारमें आए बिना ही हम परमधाममें धामधनीकी अङ्गना होनेका सुख प्राप्त कर रहे हैं. धामधनीके आदेशकी कला (सामर्थ्य) देखनेके लिए हम इस जगतमें आई हैं जिसका वर्णन ही नहीं हो सकता है.

हुकमें मांग्या हुकम पैं, सो हुकमै देवनहार ।

सो हुकम फैल्या सबमें हक का, सो हकै खबरदार ॥ २५

धामधनीके आदेशसे ही हमने उनसे इस नश्वर जगतका खेल देखनेकी आज्ञा माँगी है. उसी आदेशने यह खेल दिखाकर हमारे मनोरथ पूर्ण किए हैं. इस प्रकार सर्वत्र धामधनीके आदेशका ही विस्तार है. स्वयं धामधनी ही सचेत होकर यह सब करवा रहे हैं.

बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम ।

किल्ली इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक हुकमें खसम ॥ २६

धामधनीके आदेशके बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। कहना, सुनना तथा देखना सब कुछ उनके आदेशसे ही सम्भव हो सकता है। इसी आदेशने तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान की और निश्चय ही परब्रह्म परमात्माकी पहचान भी करवा दी है।

सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूं, कहा न जाए जुबांएं ।

ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जानें अरस दिल माहें ॥ २७

इस जिह्वाके द्वारा परमधामकी अन्तरङ्ग लीलाका वर्णन कैसे करूँ ? यह तो आत्मा और परमात्मा (प्रेमी एवं प्रियतमा) की बात है। परमधामकी आत्माएँ ही अपने धाम हृदयमें इसका अनुभव कर सकती हैं।

जो सुख खोलूं अरस के, माहें मिलावे इत ।

निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों छिनकी सिफत ॥ २८

इस नश्वर जगतमें यदि मैं परमधामके अखण्ड सुखोंका रहस्य स्पष्ट करने लगूँ तो मेरी सम्पूर्ण आयु समाप्त हो जाएगी तथापि मुझसे वहाँकी क्षण मात्रकी शोभाका वर्णन भी नहीं हो पाएगा।

हम रूहों को चेतन किए, खोली रूहअल्ला हकीकत ।

ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत ॥ २९

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजने ही परमधामके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर हम ब्रह्मात्माओंको सचेत किया है। परमधामके वे अन्तरङ्ग सुख अब कहाँ चले गए हैं, यह अखण्ड निधि हमे पुनः कब प्राप्त होगी ?

हक खिलवत सुख मोमिनो, लिखी फुरमान में मारफत ।

कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत ॥ ३०

हे ब्रह्मात्माओ ! परमधामके उन अन्तरङ्ग सुखोंकी पहचान कुरानमें लिखी है। हमारे वे सुख अब कहाँ चले गए हैं ? हम उन सुखोंको प्राप्त करनेकी क्षमता कब प्राप्त करेंगे ?

रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत ।

दिल अरस मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत ॥ ३१

धामधनीने इस प्रकार सद्गुरुके द्वारा तारतम ज्ञान भेजकर ब्रह्मात्माओंको अपने स्वरूपमें तल्लीन करवाया तथा अपने प्रभुत्वका परिचय भी दिया. महामति धामधनीकी आज्ञासे कहते हैं, हे धामहृदया ब्रह्मात्माओ ! इस अखण्ड सम्पदाको अपने हृदयमें धारण करो.

प्रकरण १८ चौपाई १०३०

खिलवत से चांदनी तांई

भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद ।

हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद ॥ १

धामधनीने रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकामें स्थित मूलमिलावामें ब्रह्मात्माओंको बैठाकर उनकी चाहनाको बढ़ाते हुए उन्हें यह नश्वर खेल दिखाया. धामधनीके बिना अन्य कौन इस यथार्थताका वर्णन कर सकता है ? इसीलिए सन्देह निवारक तारतम ज्ञान देकर उन्होंने इस रहस्यको स्पष्ट कर दिया है.

कहां सुख झरोखे अरस के, कहां सुख सीतल बयार ।

कहां सुख वन कहां खेलना, कहां सुख वखत मलार ॥ २

परमधाम-रङ्गमहलके झरोखेमें बैठकर मन्द, सुगन्ध, शीतल वायुके प्रवाहसे प्राप्त होने वाले सुख अब कहाँ चले गए हैं, वर्षाऋतुमें वनमें होनेवाली विभिन्न क्रीड़ाओंके सुख भी कहाँ विस्मृत हो गए हैं ?

कहां सुख कोकिला मोर के, वन में करें टहुंकार ।

बादल अंबर छाइया, सुख बिजलियां चमकार ॥ ३

वर्षाऋतुमें वनमें कुहु-कुहु करती कोयल तथा पीउ-पीउ करते मोरोंकी टहुंकार, आकाशमें छाए हुए घनघोर बादल तथा चमकती हुई बिजलीकी गर्जना न जाने अब कहाँ खो गई ?

दो दो रूहें मिल बैठतीं, सुख लेतीं सुखपाल ।

कहां सुख साथ मासूक के, सैर जाते जोए या ताल ॥ ४

दो-दो ब्रह्मात्माएँ सुखपालमें बैठकर भ्रमणका आनन्द लेतीं हैं। अपने प्रियतम धनीके साथ यमुनाजी तथा हौजकौसर ताल पर विहार (भ्रमण) करनेवाली ब्रह्मात्माओंके सुख न जाने अब कहाँ चले गए हैं ?

ए सुख हमारे कहां गए, कहां जाए करूं पुकार ।

तुम कोई न देखाया तुम बिना, अजू क्यों न करो विचार ॥ ५

हे धनी ! हमारे ये सभी सुख कहाँ विलीन हो गए हैं ? अब मैं कहाँ जाकर इनके लिए पुकार करूँ ? आपने अपने अतिरिक्त अन्य कोई आधार भी तो नहीं दिखाया है। आप स्वयं अभी तक क्यों विचार नहीं कर रहे हैं ?

क्यों दिन जावे एकले, किन विध जावे रात ।

किन विध बसो तुम अरस में, वह कहां गई मूल बात ॥ ६

आपके बिना हमारे दिन और रातका समय कैसे व्यतीत हो रहा है ? आप हमारे बिना परमधाममें कैसे रह रहे हैं ? हमारा वह मूल सम्बन्ध अब कहाँ चला गया है ?

सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मिल मंदिर बारे हजार ।

कौन देवे मासूक बिना, सुख भूलवनी अपार ॥ ७

रङ्गमहलकी द्वितीय भूमिकामें स्थित जलकुण्डकी जलक्रीड़ा तथा भूलभूलवनीके बारह हजार मन्दिरोंकी लीलाओंका अपार सुख अपने प्रियतम धनीके बिना हमें कौन प्रदान कर सकता है ?

हम अरस भोम तीसरी, चढ देखें नूर मकान ।

दोऊ द्वारों नूर झलके, ए सुख कब देसी मेहेरबान ॥ ८

परमधामकी तृतीय भूमिकाके झरोखेमें बैठकर हम अक्षरधामको देखते हैं। अक्षरधाम तथा रङ्गभवनके दोनों द्वार प्रकाशमय हैं। हे धनी ! अब आप यह सुख कब प्रदान करेंगे ?

इत आवत झरोखे मुजरे, हमारे मेहेबूब के ।

ए सुख धनी हमको, फेर कब देखाओगे ॥ ९

इसी झरोखेमें बैठे हुए आपके दर्शन करनेके लिए नित्यप्रति अक्षरब्रह्म आते हैं. हे धामधनी ! आप हमें इन सुखोंको पुनः कब दिखाएँगे ?

बडी बैठक जित होत है, इन बडे देहेलान ।

ए कब देखाओ मेला बडा, मेरे वाहेदत बडे सुभान ॥ १०

यहीं पर स्थित बड़े दालानमें हमारी बैठक हुआ करती है. हे मेरे धामधनी ! अद्वैत भूमिकाके इस मिलनको आप हमें पुनः कब दिखाएँगे ?

चौथी भोम सुख निरत के, कौन देवे कर हेत ।

ए सुख अरसके इन जिमी, हक हमको विध विध देत ॥ ११

चौथी भूमिकामें नृत्यलीलाके समय आप हमें जो आनन्द प्रदान करते हैं, परमधामके इन सुखोंका अनुभव आपके बिना इस संसारमें कौन करा सकता है ?

भोम पांचमी सुख पौढन के, ए हक की बातें नेक ।

कौन केहेवे मासूक बिना, आसिक गुझ विवेक ॥ १२

पाँचवीं भूमिकाका शयन सुख एवं धामधनीके गूढ़ प्रेमका रहस्य अपनी अनुरागिनी आत्माओंके लिए प्रियतम धनीके बिना अन्य कौन समझा सकता है ?

सुख छठी भोम मोहोलन के, ए कौन देवे कर विचार ।

इन जुबां सुख क्यों कहूं, इन हक के बेसुमार ॥ १३

छठी भूमिकाके सुखपाल तथा अन्य प्रासादोंके सुखका विवेकपूर्वक वर्णन कौन कर सकता है ? इस जिह्वाके द्वारा धामधनीके इन अपार सुखोंका वर्णन कैसे हो सकता है ?

सुख कहा कहूं भोम सातमी, जो लेते खटों छपर ।

हक हादी रूहें झूलत, साम सामी बांध नजर ॥ १४

सातवीं भूमिकामें स्थित झूलोंमें बैठकर श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ

झूलते हैं एवं परस्पर नयन मिलाते हुए ताली देते हैं। उन सुखोंका वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

सुख हिंडोले भोम आठनी, हक हादी रूहें हींचत ।

ए चारों तरफों के झूलने, हक हमको देत लज्जत ॥ १५

आठवीं भूमिकामें श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ झूले पर बैठकर झूलते हैं। इन चारों ओरके झूलोंमें झूलकर धामधनी हमें अखण्ड सुख प्रदान करते हैं।

नौमी भोम बैठाए के, जो सुख नजरों दूर ।

ए कौन देवे सुख हक बिना, बुलाए के अपने हजूर ॥ १६

नवमी भूमिकामें बैठाकर धामधनी हमें दूर-दूरके दृश्योंका दर्शन करवाते हैं। इस प्रकार धामधनीके बिना अन्य कौन हमें अपने पास बुलाकर इन सुखोंका अनुभव करवा सकता है ?

सुख चांदनी चढाए के, पूनम की मध्य रात ।

ए कौन देवे मासूक बिना, इसक भीगे अंग गात ॥ १७

पूर्णिमाकी मध्य रात्रिमें रङ्गभवनकी चाँदनीमें चढ़ाकर धामधनीके बिना अन्य कौन हमें अपार सुख प्रदान करता है, जिससे हम प्रेममें गलितगात्र होते हैं।

आगे गुमटियों चढाए के, नजरों नूर मकान ।

कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान ॥ १८

चाँदनीकी गुमटियों (शिखरों) में बैठाकर अङ्गुली निर्देश करते हुए प्रियतम धनीके बिना अन्य कौन हमें अक्षरधामके दर्शन करवा सकता है ?

दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन ।

सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन ॥ १९

इस प्रकार धामधनीके बिना कौन हमें रङ्गभवनकी अन्य दसों भूमिकाओंका सुख प्रदान कर सकता है ? स्वयं धामधनीने ही तारतम ज्ञान प्रदान कर इस नश्वर भूमिमें भी परमधामके शाश्वत सुखोंका अनुभव करवाया। अन्यथा यहाँ पर ये सुख कौन प्रदान कर सकता है ?

प्रकरण १९ चौपाई १०४९

अरस आगूं खुली चांदनी

दोऊ कमाडों की क्यों कहूं, नूर रंग दरपन ।

ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भर्या नूर अंबर धरन ॥ १

रङ्गभवनके मुख्य द्वारके दोनों किवाड़ोंकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? दर्पण रङ्गके ये किवाड़ प्रकाशमय हैं। भूमिसे लेकर आकाश तक इनका प्रकाश व्याप्त है, जिह्वाके द्वारा इनका वर्णन कहाँ तक करें ?

दोऊ बाजू बडे दरवाजे, रूहअल्ला कहाँ रंग लाल ।

बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूं अरस दिवाल ॥ २

इस विशाल द्वारके दोनों ओरकी दीवारका रङ्ग सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने लाल कहा है। इस नश्वर शरीरकी जिह्वा द्वारा रङ्गमहलके दीवारकी शोभाका वर्णन कैसे सम्भव हो सकता है ?

चबूतरे दिवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब ।

जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड जाए ख्वाब ॥ ३

द्वारके दोनों ओर स्थित दीवारके साथके दोनों चबूतरोंमें दोनों ओर आठ तोरण (मेहेराब) हैं। इनकी शोभाको भलीभाँति देखने पर स्वप्नवत् जगतका अस्तित्व पलभरमें ही समाप्त हो जाएगा।

ए जो कहे आठ मेहेराब, दोऊ चबूतरों पर ।

ए बैठक हक हादी रूहें, भर्या नूर जिमी अंबर ॥ ४

जिन दो चबूतरों पर आठ तोरणोंका वर्णन किया गया है, वह श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी बैठकका स्थल है। इसका तेजोमय प्रकाश भूमिसे लेकर आकाश तक फैला हुआ है।

बीस थंभ रंग पांच के, आगूं अरस द्वार ।

दस बाएं दस दाहिने, करें रोसन नूर झलकार ॥ ५

इन दोनों चबूतरों पर पाँच रङ्गोंके बीस स्तम्भ हैं। उनमें-से दस दायीं ओर तथा दस बायीं ओर हैं। इनका प्रकाश भी झिलमिलाता रहता है।

हीरा मानिक पोखरे, पाच नीलवी जे ।

नूर थंभ तरफ दाहिनी, तरफ बाई याही नूरके ॥ ६

हीरा, माणिक्य, पुखराज, पाच तथा नीलमणि जैसे रत्नोंसे निर्मित ये ज्योतिर्मय स्तम्भ दस दायीं ओर तथा दस बायीं ओर शोभायमान हैं।

ज्यों आगूं त्यों पीछल, याके सनमुख माहें दिवाल ।

बीसों दोए चबूतरे, इन दिवाल रंग लाल ॥ ७

जैसे आगेके स्तम्भोंमें रङ्गोंका क्रम है उसी प्रकारका क्रम दीवारमें अङ्कित स्तम्भोंमें भी है। इस प्रकार दोनों चबूतरों पर बीस स्तम्भ शोभायमान हैं, दीवारका रङ्ग लाल है।

अरस आगूं खुली चांदनी, माहें चबूतरे चार ।

दोए तलें बीच वनके, दो ऊपर लगते द्वार ॥ ८

रङ्गमहलके सम्मुख खुला प्राङ्गण (चाँदनी चौक) एवं चार चबूतरे हैं। इनमें दो चबूतरे नीचे चाँदनी चौकमें स्थित हैं और दो रङ्गमहलके द्वारके साथ लगे हुए हैं।

इन मोहोलो सुख क्यों कहूं, आगूं बडे दरबार ।

हक हादी सुख इन कठेडे, देत बैठाए बारे हजार ॥ ९

रङ्गभवनके इन सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए ? धामधनी श्यामाजी एवं बारह हजार ब्रह्मात्माओंको इन आगेके चबूतरोंमें कटहरेके अन्दर बैठा कर अनन्त सुख प्रदान करते हैं।

आगूं इन मोहोलों खेलौने, खेल करत कला अपार ।

नाम जुदे जुदे तो कहूं, जो कहूं आवे माहें सुमार ॥ १०

इन प्रासादोंके सामने खिलौनेके समान पशुपक्षी अपार कलाओंके साथ क्रीड़ा करते हैं। इन सभीके अलग-अलग नाम तभी कहे जा सकते हैं जब इनकी कोई गणना हो सकती हो।

ए सुख लें अरवा अरस की, हक हादी संग निसदिन ।

ए जाहेर किया इत हुकमें, वास्ते हम मोमिन ॥ ११

परमधामकी ये ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजी तथा श्यामाजीके साथ निशदिन आनन्दका अनुभव करती हैं। श्रीराजजीके आदेशने ही इस संसारमें ब्रह्मात्माओंके लिए यह आनन्द प्रकट किया है।

चारों हांसो खुली चांदनी, तीनों तरफों वन बराबर ।

तरफ चौथी झरोखे अरस के, सोभे आगूं चबूतर ॥ १२

चारों ओरसे खुले इस चाँदनी चौकके तीनों ओर समान रूपसे वन प्रदेश है तथा चौथी ओर रङ्गभवनके झरोखे हैं। सामने दो चबूतरे शोभायमान हैं।

तलें जो दोऊ चबूतरे, वृख लाल हरा तिन पर ।

ए वृख द्वार चबूतरे, नूर रोसन करत अंबर ॥ १३

सामनेके इन चबूतरों पर लाल तथा हरे रङ्गके दो वृक्ष शोभायमान हैं। इन वृक्षोंका, रङ्गभवनके द्वारका तथा इन चबूतरोंका ज्योतिर्मय प्रकाश आकाशको भी प्रकाशित कर देता है।

इत जोत जिमी की क्यों कहूं, हुआ आकास जिमी एक ।

सोभा क्यों कहूं आगूं अरस के, जानों सबसे एह विसेक ॥ १४

इस दिव्य भूमिकी ज्योतिके विषयमें क्या कहें ? ऐसा प्रतीत होता है, मानों भूमि और आकाश दोनों ही एक हो गए हों। रङ्गभवनके सम्मुखके इन दृश्योंकी शोभाका वर्णन कैसे करें, ये सभी सर्वाधिक शोभायमान लगते हैं।

आगूं अरस चबूतरे, हम सखियां बैठत मिलकर ।

ए सुख हमारे कहां गए, खेलत नाचत बांदर ॥ १५

हम सभी ब्रह्मात्माएँ मिलकर रङ्गभवनके आगेके चबूतरों पर बैठती हैं। हमारे सम्मुख वानर तथा अन्य पशुपक्षी विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ तथा नृत्य करते हैं। अब हमारे ये सुख कहाँ चले गए हैं ?

इत तखत कदले कुरसियां, बैठें रूहें बारे हजार ।

सुख इतके हमारे कहां गए, मोर नचावनहार ॥ १६

इन चबूतरों पर सिंहासन तथा आरामदायी कुर्सियाँ हैं, उन पर हम बारह

हजार ब्रह्मात्माएँ बैठा करती हैं. हमारे सामने मोर आदि पक्षी नृत्य करते हैं. अब इन सुखोंका अनुभव कहाँ चला गया है ?

हक हमारे इत बैठके, कै विध करें मनुहार ।

कै पसू पंखी अरस के, इत सुख देते अपार ॥ १७

धामधनी भी यहाँ पर बैठकर हमारे साथ विभिन्न प्रकारसे प्रेमलाप करते हैं. परमधामके अन्य अनेक पशुपक्षी भी अपनी क्रीड़ाओंके द्वारा यहाँ पर अपार सुखका अनुभव करवाते हैं.

सुख सब पसू पंखियन के, कै खेल बोल दें सुख ।

ए आगूं अरस आराम के, क्यों कर कहूं इन मुख ॥ १८

यहाँ पर पशुपक्षियोंसे भी अनेक सुख प्राप्त होते हैं. उनमें-से कतिपय अपनी क्रीड़ाओंके द्वारा तथा कतिपय अपनी वाणीके द्वारा सुख प्रदान करते हैं. इस प्रकार रङ्गभवनके सम्मुख चाँदनी चौकके इस आनन्दका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

कबूं एक एक पसू खेलत, कबूं एक एक जानवर ।

ए सुख अरस अजीम के, सुपन जुबां कहे क्यों कर ॥ १९

यहाँ पर कभी एक-एक पशु तथा कभी एक-एक पक्षी अपनी कलाका प्रदर्शन करते हैं. परमधामके इन सुखोंका वर्णन स्वप्नकी जिह्वा द्वारा कैसे हो सकता है ?

कै बांदर बाजे बजावहीं, आगूं अरस के नाचत ।

ए सुख हमारे कहाँ गए, हम देख देख राचत ॥ २०

यहाँ पर अनेक वानर वाद्ययन्त्र बजाते हुए चाँदनी चौकमें नृत्य करते हैं. उसे देखकर हम प्रसन्नताका अनुभव करती थीं. हमारे ये सुख अब कहाँ चले गए हैं ?

इत कै विध पसू खेलत, कै खेलत हैं जानवर ।

खेल बोल नाच देखावहीं, कै हंसावत लड कर ॥ २१

यहाँ पर अनेक पशुपक्षी विभिन्न प्रकारसे क्रीड़ाएँ करते हैं. वे खेलकर,

बोलकर, नाचकर तथा द्वन्द्वकर अपनी कलाओंका प्रदर्शन करते हुए धामधनीको प्रसन्न करते हैं।

हक हादी रूहें चांदनी बैठत, ऊपर होत वखत मलार ।

मोर बांदर दादुर कोकिला, सुख देत कर टहुंकार ॥ २२

धामधनी वर्षाऋतुके समय श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके साथ इस चांदनी चौक पर विराजमान होते हैं। उस समय मोर, वानर, दादुर (मेढक), कोयल आदि अपनी-अपनी वाणीसे सबको मुग्ध करते हैं।

सुख कहाँ गए इन समै के, कै विध वन करें गुंजार ।

सेहेरां गाजत छाया बादली, होत बिजलियां चमकार ॥ २३

इस समयके ऐसे सभी सुख अब कहाँ चले गए हैं ? इन पशुपक्षियोंकी ध्वनि वनमें गुंजायमान होती है। आकाशमें घनघोर घटाएँ छा जाती हैं। मेघ गर्जना करते हैं तथा बिजली भी चमकती है।

बट पीपल की चौकियां, चारों भोम हिंडोले ।

ए सुख कब हम लेवेंगे, हक हादी रूहें भेले ॥ २४

रङ्गभवनके दक्षिणकी ओर वट-पीपलकी चौकी पर चारों भूमिकाओंमें ऊँचे झूले लटक रहे हैं। यहाँ पर श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ एक साथ मिलकर झूलते हैं। इन सुखोंको हम पुनः कब प्राप्त कर पाएँगे ?

चारों भोम चौकी हिंडोले, हक हादी रूहें हींचत ।

हम सुख लेतीं सब मिल के, सो कहाँ गई निसबत ॥ २५

चारों भूमिकाओंमें स्थित इन झूलोंमें श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ झूलती थीं। हम सभी ब्रह्मात्माएँ मिलकर यह सुख प्राप्त किया करती थीं। हमारा वह सम्बन्ध अब कहाँ छूट गया ?

एक अलंग सारी हिडेले, सो सिफत न कही जाए ।

अधिकारी इन सुख के, सो काहे को रूह बिलखाए ॥ २६

यहाँ पर लगे हुए अत्यन्त ऊँचे झूलोंकी शोभा शब्दोंमें व्यक्त नहीं की जा

सकती. इन सुखोंकी अधिकारिणी आत्माएँ उनसे वञ्चित होकर इस जगतमें क्यों व्याकुल हो रही हैं ?

पसू पंखी चारों भोम के, सुख देत दिल चाहे ।

सो सुख कब लेसी मोमिन, क्यों इन बिन रह्यो जाए ॥ २७

वट-पीपलके इस वनकी चारों भूमिकाओंमें विचरण करनेवाले पशुपक्षी मनोवाञ्छित सुख प्रदान करते हैं. ब्रह्मात्माएँ अब उन सुखोंको कैसे प्राप्त करेंगी ? इनके बिना अब कैसे रहा जा सकता है ?

कब सुख लेसी फूल बाग के, बाग ऊपर झरोखे ।

कहां जाऊं किनसों कहूं, कब हम सुख लेवें ए ॥ २८

रङ्गभवनके पश्चिमकी ओर दीवार पर शोभायमान झरोखोंमें बैठकर हम फूलबागके सुखोंका अनुभव कब कर पाएँगी ? अब कहाँ जाकर किनसे कहें ? ये सुख हमें कब प्राप्त होंगे ?

ए जो चेहेबच्चे फूल बाग के, इत कारंजे उछलत ।

ए सुख कब हम पावेंगे, कहां जाए पुकारूं कित ॥ २९

फूलबागमें स्थित जलकुण्डोंसे उठते हुए फुहारोंकी शोभाका सुख अब हम कब प्राप्त कर सकेंगे ? इनके लिए कहाँ जाकर पुकार किया जाए ?

जो सुख लाल चबूतरे, लेत मोहोला बडे पसूअन ।

ए वैठक सुख क्यों कहूं, ए सुख जानें अरस के तन ॥ ३०

रङ्गभवनकी उत्तर दिशामें स्थित लालचबूतरे पर बैठकर पशुपक्षीकी क्रीड़ाओं तथा अभिवादनका जो आनन्द प्राप्त होता है उसका वर्णन कैसे किया जाए ? ब्रह्मात्माएँ ही इन सुखोंको जान सकती हैं.

हांस चालीस चबूतरा, धरत कठेडा जोत ।

केहे केहे मुख केता कहे, आसमान भर्यो उद्योत ॥ ३१

चालीस पहल (हांस) लम्बे इस चबूतरे पर स्थित कटहरासे ज्योतिर्मयी किरणें निकलती हैं. उनसे पूरा आकाश ढँक जाता है. इस शोभाका वर्णन मुखसे कहाँ तक किया जाए ?

बाघ चीते गज केसरी, हंस गरुड मुरग मोर ।

पसू पंखी सुख क्यों कहूं, इन जुबां के जोर ॥ ३२

बाघ, चीता, हाथी, सिंह, हंस, गरुड, मुर्गा, मोर इत्यादि पशुपक्षियोंकी क्रीड़ाओंसे प्राप्त होनेवाले सुखका वर्णन इस जिह्वाके बलसे कैसे किया जा सकेगा ?

इत बिछौने दुलीचे, ऊपर सोभित सिंघासन ।

सोभे कै भांतों छत्रियां, कब हक देवें हादी रूहन ॥ ३३

इस लाल चबूतरे पर विभिन्न प्रकारके आसन तथा कालीन बिछे हुए हैं। उन पर सिंहासन शोभायमान है। यहाँ पर वनके वृक्षोंकी छत्री विभिन्न भाँतिसे सुशोभित हो रही है। धामधनी श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंको यहाँका सुख कब प्रदान करेंगे ?

कै रंगों बन सोभित, चौक सोभित चबूतर ।

ए खूबी आगूं अरस के, इन जुबां कहूं क्यों कर ॥ ३४

लाल चबूतरेके सम्मुख (पूर्वकी ओर) विभिन्न रङ्गोंके वन सुशोभित हैं। वहाँ पर चबूतरे तथा चौक भी अत्यन्त शोभायमान हैं। परमधामकी इन शोभाओंका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

कहां वन कहां खेलना, कहां सुख मेले सखियन ।

कहां नाचें मोर बांदर, कहां सुख पसू पंखियन ॥ ३५

अब वे वन तथा वहाँकी क्रीड़ाएँ कहाँ हैं, सभी सखियोंके मिलनका सुख भी अब कहाँ प्राप्त होगा, अब मोर एवं वानर आदि पशुपक्षियोंका नृत्य भी कहाँ प्राप्त होगा ?

अरस जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास ।

कब देखें सुख इन जिमी, जित वरसत नूर प्रकास ॥ ३६

परमधामकी दिव्य भूमिके एक कणका प्रकाश भी आकाशमें समाता नहीं है। अब उस दिव्य भूमिके सुखोंको हम पुनः कब प्राप्त कर सकेंगी ? जहाँ पर सर्वत्र प्रकाशकी ही वर्षा होती रहती है।

जोत एक दरखत पात की, हुआ अंबर जिमी रोसन ।

धनी ए सुख कब देओगे हमें, अपने इन बागन ॥ ३७

यहाँ पर वृक्षके एक पत्तेसे निकली हुई किरणोंसे भी भूमि और आकाश आच्छादित होते हैं। हे धामधनी ! इस दिव्य भूमिके वन, उपवन आदिके सुख हमें पुनः कब प्राप्त कराएँगे ?

इत हक कहावें हुकम कहे, वास्ते हादी रूहन ।

अरस में केहेसी सुख खेल के, सिर ले कहे महामत मोमन ॥ ३८

महामति ब्रह्मात्माओंसे कहते हैं, श्रीराजजी अपनी अङ्गना श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके लिए अपने ही आदेशसे यह वर्णन करवा रहे हैं। परमधाममें जागृत होने पर इस खेलके आनन्दकी चर्चा होगी।

प्रकरण २० चौपाई १०८७

सात घाट पुल हैज

और सुख सातों घाट के, और सुख दोऊ पुल ।

ए सुख सब अरस के, कब लेसी हम मिल ॥ १

यमुनाजीके तट पर शोभायमान सातों घाट तथा दोनों पुलोंके दिव्य सुखोंका अनुभव हम सभी मिलकर पुनः कब प्राप्त कर सकेंगी ?

घाट जांबू अति सोभित, जिमी जडाव किनारे जोए ।

कै मोहोल किनारें जवेरों, वन सोभित किनारें सोए ॥ २

यहाँ पर जामुनका घाट अति शोभायमान है। यमुनाजीके दोनों किनारोंकी भूमि रत्नजडित प्रतीत होती है। किनारों पर रत्ननिर्मित अनेक प्रासाद हैं तथा वनप्रदेश भी अति शोभायमान हैं।

ए बन जडाव जानों चंद्रवा, कै रंग बने इन हाल ।

जाए पोहोंच्या लग झरोखों, अरस की हृद दिवाल ॥ ३

इन वनोंकी छत चंद्रवाकी भाँति शोभायमान है। उससे विभिन्न रङ्गोंकी आभा निकलती है। यह वन प्रदेश रङ्गमहलकी दीवार तक पहुँचकर झरोखोंको स्पर्श करता है।

देखो वन ए नारंगी, जानों उनथें एह अधिक ।

सुख लेती रूहें इन घाट के, कब देसी हमें हक ॥ ४

इससे आगे नारङ्गीका वन है. लगता है कि जामुनके वनसे भी यह अधिक शोभायमान है. ब्रह्मात्माएँ इस घाट पर बैठकर अपार सुख प्राप्त करती हैं. धामधनी हमें ये सुख पुनः कब दिलाएँगे ?

घाट नारंगी अति भला, जानों कोई ना इन समान ।

सो कब पावें सुख झीलना, जो हम लेतीं संग सुभान ॥ ५

यह नारङ्गीका घाट अति सुन्दर है. ऐसा प्रतीत होता है कि इसके समान अन्य कोई नहीं है. इस घाट पर (सोलह पहलके जलकुण्डमें) श्रीराजश्यामाजीके साथ जलक्रीड़ाका जो आनन्द प्राप्त होता है वह हमें पुनः कब प्राप्त होगा.

कै रंग बन छत्रियां, सुंदर अति सोभाए ।

करत अंबर में रोसनी, पोहोंची अरस हिडोलों जाए ॥ ६

इस वनके वृक्षोंकी शाखाओंकी विभिन्न रङ्गकी छत्रियाँ अत्यन्त शोभायुक्त हैं. इनका प्रकाश आकाशको भी प्रकाशित करता हुआ वट-पीपलकी चौकी पर लटकते हुए झूलों तक पहुँचता है.

सोभा बट घाट क्यों कहूं, तरफ चारों चार दिवाल ।

जरी किनारें दोऊ सोभित, क्यों देऊं इन मिसाल ॥ ७

वट घाट पर स्थित इन वटवृक्षोंकी शोभाका वर्णन कैसे करें ? इन वृक्षोंके चारों ओर वटवृक्षजटा (वड़वाइयों) की चार दीवारें दिखाई देती हैं. यमुनाजीके दोनों रत्नजड़ित किनारों पर सुशोभित इस वट वनकी उपमा किस प्रकार दी जाए ?

ऊपर विराजत हिडोले, तरफ चारों सोभित ।

ऊपर जल पुल लगते, ए सुख कहां गए अतंत ॥ ८

इन वटवृक्षों पर चारों ओर लगे हुए ऊँचे झूले अत्यन्त शोभायुक्त हैं. झूलते

समय ये झूले यमुनाजलके ऊपर वट पुल तक पहुँच जाते हैं. ये अनन्त सुख अब कैसे अदृश्य हो गए हैं ?

क्यों कहूँ रेती इन भोम की, जानो उज्ज्वल मोती सेत ।

ए सुख हमारे कहाँ गए, जो इन भोमोंमें लेत ॥ ९

यहाँकी भूमिकी रेतके विषयमें क्या कहें ? वह उज्ज्वल मोतीके समान श्वेत रङ्गकी है. इस भूमिकामें हम जो सुख प्राप्त कर रहे थे वे अब कहाँ अदृश्य हो गए हैं ?

अचरज वन इन घाट का, सोभित ज्यों मंदर ।

बेल पात फूल फल छाँहें, ए सोभित अति सुंदर ॥ १०

इस घाट पर स्थित वनोंमें यह आश्चर्य है कि ये वन मन्दिरकी भाँति शोभायमान हैं. यहाँकी लताएँ, पत्ते, फूल, फल तथा उनकी छाया अत्यन्त सुन्दर शोभायुक्त हैं.

कहां सुख सातों घाट के, कहां सुख पुल मोहोलात ।

कहां सुख झरोखे जल पर, जो तलें नेहेँ चली जात ॥ ११

इन सातों घाट तथा यहाँके पुल पर शोभायमान प्रासाद एवं जल पर दिखाई देने वाले झरोखे आदिके सुख अब कहाँ चले गए हैं ? जिनके नीचेसे होकर यमुनाजी बहती हुई नहरकी भाँति चली जाती हैं.

जोए बट थें कुंज वन चल्या, बोहोत रेती बीच ताए ।

ताल हिंडोलों बीच होए, आगूं निकस्या जाए ॥ १२

यमुनाजीके तट पर स्थित वट घाटसे कुञ्जवन आरम्भ होता है. इसके अन्दर अत्यधिक रेत बिछी हुई है. यह वन वट-पीपलकी चौकीके झूलों तथा हौजकौसर तालके मध्यसे होकर आगे अक्षरधाम तक पहुँचा हुआ है.

किन विध लेवें सुख वन के, क्यों हिंडोले हिंचत ।

किन विध रूहें अरस में, माहों माहें केल करत ॥ १३

हम इन वनोंमें किस प्रकारका आनन्द प्राप्त करती थीं, यहाँके झूलोंमें कैसे

झूलती थीं, हम परमधाममें परस्पर किस प्रकारकी लीलाएँ करती थीं, अब यह सुख पुनः कब प्राप्त होगा ?

मोहोल बने बेलियन के, सेज हिडोले सिंघासन ।

चेहेबच्चे फुहारें कै सुख, कब होसी रूहन ॥ १४

कुञ्जवनमें लताओंके मण्डप शोभायमान हैं. उनमें शय्या, झूले तथा सिंहासन भी हैं. वहाँके जलकुण्ड तथा फुहारोंका सुख हम ब्रह्म-आत्माओंको पुनः कब प्राप्त होगा ?

इन मंदिरों सेज्या सिंघासन, छोटे चेहेबच्चे हिडोले ।

कै फुहारे नेहरें चलें, धनी हमें कब सुख देओगे ए ॥ १५

यहाँ पर स्थित लतामण्डप (मन्दिरों) में शय्या, सिंहासन, छोटे-छोटे जलकुण्ड तथा झूले आदि शोभायमान हैं. इन जलकुण्डोंसे अनेक फुहारे उठते हैं, उनसे नहरें चलती हैं. हे धामधनी ! आप हमें इन सुखोंको पुनः कब प्रदान करेंगे ?

कहां सुख गलियां अरस की, माहों माहें बांध के होड ।

रूहें रेती में ठेकतियां, दौडतियां कर जोड ॥ १६

परमधामकी इन गलियोंका वह सुख कहाँ चला गया, जहाँ पर हम ब्रह्मात्माएँ परस्पर स्पर्धा करती हुई रेतीमें छलाङ्ग मारती हुई दौड़ती हैं.

इन घाट आगूं पुल जोए पर, जाए पार पोहोंच्या पुल ।

ए भी तिन बराबर, जो पेहेले कहाा अव्वल ॥ १७

इस घाटके आगे यमुनाजीके दोनों तटोंको जोड़ता हुआ वटका पुल है. यह पुल भी उसी प्रकार शोभायमान है जैसे पूर्व वर्णित केलका पुल है.

बन जो दोऊ किनारों, साम सामी सोभात ।

हारें चौकी पांच हार की, पोहोंची पुल पर छत ॥ १८

यमुनाजीके दोनों तटों पर स्थित सातों घाटोंके वन आमने-सामने सुशोभित

हैं. पाल पर बड़े वनके वृक्षोंकी पाँच पङ्क्तियाँ तथा चार चौक हैं. इनकी पाँच भूमिकाएँ तथा छड़ी चाँदनी हैं. इन वृक्षोंकी शाखाएँ पुलमहलके छज्जों तक छायी हुई हैं.

पुल तलें नेहरें चलें, दोऊ पुल मुकाबिल ।

दोऊ बीच सोभा देय के, जाए ताल पोहोंच्या जल ॥ १९

दोनों पुलोंके मध्य भागमें नीचे यमुनाजी दस नहरोंके रूपमें प्रवाहित होती हैं. दोनों पुलोंको शोभा देता हुआ इन नहरोंका जल हौजकौसर तालमें समाहित हो जाता है.

कहां गए सुख जोए के, जमुना जरी किनार ।

कहां सुख जल कहां झीलना, कहां नित नए सिनगार ॥ २०

यमुनाजीके तटोंके वे सुख हम कहाँ भूल गई ? जहाँ रत्नजड़ित तट पर बैठकर हम आनन्द लेती थीं. यमुनाजल पर जलक्रीड़ा तथा नित्य नये शृङ्गारके वे क्षण न जाने अब कहाँ अदृश्य हो गए हैं.

दोऊ किनारें जोए के, एक मोहोल एक चबूतर ।

कहूं हेम रंग कहूं जवेर, अति सोभित वन ऊपर ॥ २१

यमुनाजीके दोनों तटों पर क्रमशः एक प्रासाद एवं एक चबूतरा हैं. यहाँके वनके ऊपर कहीं स्वर्णिम तथा कहीं रत्नोंकी आभा झलकती हुई अत्यन्त सुन्दर लगती है.

जमुना दोऊ किनार के, मोहोल ढांपिल दोऊ ओर ।

तलाब तरफ जोए आए के, जाए माहें मिली मरोर ॥ २२

यमुनाजी जहाँसे मुड़कर हौजकौसर तालकी ओर जाती है वहाँ पर उनके दोनों तटों पर स्थित प्रासाद (९०-९० देहुरियाँ) इन वनोंसे दोनों ओरसे आच्छादित प्रतीत होते हैं.

प्रकरण २१ चौपाई ११०९

अब ताल पाल की क्यों कहूँ, बन पाँच हार गृदवाए ।

फिरती देहुरी चबूतरे, सोभा इन मुख कही न जाए ॥ १

अब हौजकौसर तालकी पालकी शोभाका वर्णन कैसे करें ? इसके चारों ओर बड़े वनके वृक्षोंकी पाँच पङ्क्तियाँ हैं. इस पर एक सौ अठ्ठाईस देहुरियाँ एवं चबूतरे हैं. इस प्रकार इस पालकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

बड़े घाट ताल के चार हैं, चारों सनमुख बराबर ।

दोऊ तरफ उतरती देहुरी, तलें आगूँ चबूतर ॥ २

इस ताल पर चारों दिशाओंमें चार बड़े घाट हैं. वे एक दूसरेके सम्मुख समान रूपसे दिखाई देते हैं. प्रत्येक घाटकी दोनों ओर देहुरियाँ हैं एवं नीचे उनके सामने चबूतरे हैं.

पाल ऊपर जो देहुरियाँ, आगूँ हर देहुरी चबूतर ।

तिन दोऊ तरफों सीढियाँ, जित होत चढ उतर ॥ ३

पालके ऊपर स्थित प्रत्येक देहुरीके समाने एक-एक चबूतरे हैं. उनके दोनों ओर सीढियाँ हैं. उनसे होकर चढ़ना-उतरना होता है.

सीढी मुकाबिल सीढियाँ, आए मिलत हैं जित ।

दो दो बीच द्वार ने, सबों सोभित परकोटे इत ॥ ४

इन देहुरियोंमें एक सीढीके सामने दूसरी सीढी है. दोनों सीढियाँ जहाँ आकर मिल जाती हैं वहाँ पर एक दूसरेके सम्मुख दो द्वार हैं. इन सभी सीढियों पर कटहरा है.

खिडकी मुकाबिल खिडकियाँ, अंदर बाहेर जे ।

जो सुख हैं मोहोलन के, कब लेसी हम ए ॥ ५

यहाँ पर स्थित प्रासादोंकी खिड़कियाँ भी अन्दर-बाहर एक दूसरेके सम्मुख शोभायमान हैं. इन प्रासादोंके सुखोंका अनुभव हम कब कर पाएँगी ?

ऊपर परकोटे कांगरी, ऊपर हर द्वारनों ।

कांगरी पाल किनार पर, सिफत आवे ना जुबां मों ॥ ६

प्रत्येक द्वार (मेहराब) के ऊपर तथा सीढ़ियोंके कटहरे पर काँगरी शोभायमान है. पालके किनारे पर भी ऐसी ही काँगरी है. उसकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

दोऊ द्वार बीच मेहेराब जो, ए सोभा कहूं क्यों कर ।

पडसाल आगूं सबन के, गृदवाए सोभा जल पर ॥ ७

दोनों द्वारोंके मध्य भीतर और बाहरके तोरणोंकी शोभाका वर्णन किस प्रकार करें ? सभी तोरणोंके सामने बैठनेका खुला स्थान (पडसाल) है. पालके चारों ओरकी यह शोभा जल पर छायी हुई है.

अब जल की सोभा क्यों कहूं, हम करतीं इत झीलन ।

चित चाहे करें सिनगार, ए सुख कब लेसी मोमन ॥ ८

अब जलकी शोभाका वर्णन कैसे करें ? हम ब्रह्मात्माएँ वहाँ पर जलक्रीड़ा करतीं थीं तथा मनोवाञ्छित शृङ्गार धारण करतीं थीं. ब्रह्मात्माएँ अब इन सुखोंको पुनः कब प्राप्त करेंगी ?

मासूक संग सुख मिल के, इत हिडोले पाल पर ।

सो सुख याद क्यों न आवहीं, जो हम लेतीं मिलकर ॥ ९

पालके ऊपर स्थित वृक्षों पर लगे हुए झूलों पर हम सभी ब्रह्मात्माएँ धामधनीके साथ झूलतीं थीं. वहाँ पर हम सभी मिलकर जो सुख प्राप्त करतीं थीं, अब वे स्मृतिमें क्यों नहीं आ रहे हैं ?

सब एक हीरे की पाल है, टापू मोहोल याही के ।

अनेक रंग कै जुगतें, किन विध कहूं मुख ए ॥ १०

यह पाल एक ही हीरेकी है. तालके मध्यमें स्थित द्वीप भवन (टापूमहल) भी एक ही हीरेका है. इससे विभिन्न रङ्गोंकी किरणें निकलतीं हैं. इस अद्वितीय शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे किया जाए ?

चाँदनी झरोख बैठ के, किन विध लेतीं सुख ।

सो याद देत धनी इन जिमी, काल क्यों काटूं माहें दुख ॥ ११

द्वीपके प्रासादकी चाँदनी एवं झरोखोंमें बैठकर हम ब्रह्मात्माएँ किस प्रकार आनन्दका अनुभव करतीं थीं ? धामधनी सद्गुरुके रूपमें आकर उन्हीं सुखोंका स्मरण करवा रहे हैं। इन सुखोंको भूलकर दुःखमय जगतमें हमारा समय कैसे व्यतीत हो सकता है ?

हकें सुख अरस देखाइया, इलम दे करी बेसक ।

हम क्यों रहें इन मासूक बिना, जो कछुए होए इसक ॥ १२

धामधनीने अपना सन्देह निवारक (तारतम) ज्ञान देकर परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव करवाया। यदि हममें लेशमात्र भी प्रेमका अहोभाव है तो हम अपने प्रियतम धनीके बिना यहाँ पर कैसे रह सकतीं हैं ?

इन मोहोल सुख रूहों के, और सुख घाटों चार ।

हाए हाए क्यों जाए हमें रातदिन, ए सुख बैठी रूहें हार ॥ १३

हम ब्रह्मात्माएँ पङ्क्तिबद्ध बैठकर द्वीप प्रासाद एवं चारों घाटोंके आनन्दका अनुभव करतीं थीं। खेद है कि इनके बिना इस नश्वर जगतमें हमारे रात-दिन कैसे व्यतीत हो रहे हैं ?

याद देत हक ए सुख, हाए हाए तो भी न लगे घाए ।

ऐसी बेसकी ले क्यों रहे, जो होए अरस अरवाए ॥ १४

धामधनी सद्गुरुके रूपमें आकर हमें वारंवार इन सुखोंका स्मरण करवाते हैं। किन्तु खेदकी बात है कि फिर भी हमें उनके वचनोंकी चोट नहीं लग रही है। यदि हम परमधामकी आत्माएँ हैं तो इस सन्देह निवारक ज्ञानको प्राप्त करने पर भी इस जगतमें कैसे रह रहीं हैं ?

हक हुकम ऐसा करत है, ना तो तेहेकीक ना रहे तन ।

अब हक इत रूहों राखत, कोई अचरज हांसी कारन ॥ १५

वस्तुतः धामधनीकी आज्ञासे ही ऐसा हो रहा है, अन्यथा हमारा शरीर निश्चय ही नहीं टिक सकता। कोई अद्भुत हँसी करवानेके लिए ही धामधनी ब्रह्मात्माओंके शरीरको अभी भी टिका रहे हैं।

याद करों सुख हांसीय के, के याद करों सुख पाल ।

के याद करों तलें मोहोल के, हाए हाए अजूं ना बदलत हाल ॥ १६

हे ब्रह्मात्माओ ! मैं उन आनन्द विनोदके क्षणोंको याद कर रहा हूँ. सुखपालमें बैठकर किए हुए विहारको भी याद कर रहा हूँ. इतना ही नहीं प्रासादोंके अन्दर व्यतीत हुए क्षणोंको भी याद कर रहा हूँ तथापि खेदकी बात है कि अभी भी हमारी स्थितिमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है.

प्रकरण २२ चौपाई ११२५

नेहरें मोहोलों में

सुख नेहरों का अलेखे, सब ऊपर मोहोलात ।

कै भेली कै जुदियां, तरफ चारों चली जात ॥ १

परमधाममें रत्नों (जवेरों) की नहरोंसे अपार सुख प्राप्त होता है. सभी नहरोंके ऊपर प्रासाद हैं. कतिपय नहरें साथ-साथ मिलकर बहती हैं तो कतिपय अलग-अलग होकर चारों दिशाओंमें बहती हैं.

चार तरफ चार नेहरें, ऊपर से ढांपेल ।

कहूं चार आठ सोलें मिली, कै विध मोहोलों खेल ॥ २

चारों दिशाओंमें चार नहरें ऊपरसे ढकी हुई प्रवाहित होती हैं. यहाँ पर कहीं चार कहीं आठ तथा कहीं सोलह नहरें एक साथ मिलकर बहती हैं. यहाँके प्रासादोंमें अनेक प्रकारकी क्रीड़ाएँ होती हैं.

चारों खूटों मोहोल ढांपिल, जानूं के रचिया सेहेर ।

इन विध बराबर गलियां, आडी ऊंची गली बीच नेहेर ॥ ३

यहाँ पर चारों ओर प्रासाद ही प्रासाद ढँके हुए हैं. ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई नगर बसा हुआ है. नहरोंके मध्यमें वीथिकाएँ (गलियाँ) कहीं पर समान रूपसे हैं तो कहीं आड़ी-टेड़ी तथा ऊँची हैं.

कै कोट अलेखे पदमों, सेहेर बसें पसुअन ।

कै सेहेर हैं जानवर, सबों इसक अकल चेतन ॥ ४

यहाँ पर करोड़ों, पद्मों तो क्या पशु-पक्षियोंके ऐसे अनन्त नगर बसे हुए हैं.

ये सभी पशुपक्षी धामधनीसे प्राप्त चेतना, प्रेम तथा बुद्धिसे परिपूर्ण हैं।

यों कै नेहरें बीच सेहेरन के, इन सेहेरों कै मोहोलात ।

हर मोहोलों कै बैठकें, ए सोभा कही न जात ॥ ५

इन नगरोंके मध्यमें अनेक नहरें प्रवाहित होती हैं। इन नगरोंमें अनेक प्रासाद भी हैं। प्रत्येक प्रासादमें बैठनेके लिए अनेक सुन्दर स्थान हैं। उनकी शोभा व्यक्त नहीं की जा सकती।

अब नेहरें वरनन तो करूं, जो कछू होए हिसाब ।

मोहोल मोहल बीच कै कुंड बने, कै कारंजें छूटें ऊंचे आब ॥ ६

इन नहरोंका वर्णन तभी हो सकता है, जब इनकी गणना हो सके। यहाँ पर प्रत्येक प्रासादके मध्यमें अनेक कुण्ड शोभायमान हैं। उनसे ऊँचे-ऊँचे अनेक फुहारे निकलते हैं।

कै जल मोहोलों चढे, कै मोहोलोंसें उपरा ऊपर ।

कै लाखों हजारों बैठकें, सुख इत के कहूं क्यों कर ॥ ७

अनेक स्थानों पर इन नहरोंका जल प्रासादोंके ऊपर चढ़ता हुआ ऊपर पहुँचता है। यहाँ पर बैठनेके लिए हजारों, लाखों स्थान हैं। यहाँ पर प्राप्त होनेवाले सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए ?

कै मोहोल ऊंचे अति बडे, जैसे हक दिल चाहे ।

हर मोहोलों बीच नेहरें चलें, ए सुख बैठक कही न जाए ॥ ८

यहाँके अनेक प्रासाद अति ऊँचे तथा विशाल हैं। ये सभी धामधनीकी इच्छानुरूप सुशोभित हैं। प्रत्येक प्रासादके मध्यमें नहरें चलती हैं। यहाँकी बैठककी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

हर जातों मोहोल जुदे जुदे, जुदी जुगतें पानी चलत ।

जुदी जुदी जुगतें कारंजें, क्यों कर कहूं एह सिफत ॥ ९

यहाँ विभिन्न स्थानों पर पृथक्-पृथक् ढङ्गके प्रासाद शोभायमान हैं। उनके अन्दरकी नहरोंमें विभिन्न ढंगसे जल प्रवाहित होता है। यहाँके फुहारे भी विभिन्न ढंगके हैं। इन सभीकी शोभाका वर्णन कैसे करें ?

इन बड़े मोहोल सुख नेहरों के, हमें कब देओगे खसम ।

मांगे मंगाए जो देओ, सब हुआ हाथ हुकम ॥ १०

हे धामधनी ! इन बड़े-बड़े प्रासादोंके अन्दर प्रवाहित होने वाले नहरोंका सुख हमें पुनः कब प्रदान करेंगे ? इन सुखोंकी चाहना, इसके लिए प्रेरणा तथा इनकी परिपूर्ति सभी आपके ही आदेशके अधीन है।

सागर से नेहरें आवत, पानी जुदा जुदा फैलात ।

कै विध मोहोलों होए के, फेर सागरों में समात ॥ ११

यहाँ पर नीर सागरसे आता हुआ जल विभिन्न नहरों द्वारा अलग-अलग स्थानोंमें फैलता है एवं अनेक प्रासादोंसे होता हुआ पुनः उसी सागरमें समाहित हो जाता है।

कै चलत चक्राव ज्यों, कै आडी ऊँची चलत ।

कै चलत मोहोलों पर, कै मोहोलों से उतरत ॥ १२

यहाँ पर कतिपय नहरें गोलाकाररूपमें चलती हैं तथा कतिपय ऊँची-टेढ़ी चलती हैं। कतिपय नहरें प्रासादोंके ऊपर चढ़ती हुई दिखाई देती हैं तो कतिपय प्रासादोंसे नीचे उतरती हुई दिखाई देती हैं।

एक नेहर से कै नेहरें, जुदी जुदी फिरत ।

कै जुदी जुदी नेहरें होए के, कै एक में अनेक मिलत ॥ १३

इन नहरोंमें कतिपय मुख्य नहरोंसे अनेक नहरें निकलती हैं और चारों ओर फैल जाती हैं। इस प्रकार ये नहरें अलग-अलग होकर पुनः एकमें आकर समाहित होती हैं।

कै नेहरें मोहोलों मिने, चारों खूटों फिरत ।

कै मोहोल नेहरें कै, कै विध विधसों बिचरत ॥ १४

अनेक नहरें प्रासादोंके अन्दर चारों दिशाओंमें प्रवाहित होती हैं। इस प्रकार अनेक प्रासादोंमें अनेक नहरोंका जल अनेक प्रकारसे विचरण करता हुआ सर्वत्र फैल जाता है।

कहू चार नेहरें मिली चली, कहू चारसे सोलें निकसत ।

कै नेहरें सुख इन मोहोलों, धनी कब करसी प्राप्त ॥ १५

कहीं पर चार-चार नहरें एक साथ मिलकर चलती हैं तथा चारों विभक्त होकर सोलह नहरोंमें परिणत हो जाती हैं। हे धामधनी ! इन अनेक नहरों तथा प्रासादोंसे प्राप्त सुख हमें पुनः कब दिलाएँगे ?

कहू नेहरें जाहेर चली, कै पहाडों के माहें ।

नेहरें पहाडों या सागरों, सोभा क्यों कहू इन जुबाएं ॥ १६

अनेक नहरें प्रकट रूपमें बहती हैं तो अनेक पर्वतके समान प्रासादोंके अन्दरसे बहती हैं। यहाँकी नहरें, पर्वतोंके समान प्रासाद तथा सागरोंकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

प्रकरण २३ चौपाई ११४१

मानिक पहाड के हिडोले

पहाड मानिक मोहोल कै, यों पहाड मोहोल अनेक ।

सब अपार अलेखें इन जिमी, कहां लों कहू विवेक ॥ १

माणिक्य पर्वत पर अनेक प्रासाद शोभायमान हैं। ये प्रासाद भी एक पर्वतका रूप धारण करते हैं। इस दिव्यभूमि पर इन असंख्य प्रासादोंकी अपार शोभाका वर्णन कहाँ तक किया जाए ?

बडे पहाड जो हिडोले, बारे हजार बैठत ।

एकै छपर खटके, हक हादी साथ हींचत ॥ २

इस विशाल पर्वत पर लगे हुए झूलोंमें एक-एकमें बारह-बारह हजार ब्रह्मात्माएँ बैठती हैं। यहाँ बैठकर श्रीराजश्यामाजी सखियोंके साथ एक ही झूलेमें बैठकर झूलते हैं।

अनेक पहाड कै हिडोले, जुदी जुदी कै जुगत ।

जो सुख हिडोले पहाड के, जुबां कर ना सके सिफत ॥ ३

यहाँ पर पर्वतके समान अनेक प्रासाद हैं, उनमें अलग-अलग प्रकारके अनेक

झूले हैं. इन प्रासादों पर लगे हुए झूलोंसे प्राप्त होने वाले आनन्दका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

कै हिडोले पहाड में, ऊपर से ढांपेल ।

सुख लेवें कै विध के, रूहें करें कै खेल ॥ ४

पर्वतके समान इन प्रासादों पर लगे हुए अनेक झूले ऊपरसे ढँके हुए हैं. यहाँ पर विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हुई आत्माएँ अनेक प्रकारके सुख प्राप्त करती हैं.

कै सुख लें मीठे पहाड के, कै विध हींचें हिडोले ।

कै सुख हिडोले बाहेर, बीच पहाड के खुले ॥ ५

इस पर्वत पर लगे हुए झूलोंमें झूलती हुई आत्माएँ विभिन्न प्रकारके मधुर सुख प्राप्त करती हैं. ये झूले कतिपय पर्वतके बाहर दिखाई देते हैं तो कतिपय पर्वतके अन्दर दिखाई देते हैं.

एक जरा इन जिमी का, जोत न माए आसमान ।

जोत जवेरों पहाडों के, इत कहा कहे जुबान ॥ ६

यहाँकी भूमिके एक कणकी ज्योति भी आकाशमें समाती नहीं है तो इन रत्नमय पर्वतोंकी ज्योतिके विषयमें यह जिह्वा क्या कह सकती है ?

कोई पहाड गृदवाए का, कोई बराबर खूटों चार ।

जो सोभा पहाडन की, खूबी न आवे माहें सुमार ॥ ७

यहाँके पर्वतके समान प्रासादोंमें कोई गोलाकार हैं तो कोई वर्गाकार हैं. इन प्रासादोंकी शोभाका कोई पारावार नहीं है.

जिमी गृदवाए पहाडों की, सब देखत बराबर ।

पहाड भी सीधे सब तरफों, जानों हकें किये दिल धर ॥ ८

इन पर्वत शृङ्खलाओंके चारों ओरकी भूमि एक समान समतल दिखाई देती है. ये पर्वत भी सब ओरसे सीधे दिखाई देते हैं, मानों धामधनीने इन्हें हृदयपूर्वक बनाया हो.

कै मोहोल पहाडों मिने, कै मोहोल पहाडों ऊपर ।

जो बन पहाड या जिमीएँ, सो इन जुबां कहूं क्यों कर ॥ ९

यहाँ पर अनेक प्रासाद पर्वतके अन्दर हैं तो अनेक प्रासाद पर्वतके ऊपर हैं। यहाँके पर्वत, भूमि तथा वनकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे किया जाए ?

ना सुख कहे जाए जिमी के, ना सुख कहे जाए वन ।

ना सुख कहे जाए मोहोलों के, ना सुख कहे जाए पहाडन ॥ १०

न यहाँकी भूमिके सुखोंका वर्णन हो सकता है और न ही यहाँके वनप्रदेश, प्रासादों तथा पर्वतोंके सुखोंका वर्णन किया जा सकता है।

कै पहाड झिरने झिरें, कै ऊपर नेहेरें चली जाए ।

कै उतरें ऊपर से चादरें, कै तालों बीच आए समाए ॥ ११

यहाँके अनेक पर्वतोंसे जलप्रपात (झिरने) गिरते हैं तो अनेक पर्वतोंके ऊपर (चाँदनी पर) नहरें चलती हैं। अनेक स्थानों पर नहरें ऊपरसे जल धाराओंके रूपमें नीचे उतर कर तालमें जाकर समा जाती हैं।

नेहेरें वन में होए चलीं, सो नेहेरें कै मिलत ।

आगूं आए मोहोल वन के, इत चली कै जुगत ॥ १२

यहाँ पर अनेक नहरें वनसे होकर अलग-अलग रूपमें बहती हुई एकसाथ महानदमें मिलती हैं। इसके आगे वनके महल हैं। यहाँकी शोभा विभिन्न प्रकारकी है।

ए सुख हमारे कहाँ गए, ए जो खेल होत दिन रात ।

हक के साथ हम सब रूहें, हंस हंस करतीं बात ॥ १३

इस दिव्य प्रदेश पर दिन रात होने वाली क्रीड़ाओंसे प्राप्त होनेवाले हमारे सुख अब कहाँ अदृश्य हो गए हैं ? हम सभी ब्रह्मात्माएँ यहाँ पर हँस-हँस कर धामधनीके साथ बात करती थीं।

प्रकरण २४ चौपाई ११५४

वनके मोहोल नेहरें

वन छाया जो मोहोल है, इत मोहोल बने वन के ।

जानों वन सोभा अतंत है, सब सुख लेतीं रूहें ए ॥ १

यहाँ पर वनकी छायामें स्थित प्रासाद वृक्षोंकी शाखाओंके द्वारा बने हुए हैं। यहाँकी शोभा इतनी अद्वितीय है कि सभी ब्रह्मात्माएँ यहाँ बैठकर अखण्ड सुखका अनुभव करती हैं।

नेहरें सागर से खुली चली, सो भी भई वन माहें ।

ए वन सोभा नेहरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबांएँ ॥ २

सागरसे निकली हुई कुछ नहरें यहाँ पर खुले रूपमें प्रवाहित होती हुई पूरे वनमें व्याप्त होती हैं। वनकी इन नहरोंकी शोभाका वर्णन इस जिह्वासे कैसे हो सकता है ?

सागर किनारें जो वन, ए वन नेहरें बिबेक ।

मोहोल वन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक ॥ ३

सागरके किनारों पर स्थित इन वनोंमें विभिन्न प्रकारकी नहरें प्रवाहित होती हैं। इस वनप्रदेशमें स्थित प्रासादोंकी शोभा देखते हैं तो एकसे बढ़कर दूसरा सुन्दर दिखाई देता है।

कै मोहोल ढिग सागरों, और कै मोहोल वनराए ।

तिनों में नेहरें चलें, हम सुख लेतीं इत आए ॥ ४

अनेक प्रासाद सागरके निकट स्थित हैं तो अनेक प्रासाद वन प्रदेशमें सुशोभित हैं। उन सभीमें नहरें प्रवाहित होती हैं। हम सभी ब्रह्मात्माएँ यहाँ आकर अपार सुख प्राप्त करती हैं।

ए वन नेहरें दूर लों, जहां लों, नजर फिरत ।

ए सुख संग सुभान के, हम कै विध लेतीं इत ॥ ५

जहाँ तक दृष्टि जा सकती है वहाँ तक वनकी ये नहरें दूर-दूर फैली हुई हैं। हम सभी आत्माएँ यहाँ आकर धामधनीके सान्निध्यका अपार सुख प्राप्त करती हैं।

इन वन की और मोहोल की, और पहाड़ हिडोले जे ।

जिमी सब बराबर, अरस लग देखिए ए ॥ ६

यहाँ पर वनप्रदेश तथा यहाँके प्रासाद एवं माणिक पहाड़ पर लगे हुए झूले आदिका वर्णन क्या करें, सभी स्थानोंकी भूमि रङ्गमहल तक समतल दिखाई देती है।

वन बिगरकी जो जिमी, जानों जरी दुलीचे बिछाए ।

ए दूब जोत आसमान लों, रह्या नूरै नूर भराए ॥ ७

वनके अतिरिक्त जो खुली भूमि दिखाई देती है, वहाँ पर रत्नजड़ित कालीनकी भाँति दूब बिछी हुई है। इस दूबकी ज्योति भी आकाश तक पहुँचती है। मानों, चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश भरा हुआ हो।

ए नेहेरे अति दूर लग, अति दूर देखे सागर ।

सागर नेहरें मोहोल जो, अति बडे देखे सुंदर ॥ ८

यहाँ पर दूर-दूर तक नहरें दिखाई देती हैं। उनसे भी अधिक दूरी पर सागर दिखाई देते हैं। यहाँके सागर, नहरें तथा प्रासाद सभी अति सुन्दर दिखाई देते हैं।

सागर किनारें मोहोल जो, सो जाए लगे आसमान ।

ए मोहोल जुदी जुदी जिनसों, इत सुख चाहिए सागर समान ॥ ९

सागरके तट पर स्थित (बड़ी राङ्गके) प्रासाद तो मानों, आकाशको स्पर्श कर रहे हों इतने ऊँचे हैं। यहाँके प्रासादोंकी रचना विभिन्न प्रकारकी है। यहाँ पर भी सागरके समान अपार सुख प्राप्त होते हैं।

कै मोहोल बराबर सागरों, मोहोल ऊंचे चढें अनेक ।

कै जुगतें सोभा सुंदर, ए क्यों कहे जुबां विवेक ॥ १०

यहाँके अनेक प्रासाद सागरके समान विशाल हैं साथ ही ये प्रासाद अत्यन्त ऊँचे भी हैं। उनकी शोभा अति सुन्दर है। यह जिह्वा इनके विषयमें क्या कह सकती है ?

कै मोहोल सुख सागरों, कै सुख टापू मोहोल ।

ए सुख अपार अलेखे, सो क्यों कहूं इनकी तोल ॥ ११

इन सागरोंके प्रासादोंमें विभिन्न प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार द्वीप पर स्थित प्रासादोंमें भी अपार आनन्द प्राप्त होता है। इन अनन्त सुखोंकी तुलना किस प्रकार की जाए ?

महामत कहे सुनो मोमिनों, बीच टापू जल गृदवाए ।

ए अति ऊंचे मोहोल सुंदर, देखो अपनी रूह जगाए ॥ १२

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, यहाँ पर चारों ओर जल तथा मध्यमें द्वीप शोभायमान है। अपनी आत्माको जागृत कर देखो, द्वीप पर स्थित गगनचुम्बी भवन अत्यन्त सुन्दर हैं।

प्रकरण २५ चौपाई ११६६

पुखराज से पाट घाट ताँई

सुख क्यों कहूं पहाड पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले ।

ऊपर चौड़े मोहोल चढते, मोहोल तीसरे तिन उपले ॥ १

पुखराज पर्वतके अपार सुखोंका वर्णन कैसे करूँ ? वहाँके प्रासाद नीचेसे ऊपरकी ओर क्रमशः चौड़े होते हुए चले गए हैं। उनके ऊपरके आकाशी महल तो नीचेके महलोंसे तीन गुने अधिक चौड़े हैं।

आठ पहाड तलें मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज ।

कै मोहोलातें आठों पर, ऊंचे रहे मोहोल बिराज ॥ २

पुखराज पर्वतके नीचे आठ निशान (पाँच पेड़, दो घाटियाँ, एक ताल) हैं। ऊपर बंगलों पर ताल सुशोभित है। इन आठों निशानों पर महल तथा ऊपर आकाशी महल शोभा ले रहे हैं।

ताल ऊपर जो मोहोलात है, आठ पहाड तलें जो इन ।

मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन ॥ ३

पुखराजी तालके ऊपर शोभायमान प्रासादके नीचे पहाड़के समान आठ

निशान हैं. ये प्रासाद (महल) आकाशको छूते हुए अलौकिक प्रकाश फैला रहे हैं.

निपट बड़े मोहोल पहाड के, निपट बड़े दरबार ।

कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार ॥ ४

इस पुखराज पर्वत पर पर्वतके समान ऊँचे-ऊँचे अति विशाल प्रासाद तथा विशाल सभागृह (दरबार) हैं. ब्रह्मात्माएँ यहाँका सुख पुनः कब प्राप्त कर सकेंगी ? हे धामधनी ! आप ही इन सुखोंको प्रदान करनेवाले हैं.

इत बड़े जानवर खेलत, आगूँ बड़े दरबार ।

ए सुख कब हम लेयसी, मोमिन इत इंतजार ॥ ५

यहाँ पर स्थित बड़े-बड़े दालानोंके सामने अनेक पशुपक्षी क्रीड़ा करते हैं. हम यहाँके सुखोंको पुनः कब प्राप्त करेंगी ? हम सभी ब्रह्मात्माएँ इसी प्रतीक्षामें बैठी हुई हैं.

कै रंगों कै विध खेलत, पहाड से सेत फील ।

दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील ॥ ६

इस पर्वत पर बड़े-बड़े श्वेत हाथी विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं. हे धामधनी ! (यह सब स्मरण करते हुए) आपके सान्निध्यके बिना हमारे प्राण ही नहीं टिक रहे हैं. आप हमें जागृत करनेमें क्यों विलम्ब कर रहे हैं ?

कहां गए सुख आपके, हम कहां पुकारें जाए ।

तुम बिना नहीं कोई कितहूँ, मोमिन बेसक किए बनाए ॥ ७

हे धामधनी ! आपके ये सभी सुख कहाँ अदृश्य हो गए हैं ? अब हम कहाँ जाकर इनके लिए पुकार करें ? तारतम्य जानने ब्रह्मात्माओंको इस प्रकार निःसन्देह कर दिया है कि आपके अतिरिक्त अन्य कोई भी कहीं नहीं है.

और सुख पहाड ताल के, तीनों तरफों मोहोलात ।

पहाड सुख मोहोल अंदर, जो कै नेहेरें, चली जात ॥ ८

पुखराजी तालके सुख भी अनन्त हैं. इसके तीनों ओर भव्य प्रासाद हैं. इन

प्रासादोंमें अनेक नहरें प्रवाहित होती हैं। इस प्रकार पुखराज पर्वतके प्रासादोंके अन्दर अपार सुख है।

गुरज दोऊ के बीच में, गिरत चादरें चार ।

चार चार हर एक में, उतरत सोले धार ॥ ९

पुखराजी तालकी चाँदनीसे दोनों गुर्जोंके मध्यसे होता हुआ जल चार धाराओंके रूपमें तालमें गिरता है। पुखराजी तालसे चार धाराओंसे पूर्वकी ओर बहता हुआ यह जल प्रत्येक भूमिकासे चार-चार धाराओंके रूपमें कुल सोलह धाराओंमें विभक्त होकर अधबीचके कुण्डमें गिरता है।

सो परत बीचले कुंड में, इत चारों तरफों देहेलान ।

ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान ॥ १०

उक्त सोलह धाराओंसे गिरा हुआ जल अधबीचके कुण्डमें पड़ता है। इस कुण्डके चारों ओर प्रासाद एवं दालान हैं। हम सभी ब्रह्मात्माएँ अपने धनीके साथ मिलकर यहाँके सुखोंका अनुभव कब करेंगी?

कब सुख लेसी बंगलों, जित नेहरें चलें चक्राव ।

बीच बीच बगीचे चेहेबचे, कै जल उतरे तलें तलाव ॥ ११

पुखराजजी तालके नीचेके बङ्गलोंका सुख हमें कब प्राप्त होगा, यहाँ पर चक्राकार नहरें बहती हैं। बीच-बीचमें वन, उपवन तथा जलकुण्ड हैं। इनसे होता हुआ यह जल नीचे तालमें आता है।

इन मोहोलों इन बंगलों, इन चेहेबच्चों बगीचों ।

ए सुख छाया बन की, कब देओगे हम कों ॥ १२

हे धामधनी ! इन प्रासादों, भवनों, जलकुण्डों, बगीचों तथा वनकी छायाके अपार सुख हमें आप पुनः कब प्रदान करेंगे ?

कै सुख बीच बंगलों, कै सुख खूब खुशाली खास ।

सो दिन कब हम देखसी, हकसों विविध विलास ॥ १३

यहाँके भवनोंमें भी अपार सुख है। यहाँ पर सेविकाओं (खूबखुशाली) से

भी अपार सुख प्राप्त होता है। यहाँ पर धामधनीसे आनन्दविलासके विभिन्न सुखोंके दिन हम पुनः कब प्राप्त कर पाएँगी?

एक सबद सखी बोलते, कै ठौरों उठे जी जी कार ।

मन सरूप कै सोहागनी, कै एक पांऊं खडियां हजार ॥ १४

यहाँ पर सखियोंके एक शब्द बोलते ही अनेक स्थानोंसे सेविकाओंकी 'जी-जी' की ध्वनि सुनाई देती है। ये सेविकाएँ सुहागिनी आत्माओंके मनस्वरूपा हैं, जो हजारोंकी संख्यामें इनकी सेवाके लिए एक पाँव पर खड़ी रहती हैं।

सखी कछुक मन में चाहत, सो आगूं खडी ले आए ।

यों चित चाहे सुख धामके, कब लेसी हम जाए ॥ १५

ब्रह्मात्माएँ जो भी इच्छा करती हैं, उसी समय ये परिचारिकाएँ उनकी इच्छाएँ पूर्ण करती हैं। परमधामके इच्छानुकूल ये सुख अब हम पुनः कब वहाँ जाकर प्राप्त करेंगी ?

जोए जितथें हुई जाहेर, कहां सुख इन चबूतर ।

आगू कुंड जल चलकत, बडा वन सोभा ऊपर ॥ १६

यमुनाजी जहाँसे प्रकट होती हैं, उस चबूतरेका सुख हमें कब प्राप्त होगा ? इससे आगे मूलकुण्डमें छलकते हुए जलकी शोभा तथा उसके ऊपर दिखाई देनेवाले बड़ेवनके वृक्षोंकी शोभा हमें कब दिखाई देगी ?

ए वन गिरद पुखराज के, बडा वन खूबी लेत ।

फेर मिल्या वन जोए के, नूर आकास भर्यो जिमी सेत ॥ १७

यह वन पुखराज पर्वतके चारों ओर फैला हुआ अति सुन्दर दिखाई देता है। पुनः यह यमुनाजीके दोनों तटों पर आकर मिलता है। इसका उज्ज्वल प्रकाश भूमि तथा आकाश तक व्याप्त हुआ है।

इत अनेक वनसपती, कै पसु पंखी करें जिकर ।

हम इत सुख लेतीं हकसों, जानों बैठक ऐही खूबतर ॥ १८

यहाँ पर अनेक प्रकारके वृक्ष हैं। इन पर विचरण करनेवाले पशुपक्षी भी धामधनीका गुणगान करते हैं। यहाँ पर हम धामधनीके साथ अपार आनन्दका

अनुभव करती हैं। ऐसा लगता है कि यही बैठक सर्वश्रेष्ठ है।

ए वन मोहोल कै विध के, बड़े बड़े कै बड़े रे ।

मोहोल मंदिरों हिसाब नहीं, चौड़े चौड़े कै चौड़े रे ॥ १९

बड़ावन, मधुवन तथा महावनके इस वनप्रदेश पर अनेक प्रकारके बड़े-बड़े प्रासाद हैं। यहाँके प्रासादों तथा मन्दिरोंकी गणना ही नहीं है। ये तो उत्तरोत्तर चौड़े होते हुए चले गए हैं।

जब पिछल चले पुखराज के, अति चौडो बडो विस्तार ।

ए वन खुबी क्यों कहूं आवत नहीं सुमार ॥ २०

जब यह वन पुखराज पर्वतके पीछेकी ओर दिखाई देता है तो वहाँ पर इसका विस्तार अत्यधिक दृष्टिगोचर होता है। इन वनोंकी विशेषताओंका वर्णन कैसे करें ? इनका कोई पारावार ही नहीं है।

एक एक पेड पर कै भोमें, भोम भोम कै जुगत ।

पसू पंखी एक वृख पर, कै जुगतें बास बसत ॥ २१

यहाँके एक-एक वृक्ष पर अनेक भूमिकाएँ (तल्ले) हैं। प्रत्येक भूमिका की रचना बड़ी युक्तिपूर्वक हुई है। एक-एक वृक्ष पर अनेक जातिके पशुपक्षी युक्तिपूर्वक निवास करते हैं।

कै तेज जोत प्रकास में, अवकास भरयो ताके नूर ।

जिमी मोहोल वन पसू पंखी, ए कब देखें अरस जहूर ॥ २२

इन वृक्षोंके तेजोमय प्रकाशसे सम्पूर्ण आकाश आच्छादित हुआ है। यहाँकी भूमि, प्रासाद, वन तथा पशुपक्षी आदिका हम अब पुनः कब दर्शन कर पाएँगी ? इनके प्रकाशसे पूरा परमधाम जगमगाता है।

ए वन जाए बड़े वन मिल्या, चल गया पुखराज पार ।

अरस वन सोभा क्यों कहूं, और वन दोऊ किनार ॥ २३

यह महावन पुखराज पर्वतके आगे बड़े वनसे मिलकर पुखराज पर्वतको घेरकर उससे आगे चला गया है। परमधामके इस वनकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? यह यमुनाजीके दोनों किनारों पर सुशोभित है।

कुंड आगे ढांपी चली, अदभुत ऊपर मोहोलात ।

अंदर बैठकें क्यों कहूं, दोऊ किनार लिए चली जात ॥ २४

मूलकुण्डसे निकलकर कुछ (आधी) दूर तक ढँकी हुई यमुनाजी आगेकी ओर प्रवाहित होती हैं। उनके दोनों किनारों पर अद्भुत प्रासाद (देहुरियाँ) हैं। उनके अन्दर विश्रामस्थलकी शोभाका वर्णन कैसे करें ? दोनों किनारों पर इसी प्रकारकी शोभा धारण कर यमुनाजी बहती हैं।

किनारे कठेडा बैठक, अति सुंदर थंभ सोभात ।

दोऊ तरफों चबूतरे, खूबी इन मुख कही न जात ॥ २५

पालके किनारे पर दोनों ओर कटहरा है। वहाँ पर बैठनेका सुन्दर स्थान है। उस पर अति सुन्दर स्तम्भ सुशोभित हैं। दोनों ओर चबूतरे हैं। इनकी भव्यताका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है।

जाए आगूं भई जोए जाहेर, ढांपिल दोऊ किनार ।

ऊपर कलस दोऊ कांगरी, और थंभ सोभित हारें चार ॥ २६

आगे जाकर यमुनाजी प्रकट होती हैं। उनके दोनों तट चबूतरों पर स्थित देहुरियों तथा वृक्षोंकी छायासे ढँके हुए हैं। देहुरीके ऊपर कलश एवं दोनों ओर कांगरी शोभायमान हैं, दोनों ओर दो-दो पङ्क्तियोंमें स्तम्भ सुशोभित हैं।

जड़ित किनारें, दोऊ जल पर, दोऊ कठेडे गिरदवाए ।

ए सुख लेती मासूक संग, इत अचरज बनराए ॥ २७

यमुनाजीके दोनों किनार जल पर प्रतिबिम्बित होने पर रत्न जड़ित-से दिखाई देते हैं। दोनों तट पर कटहरा है। ब्रह्मात्माएँ यहाँ पर प्रियतम धनीके साथ बैठकर अपार सुख प्राप्त करती हैं। यहाँकी वनराजि भी अद्भुत शोभायुक्त है।

इतथें चली तरफ ताल के, एक मोहोल एक चबूतर ।

दोऊ किनारें कुसादी होए चली, इत सोभा लेत यों कर ॥ २८

यहाँसे यमुनाजी पूर्व दिशामें बहती हुई दक्षिणकी ओर मुड़कर हौजकौसर तालकी ओर चली जाती हैं। उनके दोनों तटों पर क्रमशः एक प्रासाद एवं एक चबूतरा हैं। दोनों तटों पर खुली होकर प्रवाहित होती हुई यमुनाजी अपार शोभायुक्त हैं।

आगूं पुल इत आइया, ऊपर बडी मोहोलात ।

कै देहेलान झरोखे जल पर, जल चल्या घडनाले जात ॥ २९

आगे केलका पुल आता है। उसके ऊपर बड़े-बड़े प्रासाद हैं। उसके अनेक दालान तथा झरोखे जलपर प्रतिबिम्बित होते हैं। पुलके नीचेसे दस जलद्वारोंसे यमुनाजीका जल प्रवाहित होता है।

पुल पांच भोम छठी चांदनी, चारो तरफों बराबर ।

ए कहाँ गए सुख रूहन के, ए हम क्यों गये ठौर बिसर ॥ ३०

इस पुलमें पाँच भूमिका और छठी चाँदनी है। चारों ओरसे यह पुल समान दिखाई देता है। ब्रह्मात्माओंके ये सुख अब कहाँ चले गए हैं ? इस स्थानकी भव्यताको हम कैसे भूल गई हैं ?

सात घाट बने बीच में, पुल दूजा तिनके पार ।

दोऊ मोहोल झरोखे बराबर, इत हिडोले ठंडी बयार ॥ ३१

इस पुलके आगे सात घाट हैं। उनके बाद दूसरा पुल शोभायमान है। दोनों पुलों पर प्रासाद और झरोखे एक समान हैं। यहाँ पर लगे हुए झूलों पर बैठकर शीतल हवाका आनन्द लिया जाता है।

पुल से आगे घाट केल का, ले चल्या जमुना जोए ।

केल किनारें मिल्या मधुवन, पुखराज अरस बीच दोए ॥ ३२

केलके पुलके आगे केलका घाट है। यह केलका वन यमुना तटसे होकर मधुवन एवं बड़ावन तक फैला हुआ है। ये वन रङ्गभवन एवं पुखराज पर्वतके मध्यमें शोभायमान हैं।

लटक रही केलां जोए पर, अति खूबी खूबतर ।

ए सुख कब लेसी इन घाट के, खेलें विध विध जानवर ॥ ३३

यमुना तट पर स्थित केल घाट पर लगे हुए केलेके गुच्छे अति सुन्दर दिखाई देते हैं। ब्रह्मात्माएँ इन घाटोंके सुखका अनुभव पुनः कब प्राप्त करेंगी ? यहाँ पर अनेक पशुपक्षी भी क्रीड़ाएँ करते हैं।

इन आगूं घाट लिबोई का, लग्या हिडोलों जाए ।

क्यों कहूं छबी छत्रियन की, ए घाट अति सोभाए ॥ ३४

इससे आगे निम्बूका घाट है। यह वन ताड़वनके झूलों तक विस्तृत है। इन वृक्षोंके ऊपरका भाग छत्रके समान दिखाई देता है। इस प्रकार इसकी शोभा अति सुन्दर है।

इत सुख लेवें सब मिल के, रूहें बडी रूह हकसों ।

सो फेर सुख कब हम देखसी, लेसी बैठकें हिडोलों ॥ ३५

यहाँ पर सभी ब्रह्मात्माएँ मिलकर श्री श्यामाजी एवं श्री राजजीके साथ अपार आनन्दका अनुभव करती हैं। हम पुनः उन सुखोंको कब प्राप्त कर सकेंगी ? यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ धामधनी एवं श्यामाजीके साथ झूलोंमें बैठती हैं।

इन आगूं घाट सोभित, अति विराजे जोए किनार ।

काहूं काहूं बीच मोहोल है, वन सोभे हार अनार ॥ ३६

इस घाटसे आगे यमुनाजीके दोनों तटों पर अनारका घाट सुशोभित है। यहाँ पर बीचमें कहीं-कहीं प्रासाद भी हैं। इस प्रकार अनारका यह पङ्क्तिबद्ध वन अति सुशोभित है।

जाए मिल्या अरस दिवालें, सोलें गुरज झरोखे बीस ।

हर गुरज बीच बीच में, मोहोल सोभें झरोखे तीस ॥ ३७

यह अनारका वन रङ्गभवनकी दीवार तक पहुँचकर सोलह गुर्ज और बीस झरोखे तक पाँच सौ (५००) मन्दिरके क्षेत्रमें व्याप्त है। प्रत्येक गुर्जके मध्यमें तीस-तीस मन्दिर तथा झरोखे हैं।

इन घाटके ऊपर रोसन, पांच सै झरोखे ।

इन बन मोहोलों मासूक संग, सुख कब लेसी हम ए ॥ ३८

इस घाटके सामने रङ्गभवनकी दीवार पर (५०० मन्दिरमें) पाँच सौ झरोखे हैं। इस प्रकार इस उपवन तथा यहाँके प्रासादोंमें हम पुनः कब धामधनीके साथ सुख प्राप्त कर सकेंगी ?

ए झरोखे एक भोम के, यों भोम झरोखे नवों ठौर ।

तिन ऊपर चांदनी कांगरी, तापर बैठक विध और ॥ ३९

उपर्युक्त झरोखे एक भूमिकाके बताए गए हैं। इस प्रकार प्रत्येक भूमिकामें पाँच-पाँच सौ झरोखे हैं। सबसे ऊपर चाँदनीके किनारों पर कांगरी शोभायमान हैं। वहाँ पर बैठनेके लिए विभिन्न स्थान हैं।

आगूं पाट घाट मोहोल सुंदर, जल पर अति सोभाए ।

तलें घड़नाले तिनमें, बीच तीन नेहरें चली जाए ॥ ४०

अनारके घाटके आगे जलके अन्दर तक पहुँचा हुआ पाटका घाट अति सुन्दर है। इसके नीचे चार-चार स्तम्भोंके मध्य तीन जलद्वारों (घड़नालों) से जलकी तीन धाराएँ प्रवाहित होती हैं।

थंभ बारे पाट चांदनी, जल हिसे तीसरे जोए ।

चारों खूटों थंभ नीलबी, थंभ आठ चार रंग सोए ॥ ४१

इस घाट पर सोलह स्तम्भोंके ऊपरकी चाँदनी पर बारह स्तम्भ शोभायमान हैं। यह पाटका घाट यमुनाजीके तृतीय भाग (१५० मन्दिर) तक फैला हुआ है। इसके चारों कोनों पर चार स्तम्भ नीलमणिके हैं तथा शेष आठ स्तम्भ अन्य चार रङ्गों (हीरा, माणिक्य, पुखराज, पाच,) के हैं।

लग कठेडे रूहें बैठत, कै रंग जवेरों जोत ।

बीच बैठे मासूक आसिक, जल वन आकास उदोत ॥ ४२

ब्रह्मात्माएँ यहाँ पर किनारे पर स्थित कटहरासे संलग्न होकर बैठती हैं। कटहरा पर विविध रङ्गोंमें रत्नोंकी आभा झलकती है। ब्रह्मात्माओंके मध्यमें श्रीराजश्यामाजी विराजमान होते हैं। यहाँ पर यमुनाजल तथा वनकी किरणें आकाशमें जगमगाती हुई दिखाई देती हैं।

इत सोभित वन अमृत, और कै विध वन अनेक ।

ए जाए मिल्या लग चांदनी, अरस आगूं वन विवेक ॥ ४३

इस घाट पर अमृतवन शोभायमान है। इस उपवनमें विभिन्न प्रकारके अनेक वृक्ष हैं। यह वन चाँदनी चौक तक पहुँचा हुआ है। रङ्गभवनके सम्मुख यह वन अति शोभायुक्त है।

अब समूह की कहूँ

द्वार अरस अजीम का, और नूर द्वार जोए पार ।

ए सुख कब हम देखसी, इन दोऊ दरबार ॥ ४४

रङ्गभवनके मुख्य द्वारके सम्मुख यमुना पार अक्षरधामका मुख्य द्वार सुशोभित है। इन दोनों भवनोंके मनोहर दृश्यको देखकर हम पुनः कब आनन्दका अनुभव करेंगी ?

नूर पार भी एह वन, और पहाड पुखराज ।

इन आगूं बडा वन चल्या, रह्या सागरों लग विराज ॥ ४५

मधुवन, महावन तथा बड़ावनका यह वनप्रदेश रङ्गभवनसे होकर पुखराज पर्वत होते हुए अक्षरधाम तक विस्तृत है। इसका विस्तार यहाँसे भी आगे आठ सागरों तक विस्तृत है।

नजर फिरी मेरी दूर लग, देख्या वन विस्तार ।

नीला पीला स्याम सेत कै, कहों कहां लग कहूं न सुमार ॥ ४६

मेरी दृष्टि दूर-दूर तक पहुँची और मैंने इस पूरे वनके विस्तारको देखा। यहाँ पर नीले, पीले, श्याम तथा श्वेत वर्णके विभिन्न वृक्ष हैं। कहाँ तक वर्णन किया जाए, इनका कोई पारावार ही नहीं है।

जिमी सब बराबर, वन पोहोंच्या सागर जित ।

या वन या मोहोलों मिने, नेहेरें चली गैयां अतंत ॥ ४७

यहाँकी भूमि समतल है। यह वन सागरोंके तट पर्यन्त विस्तृत है। इन वनों तथा यहाँके प्रासादोंके अन्दर अनन्त नहरें प्रवाहित होती हैं।

पार ना पहाडों हिडोलों, नहीं मोहोलों नेहेरों पार ।

पार ना वन नेहेरें जिमी का, क्यों पसू पंखी होए निरवार ॥ ४८

यहाँके पर्वत, उन पर लगे हुए झूले, विभिन्न प्रासाद, नहरें तथा दिव्य भूमि आदि किसीका भी कोई पारावार नहीं है। यहाँके पशुपक्षीका निरूपण करना भी असम्भव है।

पार न आवे सागरों, और पार किनारों नाहें ।

पार ना मोहोलों किनारों, कै नेहेरें आवें जाएं ॥ ४९

यहाँके सागरों तथा उनके तटकी शोभा भी अपार है। इन आठ सागरोंके तट पर स्थित प्रासाद तथा वहाँ पर प्रवाहित हो रहे असंख्य नहरोंका भी कोई पारावार नहीं है।

मोहोल जिमी वन केहेत हों, और पहाड नेहेरें बनराए ।

ए कैसे होसी अरस के, ए देखो रूह जगाए ॥ ५०

हे ब्रह्मात्माओ ! मैंने परमधामकी भूमि, उस पर बने हुए प्रासाद, पर्वत, नहरें तथा वनराजिका वर्णन किया है परमधामकी इन दिव्य सामग्रियोंका वर्णन करना कैसे सम्भव है ? तुम अपनी आत्माको जागृत कर इनका अनुभव करो।

कै फौजें पसुअन की, कै फौजें जानवर ।

जिमी खाली कहूं ना पाइए, बसत अरस लसकर ॥ ५१

यहाँ पर पशु तथा पक्षियोंकी अनेक सेनाएँ विचरण करती हैं। यहाँ कोई भी भूमि रिक्त नहीं है।

जिमी वन ए लसकर, जिमी बस्ती न कहूं बैरान ।

सब आए मुजरा करत हैं, आगूं अरस सुभान ॥ ५२

यहाँ वन, उपवन तथा अन्य भूमि पर ये ही सेनाएँ दिखाई देती हैं। यहाँकी कोई भूमि निर्जन (विरान) नहीं है। सभी पशुपक्षी धामधनीके समक्ष आकर क्रीड़ा करते हुए उनका अभिवादन करते हैं।

ए पातसाही अरस की, केहेनी में आवत नाहिं ।

ए कहा वास्ते मोमिन के, जानों दिल दौडावें तांहि ॥ ५३

यह सम्पूर्ण वैभव (प्रभुत्व) परमधामका है। इसलिए इसे शब्दोंमें व्यक्त नहीं किया जा सकता। इतना भी ब्रह्मात्माओंके लिए ही कहा है जिससे वे अपना चित्त वहाँ पर दौड़ा सकें।

एक पात न गिरे वन का, ना खिरे पंखी का पर ।

एक जरा जाया न होवहीं, ए अरस जिमी यों कर ॥ ५४

इस दिव्यभूमिकी यह विशेषता है कि यहाँके वृक्षोंका एक पत्ता भी नहीं गिरता तथा यहाँके पक्षियोंका पङ्क्तु भी नहीं गिरता. इतना ही नहीं यहाँका कण मात्र भी क्षीण नहीं होता है.

सब जिमीएं मोहोल हकके, और सब ठौरों दीदार ।

सब अलेखे अखंड, कहे महामत अरस अपार ॥ ५५

यहाँकी भूमि तथा प्रासादोंमें सर्वत्र धामधनीके दर्शन होते हैं. महामति कहते हैं, परमधामकी यह भूमिका अखण्ड होनेसे इसका कोई पारावार ही नहीं है.

प्रकरण २६ चौपाई १२२१

पसू पंखियों की पातसाई

एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत ।

कायम अरस ख्वाब में, देखाया लेने लजत ॥ १

ब्रह्मात्माओंके लिए ही धामधनीने इस स्वप्नवत् जगतकी रचना कर स्वप्नकी वस्तुओंका उदाहरण दिया है. ब्रह्मात्माओंको अपना प्रभुत्व तथा प्रेमका अनुभव करवानेके लिए ही धामधनीने अखण्ड परमधाममें भी इस स्वप्नवत् जगतको दिखाया है.

ब्रह्मसृष्टि कही वेदने, एहेल अल्ला कहे फुरमान ।

निसबत सुख ख्वाब में, कर दर्ई हक पेहेचान ॥ २

वैदिक धर्मग्रन्थोंमें इन आत्माओंको ब्रह्मसृष्टि कहा है तथा कतेब ग्रन्थोंमें इनको परमात्माके उत्तराधिकारी (अहल अल्लाह) कहा है. इसलिए धामधनीने इनको इस स्वप्नवत् संसारमें भी अपने मूल सम्बन्धके सुखोंकी पहचान करवाई है.

एक साहेबी अरस की, और कोई काहूँ नाहिं ।

आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहिं ॥ ३

वस्तुतः एक परमधामका ही महत्त्व (प्रभुत्व) है, उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है. उसीके शाश्वत आनन्दका अनुभव करवानेके लिए ही धामधनीने

इस स्वप्नवत् जगतमें भी ब्रह्मात्माओंको परमधामका अनुभव करवाया है।

ख्वाब देखाई साहेबी, और अरस की हैयात ।

ए दोऊ तफावत देख के, दिल में सुख न समात ॥ ४

धामधनीने इस स्वप्नवत् जगतमें हमें अपना प्रभुत्व एवं परमधामकी शाश्वतताका अनुभव करवाया. इस जगतकी अनित्यता तथा परमधामकी शाश्वतताका अनुभव करने पर अब हमारे हृदयमें यह परमसुख समा नहीं पा रहा है.

अब कहूं अरस अजीम की, जो वन का विस्तार ।

नहीं इंतहाए जिमी जंगल का, ना पसू पंखी सुमार ॥ ५

अब मैं परमधामके वनके विस्तारका वर्णन करता हूँ. यहाँकी भूमि तथा वन उपवनका कोई अन्त नहीं है. इसी प्रकार यहाँके पशु-पक्षियोंका भी कोई पारावार नहीं है.

इन रेत रंचक की रोसनी, आकास न मावे नूर ।

तो रोसनी सब वन की, क्यों कर कहूं जहूर ॥ ६

यहाँकी रेतके कण मात्रका प्रकाश भी आकाशमें नहीं समाता है, तो फिर यहाँके सभी वन प्रदेशोंके तेजपुञ्जका वर्णन कैसे किया जाए ?

तेज ऐसो इन डारको, और पात को प्रकास ।

सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास ॥ ७

इन वृक्षोंकी एक-एक शाखाएँ तथा एक-एक पत्तोंका प्रकाश इतना अलौकिक है कि वह आकाशमें भी समाता नहीं है.

ए जुबां ना केहे सकत है, एक पात की रोसन ।

तो इन डारकी क्यों कहूं, जो प्रफूलित सब वन ॥ ८

इन वृक्षोंके एक पत्तेके प्रकाशका वर्णन भी जिह्वके द्वारा नहीं हो सकता है तो फिर इन शाखाओंका वर्णन कैसे हो सके गा, जिनसे सारा वनप्रदेश ही प्रफुल्लित हो उठा है.

डार पात सब नूर में, फल फूल बेलों जोत ।

केहे केहे मुख कहा कहे, सब आकास में उद्योत ॥ ९

यहाँके वृक्षोंकी शाखाएँ तथा पत्ते सभी तेजोमय हैं। इसी प्रकार फूल, फल तथा लताएँ भी ज्योतिर्मय हैं। इनका वर्णन इस जिह्वासे कैसे किया जाए ? सारा आकाश ही इनके द्वारा जगमगाया हुआ है।

वन गृदवाए अरस के, और एही गृदवाए ताल ।

एही गृदवाए जोए के, जुबां कहा कहे खूबी जमाल ॥ १०

यह वनप्रदेश रङ्गमहलके चारों ओर व्याप्त होकर हौजकौसर ताल तथा यमुनाजीके चारों ओर विस्तृत है। इसके सौन्दर्यका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

कह्या ऐसा ही वन नूरका, रेत ऐसे ही रोसन ।

तो नूर मोहोल की क्यों कहूं, जाको नामै नूर वतन ॥ ११

अक्षरधामके वन, उपवनकी शोभा भी इसी प्रकारकी है। वहाँकी रेती भी इसी प्रकार प्रकाशमय है। फिर अक्षरधामके प्रासादोंकी बात ही क्या करें, जिसका नाम ही प्रकाशमय धाम (नूर वतन) है।

तो अरस मोहोल की रोसनी, और मोहोल हौज जोए जे ।

नूर मोहोल ना केहे सकों, तो क्यों कहे जुबां नूर ए ॥ १२

जब अक्षरधामके प्रासादोंके तेजोमय स्वरूपका ही वर्णन नहीं हो सकता तो परमधामके रङ्गमहल, हौजकौसर ताल तथा यमुना तट पर स्थित प्रासादोंकी शोभाका वर्णन कैसे संभव है ?

सिरदार सब वन में, पसू पंखी जात जेती ।

खूबी बल हिकमत की, जुबां क्या कहेगी केती ॥ १३

परमधामके वन, उपवनके शिरोमणि पशुपक्षियोंकी विभिन्न जातियोंकी कला-कौशल एवं शक्तिका वर्णन यह जिह्वा कैसे कर सकती है ?

जिमी अरस की देखियो, हिसाब न काहूं सुमार ।

देख देख के देखिए, अनेक अलेखे अपार ॥ १४

परमधामकी भूमिको देखने पर लगता है कि इसका कोई पारावार ही नहीं

है. बार-बार इसे देखते ही रहें तो भी इसकी अपार शोभाकी गणना नहीं की जा सकती है.

तिन सब जिमी में बस्ती, कहूं पाइए नहीं बैरान ।

पातसाही पसुअन की, और जानवरों की जान ॥ १५

यह सम्पूर्ण भूमि आवासोंसे परिपूर्ण है. यहाँ पर कोई भी स्थान निर्जन नहीं है. यहाँ पशुपक्षी आदि भी अपने-अपने क्षेत्रमें अपना शासन चलाते हैं.

ए जो जिमी अरस हक की, सो बैरान क्यों कर होए ।

आबादान हमेसगी, आराम बिना नहीं कोए ॥ १६

श्री राजजीका यह दिव्य परमधाम निर्जन कैसे हो सकता है. यहाँ पर सर्वदा सर्वत्र वस्ती होती है. आनन्दके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य कुछ भी नहीं है.

अखंड आराम सबमें, चल ब्दिवचल इत नाहिं ।

सब सुख हैं अरस में, रहें याद हक के माहिं ॥ १७

यहाँ पर सर्वत्र अखण्ड आनन्द है. यहाँ लेश मात्र भी अस्थिरता नहीं है. इस दिव्य भूमिमें सब प्रकारके सुख विद्यमान है. यहाँकी सभी वस्तुएँ श्रीराजजीका स्मरण करती हैं.

अरसपरस हैं हक सों, आसिक हक के जोर ।

आवें दीदार को दरिया लेहेर ज्यों, कै पदमों लाख करोर ॥ १८

परमधाममें धामधनी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ अद्वैत स्वरूप हैं तथा उनसे ही शक्ति प्राप्त कर लाखों करोड़ों, पदोंकी संख्यामें यहाँके पशुपक्षी सागरके लहरोंकी भाँति उनके दर्शनार्थ आते हैं.

कै लेहेरें आवत हैं, जो नाहीं जिमी को पार ।

पीछे आवें दरिया पसुअन के, तिन दरियाव नहीं सुमार ॥ १९

सागरकी लहरोंके समान आते हुए ये पशुपक्षी परमधामकी पूरी भूमिमें व्याप्त होते हैं जिनका कोई पारावार नहीं है. सागरके अनन्त प्रवाहके समान इन पशुपक्षियोंका समूह दल-बलके साथ एकत्रित होता है.

दौड इनो के मन की, क्यों कर कहूं छंछेक ।

पोहोंचें सब कदमों तलें, जित खावंद सबों का एक ॥ २०

इनकी दौड़ मनकी गतिके समान द्रुत है। इनकी स्फूर्तिके विषयमें क्या कहा जाए ? वे क्षणमात्रमें ही अपने स्वामी श्रीराजजीके चरणोंमें उपस्थित हो जाते हैं।

जो ठौर चित में चितवें, हम जाए पोहोंचें तित ।

छिन एक बेर न होवहीं, जानों आगे खडे हैं इत ॥ २१

हम जिस स्थान पर पहुँचना चाहती हैं उसी क्षण वहाँ पर पहुँच जाती हैं। एक क्षणका भी समय नहीं लगता कि ये पशुपक्षी हमारी कल्पनाके अनुरूप वहाँ पर पहलेसे ही खड़े दिखाई देते हैं।

एक हक अरस के नजीक हैं, कोई दूर दूर से दूर ।

आवत सब दीदार को, जानों आगे खडे हजूर ॥ २२

कतिपय पशुपक्षी रङ्गभवनके निकटके वनमें रहते हैं तो कतिपय दूर-दूरके वनमें रहते हैं। जब वे धामधनीके दर्शनके लिए आते हैं तो ऐसा लगता है कि वे उनके चरणोंमें पहलेसे ही उपस्थित हैं।

हिकमत बल इनो के, क्यों कर कहे ए जुबान ।

दीदार पावें अरस हक का, सो देखो दिल आन ॥ २३

इनकी कला, कौशल तथा शक्तिके सम्बन्धमें इस जिह्वासे क्या कहा जाए ? वे अपनी इच्छानुकूल समय पर धामधनीका दर्शन कर सकते हैं। उनकी इस क्षमताको अन्तर्दृष्टिसे ही देखा जा सकता है।

क्यों न होए बल इनोको, जाको अमृत हक सींचत ।

ए पाले पोसे खावंद के, अरस तलें आवत ॥ २४

इन पशुपक्षियोंमें यह सामर्थ्य क्यों नहीं हो सकता जब उनके ऊपर स्वयं धामधनीकी अमृतवर्षा होती रहती है। धामधनीके द्वारा पालित तथा पोषित ये सभी उनके दर्शनके लिए रङ्गभवनके सामने चाँदनी चौकमें चले आते हैं।

विचार किए पाइयत है, इनों बल हिकमत ।

ए किया निमूना पावने, इन कादर की कुदरत ॥ २५

हृदयपूर्वक विचार करने पर ही इनकी शक्ति एवं कला, कौशलका अनुमान किया जा सकता है. धामधनीके सामर्थ्यको समझनेके लिए ही नश्वर संसारका यह उदाहरण है.

हकें देखाई इन वास्ते, अपनी जो कुदरत ।

अरस बडाई पाइए, ए देखें तफावत ॥ २६

इसी प्रभुत्वको समझानेके लिए धामधनीने यह नश्वर खेल दिखाया है. यह नश्वर जगत एवं परमधामकी दिव्यताका अन्तर देखकर ही परमधामके महत्त्वको समझा जा सकता है.

करत सबे साहेबियां, जिमी जुगत भर पूर ।

दोऊ वखत आवत हैं, देखन हक का नूर ॥ २७

परमधामके ये सभी पशुपक्षी वहाँकी पूरी भूमि पर अपना प्रभुत्व जमाते हैं इस प्रकार वहाँ पर विचरण करते हैं. वे दोनों समय (प्रातः एवं सायं) श्रीराजजीके दिव्य स्वरूपका दर्शन करनेके लिए चाँदनी चौकमें चले आते हैं.

पातसाई पसू पंखियन की, करत बिना हिसाब ।

अखंड अलेखे अति बडे, पिएं नूर हैयाती आब ॥ २८

परमधाममें इन पशुपक्षियोंकी प्रभुसत्ता अवर्णनीय है. ये सभी असंख्य पशुपक्षी धामधनीका दर्शन कर उनकी कृपारूपी अमृतका पान करते हैं.

हिसाब नहीं पसुअन को, हिसाब नहीं पंखियन ।

नाहीं हिसाब वन जिमी को, जो बीच कायम वतन ॥ २९

परमधाममें पशुपक्षी, तथा दिव्य भूमि एवं वन, उपवनका कोई पारावार नहीं है.

बसत सबे अरस तलें, कै पदमों लाख करोर ।

करत पूरी पातसाहियां, पसू पंखी दोऊ जोर ॥ ३०

लाखों, करोड़ों, पद्मोंकी संख्यामें ये पशु-पक्षी यहीं पर रहते हैं तथा वहाँ

पर अपना प्रभुत्व जमाते हैं.

जो कोई दूर बसत हैं, सो जानों आगे हजूर ।

बोहोत बल हिकमत, सब अंगों निज नूर ॥ ३१

जो पशुपक्षी दूर भी रहते हैं वे भी सर्वदा धामधनीकी निकटताका अनुभव करते हैं. इनका बल तथा कला-कौशल श्रीराजजीके अलौकिक प्रकाशसे परिपूर्ण है.

जित मनमें चितवें, तित पोहोंचें तिन वखत ।

ऐसा बल रखे हक का, कायम जिमी में बसत ॥ ३२

अखण्ड भूमिमें रहनेवाले इन पशुपक्षियोंको धामधनीकी ऐसी शक्ति प्राप्त है कि वे जहाँ पहुँचनेकी कल्पना करते हैं उसी समय वहाँ पर पहुँच सकते हैं.

पसू पंखी इन वन के, जो जिमी वन सोभित ।

और सोभा पर नकस की, क्यों कर करूं सिफत ॥ ३३

परमधामके वन, उपवन तथा भूमिको सुशोभित करनेवाले इन पशुपक्षियोंके पंखों तथा रोमावलीकी शोभाका वर्णन कहाँ तक किया जाए ? उनमें विभिन्न प्रकारकी चित्रकारियाँ हैं.

पसु सुंदर अति सोहनें, मीठी बान बोलत ।

इनों सिफत जुबां क्यों कहे, जो खावंद को रिझावत ॥ ३४

यहाँके पशु अति सुन्दर हैं तथा मधुरवाणी बोलते हैं. वे अपनी मधुरवाणीसे धामधनीको प्रसन्न करते हैं. उनकी इस रीतिका वर्णन इस जिह्वके द्वारा नहीं हो सकता है.

कै भातें कै खेलौने, कै खेल खुसाली करत ।

कै विधों निरत नाच के, मासूक को हंसावत ॥ ३५

इस प्रकार धामधनीके खिलौनेके समान ये विभिन्न प्रकारके पशुपक्षी अनेक आनन्ददायी क्रीड़ाएँ करते हैं एवं विभिन्न प्रकारकी नृत्यकलाओंके द्वारा धामधनीको आनन्दित करते हैं.

अनेक बानी मुख बोलहीं, अनेक अलापें गाए ।

ऐसे वचन कै बोलहीं, किसी आवे न औरों जुबांए ॥ ३६

वे विभिन्न प्रकारकी वाणी बोलते हुए अनेक रागोंका अलाप करते हैं। वे धामधनीका गुणगान करते हुए ऐसे वचन बोलते हैं कि किसी अन्यसे इस प्रकार बोला ही नहीं जा सकता।

छोटे बड़े पसू पंखी, सब रिझावें साहेब ।

लडें खेलें बोलें बानी, विद्या कै विध साधें सब ॥ ३७

ये सभी छोटे-बड़े पशुपक्षी धामधनीको प्रसन्न करते हैं। इनमें विभिन्न प्रकारकी कला है। वे कतिपय द्वन्द्व करते हैं, कतिपय क्रीड़ा करते हैं तथा कतिपय अपने मुखसे मधुर वाणीका उच्चारण करते हैं।

कै जुदी जुदी विद्या जानवर, कै चढें कूदें ऊंचे फांदें ।

टेढे आडे सीधे उलटे, कै विध गत साधें ॥ ३८

इन पशुपक्षियोंमें विभिन्न प्रकारकी कला है। उनमें-से अनेक वृक्षों पर चढ़ते हैं तथा उतरते हैं कतिपय उछल-कूद करते हैं, कतिपय लाँघते हैं, कतिपय उलटी-सीधी तथा टेढ़ी-मेढ़ी गतिसे चलते हैं।

कै विध करें लडाइयां, कै विध नाचें मोर ।

कै विध हंसावें धनी को, खेल करें अति जोर ॥ ३९

इनमें-से मोर आदि पक्षी विभिन्न प्रकारके द्वन्द्व करते हुए नृत्य करते हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाओंके द्वारा धामधनीको हँसाया करते हैं।

निरमल नेत्र अति सुंदर, परों पर चित्रामन ।

मीठी बानी खूबी खेल की, कहां लों कहुं रोसन ॥ ४०

उनके निर्मल नेत्र अति सुन्दर हैं। उनके पङ्खों पर सुन्दर चित्रकारी है। उनकी मधुरवाणी ही उनकी सारी क्रीड़ाओंकी विशेषता है, उसका वर्णन कहाँ तक करें ?

और गत पसुअन की, खेल बोल इनों और ।

क्यों कहूं सिफत इनों की, जो बसत सबे इन ठौर ॥ ४१

इन पशुओंकी गति, क्रीड़ा तथा वाणी ही कुछ अन्य प्रकारकी हैं जिनकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। वे सभी दिव्य भूमिमें रहते हैं।

कै लडके देखावहीं, कै उड देखावें कूद ।

क्यों कहूं सिफत कायम की, इन जुबां जो नाबूद ॥ ४२

इनमें-से कतिपय अपनी द्वन्द्वकलाका प्रदर्शन करते हैं तो कतिपय उड़ते हैं तथा दौड़ते हैं। अखण्ड धामके इन पशुपक्षियोंका वर्णन नश्वर जिह्वाके द्वारा कैसे किया जाए ?

कै देत गुलाटियां, कै अनेक करें फैल हाल ।

सो सो गत देखावहीं, ज्यों हक हादी रूहें होत खुसाल ॥ ४३

कतिपय पशु गुलाटियाँ भरते हैं तथा अनेक प्रकारकी क्रीड़ाओंका प्रदर्शन करते हैं। वे ऐसी चाल चलते हैं कि जिससे धामधनी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ प्रसन्न होते हैं।

कै हंस गरूड केसरी, कै बाघ चीते घोडे ।

ए ऐसे कहे जानवर, उड आकास में दौडे ॥ ४४

इन पशुपक्षियोंमें हंस, गरूड, सिंह, बाघ, चीते तथा घोड़े आदि ऐसे अनेक हैं जो आकाशमें उड़ान भरते हैं एवं जमीनमें दौड़ लगाते हैं।

हाथी इत कै रंग के, अस्वारी के सिरदार ।

कबूं कबूं राजस्यामाजी रूहें, बडे बन करत विहार ॥ ४५

यहाँ पर अनेक रङ्गोंके हाथी हैं जो सवारीके लिए श्रेष्ठ माने जाते हैं। उन पर सवार होकर कभी-कभी श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ बड़ावनमें विहार करते हैं।

कबूं कबूं राज रूहन सों, मन बेगी सुखपाल ।

बडे वन मोहोलन में, करत खेल खुसाल ॥ ४६

कभी-कभी धामधनी ब्रह्मात्माओंके साथमें मनकी गतिसे चलनेवाले विमानों

(सुखपालों) में बैठकर बड़ावन स्थित प्रासादोंमें जाते हैं एवं वहाँ पर आनन्ददायी लीलाएँ करते हैं।

इत और वृख कै बडे, निपट बडे हैं वन ।

वन पर वन अति विस्तरे, कहां लग करूं रोसन ॥ ४७

यहाँ पर अनेक प्रकारके विशाल वृक्ष हैं। इस प्रकार यह वनप्रदेश बहुत विशाल माना जाता है। यहाँ वृक्षोंमें भूमिका (तल्ला) के ऊपर भूमिका का विस्तार है उनके प्रकाशका वर्णन कहाँ तक करें ?

एक पेड लम्बी डारियां, तिन डारों पर पेड अपार ।

पेड डारों कै भोम रची, जुबां कहा कहे ए विस्तार ॥ ४८

यहाँके वृक्षोंकी दीर्घ शाखाओं पर असंख्य वृक्ष दिखाई देते हैं। वृक्षोंकी इन शाखाओंसे भी अनेक भूमिकाएँ बनी हुई हैं। इस प्रकार समस्त विस्तारका वर्णन नहीं किया जा सकता।

इन भोम भोम कै मंदिर, पेड डारी कै दिवाल ।

छाया बनी पात फूल की, कै वन मंदिर इन हाल ॥ ४९

इन भूमिकाओं पर प्रत्येकमें अनेक मन्दिर हैं। यहाँ पर वृक्षोंकी शाखाएँ दीवारकी भाँति दिखाई देती हैं तथा पात एवं फूलकी छत बनकर छाया देती है। इस प्रकार इस वनमें विभिन्न प्रकारके मन्दिर हैं।

विस्तार बडा एक पेड पर, कहां लग कहूं जुबान ।

देखो विध एक वृख की, ए मंदिर न होए बयान ॥ ५०

यहाँ पर एक ही वृक्षका इतना बड़ा विस्तार है कि उसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता। मात्र एक ही वृक्षकी रचना पर दृष्टि डालेंगे तो भी उस पर निर्मित मन्दिरका वर्णन करना असम्भव हो जाता है।

एक वृख को वरनन, ऐसे कै वृख तिन वन माहिं ।

तिन पर विस्तार अति बडो, सेहेर बसत जानों ताहिं ॥ ५१

यह तो एक ही वृक्षका वर्णन हुआ है। इस प्रकारके अनेक वृक्ष इस वनमें

स्थित हैं. यह विस्तार इतना असीम है कि मानों यहाँ पर एक नगर बसा हुआ हो.

एक पेड दरखत का, कै दरखत तिन पर ।

तिन पर कै मंदिर रचे, कै रहेत अंदर जानवर ॥ ५२

इस वनकी यह विशेषता है यहाँके वृक्षोंकी एक शाखामें अनेक वृक्ष दिखाई देते हैं. एक- एक वृक्ष पर अनेक मन्दिर बने हुए हैं जिनके अन्दर पशुपक्षी आदि रहते हैं.

किनके पेड जिमी पर, कै पेड पेड ऊपर ।

यो पेड पर पेड आसमान लों, कै सोभा देत सुंदर ॥ ५३

यहाँ पर कतिपय वृक्ष भूमि पर खड़े हैं तो कतिपय वृक्ष वृक्षके ऊपर खड़े हैं. इस प्रकार वृक्ष ऊपर लगे वृक्ष आकाश तक विस्तृत हैं तथा अति सुन्दर शोभा प्रदान करते हैं.

इन विध वन विस्तार है, उपरा उपर अतंत ।

सोभा अमान पसू पंखी, इन मंदिरों में बसत ॥ ५४

इस प्रकार यह वनका विस्तार उत्तरोत्तर विस्तृत होता हुआ ऊँचे आकाश तक पहुँचा हुआ है. इन पर स्थित मन्दिरोंमें असंख्य पशुपक्षी शोभायमान हैं.

बोहोत दूरलों ए वन, आगूं आगूं बडे देखाए ।

चढते चढते चढते, लग्या आसमानों जाए ॥ ५५

यह वन प्रदेश दूर तक फैला हुआ है. इसकी ऊँचाई क्रमशः उत्तरोत्तर बढ़ती चली गई है. इस प्रकार यहाँके वृक्षोंकी ऊँचाई बढ़ती-बढ़ती आकाश तक पहुँची हुई है.

एक पंखी जिमी पर, एक बसत इन मोहोलन ।

एक बसत बल परन के, आकास में आसन ॥ ५६

यहाँ पर कतिपय पक्षी भूमि पर वास करते हैं तो कतिपय इन प्रासादोंमें रहते हैं. कतिपय पक्षी अपने पङ्क्तियोंके सहारे आकाशमें स्थिर होकर समय व्यतीत करते हैं.

ए बड़े खेल की खुसाली, बड़े वन कबूं करत ।

अस्वारी पसू पंखियन पर, कै कूदत उडावत ॥ ५७

धामधनी कभी-कभी बड़ावनमें आकर इन पशुपक्षियों पर सवार होकर क्रीड़ाका आनन्द लेते हैं। ये पशुपक्षी कोई ऊड़ान भरकर तथा कोई दौड़कर श्रीराजजीको प्रसन्न करते हैं।

हाथी ऊंचे पहाड से, मुख सुंदर दंत सुढाल ।

मन बेगी कबूं न काहेली, तेज तीखी चलें चाल ॥ ५८

यहाँके हाथी पर्वत जैसे ऊँचे हैं। इनके मुख सुन्दर हैं तथा दाँत भी बड़े सुडौल हैं। मनकी गतिके अनुसार चलने वाले इनको कभी भी आलस्य नहीं होता है। ये सदैव तीव्र गतिसे चलते रहते हैं।

बाघ गुंजें अति बली, कूवत ले कूदत ।

देखे आवत दूर से, जानों आसमान से उतरत ॥ ५९

यहाँके बलशाली बाघ भी बड़ी गर्जना करते हैं तथा पूरी शक्तिके साथ छलाङ्ग लगाते हैं। दूरसे आते हुए ये ऐसे लगते हैं मानों आकाशसे उतर रहे हों।

चीते अतंत सुंदर, ऐसे ही बलवान ।

कमी काहूं में नहीं, सोभित जोड समान ॥ ६०

यहाँके चीते भी अति सुन्दर तथा अति बलवान हैं। इनमें -से किसीमें भी किसी भी प्रकारकी कमी नहीं है। सभी एक समान बलशाली दिखाई देते हैं।

जरे जानवर के वाओसों, ब्रह्मांड उडावे कोट ।

तो अरस जिमी के फील की, कहूं सो किन पर चोट ॥ ६१

यहाँके पक्षियोंके पङ्क्तियोंसे निकलनेवाले वायु मात्रसे करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ सकते हैं तो फिर परमधामके हाथियोंकी शक्तिका अनुमान करनेके लिए कौन-सा उदाहरण दिया जाए ?

ब्रह्मांड बडा इन दुनी में, कोई नहीं दूसरा ठौर ।

तो अरस बाघ के बलको, कहूं न निमूना और ॥ ६२

इस नश्वर जगतमें यह ब्रह्माण्ड ही सबसे बड़ा है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई

स्थान ही नहीं है तो परमधामके बाधकी शक्तिके लिए यहाँ पर अन्य कौन-सा उदाहरण दिया जाए ?

बोहोत बातें हैं इनकी, सो केती कहूं जुबान ।

ए नेक इसारत करत हों, है बेसुमार बयान ॥ ६३

इन पशुपक्षियोंकी विशेषताएँ अनेक हैं. उनके सम्बन्धमें कहाँ तक वर्णन करें ? यह तो मात्र सङ्केत किया है. वस्तुतः उनका कोई पारावार ही नहीं है.

अलेखे बल अकल, अलेखे हिकमत ।

अलेखे पेहेचान हैं, इसक अलेखे इत ॥ ६४

इनका बल, बुद्धि, कला, कौशल तथा पहचान ही अनन्त है. इसी प्रकार इनका प्रेम भी अवर्णनीय है.

ख्वाब बल पसुअन का, देखलाया तुम कों ।

कैसा बल अरस पसुअन का, विचार देखो दिल मों ॥ ६५

मैंने तुम्हें इस स्वप्नवत् जगतके पशुओंकी शक्तिको दर्शाया है. अब तुम इन परमधामके पशुपक्षियोंके सम्बन्धमें हृदयपूर्वक विचार करो कि उनकी शक्ति कैसी होगी ?

झूठ देखे सांच पाइए, इसक बल हिकमत ।

ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अंदर अपने चित ॥ ६६

इन स्वप्नवत् जगतकी शक्ति, कला और प्रेमको देखकर अखण्ड धामका अनुभव किया जा सकता है. अपने अन्तर्हृदयसे परमधाम तथा इस नश्वर जगतके प्रेम, शक्ति तथा कलाकी तुलना करके देखो.

ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल ।

पूछ देखो याही झूठ को, कोई अरस की है मिसल ॥ ६७

इस नश्वर जगतका यह अनित्य शरीर एवं उसकी इस तुच्छ बुद्धिको पूछकर तो देखो कि परमधामके लिए यहाँ अन्य कोई उदाहरण हो सकता है ?

अरस मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत ।

ए झूठा पसू बल देख के, तौलो जिमी बल सत ॥ ६८

तुम जरा तुलना करके देखो, इस जगतमें परमधामके लिए कोई उदाहरण ही नहीं है। यहाँके अनित्य पशुपक्षी आदिकी शक्तिको देखकर सत्यभूमिकाके पशुपक्षियोंकी शक्तिका अनुमान करो।

सांच झूठ पटंतरों, कबहूँ नाहीं कित ।

तो धनियें देखाई कुदरत, लेने अरस लजत ॥ ६९

आज तक नित्य एवं अनित्यके अन्तरका निर्णय नहीं हो सका है। इसीलिए अखण्ड परमधामका अनुभव करवानेके लिए धामधनीने यह माया दिखाई है।

विचार किए इत पाइए, अरस बुजरकी इत ।

धनी बुजरकी पाइए, और बुजरकी उमत ॥ ७०

इस नश्वर जगतमें भी हृदय पूर्वक विचार करने पर अखण्ड परमधामके ऐश्वर्यका अनुभव किया जा सकता है। साथ ही धामधनी एवं ब्रह्मात्माओंके सामर्थ्यका भी यहाँ पर अनुभव किया जा सकता है।

महामत कहे ऐ मोमिनो, एही उमत पेहेचान ।

विध विध बान जो बेधहीं, हक बका अरस बान ॥ ७१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! ब्रह्मसृष्टिके समुदायकी यही पहचान है कि अखण्ड परमधामके एक-एक वचन उनके हृदयको बीध देते हैं।

प्रकरण २७ चौपाई १२९२

पसु पंखियों का इसक सनेह

खावंद इनों में खेलहीं, धन धन इनों के भाग ।

अरस के जानवरों का, कायम है सोहाग ॥ १

परमधामके ये पशुपक्षी धन्यभागी हैं जिनके साथ स्वयं श्रीराजजी विभिन्न क्रीड़ाएँ करते हैं। इस प्रकार परमधामके इन पशुपक्षियोंको अखण्ड सुहाग प्राप्त है।

सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल ।

रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल ॥ २

परमधामकी भूमिमें रहनेवाले ये सम्पूर्ण पशुपक्षी रात-दिन अपनी मधुरवाणीसे श्रीराजजीका गुणगान करते हुए विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं।

जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन ।

याही अंग इसक में, छाडत नाही छिन ॥ ३

ये पशुपक्षी रात-दिन अपनी नवीन वाणीसे श्रीराजजीका यशोगान करते हैं। इस प्रकार वे प्रेमके अङ्गस्वरूप होनेसे क्षण मात्रके लिए भी उनसे अलग नहीं होते हैं।

खावंद के दीदार को, पसू और जानवर ।

आवत हैं गुन गावते, अपने समें पर ॥ ४

ये सभी पशुपक्षी धामधनीके गुण गाते हुए उनके दर्शनके लिए अपने समय पर उपस्थित हो जाते हैं।

किसा इनों के इसक का, किन मुख कह्यो न जाए ।

दीदार न होवे वखत पर, तो जानों अरवा देवें उडाए ॥ ५

इनके प्रेम प्रसङ्गका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है। मानों उन्हें समय पर श्रीराजजीके दर्शन न हों तो वे अपने प्राणको ही समर्पित कर देते हैं।

अरवा इनों की ना छूटे, पर ऊपर होए बेहोस ।

अंग अरवा क्यों छूटहीं, अंदर धनी को जोस ॥ ६

ऐसेमें इनकी आत्मा तो नहीं निकलती, किन्तु वे प्रकट रूपसे मूर्च्छित हो जाते हैं। इनके अन्दर धामधनीका जोश है इसलिए इनकी आत्मा नहीं निकलती है।

एक रोम न गिरे इनों का, हक नजर सींचेल ।

आठों पहर अंग में, करत धनी सों केल ॥ ७

धामधनीकी कृपादृष्टिका सिञ्चन होनेसे इनका एक रोम भी नहीं गिरता। ये

सभी आठों प्रहर अपने हृदयमें धामधनीका प्रेम धारण कर उनसे क्रीड़ाएँ करते हैं.

धनी इनों के कारने, सरूप धरें कै करोर ।

लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर ॥ ८

इनके लिए ही धामधनी अनन्त स्वरूप धारण करते हैं. ये अपने धनीके ऐसे अगाध प्रेमी हैं कि सदैव अपने मनोनुकूल धनीका दर्शन करते हैं.

सो मैं कह्यो न जावहीं, जो इसक इनों के अंग ।

रोम रोम इनों के कायम, क्यों कहूं इसक तरंग ॥ ९

इनके हृदयमें धनीके प्रति जैसा प्रेम है उसको मेरी यह वाणी व्यक्त नहीं कर सकती. उनके रोम-रोममें धामधनीके प्रेमके तरङ्ग नित्य व्याप्त हैं.

एक इसक धनी बिना, और कछू जानत नाहिं ।

खेलें बोलें गाएं लरें, सो सब इसक माहिं ॥ १०

वे अपने धामधनीके प्रेमके अतिरिक्त कुछ भी नहीं जानते हैं. वे धामधनीके प्रेमके अधीन रहकर ही खेलते हैं, बोलते हैं, गाते हैं तथा द्वन्द्व करते हैं.

क्यों कहूं पसू पंखियन की, इनके इसक को बल ।

एक जरे को न पोहोंचहीं, इन अंग की अकल ॥ ११

इन पशुपक्षियोंके प्रेमके सामर्थ्यकी बात ही क्या करें ? यह स्वप्नकी बुद्धि उनके प्रेमके मात्र एक अंशको भी व्यक्त नहीं कर सकती है.

मैं देख्या अरस के लोकों को, कोई अंग न बिना इसक ।

क्यों न होए गंज इसक के, जित जरा नाहीं सक ॥ १२

मैंने परमधामके उन प्राणियोंको देखा तो ऐसा लगा कि उनका कोई भी अङ्ग प्रेम रहित नहीं है. इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उनके मनमें प्रगाढ़ प्रेमका अविरल प्रवाह बहता है.

कह्यो क्योंए न जावहीं, इन अंगों के इसक ।

कै कोट जुबां ले कहूं, तो कह्यो न जाए रंचक ॥ १३

उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका प्रेम व्यक्त नहीं किया जा सकता. करोड़ों जिह्वसे

व्यक्त करने पर भी उसका लेशमात्र वर्णन नहीं हो सकता है।

जेता बल जिन अंग में, तेता इसक हक का जान ।

सक जरा ना मिले, पीउ सों पूरी पेहेचान ॥ १४

इन पशुपक्षियोंके शरीरमें जितनी शक्ति है उतना ही उनमें श्रीराजजीका प्रेम है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनको श्रीराजजीका पूर्ण परिचय है।

पीउ की पेहेचान बिना, कछुए न जाने कोए ।

जरा सक तो उपजे, जो दूसरा कोई होए ॥ १५

धामधनीकी पहचानके अतिरिक्त ये पशुपक्षी अन्य कुछ भी नहीं जानते हैं। धामधनीके अतिरिक्त अन्य कोई होता तभी तो उनके हृदयमें लेशमात्र सन्देह उत्पन्न हो सकता।

इसक पूरा इनों अंगों, और पेहेचान पूरन ।

सब वजूदों एही रोसनी, कछू जानें ना हक बिन ॥ १६

इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रेमसे परिपूर्ण हैं और उनको धामधनीकी पूर्ण पहचान है। इन सभीमें धामधनीका ही प्रकाश विद्यमान है। उनके बिना ये अन्य कुछ भी नहीं जानते हैं।

कछू कहा तो जावहीं, जो कछू जरा कहावे कित ।

ब्रह्मांड तो खेल कबूतर, एक जरा न पाइए इत ॥ १७

इनके विषयमें तभी कुछ कहा जा सकता है जब अन्य कुछ कहने योग्य हों यह ब्रह्माण्ड तो जादूगरके खेलके कबूतरकी भाँति है, जिसका लेशमात्र भी कोई अस्तित्व नहीं है।

ताथें अंबार इसक कै, इन जिमी सब जान ।

हकका कायम वतन, सब अंग इसक पेहेचान ॥ १८

इसलिए परमधामकी भूमिमें सर्वत्र प्रेम ही प्रेमका प्रकाश है ऐसा समझना चाहिए। धामधनीके अखण्ड परमधामके प्राणियोंके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें प्रेम ही प्रेम भरा हुआ है।

एक जरा जो इन जिमी का, सो सब इसकै की सूरत ।

आसमान जिमी जड चेतन, पेहेचान इसक दोऊ इत ॥ १९

इस दिव्यभूमिका एक कण भी प्रेमका ही स्वरूप है। यहाँ पर आकाश, भूमि तथा चल-अचल सभीमें धामधनीके ही प्रेमकी पहचान होती है।

पार नहीं जिमीन को, और पार नहीं आसमान ।

पार नहीं जड चेतन, पार ना इसक रेहेमान ॥ २०

यहाँकी भूमि, आकाश तथा चल-अचल किसी भी वस्तुका कोई पारावार नहीं है। इसी प्रकार धामधनीका प्रेम तथा उनकी कृपाका भी कोई पारावार नहीं है।

छोटा बडा अरस का, सो सब हैं चेतन ।

पेहेचान इसक अंग में, इन विध बका वतन ॥ २१

परमधामके छोटे-बड़े सभी पदार्थ चेतनमय हैं। उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें प्रेम भरा हुआ है। इस प्रकार परमधामकी इस रीतिको पहचाना जा सकता है।

जल में जीव बसत हैं, सो सुंदर सोभा अमान ।

फौज बांध आगूं धनी, खेल करें कै तान ॥ २२

यहाँ पर जलचर जीव भी अद्वितीय शोभा धारण करते हैं। वे सभी अपने दल-बल सहित श्रीराजजीके सम्मुख उपस्थित होकर विभिन्न क्रीड़ाएँ करते हैं।

मछ कछ मुरग मेढक, कै रंग करें अपार ।

जुदी जुदी बानी बोलत, स्वर राखत एक समार ॥ २३

मछली, कछुआ, जलमुर्ग, मेढक आदि जलके जीव विभिन्न रङ्गके हैं। वे अपनी-अपनी वाणीके द्वारा एक ही स्वरमें धामधनीका गुणगान करते हैं।

कै रंगों गुन गावते, सब स्वर बांधे रसाल ।

जस धनी को गावहीं, जिकर करें माहें हाल ॥ २४

विभिन्न प्रकारसे गुणगान करते हुए ये सभी जलचर जीव सन्तुलित स्वर व्यक्त करते हैं। इस प्रकार अपने-अपने ढँगसे धामधनीका गुणगान करनेमें मस्त रहते हैं।

जीव छोटे बड़े कै जल के, अपने अपने ख्याल ।

खेलें बोलें दौड़ें कूदें, खावंद को करें खुसाल ॥ २५

ये छोटे-मोटे जलचर अपनी-अपनी रीतिसे खेल कर, बोलकर, दौड़कर तथा उछलकर धामधनीको प्रसन्न करते हैं।

अनेक जानवर जल के, सो केते लेऊं नाम ।

जल किनारें रटत हैं, पिउ जस आठों जाम ॥ २६

कितने नाम लिए जाएँ ? ये अनेक जलचर जीव आठों प्रहर जलके किनारे पर बैठकर धामधनीके ही यशका गायन करते हैं।

सो देखो नेक नीके कर, इनमें जरा सक नाहिं ।

क्यों न होए इसक के अंबार, तुम विचार देखो दिल माहिं ॥ २७

ध्यानपूर्वक विचार करने पर ज्ञात होगा कि इनके प्रेममें कोई भी सन्देह नहीं है। जब वे स्वयं धामधनीके प्रेमपुञ्ज हैं तो उनमें ऐसा प्रेम क्यों नहीं होगा ? तुम अपने हृदयमें विचार करके तो देखो।

जो जरा इन जिमी का, तिन सब में इसक ।

ए चेतन इन भांत के, कछू जानें न बिना हक ॥ २८

इस दिव्यभूमिका एक-एक कण भी सर्वत्र प्रेमसे परिपूर्ण है। ये सभी इस प्रकार चेतन कहलाते हैं कि ये धामधनीके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं जानते है।

पसू पंखी बन जिमिएं, तले ऊपर हैं जित ।

क्या जानें मूढ मुसाफ की, रमूजें इसारत ॥ २९

यहाँके पशुपक्षी, जो जमीन पर रहते हैं तथा जो आकाशमें उड़ते हैं उन सभीमें प्रेम भरा हुआ है। इस प्रकार कुरानमें उल्लेखित सङ्केतोंको मूढ़ बुद्धिवाले व्यक्ति कैसे समझ सकते हैं ?

देखो अंबार इसक के, या जड या चेतन ।

जो कछू नजरों श्रवनों, सो इसकै को वतन ॥ ३०

परमधामके चल या अचल सभी पदार्थ धामधनीके प्रेमसे परिपूर्ण हैं। जहाँ

तक दृष्टि पड़ती है या जो कुछ सुना जा सकता है, यह सारी भूमि प्रेमसे ही परिपूर्ण है।

दरखत करत हैं सेजदा, छोटा बडा घास पात ।

पहाड जिमी जल सेजदे, इसक न इनों समात ॥ ३१

यहाँके वृक्ष तथा छोटे बड़े घास-पात आदि सभी श्री राजजीको प्रणाम करते हैं। इतना ही नहीं यहाँके पर्वत भूमि तथा जल भी धामधनीके समक्ष नतमस्तक होते हैं। इनके हृदयमें धामधनीका प्रेम समाता नहीं है।

यों अरस सारा इसक में, एक जरा न जुदा होए ।

खावंद सबों पिलावहीं, क्यों कहिए इसक बिन कोए ॥ ३२

इस प्रकार यह सारा परमधाम ही प्रेमसे परिपूर्ण है। यहाँकी कोई भी वस्तु धामधनीके प्रेमसे भिन्न नहीं है। स्वयं धामधनी इन सभीको प्रेमसुधाका पान कराते हैं। इसलिए यह कैसे कहा जाए कि यहाँ प्रेमके अतिरिक्त अन्य कुछ है ?

आसिक सबे इसक में, या चांद या सूर ।

या तारा या आकास, सब इसकै का जहूर ॥ ३३

परमधामके सभी पदार्थ धामधनीके प्रेमकी चाहना रखते हैं, चाहे वह चन्द्रमा हो या सूर्य हो, तारा गण हो अथवा आकाश हो, सर्वत्र धामधनीके प्रेमका ही प्रकाश छाया हुआ है।

जो सरूप इन जिमी के, सो सब रूह जिनस ।

मन अस्वारी सबन को, आए पिएं प्रेम रस ॥ ३४

परमधाममें जितने भी प्राणी हैं वे सभी ब्रह्मात्माओंकी भाँति चैतन्य स्वरूप हैं। वे सभी मनकी गतिके अनुरूप तीव्र गतिसे आकर धामधनीके प्रेमरसका पान करते हैं।

सो भी रूह मन अरस के, ए तूं नीके जान ।

बल देख झूठे मन को, अरस मन बल पेहेचान ॥ ३५

यह निश्चित समझना कि उनकी आत्मा तथा मन भी परमधामके ही हैं। इस

प्रकार संसारके झूठे मनकी शक्तिको देखकर परमधामके मनकी शक्तिका अनुमान कर लेना चाहिए

ए झूठ हक को न पोहोंचहीं, तो क्यों देऊं निमूना ए ।

कछुक तो कहाँ चाहिये, गिरो समझावने के ॥ ३६

यद्यपि संसारकी अनित्य सामग्री परमधाममें पहुँच नहीं सकती एवं यहाँका कोई उदाहरण भी वहाँके लिए नहीं दिया जा सकता तथापि ब्रह्मात्माओंको समझानेके लिए कुछ तो कहना ही पड़ता है।

चारों तरफों अरस जमिण, जो कोई हैं सूरत ।

बखत पर दीदार को, मन बेगी पोहोंचत ॥ ३७

परमधामकी दिव्य भूमि पर चारों दिशाओंमें जो भी स्वरूप रहते हैं वे सभी धामधनीके दर्शनके लिए मनकी गतिके अनुसार समय पर पहुँच जाते हैं।

कोई दूर बसत हैं, जो दूर दूर से दूर ।

सो भी जानों कदमों तलें, इन मन बल ऐसा जहूर ॥ ३८

यहाँके कतिपय प्राणी दूर रहते हैं तो कतिपय उससे भी अधिक दूर रहते हैं किन्तु वे भी धामधनीके चरणोंमें ही रहते हैं, ऐसा समझना चाहिए क्योंकि इनके मनमें ऐसी शक्ति है कि वे क्षणमात्रमें ही श्रीराजजीके चरणोंमें उपस्थित हो जाते हैं।

इन जमी की क्यों कहूं, जिनको नहीं पार ।

उत पार जो बसत हैं, इन मन बल को नहीं सुमार ॥ ३९

इस प्रकार परमधामकी दिव्य भूमिके सम्बन्धमें क्या कहा जाए जिसका कोई पारावार ही नहीं है। जो पशुपक्षी यमुनाजीसे पार अक्षरधाममें भी रहते हैं उनके मनकी शक्ति भी उतनी ही प्रबल है जिसका कोई पारावार ही नहीं है।

जो कोई जहां बसत हैं, सो तहां से आवत ।

समें सिर दीदार को, कोई नहीं चूकत ॥ ४०

जो प्राणी जहाँ भी रहते हैं वे वहींसे अपने धामधनीके दर्शनके लिए समय

पर पहुँच जाते हैं. दर्शनके समय पर कोई भी नहीं चुकते हैं.

ज्यों मन एक निमख में, पोहोंचत पार के पार ।

तो क्यों न पोहोंचे बका जिमी को, जिन मन बल नहीं सुमार ॥ ४१

जब संसारका मन भी क्षणमात्रमें कहाँसे कहाँ तक पहुँच जाता है तो अखण्ड भूमिका मन क्षणमात्रमें इतनी दूरीको क्यों पार नहीं कर सकता, जिसकी शक्तिका कोई पारावार ही नहीं है.

दसों दिस बसत हैं, सबमें खावंद बल ।

रोम रोम अंग इसक के, इन हक इसकै के सींचल ॥ ४२

इस प्रकार दसों दिशाओंमें रहनेवाले सभी प्राणियोंमें धामधनीकी ही शक्ति छायी हुई है. उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें धामधनीका प्रेम परिपूर्ण है. वे सभी धामधनीके प्रेमसे सिञ्चित हैं.

कोई न निमूना पाइए, या इसक या बल ।

एह खेलौने तिनके, जो खावंद अरस असल ॥ ४३

इन प्राणियोंके प्रेम तथा शक्तिके विषयमें कोई उदाहरण प्राप्त नहीं हो सकता है, यद्यपि वे धामधनीके खिलौने मात्र हैं.

एक जरा कह्या जुबां माफक, इत अलेखें विवेक ।

रूहें अरस का बल अरस के, जो हक जात हैं एक ॥ ४४

नश्वर जिह्वाके अनुरूप यह थोड़ा कहा गया है किन्तु परमधामकी शोभा अपरिमित है. ब्रह्मात्माएँ स्वयं परमधामकी हैं एवं उनमें परमधामकी ही शक्ति विद्यमान है. वस्तुतः ये सभी ब्रह्मात्माएँ धामधनीकी अङ्गरूपा हैं.

ख्वाब बैठ इन अरस में, हकें देखाया तुमकों ।

महामत कहे ऐ मोमिनो, पेहेचान लीजो दिलमों ॥ ४५

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने परमधाममें ही बैठाकर तुम्हें यह स्वप्नवत् जगत दिखाया है. तुम इस तथ्यको हृदयपूर्वक पहचान लो.

प्रकरण २८ चौपाई १३३७

पसू पंखियों की अस्वारी

अस्वारी पसू पंखियन पर, धनी करत हैं जब ।

जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब ॥ १

जब धामधनी पशुपक्षियों पर सवार होकर विहार करना चाहते हैं उस समय जो पशुपक्षी जहाँ भी रहते हों उसी क्षण धामधनीके समक्ष आकर उपस्थित हो जाते हैं.

अस्वारी को रूहन को, जिन पर हुआ दिल ।

तिन आगूं ही जानिया, सो आए खडे सब मिल ॥ २

इसी प्रकार ब्रह्मात्माएँ भी जिन पशुपक्षियों पर सवार होकर विचरण करना चाहती हैं उसी समय वे सभी पशुपक्षी एकसाथ मिलकर ब्रह्मात्माओंके समक्ष उपस्थित हो जाते हैं.

केसरी बाघ चीते हाथी, और जातें कै अनेक ।

कह्या जीन बने अंग उत्तम, सो कहाँ लों कहूं विवेक ॥ ३

वहाँ पर सिंह, बाघ, चीता, हाथी आदि अनेक जातिके पशु हैं जिनके सुन्दर अङ्गों पर जीन (काठी) कसा हुआ होता है. उनका कहाँ तक वर्णन किया जाए ?

कै विध अस्वारी होत हैं, बुजरक जो जानवर ।

जीन जुगत क्यों केहे सकों, जो असल बने इन पर ॥ ४

इस प्रकार परमधामके अनेकों श्रेष्ठ पशुओं पर ब्रह्मात्माएँ सवार होती हैं. उनकी पीठ पर युक्तिपूर्वक कसे हुए जीनके विषयमें क्या कहें, जो शरीरके ही अङ्गरूपमें दिखाई देता है.

घोडे पर राखत हैं, आकास में उडत ।

कमी करें ना कूदते, सुख अस्वारी के अतंत ॥ ५

यहाँके घोड़े भी पङ्ख वाले हैं और आकाशमें उड़ान भरते हैं. वे उछलनेमें किसी भी प्रकारकी कमी नहीं रखते हैं. उन पर आरोहणका अलग प्रकारका आनन्द होता है.

कै विध खेल रूहन के, मन बेगी जानवर ।

तिन पर अस्वारी करके, चढत आसमान पर ॥ ६

इन पशुओं पर आरूढ़ होकर ब्रह्मात्माएँ विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ करती हैं। ये सभी मनकी गतिके अनुसार दौड़ते हैं। ऐसे पशुओं पर आरोहण कर ब्रह्मात्माएँ आकाशमें विचरण करती हैं।

सोभा लेत वनमें रूहें, अस्वार होत मिल कर ।

पसू पंखी दौड़ें मन ज्यों, जित जिमी वन विगार ॥ ७

इस प्रकार पशुओं पर आरोहित हुई ब्रह्मात्माएँ वनमें विचरण करती हुई अपार शोभा धारण करती हैं। ये पशुपक्षी वन रहित भूमि पर मनकी गतिके अनुरूप विचरण करते हैं।

जब अस्वारी साहेब करें, होवें बड़ी रूह रूहें अस्वार ।

पसू पंखी सबे मिले, हर जातें फौजें न पार ॥ ८

जब श्रीराजजी इन पशुओं पर आरोहण करते हैं तो उस समय भी श्यामाजी और सभी ब्रह्मात्माएँ भी उनके साथ अलग-अलग पशुपक्षियों पर आरोहण करते हुए आनन्द लेती हैं। ऐसे समयमें सभी जातिके असंख्य पशुपक्षी अपने दल-बलके साथ वहाँ उपस्थित होते हैं।

कै जातें पसुअन में, हर जातें गिनती अपार ।

यों जातें जानवरों में, हर जातें नहीं सुमार ॥ ९

यहाँ पर अनेक जातिके पक्षी हैं। उनकी गणना करना असम्भव है। इसी प्रकार पशुओंकी भी अनेक जातियाँ हैं। प्रत्येक जातिका कोई पारावार नहीं है।

पसू पंखी जो वन में, सब आवें करने दीदार ।

राजस्यामाजी रूहें, जब कबूँ होवें अस्वार ॥ १०

जब कभी श्रीराज श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी सवारी होती है उस समय वन, उपवनके सभी पशुपक्षी उनके दर्शनके लिए चले आते हैं।

हर फौजों बाजे बजें, हर फौजों निसान ।

भांत भांत रंग राखत हैं, आप अपनी पेहेचान ॥ ११

इन पशुपक्षियोंके प्रत्येक समूहमें बाद्ययन्त्र बजते हैं तथा सभी अपना-अपना

ध्वज लेकर खड़े होते हैं। उस समय वे अपनी-अपनी पहचानके लिए अपना अलग-अलग रङ्ग धारण करते हैं।

एह जुबां केती कहूं, अलेखें विस्तार ।

एक जात की फौज ना गिन सकों, तिन हर फौजों कै सिरदार ॥ १२

इनके विषयमें इस जिह्वासे क्या कहा जाए ? इनका विस्तार ही असंख्य है। एक जातिकी सेनाकी भी गणना नहीं हो सकती, ऐसी तो अनेक सेनाएँ एवं उनके अलग-अलग नायक हैं।

कै फौजें तिन सिरदार की, हर फौजों कै जमातदार ।

गिनती तिन जमात की, होवे नहीं सुमार ॥ १३

उन नायकोंकी भी अनेक सेनाएँ हैं। इसी प्रकार प्रत्येक सेनामें सेनापति है। उन अपार समूहकी गणना नहीं हो सकती।

यों जुदी जुदी जातें चलते, दाएं बाएं मिसल ।

इंतमाम सबों में अति बड़ा, या आगूं या पीछल ॥ १४

इस प्रकार भिन्न-भिन्न जातियोंकी सेनाएँ दायें-बायें समूहके रूपमें चलती हैं। सबकी व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर है। इनमें कतिपय आगे चलते हैं तो कतिपय पीछे चलते हैं।

आगे पीछे फौज के, चोपदार बड़े बांदर ।

दाएं बाएं मिसल अपनी, फौज रखें बराबर ॥ १५

इन सेनाओंके आगे-पीछे बड़े-बड़े वानर निरीक्षण करते हैं एवं अपनी सेनाको नियन्त्रित कर दायाँ-बायाँ रखते हैं।

कै फौजें पसुअन की, और कै फौजें जानवर ।

सुआ मैना नकीब तिनमें, फौज रखें मिसल पर ॥ १६

इन सेनाओंमें अनेक सेनाएँ पशुओंकी हैं तो अनेक सेनाएँ पक्षियोंकी हैं। इनमें तोता और मैना वन्दीजन (नकीब) के रूपमें श्रीराजजीका गुणगान करते हुए सेनाओंको व्यवस्थित समूहमें रखते हैं।

कै जातें देखे जवेर, अरस के भूषन ।

जंग करें जानवरों, जो परों पर चित्रामन ॥ १७

परमधाममें अनेक प्रकारके रत्नके आभूषण दिखाई देते हैं। इनसे निकलता हुआ प्रकाश पशुपक्षियोंकी चित्रकारी युक्त पङ्क्तु तथा रोमावलीके प्रकाशके साथ द्वन्द्व करता है।

पर जो पसुअन के, सो अतंत सोभा लेत ।

कहा करे ए भूषन, पसू ऐसी सोभा देत ॥ १८

इन पक्षियोंके पङ्क्तु भी अत्यन्त शोभायुक्त हैं। ये पङ्क्तु इतने सुशोभित हैं कि इनके समक्ष आभूषणोंकी भी तुलना नहीं की जा सकती।

इनों रोम की जो रोसनी, सो उठत माहें आसमान ।

जंग करे जवेरों सों, कोई सके न काहूं भान ॥ १९

इनके रोम-रोमका प्रकाश सम्पूर्ण आकाश तक पहुँचता है तथा रत्नके प्रकाशके साथ स्पर्धा करता है। कोई भी प्रकाश एक दूसरेको परास्त नहीं कर सकता।

एक रोम जोत आसमान में, रही रोसनी भराए ।

तो जोत एते पसू पंखी, सो जोत क्यों कही जाए ॥ २०

जब इनके एक रोमका प्रकाश भी सम्पूर्ण आकाशको प्रकाशित कर देता है तो फिर इन सभी पशुपक्षियोंके प्रकाशके विषयमें क्या कहा जा सकता है ?

ए दिल जाने रूहसों, मुख जुबां पोहोंचे नाहिं ।

ए मोमिन होए सो विचारसी, अपने हिरदे माहिं ॥ २१

ब्रह्मात्माएँ ही अपने अन्तर्हृदयसे इस रहस्यको समझ सकती हैं। यह शोभा जिह्वा तक नहीं पहुँच सकती। जो ब्रह्मात्माएँ होंगी वे ही इस तथ्यको अपने हृदयमें विचार करेंगी।

सो भूषण जो अरस के, सब पेहेरे मन चाहे ।

सिनगार किया सब लसकरें, ए देखो मन ल्याए ॥ २२

सभी अपनी-अपनी इच्छानुसार परमधामके दिव्य आभूषण धारण करते हैं। इस प्रकार ये सभी सेनाएं दिव्य शृङ्गार धारण करती हैं। इस तथ्य पर हृदयपूर्वक विचार करें।

एक जरे जिमी की रोसनी, सो ढांपे कै कोट सूर ।

तो जिमी पहाड मोहोलन को, सब कैसा होसी नूर ॥ २३

परमधामकी भूमिके एक कण मात्रका प्रकाश भी करोड़ों सूर्यके प्रकाशको ढँक देता है तो उस दिव्यभूमि पर स्थित पर्वतों एवं प्रासादोंका प्रकाश कितना असीम होगा ?

वन जंगल या जिमी, एक दूजे से प्रकास ।

विचार देखो ऐ मोमिनो, नूर कैसा भया आकास ॥ २४

परमधामके वन, उपवन तथा भूमि एक दूसरेसे बढ़कर प्रकाशमय हैं। हे ब्रह्मात्माओ ! विचारपूर्वक देखो। यह सम्पूर्ण प्रकाश आकाशमें कैसे व्याप्त होता होगा ?

ए नूर वन जिमी लसकर, कहा कहूं रूहों रोसन ।

और तखत जो हक का, तुम विचार देखो मोमन ॥ २५

इस प्रकार परमधामके वन, उपवन, भूमि तथा वहाँ पर विचरण करनेवाले पशुपक्षी एवं ब्रह्मात्माओंके प्रकाशका वर्णन कैसे किया जाए ? हे ब्रह्मात्माओ ! तुम विचार पूर्वक देखो। जिस सिंहासन पर स्वयं धामधनी विराजमान होते हैं उसकी महिमाका वर्णन कैसे हो सकता है ?

अब नूर बिलंद जो हक का, ले उठ्या सबका नूर ।

बन जिमी आकास सब, ए देखो एक जहूर ॥ २६

श्रीराजजीका दिव्य तेज इतना देदीप्यमान है कि परमधामका समस्त प्रकाश उसीमें समा जाता है। वन, उपवन, भूमि तथा आकाश सर्वत्र यही प्रकाश आलोकित करता है।

आगूं केसरी कोतल, अति खूबी ले खेलत ।

बाघ चीते घोड़े हाथी, नट ज्यों नाचत ॥ २७

जब श्रीराजजी विचरण करने जाते हैं तब उनके आगे एक सुसज्जित सिंह अद्भुत क्रीड़ाएँ करते हुए चलता है। उसके साथ-साथ बाघ, चीते, घोड़े, हाथी आदि भी नटकी भाँति नृत्य करते हुए चलते हैं।

अव्वल हार केसरिन की, दूजी हार बाघन ।

हार तीसरी स्याहगोस की, चौथी हार चीतन ॥ २८

इस यात्रामें सिंह प्रथम पङ्क्तिमें होते हैं, दूसरी पङ्क्तिमें बाघ तथा तीसरी पङ्क्तिमें विड़ाल (स्याहगोश) एवं चतुर्थ पङ्क्तिमें चीते रहते हैं।

दीप सुअर रोझ रीछडे, बैल साम्हर मृग मेढे ।

हरन अरन बकर कूकर, फील गिमल घोड़े गैंडे ॥ २९

तत्पश्चात् द्वीप (तेन्दुआ), वराह, रीछ, नीलगाय, बैल, सांभर (बारहसिंगा), मृग, भेड़, हरिण, भैंस, गाय, कुत्ता, हाथी, खच्चर. घोड़ा और गैडोंकी अलग-अलग पङ्क्तियाँ होती हैं।

केसरी कूबत ज्यादा कही, निपट अति बलवान ।

ए ख्वाब देखाया तिन वास्ते, करने अरस पेहेचान ॥ ३०

इन पशुओंमें सिंहकी शक्ति सर्वाधिक है। ये अत्यन्त बलवान हैं। धामधनीने हमें स्वप्नवत् जगत इसीलिए दिखाया कि हम परमधामकी सर्व प्रकार पहचान कर सकें।

केसरी कूबत कूदते, गरजत बिना हिसाब ।

बिन मन आवे आसमान में, ऐसी उठक सिताब ॥ ३१

जब सिंह अपने पूरे बलसे छलाङ्ग लगाता है तब अपार गर्जना करता है। उसकी गर्जना मनसे भी तीव्र गतिसे आकाशमें प्रतिध्वनित होती है।

ए गिनती बेसुमार है, और बोलत मिल कर जब ।

गरजत अरस अंबर जिमी, बल देत देखाई तब ॥ ३२

ऐसे सिंह भी वहाँ पर असंख्य हैं। जब ये सभी मिलकर एकसाथ गर्जना

करते हैं तब परमधामकी भूमि और आकाशमें व्याप्त इनकी गूँजसे पता चलता है कि ये कितने बलशाली हैं.

सबद केसरी जब काढहीं, अंबर जिमी रहे गाज ।

पडघा उठे पृथी पर्वतों, उठे उनथें अधिक अवाज ॥ ३३

जब ये सिंह गर्जना करते हैं तब भूमि और आकाश गूँज उठते हैं. यह ध्वनि भूमि तथा पर्वतोंमें प्रतिध्वनित होकर उससे भी अधिक गूँजने लगती है.

क्यों कहूं बल बाघन को, ए जो ख्वाब में ऐसे जोर ।

देह छोटी बड़ी कूवत, देत फीलों मद तोर ॥ ३४

बाघके विषयमें तो और क्या कहें ? स्वप्नवत् जगतके बाघ भी शरीरसे छोटे होने पर भी इतने शक्तिशाली होते हैं कि मदोन्मत्त हाथीके मदको भी तोड़ डालते हैं.

बोलत बाघ विस्तार के, सब मिल एकै सोर ।

गरजे सेंती जानिए, इनों अंगों का जोर ॥ ३५

परमधामके ये सभी बाघ जब एक साथ मिलकर दहाड़ते हैं तब इनकी गर्जनासे यह ज्ञात होता है कि इनमें कितनी शक्ति है.

छंछेक देखे छेल चीते, जुगत जलदी जोर ।

काहेली ना अंग कबहूँ, होत नहीं मन मोर ॥ ३६

जब चीतोंकी चञ्चलता देखी जाती है तो वे इतनी शीघ्रतासे युक्तिपूर्वक अपना बल प्रदर्शन करते हैं तब इनके अङ्गोंमें न सुस्ती रहती है और न ही उदासीनता.

अस्व आगूं अति बडे, अस्वारी के सिरदार ।

सिर ऊंचे गरदन थांभत, थंभक थंभक थेई कार ॥ ३७

सवारीके लिए सर्वश्रेष्ठ घोड़े सवारीके समय नायकके रूपमें आगे-आगे चलते हैं. ऊँचा सिर किए हुए एवं स्थिर गर्दनवाले ये अश्व टुमक-टुमक कर चलते हैं तो भूमि पर थै-थैकी ध्वनि होती है.

जब बोलत बदन विकास के, होत सबे हेहंकार ।

दसों दिसा सब गरजत, पडत सबे पुकार ॥ ३८

जब ये अश्व मुंह खोलकर हिन-हिनाते हैं तो सर्वत्र इनकी ही ध्वनि प्रतिध्वनित होती है जिससे दसों दिशाएँ गूँज उठती हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानों सर्वत्र यही ध्वनि व्याप्त हो रही हो।

सब्द फील जब काढहीं, गरजत गंज गंभीर ।

जिमी पहाड बन गाजत, और सेन्या सोहे सूर धीर ॥ ३९

जब बड़े-बड़े हाथी गर्जना करते हैं तब उनकी गम्भीर गर्जनासे भूमि, पर्वत एवं वन आदि गूँज उठते हैं। ये हाथी शूर-वीर एवं धैर्य धारण करनेवाली सेनाके रूपमें माने जाते हैं।

यों कै जातें पसुअन की, कै खूबी बल कहूं केता ।

अपार बल खूबी अरस की, नाही जुबां माफक है एता ॥ ४०

इस प्रकार विभिन्न जातिके पशुओंकी शक्तिकी विशेषता किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? परमधामके इन पशुओंमें अपार शक्ति है। उसे व्यक्त करनेमें यह जिह्वा समर्थ नहीं है।

कै जातें हैं जानवर, चलते आगूं उडत ।

कै लेवें गुलाटियां, अनेक खेल खेलत ॥ ४१

यहाँ पर अनेक जातिके पशु हैं जो श्रीराजजीके आगे दौड़ते हैं, उड़ते हैं तथा गुलाटियाँ खाते हुए अनेक प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं।

छोटे छोटा या बड़े बडा, खेल देखावें सब ।

सब सुख तबहीं पावहीं, धनी को रिझावें जब ॥ ४२

इस समय छोटे-से छोटे एवं बड़ेसे-बड़े सभी प्राणी अपनी-अपनी कलाका प्रदर्शन करते हैं। इनको तभी आनन्द आता है जब ये अपनी कला-कौशलसे श्रीराजजीको प्रसन्न करते हैं।

कै मुख बानी उचरें, तान मान गुन गान ।

आठों जाम करत हैं, सुंदर ध्यान बयान ॥ ४३

कितने प्राणी तो गौरवके साथ अपनी तानमें श्रीराजजीका गुणगान करते हैं।

इस प्रकार आठों प्रहर उन्हींके ध्यानमें मग्न रहते हुए उनके ही गुणोंका वर्णन करते हैं.

नैन नीके चोंच सोभित, मीठी जुबां मुख बान ।

खुसबोए गुंजें कै भमरे, कै तिमर अलापें तान ॥ ४४

इनके अनियाले नेत्र तथा नुकीली चोंच अत्यन्त सुन्दर हैं. ये अपने - अपने मुखसे मधुर वाणी बोलते हैं. कितने भ्रमर पुष्पोंकी सुगन्ध लेकर तथा कितने झींगूर राग अलापते हुए धनीका गुणगान करते हैं.

आसमान छाया पंखियों, सब खूबी देखावत ।

आप अपनी साधना, सब खेल की साधत ॥ ४५

सभी पशुपक्षी आकाशमें व्याप्त होकर अपनी-अपनी कलाओंका प्रदर्शन करते हैं. वे सभी अपनी-अपनी साधनाओंसे विभिन्न प्रकारके कला-कौशलका परिचय देते हैं.

बिना हिसाबें बाजंत्र, पडे एक ताली घोर ।

जिमी अंबर सब गाजत, ए जुगत सोभा जोर ॥ ४६

इस समय असंख्य वाद्ययन्त्र एक तालके साथ बजते हैं, जिनकी ध्वनि भूमि तथा आकाश तक गूँजती है. यह अपूर्व शोभा अति सुन्दर होती है.

बाजे सब बजावहीं, बंदे बांदर बलवंत ।

ओ तो आपे बाजहीं, पर ए सेवा न छोडत ॥ ४७

बलशाली वानर धनीकी वन्दना करते हुए इन वाद्ययन्त्रोंको बजाते हैं. यद्यपि ये वाद्ययन्त्र स्वयं बजते हैं तथापि वानर अपनी सेवा नहीं छोड़ते.

बाजे आपे चलहीं, पर पसु सेवा को उठाए ।

इन वखत खूबी कहा कहूं, ए केहे न सके जुबांए ॥ ४८

ये वाद्यन्त्र स्वयं ही चलते हैं तथापि यहाँके पशु सेवा के लिए उनको उठाते हैं. इस समयकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे किया जाए ?

आगूं पीछूं सेन्या चले, खूबी देत बराबर ।

जो दाएं बाएं मिसलें, कोई छोडे ना क्योंए कर ॥ ४९

श्रीराजजीकी सवारीके समय उनके आगे पीछे पशुपक्षियोंकी सेनाएँ पूरी शोभाके साथ चलती हैं. जो सेनाएँ दायीं तथा बायीं ओर चलती हैं वे भी अपने-अपने समूहको नहीं छोड़ती हैं.

अस्वारी सबे सोभावत, मिसल अपनी जान ।

हर जातें फौज अपनी बांधके, चले सब समान ॥ ५०

यह पूरी सवारी अति शोभायमान लगती है. सभी पशुपक्षी अपने-अपने समूहके साथ उपस्थित होते हैं. पशुपक्षियोंकी सभी जातियाँ अपने-अपने दल-बलके साथ पङ्क्तिबद्ध होकर चलती हैं.

ऐसे बडे हाथी अरस के, और बडे कै पसुअन ।

जेता पसू पंखी अरस का, तिन सबों अस्वारी मन ॥ ५१

इस प्रकार परमधाममें बड़े-बड़े हाथी तथा अन्य बड़े-बड़े पशु भी हैं. परमधाममें जितने पशुपक्षी हैं वे सभी मनके समान द्रुत गतिसे चलते हैं.

देखो दिल विचार के, ए पसुओं का चलन ।

उडत हैं आसमान में, ए चारों तरफों सब धरन ॥ ५२

हे सुन्दरसाथजी ! इन पशुओंकी गतिको हृदयपूर्वक विचार करके देखो. ऐसा लगता है कि वे आकाशमें भी उड़ान भरते हैं और भूमि पर भी चारों ओर विचरण करते हैं.

ऐसे सबे लसकर, सुमार नाही बल ।

चिन्हार इसक सबों को, बंदे कायम कदम तल ॥ ५३

इन सभी सेनाओंके बल तथा पराक्रमकी कोई सीमा नहीं है. ये सभी अपने धनीके प्रेमसे परिपूर्ण हैं तथा सदा सर्वदा उन्हींकी सेवामें उपस्थित हैं.

एक देखी जात फीलन की, तिन फीलों जात अनेक ।

कै रंगों कै रूप हैं, सो कहां लों कहूं विवेक ॥ ५४

यहाँ पर हाथियोंकी जातिको देखने पर ऐसा लगता है कि उनमें भी अनेक

जातियाँ हैं. अनेक रूप तथा रङ्गोंके इन हाथियोंकी विविधताका वर्णन कहाँ तक किया जाए ?

कै फौजें कै जिनस रंग, हर फौजें कै सिरदार ।

तिन सिरदार तलें कै फौजें, तिन एक फौज को नहीं सुमार ॥ ५५

ये अनेक प्रकारकी सेनाएँ अनेक रङ्गोंकी हैं. प्रत्येक सेनामें अपने-अपने अनेक नायक हैं. उन नायकोंके अधिकारमें अनेक सेनाएँ हैं. ऐसी अनेक सेनाओंमें-से किसी एक सेनाकी भी गणना नहीं की जा सकती.

अब फौज गिनो दिल अपने, पीछे गिनो सिरदार ।

सो सिरदार कै एक फौज में, तिन फौज करो निरवार ॥ ५६

हे सुन्दरसाथजी ! अब अपने अन्तर्हृदयसे उन सेनाओंकी गणना करते हैं. तत्पश्चात् उनके नायकोंकी गणना करेंगे यहाँ एक सेनामें भी अनेक नायक हैं. अब ऐसी सेनाका निरूपण करते हैं.

यों गिनती न होए एक जात की, जो कहे फील रंग अपार ।

रंग रंग जातें कै कही, सो क्यों न होए सुमार ॥ ५७

इस प्रकार यहाँ पर किसी एक जातिकी भी गणना सम्भव नहीं है, ऐसे अनेक रङ्गोंके हाथी विद्यमान हैं. प्रत्येक रङ्गमें विभिन्न प्रकारकी जातियाँ हैं. उनकी गणना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है.

गिनती न होए एक जातकी, तो क्यों कहूं इनको बल ।

एक चिडिया उडावे कोट ब्रह्मांड, तो कौन बल फीलों मिसल ॥ ५८

जब इनकी एक जातिकी गणना भी नहीं हो सकती तब इनके बलका अनुमान कैसे लगाया जाए ? यहाँका एक पक्षी भी जब करोड़ों ब्रह्माण्डोंको उड़ा सकता है तो इन हाथियोंके समूहकी शक्तिके लिए कौन-सा उदाहरण दिया जाए ?

इन सब फीलों को पाखरे, और सिरिये जडाव रतन ।

सो जवेर हैं अरसके, और अरसै का कुंदन ॥ ५९

सभी हाथियोंके पीठ पर हौदे (पाखरे) हैं तथा मस्तकके अग्रभागमें

रत्नजडित पट्टियाँ हैं. ये रत्न भी परमधामके हैं और वे जिनमें जड़े हुए हैं वह स्वर्ण भी परमधामका ही है.

और सबनकी क्यों कहूँ, ए एक कही मैं जात ।

ए कैसी सोभा लेत हैं, दे दिल देखो साख्यात ॥ ६०

अभी तक मैंने हाथियोंकी एक ही जातिका वर्णन किया है. सभी जातियोंका तो वर्णन ही नहीं हो सकता है. ये सभी जातियाँ किस प्रकार शोभायमान हैं उसे स्वयं अपने हृदयसे विचार कर सकते हैं.

अब और जातकी क्यों कहूँ, जो हैं फीलों से बुजरक ।

ए बुजरक साहेबी देखाई रूहों, पावने पटंतर हक ॥ ६१

अब अन्य पशुओंके विषयमें क्या कहा जाए ? जो इन हाथियोंसे भी अधिक श्रेष्ठ हैं. धामधनीने अपने प्रेमका प्रभुत्व समझानेके लिए ही ब्रह्मात्माओंको स्वप्नवत् संसार दिखाकर परमधाम और यहाँके अन्तरको दर्शाया है.

लेत सोभा अरस जिमीएँ, जब साहेब होत अस्वार ।

ए जिन देख्या सो जानहीं, औरों पोहोंचे नहीं विचार ॥ ६२

जब श्रीराजजी इन प्राणियों पर सवार होते हैं तब परमधामकी शोभा अद्वितीय लगती है. इस अनुपम शोभाको जिन्होंने देखा है वे ही इसे समझ सकते हैं. अन्य लोगोंके मनकी कल्पना वहाँ तक नहीं पहुँच सकती है.

कहा कहूँ जात लसकर, एक जात को नहीं पार ।

तिन जातमें अनेक फौजें, एक फौज को नहीं सुमार ॥ ६३

इन सेनाओंकी जातियोंका वर्णन कहाँ तक करें ? एक जातिका ही पूरा वर्णन नहीं हो सकता है. उस एक जातिकी भी अनेक सेनाएँ हैं, जबकि एक सेनाका भी कोई पार पाया नहीं जा सकता.

तिन हर फौजों कै साहेबियां, करें पातसाहियां अनेक ।

तिन पातसाहियों की क्यों कहूँ, लवाजमें विवेक ॥ ६४

उन सभी सेनाओंका अपना-अपना प्रभुत्व है. वे अनेक प्रकारसे शासन करते

हैं. उनके शासनके विषयमें क्या कहा जाए ? वे विभिन्न प्रकारकी वेशभूषा (लवाजम) धारण कर चलते हैं.

जब चले सैर जिमिय की, जो वन बिगर थोड़ी रेत ।

साफ जिमी अति दूर लों, तरफ पछिम की सुपेत ॥ ६५

जब धामधनी भ्रमणके लिए वन रहित रेतीली भूमि (पश्चिम की चौगान) पर चलते हैं तब पश्चिमकी ओरकी इस श्वेत भूमिमें दूर-दूर तक स्पष्ट दिखाई देता है.

इत दूर लों वन हैं नहीं, बोहोत बडो मैदान ।

ए अस्वारी होए इसहीं तरफ, जब कबूं करे सुभान ॥ ६६

यह मैदान बहुत बड़ा है. यहाँ दूर-दूर तक वृक्ष नहीं हैं. जब कभी धामधनीकी इच्छा होती है तब उनकी सवारी इस ओर होती है.

मैदान अति दूर लों, दूर दूर अति दूर ।

सूर आकास रोसनी, और उजल जिमी सब नूर ॥ ६७

पश्चिमका यह मैदान (चौगान) अति दूर-दूर तक विस्तृत है. इसका उज्ज्वल प्रकाश आकाशमें स्थित सूर्यके प्रकाशके साथ स्पर्धा करता है.

आगे सैर विध विध की, जब करें ऊपर सागर ।

कै विध के रस पूरन, सब पैरत हैं जानवर ॥ ६८

इससे आगे भी विहारके लिए विभिन्न स्थल हैं. जब धामधनी विहारके लिए सागरके तट पर चले जाते हैं तब वहाँके जलचर तैरते हुए विभिन्न प्रकारकी रसपूर्ण क्रीड़ाएँ करते हैं.

जल किनारे वन है, कै विध की बैठक ।

कै जल टापू पहाड में, कै मोहोलों माहें छूटक ॥ ६९

सागरके तट पर अनेक वन स्थित हैं. उनमें बैठक स्थल हैं. इन सागरोंमें पर्वतोंकी भाँति दिखाई देने वाले द्वीप भी हैं, जिनमें अलग-अलग प्रकारके प्रासाद हैं.

चलत पैरत कूदत, उडना याको काम ।

मन की अस्वारी सब को, मन चाह्या करें विश्राम ॥ ७०

यहाँ पर कतिपय प्राणी तैरते हैं, कतिपय चलते हैं, कतिपय उड़ते हैं. इनका कार्य ही यही है. मनकी गतिके समान तीव्रतासे चलनेवाले ये प्राणी धामधनीकी इच्छानुसार विश्राम करते हैं.

जो दिल चाहे तखतरवां, हजार बारे ले बैठत ।

राजस्यामाजी बीच में, आकास में उडत ॥ ७१

जब श्रीराजश्यामाजीकी इच्छा होती है तब वे बड़े विमान (तखतरवा) में बारह हजार ब्रह्मात्माओंके मध्यमें विराजमान होकर आकाशमें उड़ान भरते हैं.

कबूं सैर इन खेल को, ऊपर चढ़ें आसमान ।

दिल चाहे सुख सबन को, देत रूहें प्यारी जान ॥ ७२

श्री राजजी कभी-कभी भ्रमणके लिए सागर तट पर जाते हैं तो विमानमें बैठकर ऊँचे आकाशमें उड़ान भरते हैं. इस प्रकार अपनी प्रिय ब्रह्मात्माओंको उनकी इच्छानुकूल आनन्द प्रदान करते हैं.

मन ऊपर चलत हैं, या जिमी जल वन ।

या चढ़ें आसमान में, ठौर फिरवलें सबन ॥ ७३

धामधनी अपनी इच्छानुरूप भूमि पर विचरण करते हैं, या जल पर विहार करते हैं या वनमें परिभ्रमण करते हैं, या तो आकाशमें उड़ान भरते हैं. इस प्रकार सर्वत्र उनका परिभ्रमण होता है.

पार नहीं आसमान को, जहांलों जानें तहांलों जाए ।

खेल कर पीछे फिरें, देखें परवत आए ॥ ७४

यहाँ पर आकाशका कोई पारावार नहीं है. जहाँ जानेकी इच्छा होती है वहाँ तक उड़ान भरते हैं. लौटते हुए पर्वतों पर अपनी दृष्टि डालते हैं.

दिल चाह्या रूहन को, हक दें हमेसा सुख ।

पहाड वन मोहोल आकास जिमी, जित रूहों का होवे रुख ॥ ७५

इस प्रकार धामधनी ब्रह्मात्माओंको उनकी इच्छानुकूल आनन्द प्रदान करते

हैं. पर्वत, वन, प्रासाद, आकाश या भूमि पर जहाँ भी ब्रह्मात्माओंकी इच्छा होती है उन्हें वहींका सुख प्रदान करते हैं.

जो रुख होवे जल पर, या जोए या ताल ।

या सुख मोहोलन में, देवें दायम नूर जमाल ॥ ७६

जब ब्रह्मात्माओंको यमुनाजीमें अथवा हौजकौसर तालमें जल विहारकी इच्छा होती है या वे वहाँके प्रासादोंमें आनन्द विनोद करना चाहती हैं तब श्रीराजजी नित्यप्रति उन्हें वहीं आनन्द प्रदान करते हैं.

ए खूबी इन वखत की, हकें दर्ई देखाए ।

ए ख्वाब में प्यारी लगी, अरस की ठकुराए ॥ ७७

श्रीराजजीने तारतम ज्ञानके द्वारा इस लीलाकी विशेषताके दर्शन करवाए हैं. इस स्वप्नवत् जगतमें भी ब्रह्मात्माओंको परमधामका यह वैभव अति प्रिय लगा.

मैं तुमें कहूँ मोमिनो, देखो दिल लगाए ।

ऐसी साहेबी खसम की, जो रूह देख सुख पाए ॥ ७८

हे ब्रह्मात्माओ ! मैं तुम्हें कहता हूँ, तुम हृदयपूर्वक विचार करके देखो. धामधनीका प्रभुत्व इतना विशेष है कि उसे देखते ही आत्मा आनन्दित होती है.

इस वास्ते निमूना, ए जो करी कुदरत ।

साहेबी अपनी जान के, करी बकसीस ऊपर उमत ॥ ७९

इसी प्रभुत्वको समझानेके लिए धामधनीने इस प्राकृत जगतकी रचना करवाई है. ब्रह्मात्माओंको अपनी अङ्गना समझकर उन्होंने उन पर महती कृपा की है.

तो क्या निमूना झूठ का, पर लेसी रूहों लज्जत ।

ख्वाब बडाई देख के, विचारसी निसबत ॥ ८०

इस स्वप्नवत् जगतमें परमधामकी दिव्यताका कोई उदाहरण ही नहीं हो सकता है तथापि ब्रह्मात्माएँ यहाँ पर परमधामका स्वाद प्राप्त करेंगी एवं

स्वप्नवत् जगतकी विशेषताओंको देखते हुए परमधामके सम्बन्ध पर विचार करने लगेंगी.

ए साहेबियां देखाइयां, ख्वाब में उमत ।

और देखाई साहेबी अपनी, सुख देने को इत ॥ ८१

धामधनीने इस स्वप्नवत् जगतमें भी ब्रह्मात्माओंको परमधामका प्रभुत्व दिखा दिया. वस्तुतः यहीं पर परमधामके आनन्दका अनुभव करवानेके लिए ही उन्होंने अपना प्रभुत्व दिखाया है.

तफावत ए झूठ की, क्यों आवे बराबर सांच के ।

पर रूहें सुख पावत हैं, देख अपनी साहेबी ए ॥ ८२

इस नश्वर जगतमें यही अन्तर है कि यह सत्यके समकक्ष नहीं आ सकता. किन्तु यहाँ पर भी ब्रह्मात्माएँ अपनी महिमाको पहचान कर आनन्दका अनुभव कर सकती हैं.

कहा कहूं ठकुराई की, और क्यों कहूं बुध बल ।

क्यों कहूं इसक पेहेचान की, और क्यों कहूं सुख नेहेचल ॥ ८३

परमधाममें ब्रह्मात्माओंकी महिमाके विषयमें क्या कहा जाए, उनकी बुद्धि एवं सामर्थ्यकी प्रशंसा भी कैसे की जाए, उनके प्रेम और पहचान तथा धामधनीसे उनको प्राप्त होनेवाले अखण्ड आनन्दको यहाँ पर किस प्रकार व्यक्त करें ?

क्यों कहूं मोहोल अरस के, क्यों कहूं जिमी वन ।

क्यों कहूं इन लसकर की, मिने पातसाहियां पूरन ॥ ८४

परमधामके प्रासाद, भूमि तथा वनके विषयमें कैसे वर्णन किया जाए, वहाँ पर स्थित पशुपक्षियोंकी सेनाओंका भी क्या वर्णन करें ? उन सभीमें धामधनीका ही पूर्ण प्रभुत्व समाया हुआ है.

ए बात है विचार की, कै जातें जानवर ।

कै जातें पसुअन की, याको बल कहूं क्यों कर ॥ ८५

यह विचारणीय बात है कि परमधाममें अनेक जातिके पशु तथा पक्षी हैं.

उनकी शक्तिका वर्णन कैसे किया जाए ?

एक जात बाघन की, कहूं केते रंग तिन माहें ।

इन रंग सुमार ना आवहीं, क्यों होवे हिसाब जुबाएं ॥ ८६

बाघोंकी एक ही जातिमें भी अनेक प्रकारके रङ्ग दिखाई देते हैं। जब उन रङ्गोंकी ही गणना नहीं हो सकती तो उनके विषयमें इस जिह्वासे अन्य क्या कहा जा सकता है ?

अब कैसा बल समूह का, पशु और जानवर ।

देखो साहेबी अरस की, ले ब्रह्मांड बल नजर ॥ ८७

इन पशु और पक्षियोंके सामूहिक सामर्थ्यका अब अनुमान लगाया जा सकता है। अब इस नश्वर ब्रह्माण्डकी शक्तिको देखकर परमधामके प्रभुत्वको समझनेका प्रयत्न करो।

ए निमूना इन वास्ते, देखलाया रूहन ।

झूठ कौन आगू सांच के, पर बल पाइए न या बिन ॥ ८८

ब्रह्मात्माओंको ये उदाहरण इसलिए दिए गए हैं कि वे सत्यके समक्ष असत्यका क्या अस्तित्व होता है वह समझ सकें क्योंकि असत्यको समझे बिना परमधामके सत्यका ज्ञान नहीं हो सकता है।

इन सुपन जिमी में बैठके, क्यों कहूं ठकुराई अरस ।

ए गिरो बिचारें सुख पावसी, जो होसी अरस परस ॥ ८९

अन्यथा इस स्वप्नवत् संसारमें बैठकर अखण्ड परमधामके प्रभुत्वकी महिमा क्यों गायी जाती ? इस पर परस्पर विचार करने पर ब्रह्मात्माएँ आनन्दका अनुभव कर सकेंगी।

ए विचार विचार विचारिए, तो पाइए लसकर बल ।

सुमार तो भी न पाइए, जिमी अपार नेहेचल ॥ ९०

वारंवार विचार करने पर ही परमधामकी सेनाओंका बल ज्ञात होगा। तथापि उनका पार नहीं पाया जा सकता क्योंकि यह भूमि ही अखण्ड तथा अपार है।

क्यों कहूं जिमी अपार की, क्यों कर कहूं मोहोलात ।

क्यों कहूं जोए हौज की, क्यों कहूं नूर जात ॥ ११

इस अपार भूमिकी महिमाका गान किस प्रकार किया जाए ? यहाँके प्रासाद, यमुनाजी, हौजकौसर ताल तथा सभी तेजोमय पदार्थोंका वर्णन किन शब्दोंमें किया जाए ?

क्यों कहूं अरस जिमी की, क्यों कहूं हक सूरत ।

क्यों कहूं खासी रूहकी, क्यों कहूं रूहें उमत ॥ १२

परमधामकी दिव्यभूमि एवं धामधनीके दिव्य स्वरूपके विषयमें कैसे बताया जाए ? इसी प्रकार श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके विषयमें कैसे वर्णन किया जाए ?

क्यों कहूं इन सुख की, क्यों कहूं इन विलास ।

क्यों कहूं इसक आराम की, क्यों कहूं रमूजें हांस ॥ १३

परमधामके दिव्य सुख एवं आनन्द विलासका वर्णन भी कैसे किया जाए ? परमधामका शाश्वत प्रेम एवं हास्यविनोदके विषयमें भी इस नश्वर जगतमें कैसे बताया जाए ?

इन अरस का खावंद, सो धनी अपना हक ।

ए देखो साहेबी अरस की, ए मोमिनो बजरक ॥ १४

ऐसे दिव्य परमधामके धनी ही हमारे अपने स्वामी हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! परमधामके इस दिव्य वैभवको आत्म-दृष्टिसे देखो.

देखो साहेबी अपनी, मेरा खसम नूर जमाल ।

जब देखत हों दिल ल्याए के, मेरी रूह होत खुसाल ॥ १५

तुम अपने महत्त्वको भी देखो और निश्चित करो कि मेरे प्रियतम धनी स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा हैं. जब मैं हृदयपूर्वक ऐसा चिन्तन करता हूँ तब मेरी अन्तरात्मा प्रसन्न हो जाती है.

क्यों न होए खुसालियां, देख अपनी ठकुराए ।

और नहीं कोई काहूँ, ए मैं देख्या चित ल्याए ॥ ९६

अपनी महिमाको देखकर किसे प्रसन्नता नहीं होगी ? मैंने अन्तर्हृदयसे देखा है कि परमधाममें धामधनी तथा हमारे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है.

मेरे खसम का नूर है, नूर अंग नूर जलाल ।

सो आवत दायम दीदार को, मेरा खसम नूर जमाल ॥ ९७

परमधाममें सर्वत्र मेरे प्रियतम धनीका ही तेज व्याप्त है. स्वयं अक्षरब्रह्म भी उनके तेजके अङ्गस्वरूप हैं. वे भी मेरे प्रियतम धनी अक्षरातीतके दर्शनके लिए नित्यप्रति आया करते हैं.

सांची साहेबी खसम की, जो कायम सुख कामिल ।

ऐसा आराम अपने हकसों, इत नहीं चल विचल ॥ ९८

मेरे प्रियतम धनीका प्रभुत्व अखण्ड है. वे स्वयं अखण्ड सुखके दाता हैं. परमधाममें अपने प्रियतम धनीके साथ ऐसा शाश्वत आनन्द प्राप्त होता है, जिससे आत्मा कदापि चलायमान नहीं होती है.

बडी बडाई बडी साहेबी, बुजरक सदा बेसक ।

और सब याके खेलौने, सब पर एकै हक ॥ ९९

धामधनीका प्रभुत्व एवं उनकी श्रेष्ठता निःसन्देह अद्वितीय है. उनके अतिरिक्त शेष सभी उनके खिलौने मात्र हैं. सबके स्वामी तो वे स्वयं ही हैं.

महामत साहेबी हक की, मैं खसम अंग का नूर ।

अंग रूहें मेरा नूर है, सब मिल एक जहूर ॥ १००

महामति कहते हैं, यह सम्पूर्ण प्रभुत्व स्वयं परब्रह्म परमात्माका है. मैं तो उनके अङ्गका ही प्रकाश हूँ. सभी ब्रह्मात्माएँ मेरे ही अङ्गके तेजरूपा हैं. हम सभी धामधनीके दिव्य तेजसे ओतप्रोत हैं.

प्रकरण २९ चौपाई १४३७

तीनों स्वरूपों की पेहेचान बल अरसकी तरफ का

पेहेलें किया वरनन अरस का, रूहअल्ला का केहेल ।

अब चितवन सों केहेत हों, जो देत साहेदी अकल ॥ १

अभी तक मैंने श्रीश्यामाजीके अवतार स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके कथन अनुसार परमधामका वर्णन किया है. अब मैं अपने चिन्तनके आधार पर बुद्धिकी साक्षी देते हुए पुनः उसका वर्णन करूँगा.

जब जानों करूं वरनन, तब ऐसा आवत दिल ।

जब रूह साहीदी देत यों, इत ऐसा ही चाहिए मिसल ॥ २

जब मुझे परमधामका वर्णन करनेका विचार आया तब हृदयमें यह भाव जागृत हुआ कि आत्मा जिस प्रकार साक्षी दे उसीके अनुरूप वर्णन करना चाहिए.

इन विध हुआ है अव्वल, दै रूह साहेदी तेहेकीक ।

जो कही बानी जोस में, सो साहेबें दर्ई तौफीक ॥ ३

अभी तक जो भी वर्णन हुआ है निश्चय ही उसकी साक्षी भी मेरी आत्माने दी है. किन्तु जो वाणी जोशमें कही गई है वह धामधनीकी कृपाके द्वारा ही सम्भव हुआ है.

हकें दर्ई किताबें मेहेर कर, जो जिस बखत दिल चाहे ।

सोई आयत आवत गई, जो रूह देत गुहाए ॥ ४

जिस समय मुझे जिस धर्मग्रन्थकी आवश्यकता हुई धामधनीने कृपापूर्वक वह मुझे उपलब्ध करवाई. तब आत्माने जिस प्रकार साक्षी दी उसीके अनुरूप वाणीका अवतरण होता गया.

सबद जो सारे इन विध, कही आगे से आखरत ।

बिना फुरमान देखें कहे, ना हादिएं कही हकीकत ॥ ५

आरम्भसे लेकर अभी तक जो कुछ वर्णन हुआ है उसका अवतरण इसी भाँति हुआ है. कुरान आदि धर्मग्रन्थोंके अध्ययनके बिना ही मैंने इस प्रकार वर्णन किया है. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने भी मुझे उसके निर्देशन नहीं दिए थे.

कहें सबद रूह साहेदी, पर दिल देत कछू सक ।

मुसाफ देखें भागी सक, सब आयतें इसी माफक ॥ ६

यद्यपि आत्माकी साक्षीके आधार पर मैंने कुरानके सम्बन्धमें कुछ कहा परन्तु मनमें कुछ शङ्काएँ उत्पन्न होती रही. कुरानके अध्ययन पश्चात् वे सभी शङ्काएँ दूर हो गई, मेरी वाणीके अनुरूप ही कुरानकी आयतें भी दिखाई दीं.

और फुरमानमें ऐसा लिख्या, ओ केहेसी मेरे माफक ।

आवसी मेरी उमत में, करने कायम दीन हक ॥ ७

कुरानमें भी इसी प्रकार लिखा हुआ है कि अन्तिम समयमें परमात्मा आकर मेरे कथनानुसार ही वर्णन करेंगे. वे परमात्मा मेरे ही समुदाय (ब्रह्मसृष्टि) में आकर सत्यधर्मकी स्थापना करेंगे.

सोई सुध दर्ई फुरमाने, सोई ईसे दर्ई खबर ।

मेरे मुख सोई आइया, ए तीनों एक भए यों कर ॥ ८

कुरानमें जिसकी साक्षी मिली है उसका वर्णन सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने पहलेसे ही किया था. मैंने भी उसीके अनुरूप वर्णन किया है. इस प्रकार तीनों प्रकारके विचार एकरूप हो गए हैं.

रूहअल्ला ने मेहेर कर, दिया खुदाई इलम ।

सब सुध भई अरस की, रूहें बडी रूह खसम ॥ ९

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने कृपा पूर्वक मुझे तारतम ज्ञान प्रदान किया. उसीके आधार पर मुझे परमधाम तथा वहाँ रहनेवाली ब्रह्मात्माएँ, श्यामाजी एवं धामधनीकी पहचान हुई.

सब काम भए उमत के, देखें हक फुरमान ।

सोई इलम दिया रूहअल्ला, मैं लई नसीहत तीनों पेहेचान ॥ १०

कुरान देखने पर मुझे ज्ञात हुआ कि ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके सभी कार्य पूर्ण हो गए हैं. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने भी मुझे वही ज्ञान दिया था. उसीके आधार पर मैंने तीनों स्वरूपोंकी पहचान की.

अब जो केहेती हों अरस की, सो दिल में यों आवत ।

बिना देखें केहेत हों, जित रूह जो चाहत ॥ ११

अब मैं परमधामका जिस प्रकार वर्णन करता हूँ उसके लिए हृदयमें ऐसा भाव उत्पन्न होता है कि मेरी आत्मा जिस प्रकार चाहती है उसीके आधार पर बिना देखे ही मैं वर्णन करूँ।

अरस के वरनन की, कही हादियों इसारत ।

सो दोऊ साहेदी लेयके, जाहेर करूं सिफत ॥ १२

परमधामके वर्णनके लिए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीका दिव्य ज्ञान एवं कुरानके सङ्केत मुझे प्रेरित कर रहे हैं। उन दोनोंकी साक्षी लेकर अब मैं परमधामकी महिमाका गायन करता हूँ।

मेरी बानी जुदी तो पडे, जो वतन दूसरा होए ।

कहे हादी बल माफक, उरें सिफत सब कोए ॥ १३

सद्गुरुके कथनसे मेरी वाणी तभी भिन्न हो सकती है जब परमधामके अतिरिक्त अन्य कोई स्थान (वतन) हो। सद्गुरुकी शक्तिके आधार पर ही मैं यह वर्णन कर रहा हूँ तथापि परमधामकी जो शोभा हृदयमें ही अङ्कित रहती है उसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।

बेसुमार बुजरकी अरस की, नेक कहूं अकल माफक ।

ए रूहें नीके जानत हैं, जो अपार अरस है हक ॥ १४

यद्यपि परमधामकी शोभा अपरम्पार है तथापि मैं अपनी बुद्धिके अनुसार उसका संक्षेपमें वर्णन करनेका प्रयत्न करता हूँ। ब्रह्मात्माएँ भलीभाँति जान सकती हैं कि अखण्ड परमधामकी शोभा अपार है।

ए सुख न आवे जुबां मिने, तो भी केहेना अरस बन सुख ।

रूहें बैठत उठत सुख सनेह सों, कै गिरों को देत श्रीमुख ॥ १५

यद्यपि जिह्वा के द्वारा परमधामके अखण्ड सुखोंका वर्णन नहीं हो सकता तथापि वहाँके वन, उपवनोमें प्राप्त होनेवाले सुखोंका वर्णन करना है।

धामधनी ब्रह्मात्माओंको उठते-बैठते सर्वदा अपने श्रीमुखसे अपार स्नेह प्रदान करते हैं।

धनीएं आगूं अरस के, कहे तीन चबूतर ।

दाहिनी तरफ तले तीसरा, हरा दरखत तिन पर ॥ १६

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीने पहले रङ्गमहलके समक्ष तीन चबूतरोंका वर्णन किया। इनमें-से दो द्वारसे संलग्न हैं तथा तीसरा चाँदनी चौकमें दायीं ओर स्थित है जिस पर हरा वृक्ष है।

चौथी तरफ नाही कहा, सो मेरी परीख्या लेन ।

जाने मेरे इलम से रूह आपै, केहेसी आप मुख बैन ॥ १७

उन्होंने चौथे चबूतरेका वर्णन इसीलिए नहीं किया कि वे मेरी परीक्षा लेना चाहते थे। वे यह चाहते थे कि मेरी अङ्गना (इन्द्रावती) मेरे द्वारा प्रदत्त तारतम्यज्ञानके प्रतापसे स्वयं इसका वर्णन करेगी।

ना तो ए लडका सो भी जानहीं, जो कछू कर देखे सहूर ।

एक तरफ क्यों होवहीं, आगूं अरस तजल्ला नूर ॥ १८

अन्यथा एक छोटा-सा बालक भी हृदयपूर्वक विचार करने पर समझ सकता है कि रङ्गभवनके सम्मुख (चाँदनी चौकमें) मात्र एक ही ओर चबूतरेकी शोभा क्यों है ?

खूब देखाई क्यों देवहीं, चबूतरा एक तरफ ।

जाने केहेसी आपे दूसरा, मेरे इलम के सरफ ॥ १९

यदि चाँदनी चौकमें मात्र एक ही तरफ चबूतरा होगा तो रङ्गभवनकी शोभा कैसे श्रेष्ठ प्रतीत होगी किन्तु सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज चाहते थे कि मेरे ज्ञानके प्रतापसे इन्द्रावती स्वयं इसका वर्णन करेगी।

तलें चौथा चाहिए, आगूं अरस द्वार ।

दरखत दोऊ चबूतरों, सोभा लेत अपार ॥ २०

इस प्रकार रङ्गभवनके द्वारके सम्मुख नीचे चाँदनी चौक पर चौथा चबूतरा

भी अवश्य होना चाहिए. दोनों चबूतरे पर लगे हुए वृक्ष अपार शोभा धारण करते हैं.

आगूं इन चबूतरों, खेलावत जानवर ।

नए नए रूप रंग ल्यावहीं, अनेक विध हुनर ॥ २१

इन दोनों चबूतरोंके सम्मुख धामधनी पशुपक्षियोंसे क्रीड़ा करवाते हैं. वे सभी पशुपक्षी अपनी कलाओंका प्रदर्शन करते हुए नये-नये रूप और रङ्ग धारण करते हैं.

आगूं इन दरबार के, दायम विलास है बन ।

कै विध खेल करें जानवर, हक हंसावें रूहन ॥ २२

ये सभी पशुपक्षी रङ्गभवनके सम्मुख स्थित वनोंमें नित्य विलास करते हैं तथा विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाओंके द्वारा धामधनी एवं ब्रह्मात्माओंको प्रसन्न करते हैं.

इन चौक खुली जो चांदनी, आगूं बडे दरबार ।

उजल रेती झलकत, जोत को नाहीं पार ॥ २३

रङ्गभवनके सामने इन दोनों चबूतरोंके समीप चाँदनी चौकका खुला प्राङ्गण है. उसकी उज्ज्वल रेती चमकती रहती है. उसकी ज्योतिर्मयी किरणोंका कोई पारावार नहीं है.

जोत लगी जाए आसमान, थंभ बंध्यो चौखून ।

आकास जिमी बीच जोत को, इन को नहीं निमून ॥ २४

यह ज्योति आकाशमें इस प्रकार चमकती है मानों कोई चतुष्कोणीय (चारकोनावाला) स्तम्भ बन गया हो. भूमि और आकाशके मध्य व्याप्त इन ज्योतिर्मयी किरणोंके लिए अन्य कोई उपमा ही नहीं दी जा सकती.

और जोत जो वृख की, सो भी बीच आकास और बन ।

पार नहीं इन जोत को, पर ए रंग और रोसन ॥ २५

इस चौक पर स्थित दोनों वृक्षोंकी ज्योति भी पूरे वन प्रदेश तथा आकाश

पर्यन्त व्याप्त है। इसका कोई पारावार नहीं है। इन दोनों वृक्षोंके दोनों रङ्गोंकी छटा बड़ी अब्धुत है।

जेता कोई रंग वन में, तिन रंग रंग हर हार ।

इन विध आगूं अरस के, वन पोहोंच्या जोए किनार ॥ २६

चाँदनी चौकके सम्मुख स्थित वनमें जितने रङ्ग दृष्टिगोचर होते हैं वहाँ पर प्रत्येक रंगके वृक्षोंकी अलग-अलग पङ्क्तियाँ हैं। इस प्रकार यह वन यमुनाजीके तट तक पहुँचा हुआ है।

कहूं हारें कहूं चौक गुल, कहूं नकस कटाव ।

जाए न कही इन जुबां, ज्यों चंद्रवा जुगत जडाव ॥ २७

इन वनोंमें वृक्षोंकी शाखाओंसे बने हुए चँदवामें कहीं पर सीधी, कहीं गोल तथा कहीं चौरस चित्रकारी है। इस सुन्दर चँदवाकी चित्रकारी ज्यों-ज्यों सघन होती जाती है इसकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता।

ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहिं ।

अकल में न आवत, तो क्यों आवे बानी माहिं ॥ २८

वनकी यह शोभा देखते ही बनती है। इसका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है। जब यह शोभा बुद्धिमें ही नहीं उतरती है तो वाणीके द्वारा कैसे व्यक्त हो सकेगी ?

चारों तरफों वन में, कै जिनसें कै जुगत ।

नई नई भांत ज्यों चंद्रवा, वन में केती कहूं विगत ॥ २९

इन वनोंमें चारों ओर विभिन्न प्रकारकी सामग्रियाँ युक्तिपूर्वक सुशोभित हैं। वृक्षोंके ऊपरका भाग चँदवाके आकारका है। इस प्रकार वनकी शोभाका वर्णन कहाँ तक करें ?

चारों तरफों अरस के, कै बैठक चौक चबूतर ।

जुदे जुदे कै विध के, ए नेक कहूं दिल धर ॥ ३०

रङ्गभवनके चारों ओर बैठनेके लिए अनेक चौक तथा चबूतरे सुशोभित हैं।

उन अलग-अलग चबूतरों तथा स्थानोंमें बड़ी विविधता है. इनकी शोभाको हृदयमें धारणकर उनका थोड़ा-सा वर्णन करता हूँ.

सात घाट आगूं अरस के, ए है बडो विस्तार ।

नेक कहूं हिडोले चौकियां, फेर कहूं आगूं अरस द्वार ॥ ३१

रङ्गभवनके सम्मुख सात घाट सुशोभित हैं. उनके वनका विस्तार बहुत बड़ा है. पहले मैं वट-पीपलकी चौकी पर लगे हुए झूलोंका वर्णन करता हूँ तत्पश्चात् रङ्गभवनके द्वारका वर्णन करूंगा.

बट पीपल चारों चौकियां, ऊपर छाते भी चार ।

अंबराए वृक्ष अनेक बन, निहायत रोसन झलकार ॥ ३२

रङ्गभवनके दक्षिणकी ओर वट-पीपलकी चार चौकियाँ हैं. उनके ऊपर चार छत हैं. यहाँ पर अनेक वृक्ष आकाशको स्पर्श करते हैं. जिनकी अत्यधिक शोभा सर्वत्र प्रकाशित है.

चल्या गया चौथी तरफ लों, अतंत खूबी विस्तार ।

तले चेहेबच्चे नेहरें चलें, जुबां केहे न सके सुमार ॥ ३३

ये वृक्ष पश्चिमकी ओर तक व्याप्त हैं. उनका विस्तार बहुत बड़ा है. इन वृक्षोंके नीचे जलकुण्ड हैं. उनसे विभिन्न नहरें चलती हैं. इनकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती.

याही बन के चबूतरे, याही बन की मोहोलात ।

ए खूबी इन बन की, इन जुबां कही न जात ॥ ३४

यहाँ पर इन वृक्षोंके नीचे विभिन्न चबूतरे तथा विभिन्न प्रकारके प्रासाद शोभायमान हैं. इस वनकी यह दिव्य शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती.

एक एक चौकी देखिए, रूहें बैठत बारे हजार ।

बीच बीच सिंघासन हक का, ए सोभा अति अपार ॥ ३५

यहाँ पर स्थित एक-एक चौकीकी शोभा देखिए, जहाँ पर बारह हजार

ब्रह्मात्माएँ बैठती हैं. प्रत्येक चौकीके मध्यमें श्रीराजश्यामाजीका सिंहासन सुशोभित है. इसकी शोभाका कोई पारावार नहीं है.

ए वन हांस पचास लों, सेत हरे पीले लाल ।

ए वन खूबी देख के, मेरी रूह होत खुसाल ॥ ३६

इस वनका विस्तार पूर्वसे पश्चिम तक पचास पहलका है. इसमें श्वेत, हरित, पीत तथा रक्तवर्णके वृक्ष सुशोभित हैं. इस वनकी दिव्य शोभाको देखकर मेरी अन्तरात्मा आनन्दित होती है.

जित वन जैसा चाहिए, तहां तैसा ही तिन ठौर ।

नकस बेल फूल बन के, एक जरा न घट बढ और ॥ ३७

इस वनमें जहाँ पर जैसी शोभा होनी चाहिए वहाँ पर वैसी ही शोभा है. यहाँ पर पुष्प तथा लताओंकी चित्रकारी ऐसी अद्वितीय है कि कहीं पर भी वह न कम है और न ही अधिक है.

एह बन देखे पीछे, उपज्यो सुख अनंत ।

ए ठौर रूह से न छूटहीं, जानों कहां देखूं मैं अंत ॥ ३८

इस वनको देखकर अपार आनन्दका अनुभव होता है. आत्मा इस स्थानको छोड़ना ही नहीं चाहती हैं. उसे लगता है कि इसके अतिरिक्त अन्य कहाँ देख लूँ.

तलें जिमी अति रोसनी, और रोसन चारों छत ।

चारों चौक देखें आगूं चलके, ए सुख रूहें जाने बात ॥ ३९

इस वनके नीचेकी भूमि तेजोमयी है. यहाँके वृक्षोंकी चारों छत भी प्रकाशमय हैं. आगे चलकर यहाँके चारों चौकोंको देख लें तो ज्ञात होगा कि ब्रह्मात्माएँ ही इस सुखका अनुभव कर सकती हैं.

तले वन निकुंज जो, तिन पर ए मोहोलात ।

मिल गए मोहोल अरस के, रूहें दौडत आवत जात ॥ ४०

इसके नीचे निकुञ्जवनका उपवन है. वहाँ पर भवन (लता मंडप) हैं. उनकी

छत रङ्गभवनके समानान्तर है। ब्रह्मात्माएँ वट पीपलकी छतसे होती हुई रङ्गभवनके प्रासादोंमें आती-जाती हैं।

ज्यों ऊपर हिडोले अरसमें, भोम सातमी आठमी जे ।

जब इन बन हिडोलों बैठिए, देखिए बडी खुसाली ए ॥ ४१

जिस प्रकार रङ्गभवनकी सातवीं तथा आठवीं भूमिकामें शोभायमान झूलोंमें बैठने पर आनन्द प्राप्त होता है उसी प्रकार इन झूलोंमें बैठने पर भी उन्हींके समान आनन्द प्राप्त होता है।

जैसे हिंडोले अरस के, ऐसे ही हिडोले बन ।

रूहे बारे हजार बैठत, ए समया अति रोसन ॥ ४२

रङ्गभवनमें जिस प्रकार झूले सुशोभित हैं उसी प्रकार यहाँ पर (वनमें) भी सुशोभित हैं। जब बारह हजार ब्रह्मात्माएँ इन झूलोंमें बैठती हैं उस समय कुछ और ही शोभा प्रकाशित होती है।

इन बन में जो हिडोले, छपर खटों की जिनस ।

सांकरें जंजीरां इनझनें, जानों सबथें एह सरस ॥ ४३

इस वनमें लगे हुए झूलोंकी बैठकें सिंहासनकी भाँति प्रतीत होती हैं। इन झूलोंकी जञ्जीरें जब परस्पर बजती हैं तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे यही ध्वनि सबसे उत्तम है।

इत घाट नारंगी पोहोंचिया, दोऊ तनफों इत ।

बट घाट निकुंज ले, इन हद से आगूं चलत ॥ ४४

इस वनके पूर्वमें उत्तर और दक्षिणके दोनों कोनों तक नारङ्गीका घाट पहुँचा हुआ है। वटघाटसे आरम्भ होकर यह कुञ्ज-निकुञ्ज वन हौजकौसर तालसे भी आगे तक विस्तृत हुआ है।

तरफ बाँई सोभा ताल की, बीच चांदनी चारों घाट ।

जल बन मोहोल पाल की, अति सोभित ए ठाट ॥ ४५

कुञ्ज-निकुञ्जवनकी बायीं ओर हौजकौसर ताल सुशोभित है जिसके चारों दिशाओंमें चार घाट हैं और मध्यमें द्वीप भवनकी चाँदनी है। यहाँ पर जल,

पाल, वन, तथा प्रासादोंकी शोभा अति रमणीय है.

कै मोहोल मानिक पहाड के, कै नेहरें मोहोल बन ।

मोहोल पहाड से सागरों, फेर आए दूब वन अन ॥ ४६

इस तालके दक्षिणकी ओर चौबीस पहलका महल, रत्नों(जवेरों) की नहरें, विभिन्न प्रकारके भवन, वन-उपवन तथा माणिक पर्वत पर प्रासादोंकी शृङ्खला है. माणिक पर्वतके विभिन्न भवनों तथा सागरके तटसे होते हुए रङ्गभवनके पश्चिमकी ओर कालीनकी भाँति बिछे हुए दूब (दूब दुलीचा) तथा अन्न वन पर्यन्त आ पहुँचें.

अतंत सोभा इन वन की, ए जो आए मिल्या फूल बाग ।

फूल बाग हिंडोले ए वन, तूं देख खूबी कछू जाग ॥ ४७

अन्नवनकी शोभा अनन्त है. यह फूलबाग तक पहुँचा हुआ है. फूलबागके साथ लगे हुए बड़ेवनके पाँच वृक्ष हैं. उस पर झूले लगे हुए हैं. हे आत्मा ! तू जागृत होकर इस शोभाका दर्शन कर.

चौकी हांस पचास लों, फूल बाग वन हद जित ।

और पचास हांस फूलबाग, बडे चेहेबच्चे पोहोंचत ॥ ४८

वट-पीपलकी चौकी पूर्वसे पश्चिम तक पचास हाँसकी है. इसकी सीमा पश्चिममें फूलबाग तक पहुँची है. फूलबाग भी पचास पहल लम्बा-चौड़ा है. उसके दोनों कोने बड़े जलकुण्ड (सोलह पहलका चहबच्चा) तक पहुँचे हैं.

ए बडा चेहेबच्चा बाहेर, एक हांस को लगत ।

बडी कारंज पानी पूरन, कै नेहरें चलत ॥ ४९

रङ्गभवनके नैऋत्यकोणका यह बड़ा जलकुण्ड फूलबागके बाहर एक पहलमें आकर मिला हुआ है. यहाँसे अनेक नहरें प्रवाहित होती हैं तथा यहाँ पर अनेक फुहारे भी सुशोभित हैं.

ए फूल बाग चौडा चबूतरा, निपट बडा निहायत ।

फूल बाग बगीचे चेहेबच्चे, विस्तार बडो है इत ॥ ५०

नूरबागकी छतसे लगता हुआ फूलबागका चबूतरा अति विशाल है. यहाँ पर

वन-उपवन तथा जलकुण्ड भी अनेक हैं। इसका विस्तार बहुत बड़ा है।

मोहोल झरोखे अरस के, फूल बाग के ऊपर ।

जोत झरोखे अरस के, ए नूर कहूं क्यों कर ॥ ५१

फूलबागके ऊपर पूर्वकी ओर रङ्गमहलमें अनेक झरोखे सुशोभित हैं। इन झरोखोंसे उठती हुई ज्योतिर्मयी किरणोंका वर्णन किन शब्दोंमें किया जाए ?

जहां लग हृद फूल बाग की, ए जिमी जोत अपार ।

ए जोत रोसनी जुबां तो कहे, जो आवे माहें सुमार ॥ ५२

जहाँ तक फूलबागकी सीमा है। यह भूमि अत्यन्त ज्योतिर्मयी है। इस ज्योतिके प्रकाशका वर्णन जिह्वा तभी कर सकती है जब उसकी कोई सीमा हो।

इत दिवाल तलें दस खिड़कियां, जित रूहें आवें जाएं ।

ए खूबी आवे तो नजरों, जो विचार कीजे रूह माहें ॥ ५३

रङ्गभवनकी दीवारके नीचे (मन्दिरकी पहली हारमें) दस खिड़कियाँ हैं, जिनसे होकर ब्रह्मात्माएँ नूरबागमें आती-जाती हैं। यह शोभा तभी दृष्टिगोचर हो सकती है जब अन्तरात्मासे इस पर विचार किया जाए।

इन आगूं लाल चबूतरा, ले चल्या अरस दिवाल ।

खूबी देख बन छाया, ए बैठक बड़ी विसाल ॥ ५४

इससे आगे उत्तर दिशामें रङ्गमहलकी दीवारसे लगा हुआ लाल चबूतरा है। यहाँ पर वृक्षोंकी छाया अत्यन्त शोभायमान है। धामधनी तथा ब्रह्मात्माओंके बैठनेके लिए यह बहुत बड़ी बैठक है।

ए जो भोम चबूतरा, बन आगूं बिराजत ।

इत केतेक जिमी में जानवर, रूहें हक हादी खेलावत ॥ ५५

एक भोम तक ऊँचे इस चबूतरेके सम्मुख बड़ेवनके वृक्ष सुशोभित हैं। यहाँ पर अनेक पशुपक्षी रहते हैं, जिनको श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ क्रीड़ा करनेकी प्रेरणा देते हैं।

ऊपर लाल चबूतरे, सब दरवाजे मेहेराब ।

एही झरोखे इन भोम के, खूबी आवे न माहें हिसाब ॥ ५६

लाल चबूतराके सम्मुख रङ्गमहलकी दीवारके सभी द्वार तोरण (मेहराब) के हैं। इस प्रथम भूमिकामें बारह हजार मन्दिरोंमें झरोखेके स्थान पर ये ही द्वार हैं। इनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

बड़ी बैठक इन चबूतरे, अति खूबी तिन पर ।

इत खूबी खुसाली होत है, जब खेलें बड़े जानवर ॥ ५७

इस चबूतरे पर स्थित अत्यन्त रमणीय बैठक पर श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ विराजमान होते हैं। जब यहाँ पर बड़े-बड़े पशुपक्षी अपनी कलाओंका प्रदर्शन करते हैं तब बड़ा आनन्द होता है।

एही झरोखे एही चबूतरा, दोऊ तरफ चेहेबच्चे दोए ।

एक पिछल जो छोडिया, आगूं दूजी भोम का सोए ॥ ५८

इन झरोखों तथा लालचबूतराके दोनों ओर दो जलकुण्ड हैं। इनमें-से एक (सोलह पहलका) पश्चिम दिशामें है तो दूसरा पूर्वमें दूसरी भूमिका पर खुलने वाला खड़ोकली है।

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन ।

छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों तिन ॥ ५९

इस खड़ोकलीके जलकुण्ड पर जो वन प्रदेश विस्तृत है उसकी शोभा अद्वितीय है। इसके तीनों ओर ताड़वनके वृक्षोंकी छाया सुशोभित है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए ।

इन चेहेबच्चे की सिफत, या मुख कही न जाए ॥ ६०

इस जलकुण्डके ऊपर (चौथी ओर) रङ्गभवनकी दीवार पर जलकी ओर झरोखे शोभायमान हैं। इस प्रकार इस जलकुण्डकी शोभा जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती है।

कै बन हैं इत ताड़ के, कै खजूरी नारियर ।

और नाम केते लेऊं, बट पीपल सर ऊमर ॥ ६१

यहाँ पर ताड़वनके अनेक वृक्ष सुशोभित हैं। उनके साथ-साथ खजूर एवं नारियलके वृक्ष भी हैं। यहाँ पर वट-पीपल, मौलसरी (सर), ऊमर (गूलर) आदिके अनेक वृक्ष हैं। इनमें-से कितनेका नाम लिया जाए ?

इत केतेक बन में हिडोले, ए जो रूहें लेत इत सुख ।

लिबोई घाट इत आए मिल्या, सो सोभा क्यों कहूं या मुख ॥ ६२

ताड़वनके (बाहरके) कतिपय वृक्षोंमें झूले लगे हुए हैं। उन पर झूलती हुई ब्रह्मात्माएं आनन्दका अनुभव करती हैं। इसके पूर्वमें निम्बूका घाट आ पहुँचा है। उसकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

हिडोले इन बन के, ए वन बड़ा विस्तार ।

इन आगूं घाट केल का, और बड़ा वन तिन पार ॥ ६३

इस वनमें अनेक झूले लगे हुए हैं। इसका विस्तार भी बहुत बड़ा है। इसके आगे केलका घाट है। उससे परे मधुवनका विस्तार है।

अब जो वन है केल का, सो आगूं पोहोंच्या जाए ।

तिन परे वन पहाड का, सब दोरी बंध सोभाए ॥ ६४

यह केलका वन यमुनाजीके तट पर दूर तक फैला हुआ है। उससे आगे पुखराज पर्वतको घेरकर मधुवन तथा महावनके वृक्ष पङ्क्तिबद्धरूपमें सुशोभित हैं।

वन बड़ा पुखराज का, कै मोहोल बडे अतंत ।

तिन परे बडे वन की, जुबां कहा करसी सिफत ॥ ६५

पुखराज पर्वतके चारों ओर मधुवन तथा महावनका बड़ा विस्तार है। यहाँ पर बड़े-बड़े प्रासाद हैं। इन विशाल वनोंकी शोभाका वर्णन यह जिह्वा कैसे कर सकती है ?

जाए मिल्या वन नूर के, नूर परे कहूं क्यों कर ।

जित ए न्यामत देखिए, सो सब सुमार बिगर ॥ ६६

यह वन अक्षरधाम तक विस्तृत है। उससे आगे इसके विस्तारका वर्णन कैसे

किया जाए ? परमधामकी इस अपार सम्पदाको जहाँसे भी देखते हैं, उसकी कोई सीमा ही दिखाई नहीं देती है।

अब कहूँ आगूँ अरस के, और जोए किनार ।

बन मोहोल नूर मकान, सोहे जोए के पार ॥ ६७

अब मैं रङ्गभवनके सम्मुख यमुना तटका वर्णन करता हूँ। यहाँके वन तथा प्रासाद यमुनाजीके पार अक्षरधाम तक सुशोभित हैं।

दोए पुल जोए ऊपर, ए अति खूबी मोहोलात ।

पाँच पाँच भोमें मोहोल की, ऊपर छठी चांदनी छत ॥ ६८

यमुनाजी पर दो पुल हैं। इन पर स्थित प्रासादोंकी शोभा अत्यन्त रमणीय है। ये प्रासाद पाँच-पाँच भूमिकाके हैं। उनके ऊपर छठी चाँदनी शोभायमान है।

ए जोत धरत हैं झरोखे, करें साम सामी जंग ।

जोत कही न जाए एक तिनका, ए तो मोहोल अरस के नंग ॥ ६९

इन दोनों पुलों पर आमने-सामने झरोखे हैं। उनसे निकलती हुई किरणें परस्पर स्पर्धा करती हैं। परमधामकी छोटी-सी तृणकी ज्योतिका भी वर्णन नहीं हो सकता, ये प्रासाद तो वहाँके रत्नोंके हैं।

तलें चलता पानी जोए का, दस घडनाले जल ।

नेहेरें चली जात दोरी बंध, ए जल अति उज्जल ॥ ७०

इन प्रासादोंके नीचे यमुनाजीका जल दस जलद्वारों (घड़नालों) से प्रवाहित होता है। पङ्क्तिबद्ध जलद्वारोंसे बहता हुआ यमुनाजीका यह जल अत्यन्त उज्ज्वल है।

चार चौकी वन माफक, छत पांचमी ऊपर किनार ।

ए जुगत बनी जोए मोहोल की, सोभित अति अपार ॥ ७१

यमुनाजीके तट पर बड़ेवनके पाँच वृक्षोंकी पङ्क्तियों पर विशाल चार चौक हैं। इनकी पाँचवीं भूमिकाकी छतके किनार दोनों पुलोंकी छतसे लगते हैं। इस प्रकार यमुना तटपर स्थित इन प्रासादोंकी अपार शोभा अत्यन्त सुन्दर है।

जोए ऊपर वन झरोखे, सो निपट सोभा है ए ।

फल फूल पात जल ऊपर, ए बने तोरन नंग जे ॥ ७२

यमुनाजीके ऊपर स्थित पुलके प्रासादों तथा दोनों तट पर स्थित वनके प्रासादोंके झरोखोंकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है। इन वनोंके फल, फूल तथा पत्ते जलके ऊपर प्रतिबिम्बित होकर तोरणमें लगे हुए रत्नोंकी भाँति सुशोभित हैं।

सामसामी दोऊ किनारें, तरफ दोऊ बराबर ।

दो वनकी दो जवेर की, मोहोल चारों अति सुंदर ॥ ७३

यमुनाजीके दोनों तट परस्पर समान दिखाई देते हैं। दोनों तटके वनोंमें स्थित वृक्षोंके प्रासाद तथा दोनों पुल पर स्थित रत्नके प्रासाद, इन चारोंकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है।

इनपुल दोऊ के बीचमें, बीच बने सातों घाट ।

तीन बाएं तीन दाहिने, बीच बनी चांदनी पाट ॥ ७४

इन दोनों पुलोंके मध्यमें यमुना तट पर सात घाट सुशोभित हैं। इन सातोंमें तीन घाट बायीं ओर तथा तीन दायीं ओर हैं एवं मध्यमें पाटका घाट चाँदनीके साथ सुशोभित है।

ए तुम सुनियो बेवरा, सात घाटों का इत ।

ए नेक नेक केहेत हों, सोभा अति अरस सिफत ॥ ७५

हे ब्रह्मात्माओ ! इन सातों घाटोंका विवरण यहाँ पर सुनो, इनकी शोभा अपरम्पार है तथापि मैं इनका संक्षिप्त वर्णन करता हूँ।

बनके मोहोल से चलिया, जानों तले ऊपर एक छत ।

छत दूजी घर पंखियों, बन ऊपर बन मोहोलात ॥ ७६

इन उपवनोंके प्रासादोंसे देखते हैं तो नीचे तथा ऊपर एक समान छत दिखाई देती है। दूसरी भूमिकाकी छत पर पक्षीगण निवास करते हैं। इस वनमें एक प्रासादके ऊपर दूसरा प्रासाद सुशोभित है।

ए जो पसु पंखी नजीकी, हक हादी खेलौने अतंत ।

बोल खेल सोभा सुंदर, सो इन मोहोलों बसत ॥ ७७

रङ्गभवनके निकटके ये पशुपक्षी श्रीराजश्यामाजीके अत्यन्त प्रिय खिलौने हैं। इनकी मधुर वाणी, क्रीड़ाएँ तथा सुन्दरता अत्यन्त शोभायुक्त हैं। ये सभी पशुपक्षी इन्हीं प्रासादोंमें वास करते हैं।

रात दिन गुंजें वनमें, हक की करें जिकर ।

क्यों कहूं इनों चित्रामन, सोभा अति सुंदर ॥ ७८

ये पशुपक्षी वनमें रात-दिन कलरव करते हुए श्रीराजश्यामाजीका यशोगान करते हैं। इनके पङ्क्तियों की चित्रकारीका वर्णन भी कैसे करें ? इनकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है।

बानी सुनते सुख उपजे, और देखें सुख अपार ।

या पसु या जानवर, सोभा न आवे माहें सुमार ॥ ७९

इन पक्षियोंकी मधुर वाणीका श्रवण करने पर तथा इनके सुन्दर स्वरूपको देखकर अपार आनन्दका अनुभव होता है। यहाँके पशु तथा पक्षी सभीकी शोभा अपार है जिसकी कोई सीमा ही नहीं है।

तीन घाट आगूं अरस के, जांबू अमृत अनार ।

सो अनार पोहोंच्या अरस को, दो दोऊ भर किनार ॥ ८०

रङ्गभवनके सम्मुख तीन घाट आरम्भ हुए हैं। उनमें दक्षिणमें जाम्बूका घाट, मध्यमें अमृतका घाट तथा उत्तरमें अनारका घाट है। इनमें-से अनार एवं जाम्बू दोनोंके पश्चिमी किनार रङ्गभवनकी दीवार तक पहुँचे हुए हैं।

घाट तीन हांस पचास लों, बीच बडे दरबार ।

दो घाट लगे दोऊ हिडोलों, दो घाट हिडोलों पार ॥ ८१

ये तीनों घाट रङ्गभवनके सम्मुख पचास पहलमें विस्तृत हैं। अन्य दो घाटोंमें उत्तरमें निम्बूका घाट ताड़वनके झूलों तथा दक्षिणमें नारङ्गीका घाट वट-पीपलकी चौकीके झूलोंके साथ लगे हुए हैं। शेष दो घाट (उत्तरमें केल तथा दक्षिणमें वट) इन झूलोंको भी पार कर मधुवन तथा कुञ्जवन तक विस्तृत हैं।

ए जो पाट घाट अमृत का, सो आया आगूं चबूतर ।

चौक चौड़ा हिसे तीसरे, इत दीदार होत जानवर ॥ ८२

इन सातों घाटोंमें मध्यमें स्थित अमृतका वन धाम चबूतरा तक विस्तृत है। इसके तीसरे भागमें (१६६ मन्दिर लम्बा चौड़ा) चाँदनी चौक है। यहीं पर पशुपक्षियोंको श्रीराजश्यामाजीके दर्शन होते हैं।

ता बीच चौड़े दो चबूतरे, ऊपर हरा लाल दरखत ।

छाया बराबर चबूतरे, ए निपट सोभा है इत ॥ ८३

इसी चाँदनी चौकके अन्दर दो विशाल चबूतरे हैं। उन पर हरित तथा रक्तवर्णके वृक्ष सुशोभित हैं। इन दोनों वृक्षोंकी छाया चबूतरे तक छायी हुई है। यहाँ पर इनकी शोभा अति अद्वितीय है।

लंबा चौड़ा चारों हांसों, बराबर दोरी बंध ।

अनेक रंग वन इतका, सोभित अनेक सनंध ॥ ८४

चारों ओरसे समान रूपसे लम्बा-चौड़ा (वर्गाकार) चाँदनी चौक अत्यन्त सुशोभित हैं। इससे आगे अमृतवनमें विभिन्न रङ्गोंके वृक्ष विभिन्न प्रकारसे सुशोभित हैं।

वन गृदवाए अरस के, देख आए आगूं द्वार ।

केहे ना सकों हिसा कोटमां, अरस वन कहा अपार ॥ ८५

इस प्रकार रङ्गभवनके चारों ओरके वन, उपवनका दर्शन कर हम द्वारके सम्मुख आ पहुँचे हैं। इन वन- उपवनोंकी शोभा अपरम्पार है। उनके करोड़वाँ अंशका भी वर्णन नहीं किया जा सकता।

वन में फिरके देखिया, अरस अजीम के गृदवाए ।

एकल छाया वन की, तलें जिमी जोत कही न जाए ॥ ८६

परमधामके चारों ओर व्याप्त इन वन-उपवनोंमें विचरण करके देखा, यहाँके वृक्षोंकी छाया सर्वत्र एक समान है। यहाँकी भूमिकी उज्ज्वल ज्योतिका वर्णन ही नहीं किया जा सकता है।

वन छाया दिवाल लग, झूमत झरोखों पर ।

ठाढे होए के देखिए, आवत चांदनी लों नजर ॥ ८७

इन चारों ओरके वनोंके वृक्षोंकी छाया रङ्ग भवनकी दीवार तक पहुँचती है तथा वृक्षोंकी शाखाएँ झरोखोंके साथ झूमती हैं। चाँदनी चौकमें खड़े होकर देखते हैं तो ऐसी शोभा चाँदनी तक दिखाई देती है।

फिरती गृदवाए चांदनी, नवों भोम झरोखे ।

गृदवाए बिचारी गिनती, छे हजार हर हारके ॥ ८८

रङ्गभवनकी नवों भूमिकाओंमें चाँदनी तक चारों ओर झरोखे सुशोभित हैं। यदि चारों ओरके झरोखोंकी गणना की जाए तो प्रत्येक भूमिकामें छः-छः हजार झरोखे हैं।

एही आतम को पूछ के, नवों भोम करो विचार ।

ले भोम से लग चांदनी, ए भी हारें छे हजार ॥ ८९

हे सुन्दरसाथजी ! अपनी आत्माकी साक्षीसे इन नवों भूमिकाओंमें स्थित झरोखोंका विचार करो। प्रथम भोमसे लेकर दशमी चाँदनी तक ये छः-छः हजार झरोखे पङ्क्तिबद्ध शोभायमान हैं।

हर हार चढती नव नव, छे हजार फिरती हर हार ।

जमा भए नव भोम के, अरध लाख चार हजार ॥ ९०

इस प्रकार प्रत्येक भूमिकामें पङ्क्तिबद्ध रूपमें शोभायमान ये छः-छः हजार झरोखे नवों भूमिकाओंमें कुल मिलाकर ५४ हजारकी संख्यामें सुशोभित हैं।

झरोखे कै विध के, गिनती होए क्यों कर ।

कहूं जुदे जुदे कहूं सामिल, ए लीजो दिल धर ॥ ९१

ये झरोखे विभिन्न प्रकारके हैं जिनकी गिनती ही नहीं हो सकती है। कहीं पर ये अलग-अलग हैं तो कहीं पर एक दूसरेसे मिले हुए हैं। इनकी शोभाको हृदयमें धारण कर लें।

ए जो एक एक लीजे दिल में, तो हर हांसे तीस तीस ।

कहूं एक झरोखा तीस का, कहूं दस कहूं बीस ॥ ९२

हृदयपूर्वक विचार करने पर ज्ञात होगा कि तीस-तीस मन्दिरके प्रत्येक पहल

(हांस) में तीस-तीस झरोखे हैं। यद्यपि एक-एक पहल तीस-तीस मन्दिरके हैं किन्तु कहीं-कहीं पर कोई पहल दस मन्दिरके तथा कोई बीस मन्दिरके हैं। इसलिए झरोखे भी दस मन्दिरके पहलमें दस-दस एवं बीस मन्दिरके पहलमें बीस-बीस हैं।

गृदवाए कठेडा चांदनी, क्यों कहूं खूबी जुबान ।

अरस एकै जवेर का, ए कै विध रंग रस जान ॥ १३

रङ्गभवनकी चाँदनीके चारों ओर कटहरा शोभायमान है। उसकी शोभाका वर्णन कैसे करें ? यद्यपि सम्पूर्ण रङ्गभवन एक ही रत्नका है तथापि इससे विभिन्न रङ्गोंकी आभा झलकती है।

कै विध की इत बैठकें, जुदे जुदे कै ठौर ।

चारों तरफों अरस के, देखी एक पेँ एक और ॥ १४

यहाँ पर विभिन्न स्थानोंमें अनेक बैठक स्थल हैं। रङ्गभवनके चारों ओरके बैठक स्थल एकसे बढ़कर एक रमणीय हैं।

हर खांचों साठ गुमटियां, सोभित फिरती हार ।

ए झरोखे कंगुरे, बैठक बारे हजार ॥ १५

रङ्गभवनके चारों ओर प्रत्येक पहल (हांस) में (गुर्जोंके मध्य एक-एक मन्दिरके स्थानमें दो-दो इस प्रकार) साठ-साठ गुमटियाँ सुशोभित हैं। यहाँ पर सुन्दर झरोखे हैं उनके किनार पर कंगूरे शोभायमान हैं। यहाँ पर बारह हजार ब्रह्मात्माओंके लिए सुन्दर बैठकें हैं।

दो सौ खांचों ऊपर, सोभें नगीने सौ दोए ।

बुजरक बीच गुमटियां, खूबी केहे न सके कोए ॥ १६

इस प्रकार रङ्गभवनके दो सौ पहल (हांसों) पर दो सौ गुर्ज शोभायमान हैं। इनके मध्यमें स्थित श्रेष्ठ गुमटियोंकी शोभाका वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है।

ए जो दो सै एक नगीने, कलस बने इन पर ।

इन विध की ए रोसनी, ए जुबां कहे क्यों कर ॥ १७

इन दो सौ एक गुर्जोंके ऊपर प्रत्येकमें कलश सुशोभित हैं। इनसे उठता हुआ

प्रकाश इतना सुन्दर है कि यह झूठी जिह्वा उसकी शोभाका वर्णन कैसे कर सकती है ?

और कलस ऊपर गुमटियों, ए जो कहे कंगुरे बारे हजार ।

ए जोत जुबां ना केहे सके, झलकारों झलकार ॥ १८

जिन गुमटियों ऊपर कलश हैं उनकी दोनों ओर स्थित कंगूरेकी संख्या भी बारह हजार है. इनसे उठती हुई ज्योतिर्मयी किरणोंकी शोभा जिह्वा द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती. सर्वत्र उनका ही तेज झलकता हुआ प्रतीत होता है.

कलसों पर जो बेरखे, सो क्यों कहूं रोसन नूर ।

ए जो बनी बराबर गृदवाए, हुओ बीच आसमान जहूर ॥ १९

प्रत्येक कलश पर ध्वजा (बेरखा) लहराता है. उनके प्रकाशका वर्णन कैसे किया जाए ? चारों ओर समान रूपसे सुशोभित इन कलशोंके प्रकाशसे पूरा आकाश प्रकाशित होता है.

केहे केहे मुख जेता कहे, सो सब हिसाब के माहिं ।

और हक हुकम यों केहेत है, ए सिफत पोहोंचत नाहिं ॥ १००

इस दिव्य शोभाका वर्णन करते हुए जितना भी कहा जाए उसकी सीमा हो सकती है. किन्तु मैं तो धामधनीके आदेशसे वर्णन कर रहा हूँ. वस्तुतः इस शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए छोडिए नहीं एक दम ।

अब कहूं अंदर अरस की, जो दिए निसान खसम ॥ १०१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! इस अलौकिक दृश्यसे क्षणभरके लिए दृष्टि न हटाएँ. धामधनीने मुझे जिस प्रकार सङ्केत दिया है तदनुसार अब मैं रङ्गभवनके अन्दरकी भी शोभाका वर्णन करता हूँ.

प्रकरण ३० चौपाई १५३८

दसों भोम

भोम पेहेली

बडा चौक सोभा लेत है, बडे दरवाजे अंदर ।

बडी बैठक इत गिरोह की, आगूं रसोई के मंदर ॥ १

रङ्गभवनके विशाल द्वारके अन्दर विशाल (अठ्ठाईस स्तम्भका) चौक शोभायमान है। यहाँ पर ब्रह्मात्माओंको बैठनेके लिए विशाल बैठक है। इससे आगे रसोईका मन्दिर (हवेली) है।

दस स्याम सेत के लगते, दस मंदिर सामी हार ।

इन चौक की रोसनी, मावत नहीं झलकार ॥ २

इस (रसोईकी) हवेलीमें श्याम तथा श्वेत मन्दिरकी पङ्क्तिमें उनके सहित दस मन्दिर हैं। पूर्व दिशामें (दोनों ओर पाँच-पाँच) दस मन्दिर हैं। इस प्रकार इस चौकका प्रकाश वहाँ पर समाता नहीं है।

कै नकस कै कटाव, इन भोम में देखत ।

दिन पंद्रे खेलें वन में, पंद्रे आरोगें इत ॥ ३

इस भूमिकामें विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी है। सखियाँ शुक्ल पक्षके पन्द्रह दिनों तक वन, उपवनमें क्रीड़ाएँ करती हैं तथा कृष्णपक्षके पन्द्रह दिनोंमें यहाँ पर बैठकर रात्रिकी भोजन लीला करती हैं।

इन चौक में साथ जी, बोहोत बेर बैठत ।

आवत जात वनथें, बैठत इत अलबत ॥ ४

सखियाँ इस चौकमें अधिक समय तक बैठती हैं। वनमें जाते हुए अथवा वनसे आते हुए यहाँ पर उनका अधिकतर बैठना होता है।

लाडबाई के जुथ की, इत बोहोत खेल करत ।

बाहेर अंदर चौक में, वन मोहोलों सुख लेवत ॥ ५

लाडबाईके समूहकी सखियाँ यहाँ पर विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ करती हैं। इस प्रकार सखियाँ कभी बाहर, कभी अन्दर, कभी चौकमें, कभी वनमें, कभी प्रासादोंमें अपार सुखका अनुभव करती हैं।

वन मोहोल बिलास को, सुख गिनती में आवत नाहिं ।

ए ना कछू जुबां केहे सके, चुभ रहेत चित माहिं ॥ ६

सखियाँ पन्द्रह दिन वनमें तथा पन्द्रह दिन इन प्रासादोंमें जो आनन्द प्राप्त करती हैं, उसकी गणना नहीं की जा सकती. जिह्वाके द्वारा इसका वर्णन ही नहीं हो सकता है यह दृश्य तो केवल हृदयमें ही अङ्कित होता है.

राजश्यामाजी बैठत, वनथे फिरती वखत ।

इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत ॥ ७

जब श्रीराजश्यामाजी सखियों सहित वनसे लौटकर आते हैं उस समय यहीं पर बैठकर भोजन लीला करते हैं. तत्पश्चात् नृत्य लीलाके लिए चौथी भूमिकामें चले जाते हैं.

जैसा चौक तलें का, तैसा ही ऊपर ।

आगूं झरोखे दूजी भोम के, इत चौक बीस मंदर ॥ ८

जिस प्रकार प्रथम भूमिकामें रसोईका चौक है उसी प्रकारका चौक दूसरी भूमिकामें भी झरोखोंके आगे स्थित है. यहाँ पर यह चौक (चारों ओरसे) बीस मन्दिरका है.

इसी भांत भोम तीसरी, ऊपर चढती चढती जे ।

खूबी लेत अति अधिक, चौक ऊपर चौक ए ॥ ९

तीसरी भूमिका की रचना भी इसी प्रकारकी है. इस प्रकार उत्तरोत्तर इसी प्रकारके चौक शोभायमान हैं. इस प्रकार एकके ऊपर स्थित दूसरे ये चौक अत्यन्त शोभायमान हैं.

नवों भोम इन विध की, आगूं उपरा ऊपर बडे द्वार ।

आगे चौक सबन के, सबों फिरते थंभ हार ॥ १०

धाम द्वारके (सम्मुखके) ये चौक एकके ऊपर दूसरा इस प्रकार नवों भूमिका तक शोभायमान हैं. इन सभी चौकोंके आगे चारों ओर पङ्क्तिबद्ध स्तम्भ हैं.

और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक ।

ए कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक ॥ ११

यहाँकी शोभाका वर्णन किस प्रकार किया जाए ? यहाँ पर प्रत्येक भूमिकामें

अनेक सुन्दर स्थान हैं. करोड़ों जिह्वा भी इस शोभाका वर्णन करने में असमर्थ हैं तो फिर यह एक जिह्वा क्या कर सकेगी ?

भोम दूसरी

स्याम सेत के बीच में, सीढियां सुंदर सोभित ।

बोहोत साथ इत आए के, चढ उतर करत ॥ १२

रसोईके चौकके ईशान कोणमें श्याम तथा श्वेत मन्दिरोंके मध्यमें सुन्दर सीढियाँ शोभायमान हैं. बहुत-सी सखियाँ इन सीढियोंसे चढ़ती तथा उतरती हैं.

इतथें चले खेलन को, आगूं मंदिर जहां भूलवन ।

जब जात चेहेबच्चे झीलने, तब खेलें ठौर इन ॥ १३

यहींसे होकर सखियाँ दूसरी भूमिकामें स्थित भूलभुलवनीमें खेलनेके लिए चली जाती हैं. तब वे सर्व प्रथम जलकुण्ड (खड़ोकली) में जलक्रीड़ा कर पुनः इन मन्दिरोंमें आकर खेलती हैं.

खेल करें इत भूलवनी, मंदिर एक सौ दस की हार ।

सो हर तरफों गिनिए, एही गिनती तरफ चार ॥ १४

भूलभुलवनीके इन मन्दिरोंमें सखियाँ विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हैं. यहाँ पर एक सौ दस मन्दिरोंकी एक सौ दस पङ्क्तियाँ हैं. चारों ओरसे गणना करने पर प्रत्येक दिशामें मन्दिरोंकी यही गिनती है.

ए भूलवनी ऐसी भई, देखी चारों किनार ।

द्वार सबों बराबर, भए मंदिर बारे हजार ॥ १५

यह भूलभूलवनी कुछ इस प्रकारकी है कि चारों कोणोंसे देखने पर एक सौ दस मन्दिरोंकी गणनाके अनुसार यहाँ पर बारह हजार एक सौ मन्दिर होते हैं किन्तु मध्यमें सौ मन्दिरका एक चौक है इसे छोड़कर इन मन्दिरोंकी संख्या बारह हजार होती है सभीमें एक समान द्वार हैं.

मंदिर जुदे कर गिनिए, हर मंदिर दरवाजे चार ।

यों गिनती बारे हजार की, भए अडतालीस सहस्र द्वार ॥ १६

यदि प्रत्येक मन्दिरके द्वारोंकी अलग-अलग गणना करते हैं तो प्रत्येकमें

चार-चार द्वार हैं. इस प्रकार बारह हजार मन्दिरोंमें कुल अड़तालीस (४८) हजार द्वार होते हैं.

सोए भई इत भूलवनी, भए द्वार चौबीस हजार ।

एक दूजे में गिनात है, खेलें हंसे रूहें अपार ॥ १७

इस गणनामें भी भूल ही होती है, वस्तुतः इनमें मात्र चौबीस हजार द्वार ही हैं. क्योंकि प्रत्येक मन्दिरका द्वार दूसरे मन्दिरसे मिला हुआ है. इस प्रकार दो मन्दिरोंके मध्य एक ही द्वार होनेके कारण इनकी संख्या चौबीस हजार हैं. यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ क्रीड़ा करती हुई हास्यविनोद करती हैं.

रूहें द्वार एक दौडके, चौथे जाए निकसत ।

प्रतिबिंब उठें कै तरफों, कोई काहूँ ना पकडत ॥ १८

यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ दौड़कर एक द्वारसे प्रवेश करती हैं तो चौथे द्वारसे निकलती हैं. उनका प्रतिबिम्ब अनेकों स्थानों पर पड़ता है. इसीलिए कोई भी सखी एक दूसरेको पकड़ नहीं पाती.

भागत एक मंदिर से, प्रतिबिंब उठें अपार ।

पकडन कोई न पावहीं, निकस जाए कै द्वार ॥ १९

जब सखियाँ एक मन्दिरसे दूसरे मन्दिरकी ओर दौड़ती हुई जाती हैं, उस समय उनके असंख्य प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं. इसलिए कोई भी किसीको पकड़ नहीं पाती और अनेकों द्वारोंसे निकलकर चली जाती हैं.

इन ठौर खेल रूहन के, बोहोत भई भूलवन ।

होत हांसी इत खेलते, रंग रस बढत रूहन ॥ २०

इस भूमिकामें खेलती हुई सखियाँ अनेकों बार भूल जाती हैं. इस प्रकार क्रीड़ा करते हुए उनकी हंसी होती है तथा उस हंसीसे उनके हृदयमें उमङ्ग बढ़ता है.

इनहूँ बीच चबूतरा, हक हादी मध बैठत आए ।

ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए ॥ २१

इन मन्दिरोंके मध्यमें एक चबूतरा है वहाँ पर स्थित सिंहासन पर

श्रीराजश्यामाजी विराजमान होते हैं. उस समयकी शोभाका वर्णन इस जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है .

दूजी भोम का चेहेबच्चा, धनी बैठत इत अन्हाए ।

सिनगार समे रूहन के, इन जुबां कह्यो न जाए ॥ २२

दूसरी भूमिकामें स्थित जलकुण्ड (खड़ोकली) में स्नान कर धामधनी यहाँ पर विराजमान होते हैं. तत्पश्चात् ब्रह्मात्माओंके शृङ्गारका समय होता है, इस शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

इत खेल के आए चेहेबच्चे, अन्हाए के कियो सिनगार ।

पीछे चरणों लागें जुगल के, माहें माए ना मंदिरों झलकार ॥ २३

इन मन्दिरोंमें क्रीड़ा करनेके बाद सखियाँ जलकुण्डमें जाकर स्नान करती हैं. तत्पश्चात् शृङ्गार कर श्रीराजश्यामाजीके चरणोंमें प्रणाम करती हैं. उनके आभूषणोंका प्रकाश इन मन्दिरोंमें समाता नहीं है.

ए नेक कही इन ठौर की, इत हिसाब बिना बैठक ।

सुख देत इत कायम, जैसा बुजरक हक ॥ २४

यह तो यहाँका थोड़ा-सा ही वर्णन है. यहाँ पर बैठनेके लिए अनेक रमणीय स्थल हैं. यहाँ पर बैठकर धामधनी ब्रह्मात्माओंको नित्यप्रति अपने अनुरूप अखण्ड आनन्द प्रदान करते हैं.

ए दूजी भोम जो अरस की, इत बोहोत बडो विस्तार ।

ए नेक नेक केहेत हों, जुबां कहा कहे सिफत सुमार ॥ २५

रङ्गभवनकी इस दूसरी भूमिका (तल्ला) का विस्तार अति बड़ा है. मैंने उसका थोड़ा-सा ही वर्णन किया है. इसकी अपार शोभाको व्यक्त करनेमें मेरी जिह्वा समर्थ नहीं है.

भोम तीसरी

बैठे हक हादी भोम तीसरी, जित आवत नूर जलाल ।

इत दोए पोहोर की बैठक, और सेज्या सुख हाल ॥ २६

श्रीराजश्यामाजी प्रातःकाल तीसरी भूमिकामें विराजमान होते हैं. इसी समय

उनके दर्शनके लिए अक्षरब्रह्म चाँदनी चौकमें चले आते हैं। श्रीराजश्यामाजी यहाँ पर दो प्रहर तक बैठते हैं। तत्पश्चात् पीले मन्दिरमें जाकर शय्या पर विश्राम करते हैं।

बीच बन्या दरवाजा दो हांस का, बीच दस झरोखे ।

पाँच बने बाईं हांस के, पाँच दाहिनी से ॥ २७

रङ्गभवनका द्वार दो पहलों (हाँसों) के मध्यमें दायीं ओरसे पाँच एवं बायीं ओरसे पाँच मन्दिर लेकर इस प्रकार कुल दस मन्दिरका बना हुआ है। इस पहलमें दस झरोखे शोभायमान हैं।

बड़े झरोखे तिन पर, तिन पर बड़े देहेलान ।

इत आए फजर पसू पंखियों, दीदार देत सुभान ॥ २८

यहाँ पर द्वारके ऊपर दस मन्दिरका एक बड़ा झरोखा बड़े दालानके रूपमें है। श्रीराजजी प्रातःकाल इसी दालानमें आकर पशुपक्षियोंको दर्शन देते हैं।

देहेलान दस मंदिर का, झरोखे दस सामिल ।

माहें चौक दस मंदिर का, हुए तीनों मिल कामिल ॥ २९

यह विशाल स्थान इस प्रकार का है :- यहाँ पर दस मन्दिरका दालान है और दस मन्दिरके स्थान पर झरोखे हैं। इन दोनोंके मध्यमें दस मन्दिरका चौक है। इस प्रकार ये तीनों मिलकर विशाल स्वरूप धारण किए हुए हैं।

[दस मन्दिरके दालानका तात्पर्य :- नीला, पीला तथा बीचका मन्दिर सहित मन्दिरोंकी इस पङ्क्तिमें दश मन्दिरसे है। दस मन्दिरका झरोखा : छज्जेका बाहरी भाग है एवं दोनोंके बीचका चौक : छज्जेका अन्दरका भाग है।]

तीसरा हिस्सा एक हांस का, ए जो दस झरोखे ।

द्वार थंभ आगूं इन, ना दिवाल बीच इनके ॥ ३०

एक पहलके तीसरे भागमें अर्थात् दस मन्दिरके स्थान पर दस झरोखे हैं। इनके आगे द्वार तथा स्तम्भ हैं, बीचमें कोई दीवार नहीं है।

और सुख इन भोम के, बोहोत बडो विस्तार ।

सो मुख बानी क्यों कहूं, जिनको नहीं सुमार ॥ ३१

इस तीसरी भूमिकामें अपार सुखका अनुभव होता है। जिनकी कोई सीमा नहीं है। इसलिए इसका वर्णन वाणीके द्वारा नहीं हो सकता है।

मंदिर दस का बेवरा, दस का एकै देहेलान ।

मांहे बाहेर बराबर, जानें मोमिन अरस बयान ॥ ३२

यहाँ पर स्थित दस मन्दिरोंका विवरण यह है कि इन मन्दिरोंके स्थान पर एक ही दालान है जो बाहर और भीतर दोनों ओर एक समान है। ब्रह्मात्माएँ ही इसका अनुभव कर सकती हैं।

और जो झरोखे गृदवाए के, तिनहीं के सरभर ।

एता ऊंचा जिमी से, देखें हुकमें रूहें नजर ॥ ३३

रङ्ग भवनके चारों ओर जितनी ऊँचाई पर झरोखे हैं उसी ऊँचाई पर इन दस मन्दिरोंके झरोखे हैं। ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके आदेशसे इस दृश्यको आत्मासात् कर सकती हैं।

छे मंदिर आगूं सिद्धियां, दोऊ तरफ चढाए ।

चौक छोटे आगूं देहरी, सोभा इन मुख कही न जाए ॥ ३४

दालानके दोनों ओर तीन-तीन मन्दिर हैं। उन मन्दिरोंके पश्चिम द्वारकी देहलीके आगे चबूतरे हैं। उनके दोनों ओर तीन-तीन सीढ़ियाँ हैं। इनकी शोभा जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती।

और चौक बडा जो बीच का, सीढी सनमुख आगूं द्वार ।

सोए बराबर द्वारके, सोभा कहूं जो होए सुमार ॥ ३५

मध्यमें स्थित विशाल चौकके पश्चिममें द्वारके सम्मुख (अठ्ठाईस स्तम्भके चौकमें उतरनेके लिए) तीन सीढ़ियाँ हैं। यह चौक द्वारके समतल है। इसकी शोभाकी कोई सीमा ही नहीं है।

दोऊ तरफों खिड़कियां, तिन आगूं बढती पडसाल ।

ए रूहें नजरों नीके देखहीं, तो तेहेकीक बदले हाल ॥ ३६

इस मध्यके चौकके दोनों ओर तीन-तीन मन्दिर हैं. उनके दोनों ओर दीवारके स्थान पर खिड़कियाँ (जालीदार द्वार) हैं. उनके आगे खुला स्थान पडसाल है. आत्मिक दृष्टिसे इस शोभाका दर्शन करने पर निश्चय ही जीवनकी स्थिति बदल जाती है.

और आरोगें भी इतहीं, इत बैठें नूर जमाल ।

दौडत रूहें निहायत, ए क्यों कहूं खुसाली ख्याल ॥ ३७

इसी दालानमें बैठकर श्रीराजश्यामाजी भोजन लीला करते हैं. उनकी सेवाके लिए सखियाँ भोजन सामग्री लेकर दौड़ती हुई आती हैं. उनके इस आनन्दका वर्णन कैसे किया जाए ?

बडी बैठक पडसाल की, इत मेवा मिठाई आरोगत ।

कर सिनगार चरनों लगें, सबे इत बैठत ॥ ३८

इसी विशाल बैठकमें विराजमान होकर श्रीराजश्यामाजी मेवा मिठाइयोंका रसास्वादन करते हैं. ब्रह्मात्माएँ भी शृङ्गार कर उनके चरणोंमें आकर बैठ जाती हैं.

सिनगार करें देहेलान में, आरोगें और मंदर ।

इतहीं दीदार नूर को, दिन पौढें पलंग अंदर ॥ ३९

ब्रह्मप्रियाएँ श्रीराजजीका शृङ्गार भी इसी दालानमें करती हैं. तत्पश्चात् धामधनी मन्दिरमें बैठकर भोजन ग्रहण करते हैं. वे अक्षरब्रह्मको यहींसे दर्शन देते हैं. भोजन लीला पश्चात् तीसरे प्रहर तक अन्दरके मन्दिरमें जाकर पलङ्गमें विश्राम करते हैं.

दो हांस बीच तीसरा हिसा, तिनके झरोखे दस ।

एक हांस तिनकी बढी, ए भी सोभा एक रस ॥ ४०

दो पहलोंमें-से पाँच-पाँच मन्दिर लेकर रङ्गभवनके मुख्य द्वारका पहल है. इस पहलमें दस झरोखे शोभायमान हैं. इस प्रकार एक पहल बढ़ कर

रङ्गमहलके दो सौ एक पहल होते हैं. इस पहलकी शोभा भी सभीके साथ एक समान है.

बड़ा दरवाजा इनमें, बीच दोए हांस इन ।

भोम तले लग चांदनी, ए खूबी अति रोसन ॥ ४१

इस प्रकार दो पहलके मध्यमें रङ्गभवनका बड़ा द्वार शोभायमान है. प्रथम भूमिकासे लेकर चाँदनी तक दस मन्दिरोंका यह पहल विशेषरूपसे शोभायमान है.

अंदर चौड़ाई चौक की, और भी हैं कै ठौर ।

जुदे जुदे सुख लेत हैं, रंग रस कै और और ॥ ४२

रङ्गभवनमें द्वारके अन्दर विशाल चौक है. इस प्रकारके चौक प्रत्येक भूमिकामें हैं. इन विभिन्न स्थानोंमें ब्रह्मात्माएँ विभिन्न प्रकारके रङ्गोंमें रङ्गी हुई आनन्दका अनुभव करती हैं.

भोम चौथी

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल ।

चौक मध्य अति सुंदर, क्यों कहूं मंदिर द्वार ॥ ४३

चौथी भूमिकामें नृत्यलीला होती है, वहाँ पर चौरस हवेलियोंकी तीन पङ्क्तियोंको छोड़कर चौथी पङ्क्तिमें विशाल नृत्यशाला है. उसके मध्यमें सुन्दर चौक है. यहाँके मन्दिरों तथा द्वारोंकी शोभाका वर्णन कैसे करें ?

तीनों तरफों मंदिर, आगूं दो दो थंभों की हार ।

बड़ा मोहोल अति सोभित, सुंदर अति सुखकार ॥ ४४

यहाँ पर उत्तर दक्षिण तथा पश्चिम तीनों ओर मन्दिर हैं. सामने (पूर्वमें) स्तम्भोंकी दो पङ्क्तियाँ हैं. यह विशाल नृत्यशाला अति सुन्दर तथा सुखदायी है.

थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदिर ।

बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर ॥ ४५

इस नृत्यशालाके स्तम्भ (पूर्वदिशाके) तथा द्वार अत्यन्त सुन्दर हैं. तीनों दिशाओंमें बीस-बीस मन्दिरोंकी गणनासे कुल साठ मन्दिर हैं. मध्यमें

चबूतरे पर बैठनेके लिए अति सुन्दर स्थान है.

द्वार सोभित कमाडियों, साठों करें झलकार ।

और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार ॥ ४६

इन साठ मन्दिरोंके किवाड़ रत्न जड़ित होनेसे अत्यन्त प्रकाशमान हैं. इसी प्रकार स्तम्भोंसे निकलती हुई ज्योतिका भी कोई पारावार नहीं है.

पीठ पीछे जो मंदिर, कै रंग सेत दिवाल ।

दाहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूं नकस मिसाल ॥ ४७

पृष्ठभागमें स्थित मन्दिरोंकी दीवार श्वेत है. उनमें विभिन्न रङ्गोंके रत्नोंकी आभा झलक रही है. दक्षिण दिशा (दायीं ओर) के मन्दिरोंकी दीवार लाक्षा रङ्गकी है. यहाँ पर की हुई चित्रकारीकी शोभा अद्वितीय है.

बाईं तरफ दिवाल जो, मंदिर लिबोई रंग ।

बेल नकस कटाव कै, सो केते कहूं तरंग ॥ ४८

उत्तर दिशा (बायीं ओर) के मन्दिरोंकी दीवार निम्बू जैसे रङ्गकी है. उन पर विभिन्न प्रकारकी लताओंकी चित्रकारी है. उनसे उठती हुई किरणोंकी तरङ्गोंका वर्णन कहाँ तक करूँ ?

हरी दिवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर ।

चारों तरफों अरस जवेर, करें जंग नूर सों नूर ॥ ४९

सामने पूर्वदिशामें कुछ दूरी पर स्थित मन्दिरोंकी दीवार हरित रङ्गकी है. इस प्रकार चारों ओरसे परमधामके रत्नोंसे उठी हुई किरणें परस्पर द्वन्द्व करती हैं.

एह ठौर है निरत की, सो केता कहूं मजकूर ।

चारों तरफों ऊपर तलें, कहूं मावत नहीं जहूर ॥ ५०

यह विशाल स्थान नृत्यशाला है. इसका वर्णन कहाँ तक करें ? यहाँका प्रकाश चारों ओर तथा ऊपर-नीचे कहीं भी नहीं समाता है.

राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन ।

रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन ॥ ५१

इस चौकके मध्यभागमें चबूतरे पर श्रीराजश्यामाजीकी बैठकके लिए सुन्दर

सिंहासन शोभायमान है. उस पर बैठकर श्रीराजजी बारह हजार ब्रह्मात्माओंको शाश्वत सुख प्रदान करते हैं.

कै विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत ।

हाथ पाँउ अंग वालत, कही न जाए सिफत ॥ ५२

यहाँ पर विभिन्न वाद्ययन्त्र बजते हैं तथा नवरङ्गबाईका नृत्य होता है. नृत्यके समय वह हाथ-पाँवको मोड़ती हुई विभिन्न मुद्राओंका प्रदर्शन करती है. इस समयकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

ले बाजे रूहें खडी, मृदंग जंत्र ताल ।

रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल ॥ ५३

ब्रह्मात्माएँ खड़ी होकर करताल, मृदङ्ग, यन्त्र, रबाब, चङ्ग, तम्बूरा आदि वाद्ययन्त्र बजाती हैं. इस समय वंशीकी ध्वनि अत्यन्त रसप्रद सुनाई देती है.

पाँउ झाँझर घूँघर बोलहीं, काँबी कडली बाजत ।

याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिए गाजत ॥ ५४

नवरङ्गबाईके पाँवमें बँधे हुए झाँझरी, घुँघरु, काँबी, कड़ा आदि आभूषण नृत्यके समय एकसाथ बजते हैं साथमें अंगुष्ठ (अनवट) तथा मुद्रिकाओं (बिछुए) की मिश्रित ध्वनि भी गुञ्जायमान होती है.

हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत ।

और भूषन सबों अंगों, सोभित सब सूरत ॥ ५५

हाथोंमें पहने हुए कङ्कणके रत्नों तथा नवघरीसे एक समान स्वर निकलता है. इस प्रकार सभी अङ्गों तथा उनके आभूषणोंकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है.

जिन विध पाँउ चलावहीं, सोई भूषन बोलत ।

जो बजावें झाँझरी, तो घूँघरी कोई ना चलत ॥ ५६

नृत्य करते समय वह जैसे पाँव भरती है आभूषणसे भी उसीके अनुकूल स्वर निकलता है. जब वह झाँझरी बजाना चाहती है तो झाँझरी ही बजती है. उस समय घुँघरुके स्वर नहीं निकलते हैं.

जो बोलावत घूंघरी, तो नहीं झांझरी बान ।

जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान ॥ ५७

जब वह घुँघुरु बजाती है तो उस समय झाँझरीका स्वर नहीं निकलता है। जब वे सभी भूषणोंको बजाना चाहती है तो सबकी ध्वनि समान रूपसे मुखरित होती है।

प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान ।

याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान ॥ ५८

इस समय सभी सखियाँ प्रेमरसपूर्ण मधुर वाणीमें गायन करती हैं। इस गायनके अनुरूप हस्तमुद्राओंका प्रदर्शन करती हुई वारंवार स्वरसे स्वर मिलाती है।

कै जुदे जुदे बोलें भूषन, सब बाजे मिलावत संग ।

एक रस सब गावत, नवरंग बाई के रंग ॥ ५९

इस समय नवरङ्गबाईके सभी आभूषण अलग-अलग ध्वनि करते हुए भी वाद्ययन्त्रोंके साथ लयबद्ध हो जाते हैं। सभी सखियाँ भी नवरङ्गबाईके रङ्गमें रङ्गकर एक रस होकर गायन करती हैं

हाथ धरत मृदंग पर, जब अब्बल स्वर करत ।

निरत करें कै विधसों, कै गुन कला ठेकत ॥ ६०

जब सखियाँ मृदङ्ग बजानेके लिए उस पर हाथ रखती हैं उससे पूर्व ही वह बजने लगता है। इस प्रकार नवरङ्गबाई विभिन्न कलाओंका प्रदर्शन करती हुई नृत्य करती है।

कै गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल ।

इन छेक वालन की क्यों कहूं, जो देखत नूर जमाल ॥ ६१

अपनी गतिमें विविध रङ्ग भरती हुई नवरङ्गबाई अपने कला-कौशलका अद्भुत प्रदर्शन करती है। इस नृत्यके अभिनयकी प्रशंसा किन शब्दोंमें करें ? जिसे स्वयं अक्षरातीत धनी देख रहे होते हैं।

कै विध कहूं बाजंत्र की, कै विध नट नाचत ।

के विध की फेरी कहूं, कै रंग रस गावत ॥ ६२

नृत्यके समय अनेक प्रकारके वाद्ययन्त्र एक साथ बजते हैं तथा नवरङ्गबाई भी नटकी भाँति अनेक प्रकारसे नृत्य करती है। वह विभिन्न प्रकारसे घूमती हुई तथा आनन्दमग्न होकर गाती हुई नृत्य करती है।

नामैं जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर ।

अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर ॥ ६३

जिसका नाम ही नवरङ्ग है उसके नृत्यके विविध (नवों) रङ्गोंका वर्णन कैसे करें ? वह अपने नामको सार्थक करती हुई तथा अनेक कलाओंका रङ्ग भरती हुई हृदयमें नूतन भाव धारण करती है।

मुरली बजावत मोर बाई, वेन बाई बाजंत्र ।

तान बाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर ॥ ६४

नृत्यके समय मोरबाई मुरली बजाती है तो बेन बाई वंशी आदि वाद्य यन्त्र बजाती है। तानबाई उन स्वरोंमें तान मिलाती है। इस प्रकार नृत्यकी शोभा बढ़ जाती है।

कंठ केल बाई अलापत, स्वर पूरत बाई सेन ।

सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन ॥ ६५

केलबाई कण्ठसे मधुर राग अलापती है और सेनबाई उसमें पूरक स्वर देती है। इस प्रकार सभी सखियाँ मिलकर एक साथ गाती हैं। उस समय उनके मुखसे सुमधुर वाणी निकलती है।

झरमर बाई बजावत, माहें झरमरी अमृती ।

कै बाजे कै रंग रस, ए रंग अलेखें कहूं केती ॥ ६६

इस समय झरमरबाई मधुर स्वरमें झरमरी बजाती हुई अमृतरस घोलती है। अन्य सखियाँ अनेक भाँतिके वाद्ययन्त्रोंकी रसरङ्गमें डूबी हुई गायन एवं बादन करती हैं। इस आनन्दकी कितनी व्याख्या करें।

खडिया रूहें निरत में, इत उछरंग होत ।

तरफ चारों जवेरन में, निरत देखे अधिक जोत ॥ ६७

सखियाँ इस नृत्यशालामें आकर खड़ी होती हैं तो उनके मनमें एक निराला उमङ्ग होता है। चारों ओरके रत्नोंमें उनके नृत्यकी ज्योतिर्मयी किरणें प्रतिबिम्बित होती हैं।

निरत कला सब नाच के, फेर फेर देत पडताल ।

यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आगूं मिसाल ॥ ६८

नृत्यकलामें निपुण सखियाँ नृत्य करती हुई बार-बार पखावजकी ताल पर ठुमकार करती हैं। इस प्रकार उनके नृत्य एवं गायनके मधुर स्वर सभी प्रासादोंमें गूँजते हैं।

ऐसे ही प्रतिबिम्ब इन के, मोहोल बोलें कै और ।

बानी बाजे निरत अवाजें, होत निरत कै ठौर ॥ ६९

यहाँके नृत्यका दृश्य अन्य प्रासादोंमें भी प्रतिबिम्बित होता है। इसी प्रकार यहाँकी ध्वनि भी अन्यत्र प्रतिध्वनित होती है। इस प्रकार गायन तथा नृत्य अनेक स्थानों पर हो रहा हो ऐसा आभास होता है।

साम सामी पसू पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए ।

एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए ॥ ७०

इस नृत्यशालामें स्तम्भों पर आमने-सामने जड़े हुए रत्नोंके पशुपक्षियोंके चित्रोंकी ज्योतिर्मयी किरणें परस्पर स्पर्धा करती हुई दिखाई देती हैं। इस प्रकार यहाँ पर नृत्य तो एक ही स्थान पर होता है किन्तु आभास होता है कि यह लीला विभिन्न स्थानों पर हो रही है।

यों सब ठौर जंग अरस में, कहूं केती विध किन ।

अपार अखाडे सब दिसों, होत सब में रोसन ॥ ७१

यहाँसे निकली हुई किरणें रङ्गमहलके विभिन्न स्थानोंमें स्पर्धा करती हुई दिखाई देती हैं। कहाँ तक कहें, सभी दिशाओंमें असंख्य स्थानों पर नृत्यशालाकी ज्योति जगमगाती हुई दिखाई देती है।

ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन ।
तो देखो चित्रामन धामकी, करत निरत सबन ॥ ७२

हे ब्रह्मात्माओ ! अपनी आत्म-दृष्टिको पर-आत्माके साथ जोड़कर देखोगी तो परमधामके सभी चित्र नृत्य करते हुए दिखाई देंगे.

एह खेल एक पोहोर लग, होत हमेसा इत ।
पंद्रह दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत ॥ ७३

नृत्यकी हवेलीमें यह लीला नित्य प्रति एक प्रहर तक चलती है. श्रीराजजी कृष्णपक्षके पन्द्रह दिन सन्ध्याके समय पर रङ्गमहलमें विराजमान होकर इस नृत्यशालाका आनन्द लेते हैं.

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत ।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत ॥ ७४

सखियाँ भी अपने प्रियतम धनीको प्रसन्न करनेके लिए अनेक कलाओंका प्रदर्शन करती हैं और सबकी दृष्टिको इस प्रकार अपनी ओर बाँध देती हैं कि अन्यत्र दृष्टि डाला ही नहीं जा सकता है.

थंभ दिवालें सिंघासन, सब में होत निरत ।
इन समें पसू पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केल करत ॥ ७५

नृत्यशालाके स्तम्भों, दीवारों तथा सिंहासनमें नृत्यका प्रतिबिम्ब पड़नेसे सर्वत्र नृत्य हो रहा हो ऐसा प्रतीत होता है. इस समय दीवारों तथा स्तम्भोंमें चित्रित पशुपक्षी भी नृत्य करते हुए दिखाई देते हैं.

बोहोत बातें बीच अरस के, किन विध कहूं इन मुख ।
जो बैठी इन मेले मिने, सोई जानें ए सुख ॥ ७६

परमधामकी इस नृत्यशालाकी शोभा अत्यन्त अधिक है, इस जिह्वाके द्वारा उसका वर्णन कैसे करें ? जो ब्रह्मात्माएँ इस कार्यक्रममें सम्मिलित हैं वे ही इस सुखका अनुभव कर सकती हैं.

ऐसी चारों तरफों कै बैठकें, अंदर या गृदवाए ।
ए सुख अखंड अरस के, क्यों कर कहे जाए ॥ ७७

इस प्रकार रङ्गभवनके अन्दर या चारों ओर ऐसी अनेक बैठकें हैं.

परमधामके इन अखण्ड सुखोंके विषयमें कैसे वर्णन किया जाए ?

भोम पांचमी पौढन की

सुख बडो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार ।

बीच मोहोल स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार ॥ ७८

पाँचवीं भूमिकाके सुख अपार हैं। यहाँ पर मध्यके चौकमें बारह हजार मन्दिर (प्रकोष्ठ) शोभायमान हैं। इन सभीके मध्यमें श्रीश्यामाजीका (प्रवाल रङ्गका) प्रासाद है। उसके चारों ओर द्वार हैं।

चौखूनी बाखर बनी, तिन विस्तार है बुजरक ।

चारों तरफों बराबर, कहूं बेवरा बुध माफक ॥ ७९

यहाँ पर चतुष्कोणीय मध्यपरवाली मन्दिर शोभायमान है। इसका विस्तार अति अधिक है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई एक समान है। अब मैं अपनी बुद्धिके अनुसार इसका वर्णन करता हूँ।

बराबर मोहोल के गृद, बीच बीच पौरी द्वार ।

पौरी के तरफ सामनी, मोहोल दरवाजे चार ॥ ८०

इस मन्दिरके चारों ओर बीच-बीचमें बड़े-बड़े तोरणयुक्त द्वार (जुड़ाफा) हैं। इन तोरणोंके सामने प्रासादके चार द्वार शोभायमान हैं।

मोहोल के चारों खूने, सोले सोले हवेली ।

जमें जो चौंसठ कही, तिन द्वार द्वार एक गली ॥ ८१

प्रवाल रङ्गके इस प्रासादके चारों कोनों पर सोलह-सोलह हवेलियाँ हैं। कुल मिलाकर ये हवेलियाँ चौंसठ हैं। प्रत्येक हवेलीके द्वारसे एक गली निकली है।

ओगन पचास चौपुडे, ताके कहूं मंदर ।

हर एक के एक सौ चौबीस, जमें छे हजार छेहत्तर ॥ ८२

यहाँ पर सात-सातकी सात पङ्क्तियोंमें ४९ चौराहें (चौपुड़े) हैं। इनके मन्दिरोंका विवरण इस प्रकार है। प्रत्येक चौराह (चौपुड़े) में एक सौ चौबीस मन्दिर हैं। इस प्रकार कुल छः हजार छिहत्तर मन्दिर हैं।

चौक अठाईस त्रिपुडे, हर एक के एक सौ दोए ।

अठाईस सै छपन, जमें मंदिरन को सोए ॥ ८३

यहाँ पर चारों दीवारोंके साथ संलग्न २८ त्रिमार्ग (त्रिपुडे) हैं. उन प्रत्येकमें एक सौ दो मन्दिर हैं. इस प्रकार कुल मन्दिरोंकी संख्या अठ्ठाईस सौ छप्पन है.

चौक चार खूने के दो पुडे, हर एक के ओनासी मंदर ।

तीन सै सोले एह जमें, लगते दिवाल अंदर ॥ ८४

चारों कोनों पर चार द्विमार्ग (दोराहें-दो पुडे)) हैं. प्रत्येकमें उन्नासी मन्दिर हैं. इस प्रकार दीवारोंके अन्दर स्थित इन मन्दिरोंकी कुल संख्या तीन सौ सोलह होती है.

चौसठ दरम्यान हवेलियां, सो हिसाब कहूं मंदिरन ।

हर एक के तैतालीस, जमें सताईस सै बावन ॥ ८५

चारों कोनोंमें स्थित इन दोमार्ग, त्रिमार्ग तथा चतुर्मार्गके साथ लगी हुई चौसठ हवेलियाँ हैं. अब इन मन्दिरोंकी संख्याका विवरण देता हूँ, यहाँ प्रत्येक हवेलीमें तैतालीस (४३) मन्दिर हैं. इस प्रकार इनकी संख्या दो हजार सात सौ बावन होती है.

जमें कियो मंदिरन को, सबे बारे हजार भए ।

दरवाजे थंभ गलियां, अब कहूं जो बाकी रहे ॥ ८६

इस प्रकार इन सभी मन्दिरोंका योग करने पर इनकी संख्या बारह हजार हो जाती है. अब शेष द्वार, स्तम्भ तथा वीथिकाओं (गलियों) का वर्णन करते हैं.

ओगन पचास चौपुडे, ताको जमें कियो थंभन ।

एक सौ चवालीस हर एको, जमें सात हजार छप्पन ॥ ८७

उपर्युक्त उनचास चतुर्मार्गों (चौराहों-चौपुडे) के स्तम्भोंकी संख्या इस प्रकार है, प्रत्येकमें एक सौ चवालीस स्तम्भ हैं तदनुसार कुल सात हजार छप्पन स्तम्भ होते हैं.

हर एक के एक सौ पंद्रे, ए जो त्रपुडे अठाईस ।

थंभ जमें बत्तीस सै, और ऊपर भए जो बीस ॥ ८८

इसी प्रकार अठ्ठाईस त्रिमागों (त्रिराहों-त्रिपुडे) में एक सौ पन्द्रह स्तम्भ हैं। इन सभी स्तम्भोंका योग तीन हजार दो सौ बीस होता है।

चार खूने चार दोपुडे, पचासी हर एक के ।

जमें तीन सै चालीस, एते थंभ भए ॥ ८९

चारों कोनों पर स्थित चार द्विमागों (दोराहों) पर प्रत्येकमें पचासी स्तम्भ हैं। उन स्तम्भोंका कुल योग तीन सौ चालीस होता है।

ए जो चौसठ हवेलियां, तिन हर एक के थंभ चालीस ।

तिनके सब जमा कहे, साठ अगले सौ पचीस ॥ ९०

उक्त चौसठ हवेलियोंमें प्रत्येकमें चालीस स्तम्भ हैं। इन स्तम्भोंका कुल योग दो हजार पाँच सौ साठ होता है।

जमें सब थंभन को, एक सौ तेरे हजार ।

छेहत्तर तिनके ऊपर, एते भए सुमार ॥ ९१

इस प्रकार सभी द्विमागों, त्रिमागों चतुर्मागों तथा हवेलियोंके स्तम्भोंकी कुल संख्या तेरह हजार एक सौ छिहत्तर होती है।

ओगन पचास चौपुडे, तिन गली गिनो यो कर ।

हर एक की चौबीस कही, जमें अग्यारे से छेहत्तर ॥ ९२

उपर्युक्त उनचास (४९) चतुर्मागोंकी वीथिकाओं (गलियों) की संख्या इस प्रकार है, प्रत्येक चतुर्मागमें चौबीस (२४) वीथिकाएँ हैं। इनकी कुल संख्या एक हजार एक सौ छिहत्तर (११७६) होती है।

चौक त्रपुडे अठाईस, गली हर एक की अठार ।

तिनकी ए जमें भई, पांच सै ऊपर चार ॥ ९३

इसी प्रकार अठ्ठाईस (२८) त्रिमागोंकी वीथिकाओंकी संख्या इस प्रकार है, प्रत्येक त्रिमागमें अठारह (१८) वीथिकाएँ हैं। जिनका कुल योग पाँच सौ चार (५०४) होता है।

चौक चार खूने के दो पुडे, गली बारे हर एक ।

अडतालीस ए जमें, ए जो गली दिवालों देख ॥ १४

उपर्युक्त चारकोणोंके द्विमागोंमें प्रत्येकमें बारह (१२) वीथिकाएँ (गलियाँ) हैं। इनका कुल योग अडतालीस (४८) होता है। इन वीथिकाओंसे सभी दीवारें दिखाई देती हैं।

और जो चौसठ हवेलियां, एक एक गली गृदवाए ।

एक एक द्वार दो दो पौरी, इन विध ए सोभाए ॥ १५

उपर्युक्त चौसठ हवेलियोंमें प्रत्येकमें चारों ओर एक मार्ग है, एक द्वार है एवं दो-दो तोरण (पौरी) हैं।

जमें सब गलियन को, सत्रह सै बानबे ।

आठों जाम देखिए, ज्यों रूह याही में रहे ॥ १६

इन सभी वीथिकाओं (गलियों) का कुल योग एक हजार सात सौ बानबे (१७९२) है। हे ब्रह्मात्माओ ! आठों प्रहर इनका दर्शन करना चाहिए जिससे आत्मा वहीं पर विचरण करने लग जाए।

बडे दरवाजे चौक के, एक सौ चवालीस ।

तैंतीस सै बारे जमें, हर द्वार पौरी तेईस ॥ १७

इस पाँचवीं भूमिका पर स्थित बड़े एक चौकमें एक सौ चवालीस (१४४) बड़े-बड़े द्वार हैं। प्रत्येक द्वारमें तेईस (२३) तोरण (मेहराब) हैं। इस प्रकार कुल तोरणोंकी संख्या तीन हजार तीन सौ बारह (३३१२) होती है।

यामें बत्तीस द्वार बाहेर के, एक सौ बारे अंदर ।

तैंतीस सै बारे जमें, यामें आओ साथ सुंदर ॥ १८

यहाँ पर बत्तीस (३२) द्वार हवेलियोंके बाहरकी ओर हैं तथा एक सौ बारह (११२) द्वार अन्दरकी ओर हैं। इस प्रकार इनकी कुल संख्या तीन हजार तीन सौ बारह (३३१२) है। हे सुन्दरसाथजी ! अपनी सुरताको यहाँ पर पहुँचाओ।

चौखूंनी चौसठ बाखरें, इनों बीच बीच दरम्यान ।

दो दो पौरी तिनकी, याको रूहें जानें बयान ॥ ९९

इन चतुष्कोणीय चौसठ (६४) हवेलियोंके बीच-बीचमें द्वार शोभायमान हैं। प्रत्येक द्वारमें दो-दो तोरण सुशोभित हैं। इनका विवरण ब्रह्मात्माएँ ही समझ सकती हैं।

मंदिरों माहे खिडकियां, बाहेर दिवालें के ।

चारों खूने गुर्ज से, तित दो दो झरोखे ॥ १००

इन मन्दिरों (हवेलियों) के अन्दर इनकी बाहरी दीवारोंमें खिड़कियाँ शोभायमान हैं। उनके चारों कोनों पर गुर्ज सुशोभित हैं। उन प्रत्येकमें दो-दो झरोखे हैं।

भोम पांचमी मध की, इत पौढत हैं रात ।

स्याम स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात ॥ १०१

इस पाँचवीं भूमिकाके मध्यमें स्थित प्रवाल (लाल) रङ्गके (रङ्गपरवाली) मन्दिरमें श्रीश्यामश्यामाजी तथा (बारह हजार मन्दिरोंमें) ब्रह्मात्माएँ प्रभात पर्यन्त शयन करते हैं।

ए तो मंदिर कहे मध के, गृद मंदिरों हार ।

नेक नेक कही अंदर की, और कै विध मोहोल किनार ॥ १०२

इस प्रकार मध्यमें स्थित मन्दिर (हवेली) का वर्णन हुआ। इसके चारों ओर अन्य आठ हवेलियाँ तथा मन्दिरोंकी हार हैं। मैंने तो मात्र अन्दरका थोड़ा-सा वर्णन किया है। ऐसी अनेक हवेलियाँ किनारे पर सुशोभित हैं।

भोम छठी सुखपाल

घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपाल ।

बने बिराजे मोहोल में, अति बडी पडसाल ॥ १०३

विमानों (सुखपालों) मैं बैठकर सभी सखियोंके रङ्ग भवन पर लौट आने पर ये सभी विमान छठी भूमिका पर रुकते हैं। छठी भूमिकामें छः हजार (६०००) मन्दिरोंके स्थान पर बहुत बड़ी दालान है।

भोम छठी बडी जाएगा, है बैठक इत विस्तार ।

बीच सिंघासन कै विध के, और झरोखे किनार ॥ १०४

छठी भूमिकामें बहुत बड़ा स्थान है. यहाँ पर अनेक बैठकोंका विस्तार है. मध्यमें विभिन्न प्रकारके सिंहासन (सुखपाल) तथा किनारे पर झरोखे शोभायमान हैं.

जुदी जुदी जुगतों जाएगा, बहु विध सिंघासन ।

छोटे बड़े कै माफक, कै छत्र मनी रतन ॥ १०५

यहाँ पर विभिन्न स्थानोंमें विभिन्न प्रकारके सिंहासनयुक्त विमान (सुखपाल) शोभायमान हैं. ये आवश्यकतानुसार छोटे तथा बड़े हैं. उनमें-से कतिपयमें मणि-माणिक्यकी छत्री सुशोभित है.

सुख अलेखे देत हैं, चारों तरफों झरोखे ।

ए कायम सुख कैसे कहूं, देत दायम हक जे ॥ १०६

यहाँ पर दालानके चारों ओर स्थित झरोखों पर अपार सुखका अनुभव होता है. इन अखण्ड सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए, जो धामधनी नित्यप्रति प्रदान करते हैं.

सुख देवें जब अंदर, तब ए बातें मीठी बयान ।

रंग रस करें रूहन सों, कोई ना सुख इन समान ॥ १०७

जब धामधनी इन विमानोंके अन्दर बैठकर अपनी मधुर वाणीसे ब्रह्मात्माओंको परमसुख प्रदान करते हैं, उस समय ब्रह्मात्माओंको जिस रस-रङ्गकी अनुभूति होती है उसकी तुलना अन्य किसी भी सुखसे नहीं हो सकती है.

कै चौक कै गलियां, कै हवेलियां अनेक ।

देख देख के देखिए, जानो एही विध बिसेक ॥ १०८

यहाँ पर बैठनेके लिए अनेक चौक, वीथिकाएँ (गलियाँ) तथा हवेलियाँ हैं. उनको देखते हुए ऐसा अनुभव होता है मानों ये एक दूसरेसे विशेष शोभायमान हैं.

बीच तरफ या गृदवाए, किन विध कहूं मोहोलन ।

एह अरस की रोसनी, क्यों कहे जुबां इन ॥ १०९

यहाँ पर मध्यमें तथा चारों ओर शोभायमान भवनोंका वर्णन कैसे करें ? यह परमधामका प्रकाश है। इसको नश्वर जिह्वा कैसे वर्णन कर सकती है ?

अनेक विध हैं अरस में, केती विध कहूं जुबान ।

कह्या न जाए एक नकस, मुख कहा करे बयान ॥ ११०

इस प्रकार परमधाममें विभिन्न प्रकारके भवन हैं, जिह्वाके द्वारा उनका वर्णन कैसे हो सकता है ? यह जिह्वा उनकी एक चित्रकारीका वर्णन भी नहीं कर सकती है।

झरोखे इन भोम के, बने बराबर हर हार ।

खूबी नूर रोसनी, क्यों कहूं सोभा अपार ॥ १११

इस भूमिकामें भी अन्य भूमिकाओंकी भाँति पङ्क्तिबद्ध झरोखे शोभायमान हैं। उनसे निकलते हुए प्रकाशकी अपार शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

तेज तेज सों लडत हैं, जहूर जहूर सों जंग ।

केते कहूं रंग रंग सों, तरंग संग तरंग ॥ ११२

मानों यहाँ पर एक स्थानकी ज्योति दूसरे स्थानकी ज्योतिसे तथा एक स्थानकी किरणें दूसरे स्थानकी किरणोंके साथ युद्ध करती हैं। उनसे निकली हुई प्रकाश तरङ्गोंका वर्णन कहाँ तक करें ?

भोम सातमी हिडोले

कहा कहूं भोम सातमी, मध मोहोल अनेक ।

कै विध गलियां हवेलियां, एक दूजी पैं नेक ॥ ११३

रङ्गभवनकी सातवीं भूमिकाका क्या वर्णन करें ? इसके मध्यमें अनेक प्रासाद शोभायमान हैं। उनमें अनेक वीथिकाएँ (गलियाँ) तथा हवेलियाँ एक-दूसरेसे बढ़कर सुन्दर हैं।

कै मोहोल कै मालिए, सोई झरोखे सुंदर ।

द्वार बार सीढी खिडकियां, अति सोभा लेत मंदर ॥ ११४

इन प्रासादोंमें विभिन्न प्रकारके गवाक्ष एवं तदनुरूप झरोखे सुशोभित हैं। वहाँ पर स्थित द्वार, सीढ़ियाँ तथा खिड़कियोंसे उनकी शोभा और भी अधिक हो जाती है।

कै सुख सातमी भोम के, कै हिडोले हजार ।

रूहें आप मन चाहते, अरस आराम नहीं पार ॥ ११५

इस सप्तमी भूमिकामें अनेक प्रकारके सुख हैं। यहाँ पर हजारों झूले हैं। ब्रह्मात्माएँ इच्छानुसार इन झूलोंमें झूलकर परमधामके अपार आनन्दका अनुभव करती हैं।

भोम सातमी किनार में, मंदिर झरोखे जित ।

दोनों हारो हिडोले, छपर खटों के इत ॥ ११६

इस सप्तमी भूमिकामें किनारे पर शोभायमान मन्दिरोंकी दोनों पङ्क्तियोंके मध्यमें स्थित स्तम्भोंकी दो-दो पङ्क्तियोंमें झूले लटके हुए हैं।

साम सामी बैठी रूहें, हेत में सब हींचत ।

कडे हिडोले कै स्वर, बहु विध बोलत ॥ ११७

ब्रह्मात्माएँ इन झूलोंमें एक-दूसरेके सम्मुख बैठकर स्नेह पूर्वक झूलती हैं। इन झूलोंमें लगे हुए कड़े विभिन्न स्वरोंमें मुखरित होते हैं।

गृदवाए सब हिडोले, जुदी जुदी जिनसों अनेक ।

बारे हजार बोलत, स्वर एक दूजे पैं बिसेक ॥ ११८

चारों ओर लगे हुए ये झूलें विभिन्न प्रकारकी अनेक सामग्रियोंसे सुसज्जित हैं। इन बारह हजार झूलोंकी जञ्जीरों तथा कड़ोंसे निकले हुए स्वर एकसे एक अधिक विशेष लगते हैं।

हांसी होत है इन समें, सुन सुन स्वर रसाल ।

हंस हंसके हंसत, सब संग हींचें नूर जमाल ॥ ११९

इस कर्णप्रिय ध्वनिको सुनकर ब्रह्मात्माएँ परस्पर हँसती हैं। श्रीराजजी भी

उनके साथ हँसते हुए झूला झूलनेका आनन्द लेते हैं।

ए सुख आनंद अति बडो, रंग रस बढत अति जोर ।

भूषन हांसी कडे हिडोले, ए क्यों कहूं अरस सुख सोर ॥ १२०

यहाँ पर झूलनेसे बड़ा आनन्द होता है। उसका रस-रङ्ग उत्तरोत्तर बढ़ता चला जाता है। इन सुखोंका वर्णन कैसे करें ? ब्रह्मात्माओंके आभूषणों तथा झूलोंके कड़ोंसे निकले हुए स्वरसे पूरा परमधाम ही प्रतिध्वनित होता है।

अतंत सुख इन बखत को, जो कदी आवे रूह माहिं ।

तो नींद निज अंग असल की, उड जावे कहूं काहिं ॥ १२१

इस समयका अपार आनन्द ब्रह्मात्माओंके हृदयमें कभी अङ्कित हो जाए तो उसी क्षण उनकी पर-आत्माकी नींद कहींकी कहीं उड़ सकती है।

भोम आठमी हिडोले

इसी भांत भोम आठमी, चार चार खट छपर ।

चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहूं क्यों कर ॥ १२२

इसी प्रकार आठवीं भूमिकामें भी (इन्हीं स्तम्भोंकी पङ्क्तियोंमें) चार-चार झूले शोभायमान हैं। ब्रह्मात्माएँ उनमें बैठकर चारों ओरसे झूलती हैं। इस शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

चारों तरफों बातें करें, मुख मुख जुदी बान ।

रंग रस हांस विनोद की, पीउ सों प्रेम रसान ॥ १२३

चारों ओरके इन झूलोंमें बैठकर ब्रह्मात्माएँ प्रेमालाप करती हैं। अपनी मधुर वाणीसे परस्पर परिहास करती हुई धामधनीके साथ प्रेमविभोर होकर आनन्द लेती हैं।

चार हिडोले जुदे जुदे, झूला लेवें सब एक ।

एकै बेर सब फिरत हैं, फेर खेल होत विसेक ॥ १२४

यहाँ पर स्तम्भोंकी दोनों पङ्क्तियोंमें चार-चार झूले लगे हुए हैं। उनमें बैठकर ब्रह्मात्माएँ एक साथ झूलती हैं। ये सभी झूले एक साथ घूमते हैं।

जिससे यह खेल विशेष सुखप्रद होता है.

और बिध बीच हवेलियां, जुदी जुदी कै जिनस ।

देख देख के देखिए, एक पैं और सरस ॥ १२५

इस भूमिकाके मध्यभागमें भी विभिन्न प्रकारकी हवेलियाँ शोभायमान हैं. इनको देखते हुए ऐसा लगता है कि ये एकसे बढ़कर दूसरी अधिक सुन्दर हैं.

मंदिर जुदे द्वार जुदे, कै चौक चबूतर ।

ए सनंध इन मंदिरन की, जुबां सके न वरनन कर ॥ १२६

यहाँकी सभी हवेलियोंके मन्दिर तथा उनके द्वार एवं अन्दर चौक तथा चबूतरे भी अलग-अलग प्रकारसे सुशोभित हैं. इस प्रकार इन मन्दिरोंकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती.

कोटान कोट ले जुबां, जानो बरनन करूं एक द्वार ।

ए वरनन तो होवही, जो आव माहें सुमार ॥ १२७

करोड़ों जिह्वाके द्वारा यदि एक द्वारकी शोभाका वर्णन करना चाहें तो भी वर्णन नहीं हो सकता है. क्योंकि यह वर्णन तभी सम्भव होता है जब इस शोभाकी कोई सीमा निर्धारित हो.

इन ठौर विलास बोहोत है, सो इन जुबां कह्यो न जाए ।

ए लीला अरस खावंद की, केहे केहे रूह पछताए ॥ १२८

यहाँ पर अनेक प्रकारसे आनन्द विलास होता है, शब्दोंके द्वारा उसका वर्णन नहीं हो सकता है. यह लीला परमधामके स्वामी परब्रह्म परमात्माकी है. इसीलिए इसका वर्णन करते हुए आत्मा पश्चात्ताप करती है.

बल तो जुबां को है नहीं, ना कछू बुध को बल ।

ए जोगवाई झूठे अंग की, क्यों कहे सुख नेहेचल ॥ १२९

न इस जिह्वामें कोई ऐसी शक्ति है और न ही इस सीमित बुद्धिमें कोई ऐसा बल है. इस नश्वर जगतकी सामग्री अखण्ड धामके सुखोंका वर्णन कैसे कर सकती है ?

जो कछू हिरदे में आवत, सो आवे नहीं जुबान ।

चुप किए भी ना बने, चाहें साथ सुजान ॥ १३०

यहाँका जो भी परम सुख हृदयमें उतर आता है उसे वाणीके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता. सुन्दरसाथ इस सुखका अनुभव करना चाहता है, इसलिए मौन भी नहीं रहा जाता.

कहे रूह सुख पावत, और सुख विचारे अतंत ।

पर दुख पांऊं इन विध का, कछू पोहोंच न सके सिफत ॥ १३१

इसका वर्णन करने पर आत्मा परमसुखका अनुभव करती है. इस पर विचार करने मात्रसे भी अपार सुखोंका अनुभव करता है. किन्तु इस शोभाको शब्दोंमें व्यक्त न कर सकनेके कारण मुझे बड़ा दुःख होता है.

चारों तरफों हिडोले, अरस के गृदवाए ।

सब हिडोलों हक संग, ए सुख अंग न समाए ॥ १३२

रङ्गभवनके इस आठवीं भूमिका पर चारों ओर झूले लगे हुए हैं. इन सभी झूलों पर बैठकर ब्रह्मात्माएँ धामधनीके साथ झूलती हुई आनन्दका अनुभव करती हैं. यह आनन्द अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें समाता नहीं है.

भोम नौमी गोख बैठक

छज्जे बडे नोमी भोम के, बोहोत बडो विस्तार ।

बैठक धनी साथ की, बाहेर की किनार ॥ १३३

नवमी भूमिका पर स्थित विशाल छज्जोंका विस्तार बहुत बड़ा है. इसके बाहरी किनारे पर धामधनी तथा ब्रह्मात्माओंकी बैठक है.

नजरों सब आवत हैं, इन ऊपर की बैठक ।

देख दूर की बातें करें, रंग रस उपजावें हक ॥ १३४

यहाँ पर बैठने पर परमधामके चारों ओरके दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं. धामधनी दूर-दूरके दृश्योंको दिखाकर बातें करते हुए सभीके हृदयमें आनन्दका सञ्चार करते हैं.

जब बैठें जिन तरफ, तब तितहीं की जुगत ।

बातें करें बनाए के, नूर अपने अपना इत ॥ १३५

इन छज्जों पर जिस दिशाकी ओर सम्मुख होकर बैठते हैं उधरकी विविधताका वर्णन करते हैं. यहाँ पर धामधनी ब्रह्मात्माओंसे अपनत्व रखकर विभिन्न प्रकारकी मीठी बातें करते हैं.

जब बैठें तरफ नूरकी, तब तितहीं का विस्तार ।

जित सिफत जिन चीज की, तिन सुख नाही सुमार ॥ १३६

जब अक्षरधामकी ओर सम्मुख होकर बैठते हैं तो वहाँके समस्त विस्तारका अवलोकन होता है. वहाँ पर जहाँ जैसी शोभा होनी चाहिए वहाँ वैसी ही शोभा है, वहाँके सुखोंका कोई पारावार नहीं है.

जब बैठें तरफ पहाड की, तब वरनन करें अति दूर ।

तिन भोम के सुख को, सुमार नहीं जहूर ॥ १३७

जब पुखराज पर्वतकी ओर सम्मुख होकर बैठते हैं तब दूर-दूर तक विस्तृत इस क्षेत्रका वर्णन करते हैं. वहाँकी भूमिके सुख तथा वहाँसे निकलनेवाले प्रकाशकी कोई सीमा नहीं है.

जब बैठें तरफ दरियाव की, घृत दूध दधी असल ।

कायम सुख कायम भोम के, आवें न माहें अकल ॥ १३८

जब घृत, दधि, क्षीर आदि सागरोंकी ओर सम्मुख होकर बैठते हैं तो उनका वर्णन कर अपार सुख प्रदान करते हैं. अखण्ड भूमिकाके ये अखण्ड सुख बुद्धिकी सीमामें कदापि नहीं आ सकते हैं.

जब बैठें तरफ बडे बन की, तब सोई सुख वरनन ।

पसू पंखियों के इसक की, कै विध करें रोसन ॥ १३९

जब धामधनी बड़ेवनकी ओर दृष्टि डालते हैं तब वहाँ पर विहारके सुखका वर्णन करते हैं. साथ ही पशुपक्षियोंके प्रेम पर प्रकाश डालते हैं.

और पहाड जोए जित के, कै विध की मोहोलात ।

ताल कुंड कै चादरें, इन जुबां कही न जात ॥ १४०

जहाँसे यमुनाजी प्रकट होती है उस पुखराज पर्वतके विभिन्न प्रासादों, ताल,

कुण्ड तथा जलधाराओंका वर्णन इस जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है।

या हौज या जोए के, कै विध देवें सुख ।

जब हक आराम देवहीं, तब सोई करें रूहें रुख ॥ १४१

इस प्रकार धामधनी हौजकौसर ताल तथा यमुनाजी आदिका वर्णन कर विभिन्न सुख प्रदान करते हैं। धामधनी जिस स्थानकी शोभाका वर्णन करते हैं ब्रह्मात्माएँ उसी ओर उन्मुख होती हैं।

मोहोल मंदिर जो मध के, सो हैं अति रोसन ।

थंभों बेल फूल पांखड़ी, एक पात ना होए बरनन ॥ १४२

यमुनाजी तथा तालके मध्यके कुञ्ज-निकुञ्जके प्रासाद तथा भवन अति प्रकाशमान हैं। उनके स्तम्भों, लताओं, पुष्पों तथा पुष्पदल (पंखुड़ी) में-से मात्र एक पत्तेका भी वर्णन नहीं हो सकता है।

तो मोहोल मंदिर की क्यों कहूं, और क्यों कर कहूं दिवाल ।

कै लाख खिडकी हवेलियां, कै लाखों पौरी पडसाल ॥ १४३

फिर प्रासादों, मन्दिरों तथा उनकी दीवारोंकी शोभाका वर्णन किस प्रकार किया जाए ? वहाँ पर तो इस प्रकारकी लाखों हवेलियाँ, उनकी खिड़कियाँ, तोरण (कमान) तथा दालान शोभायमान हैं।

बैठ बीच नासूत के, अंग नासूती जुबान ।

अरस का वरनन कीजिए, सो क्यों कर होए बयान ॥ १४४

इस स्वप्नवत् जगतमें बैठकर स्वप्नकी जिह्वासे अखण्ड परमधामका वर्णन करना चाहें तो वह किस प्रकार सम्भव हो ?

दसमी भोम चांदनी

दसमी भोम चांदनी, ए सोभा है अतंत ।

कै कदेले कुरसियां, बीच सोभा लेत तखत ॥ १४५

दसवीं भूमिका पर स्थित चाँदनीकी शोभा अनन्त है। मध्यमें एक चबूतरा है जिस पर कालीन बीछा हुआ है। उसके ऊपर सिंहासन तथा आरामदायी कुर्सियाँ शोभायमान हैं।

कै बैठक मोहोल चांदनी, हक हादी इत आवत ।

साथ सब रूहन को, सुख मन चाहे देवत ॥ १४६

इस चाँदनी पर शोभायमान प्रासादोंमें बैठनेके लिए अनेक सुन्दर स्थान हैं जहाँ पर श्रीराजश्यामाजी आकर विराजमान होते हैं एवं सभी ब्रह्मात्माओंको इच्छानुकूल सुख प्रदान करते हैं.

क्यों कहूं इन सुपेती की, उज्जल जोत अपार ।

दो सै हांसों चांदनी, नाही रोसन नूर सुमार ॥ १४७

इस चाँदनीकी उज्ज्वल तथा श्वेत ज्योतिका वर्णन कैसे करें ? दो सौ (२००) पहलवाली इस चाँदनीसे निकल रहे प्रकाशकी कोई सीमा ही नहीं है.

ए जो गुमटियां गृदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए ।

बारे हजार गुमटियां, सोभा लेत अति सोए ॥ १४८

इस चाँदनी पर चारों ओर दौ सौ एक (२०१) गुर्ज शोभायमान हैं. उनके मध्यमें चारों ओर बारह हजार (१२०००) गुमटियाँ अत्यन्त शोभायमान हैं.

चारों तरफों चेहेबच्चे, ए सोभित अति सुन्दर ।

जल गिरत फुहारे मोतियों, चारों चांदनी अन्दर ॥ १४९

चाँदनीके मध्यमें स्थित चबूतरेके चारों कोनों पर अति सुन्दर जलकुण्ड हैं. इन जलकुण्डोंके फुहारोंसे मोतियोंकी भाँति जलबिन्दु गिरते हैं.

गृदवाए फूल चेहेबच्चे, ए सोभा जुदी जुगत ।

अंतर आंखे खोल के, ए सुख देखो अतंत ॥ १५०

इन जलकुण्डोंके चारों ओर उपवनमें भाँति-भाँतिके पुष्प खिले हुए हैं. इनकी रचना बड़ी अद्भुत है. हे ब्रह्मात्माओ ! अन्तर्दृष्टि खोलकर इन अनन्त सुखोंको देखो.

सोभा जल फूलन की, गृद चारों किनार ।

ए सोभा अतंत देखिए, जो कछू रूह करे बिचार ॥ १५१

चारों किनारों पर स्थित उपवनके पुष्प जल पर प्रतिबिम्बित होते हैं तो उनकी

शोभा अत्यन्त सुन्दर लगती है. जो ब्रह्मात्माएँ अन्तर्दृष्टिसे विचार करेंगी वे ही इस सुखका अनुभव कर सकेंगी.

बोहोत बडी इत बैठक, विध विध बेसुमार ।

रात उज्जल अरस चांदनी, ए सोभा अरस अपार ॥ १५२

यहाँ पर मध्यमें चबूतरे पर विशाल बैठक है. जिसकी शोभाका कोई पारावार नहीं है. पूर्णिमाकी रात्रिमें चन्द्रमाकी उज्ज्वल किरणोंसे रङ्गमहलकी यह चाँदनी अत्यन्त सुशोभित होती है.

जब हक हादी बीच बैठत, ले रूहें बारे हजार ।

नंग जवेर इन जिमी के, गृद बैठत साज सिनगार ॥ १५३

जब श्रीराजश्यामाजी मध्यमें स्थित सिंहासन पर विराजमान होते हैं और चारों ओर ब्रह्मात्माएँ बैठती हैं, उस समय परमधामकी दिव्य भूमिके रत्नोंसे सुसज्जित उनके शृङ्गारकी शोभा अनुपम लगती है.

राज स्यामाजी बीचमें, बैठें सिंघासन ऊपर ।

ए तखत हक अरस का, ए सिफत करूं क्यों कर ॥ १५४

मध्यमें स्थित सिंहासन पर श्रीराजश्यामाजी विराजमान होते हैं. यह सिंहासन धामधनीके परमधामका है. इसकी शोभाका वर्णन कैसे हो सकता है ?

कबूं रूहें निकट, बैठें मिलावा कर ।

हांसी रमूज सनमुख, पिएं प्याले भर भर ॥ १५५

कभी-कभी ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके निकट मिलकर बैठती हैं एवं धामधनीके साथ हास-परिहास तथा आमोद-प्रमोद करती हुई प्याले भर-भरकर उनकी प्रेमसुधाका पान करती हैं.

कै विध की इत बैठक, जुदी जुदी जिनस ।

चारों तरफों अरस के, देखी और पैं और सरस ॥ १५६

यहाँ पर बैठनेके विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग प्रकारकी सामग्रियाँ हैं. परमधामकी इस चाँदनी पर चारों ओर जितनी भी सामग्रियाँ हैं सभी एक

दूसरेसे बढ़कर रमणीय दिखाई देती हैं।

बड़ा मोहोल चौक चांदनी, चांद पूरन रह्या छिटक ।

रात बीच सिर आवत, जब कबूं बैठें इत हक ॥ १५७

रङ्गभवनकी इस विशाल चाँदनी पर पूर्णिमाके पूर्ण चन्द्रकी धवल किरणें पड़ती हैं। जब चन्द्रमा मध्य आकाशमें पहुँचता है उस समय कभी-कभी श्रीराजश्यामाजी यहाँ आकर बैठते हैं।

अरस आए लग्या आकासें, उठ्या जोत अपनी ले ।

चांद सितारे अंबर, आए मुकाबिल अरस के ॥ १५८

इस रङ्गमहलका असीम प्रकाश आकाश तक व्याप्त होकर रात्रिके समय आकाशमें स्थित चन्द्रमा तथा नक्षत्रगणोंकी ज्योतिके साथ स्पर्धा करता है।

चारों तरफों देखिए, रूहें बारे हजार ।

जिमी अंबर में रोसनी, उठें किरनें नूर अंबर ॥ १५९

जब बारह हजार ब्रह्मात्माएँ चारों ओर बैठती हैं उस समय भूमि तथा आकाशके प्रकाशकी तेजोमयी किरणें सर्वत्र व्याप्त दिखाई देती हैं।

ऊपर चांदनी बैठक, देखिए नूर द्वार ।

जोत नूर दोऊ सनमुख, अंबर न माए झलकार ॥ १६०

जब चाँदनीके ऊपर बैठकर अक्षरधामका द्वार देखते हैं उस समय परमधाम तथा अक्षरधामके द्वारोंकी ज्योति परस्पर टकराती है जिससे सम्पूर्ण आकाश प्रकाशमय दिखाई देता है।

देखों तरफ पुखराज की, या देखों तरफ ताल ।

या जोत मानिक देखिए, होए रही अंबर जिमी सब लाल ॥ १६१

इस प्रकार पुखराज पर्वतकी ओर देखें अथवा हौजकौसर तालकी ओर देखें या तो माणिक्य पर्वत की ओर देखें सम्पूर्ण आकाश उनकी लालिमासे लाल-लाल हो गया हो ऐसा दिखाई देता है।

क्यों कहूं रोसनी चांद की, क्यों कहूं रोसनी हक ।

क्यों कहूं रोसनी समूह की, जुबां रही इत थक ॥ १६२

आकाशमें चमकते हुए चन्द्रमाके प्रकाशकी शोभा एवं धामधनी तथा ब्रह्मात्माओंके तेजका वर्णन कैसे करें ? यह जिह्वा यहीं पर थक गई है.

केहे केहे जुबां एता कहे, तेज जोत रोसन नूर ।

सो तो इन जिमी जरे की, आकास न माए जहूर ॥ १६३

इस सौन्दर्यका वर्णन करती हुई यह जिह्वा इतना ही कह सकती है कि यहाँ पर सर्वत्र तेजोमय प्रकाश व्याप्त है. इस भूमिके एक-एक कणका प्रकाश भी आकाशमें समा नहीं पाता है.

ताथें महामत कहे ऐ मोमिनो, क्यों कहे जुबां इन देह ।

रूहअल्ला खोले अन्तर, लीजो लज्जत सब एह ॥ १६४

इसलिए महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! यह नश्वर तनकी जिह्वा परमधामकी शोभाका वर्णन किस प्रकार कर पाएगी ? स्वयं श्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें आकर इन रहस्योंको प्रकट किया है. अब तुम सभी इस शाश्वत आनन्दका अनुभव करो.

प्रकरण ३१ चौपाई १७०२

बाब अरस अजीम का मता जाहेर किया

याने एक जवेर का अरस

गैब बातें बका अरस की, कहूं सुनी न एते दिन ।

हम आए अरस अजीम से, करें जाहेर हक वतन ॥ १

अखण्ड परमधामकी रहस्यपूर्ण बातें आज तक किसीने भी नहीं सुनी थी. हम सभी ब्रह्मात्माएँ परमधामसे आई हैं इसलिए परमधामकी रहस्यमयी लीलाको (इस दुनियामें) प्रकट करती हैं.

दुनियां चौदे तबक की, सब दौडी बुध माफक ।

सुरैया को उलंघ के, किन पाया न बका हक ॥ २

चौदह लोकोंके प्राणी अपनी-अपनी बुद्धिके अनुसार परमात्माकी खोज करते

रहे हैं. परन्तु उनमें-से कोई भी ज्योतिस्वरूपको पार कर अखण्ड परमधाम तक नहीं पहुँच सका है.

पढ पढ वेद कतेब को, नाम धरे आलम ।

एती खबर किन ना परी, कहां साहेब कौन हम ॥ ३

वेद, पुराण आदि शास्त्रों तथा कुरान आदिके अध्ययनसे अनेक लोग विद्वान तथा आलिम कहलाए परन्तु किसीको भी यह सुधि न हो सकी कि इस सृष्टिके स्वामी कौन हैं और हम कौन हैं.

ऊपर तलें माहें बाहेर, ए जो कादर की कुदरत ।

सो कादर काहूं न पाइया, जिनके हुकमें ए होवत ॥ ४

ज्योति स्वरूपके ऊपर अथवा नीचे या इस समस्त ब्रह्माण्डके अन्दर या बाहर यह सम्पूर्ण सृष्टि समर्थ परमात्माकी प्रकृतिकी रचना है. जिनके आदेशसे यह संसार रचाया गया है उस परमात्माको आज तक किसीने नहीं पाया है.

ए गुझ भेद जो गैब का, पाया न चौदे तबक ।

कथ कथ सब खाली गए, पर छूटी न काहूं सक ॥ ५

अखण्ड परमधामकी वास्तविकताका गूढ़ रहस्य इन चौदह लोकोंमें आज तक कोई जान नहीं पाया. इस विषयमें चर्चा करनेवाले व्यक्ति भी सफलता प्राप्त किए बिना ही खाली हाथ चले गए. उनकी सभी शङ्काएँ यथावत् बनीं रहीं.

ए तलें ला मकान के, चार चीजें जिमी आसमान ।

ज्यों कबूतर खेल के, आखर फना निदान ॥ ६

शून्य निराकारसे नीचे आकाशके साथ अन्य चार तत्त्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) से बना हुआ यह ब्रह्माण्ड बाजीगरके खेलके कबूतरकी भाँति अस्तित्वहीन है. अन्तमें निश्चय ही यह लय हो जाएगा.

मोहे मेहर करी रूहअल्ला ने, कुंजी अरस की ल्याए ।

अरस बका पट खोल के, इलम दिया समझाए ॥ ७

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने परमधामकी कुञ्जीस्वरूप तारतम ज्ञान लाकर मुझ

पर कृपा करते हुए अज्ञानके आवरण (पट) को दूर कर परमधामके गूढ़ रहस्य प्रकट कर दिए एवं ब्रह्मज्ञान प्रदान किया।

गिरो उतरी लैलत कदर में, कह्या तिनमें का है तूं ।

खोल दे पट अरस का, ज्यों आए मिले तुझकों ॥ ८

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने मुझे यह कहा कि ब्रह्मात्माएँ परमधामसे खेल देखनेके लिए इस जगतमें आई हैं। तुम भी उनमें-से एक हो। अब तुम सबके अन्तर्पटको खोलकर उन्हें परमधामका अनुभव करवा दो ताकि वे शीघ्र ही तुमसे आकर मिल सकें।

जो अरवाहें अरस की, सो आए मिलेंगी तुझ ।

तुझ अंदर मैं आइया, ए केहे फुरमाया मुझ ॥ ९

उन्होंने यह भी बताया कि परमधामकी सभी आत्माएँ स्वयं आकर तुम्हें मिलेंगी। मैं भी तुम्हारे हृदयरूपी सिंहासन पर आसीन हो जाता हूँ।

किन कायम अरस न पाइया, ए गुझ रही थी बात ।

अब तूं उमत जगाए अरस की, बीच बका हक जात ॥ १०

आज तक अखण्ड परमधामको कोई भी प्राप्त नहीं कर सका। यह बात अभी तक रहस्य ही बनी हुई थी। अब तुम परमधामकी इन ब्रह्मात्माओंको तारतमज्ञान द्वारा जागृत कर अपने धाममें ले आओ।

और करी मेहेर महंमदें, अंदर बैठे आए ।

कै विध करी बका रोसनी, सो इन जुबां कही न जाए ॥ ११

मुझ पर कृपा करते हुए सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी मेरे हृदय पर ही आसीन हो गए और उन्होंने अखण्ड परमधामके दिव्य ज्ञानसे मेरे हृदयको आलोकित कर दिया जिसका वर्णन जिह्वासे नहीं हो सकता है।

चौदे तबक कर कायम, भिस्त द्वार दीजो खोल ।

मैं साहेब के हुकम से, अव्वल किया है कौल ॥ १२

उन्होंने यह भी कहा कि चौदह लोकोंको अखण्ड करनेके लिए यहाँके

जीवोंके लिए अखण्ड मुक्तिस्थलका द्वार खोल दो. धामधनीके आदेशसे मैंने पहलेसे ही ये वचन दे दिए हैं.

सो ढूंढो प्यारी उमत, मेरे हक जात निसबत ।

जो रूहें भूली वतन, ताए देऊं हक बका न्यामत ॥ १३

सद्गुरुके आदेशानुसार ही मैंने परमधामके सम्बन्धी प्रिय आत्माओंकी खोज की है. जो आत्माएँ अपने अखण्ड धामको भूल गई हैं उन्हें मैं परमधामकी सम्पदा स्वरूप तारतम ज्ञान प्रदान करता हूँ.

निमूना इन जिमी का, हक को दिया न जाए ।

पर कछुक तो कहे बिना, गैब की क्यों समझाए ॥ १४

इस नश्वर संसारकी किसी भी वस्तुसे परमधामकी तुलना नहीं की जा सकती है किन्तु कुछ कहे बिना वहाँके गूढ़ रहस्योंकी समझ भी प्राप्त नहीं हो सकती है.

ज्यों जडाव एक मोहोल है, जवेर जडे कै संग ।

कुंदन माहें सोभित, नए नए अनेक रंग ॥ १५

जैसे रत्नजडित एक प्रासादमें अनेकों रत्न जड़ायमान हैं. उसमें कुन्दनमें जड़े हुए रत्नसे विविध रङ्गोंकी नई-नई तरङ्गें निकलती हैं.

ए सब एक जवेर का अरस है, तामें कै तरंग उठत ।

जुदे जुदे रंगों झरोखे, अनेक भांत झलकत ॥ १६

यह सम्पूर्ण परमधाम एक ही रत्नका है. उससे अनेक रङ्गोंकी असंख्य तरङ्गें उठती हैं. अलग-अलग झरोखोंसे निकलते हुए विभिन्न प्रकारके रङ्ग विविध रूपोंमें चमकते हैं.

अनेक रंग थभन में, अनेक सीढियां पडसाल ।

कै रंग भोम चबूतरे, कै रंग द्वार दिवाल ॥ १७

परमधामके स्तम्भों, सीढियों, दालानों, चबूतरों, द्वारों और दीवारोंमें विविध प्रकारके रङ्गोंकी छटा अद्भुत एवं अनुपम लगती है.

इन विध समझो अरस को, एक जवेर कै रंग ।

द्वार दिवालें पडसालें, और थंभों उठत तरंग ॥ १८

इसी प्रकार पूरे परमधामको समझना चाहिए. वहाँ पर एक ही रत्न अनेक रङ्गोंमें सुशोभित है. वहाँके द्वारों, दीवारों, दालानों और स्तम्भोंसे किरणोंकी तरङ्गें उठती हैं.

जित जैसा रंग चाहिए, तहां तैसा ही देखत ।

ना समारे नए किन, ना पुराने पेखत ॥ १९

जहाँ पर जैसा रङ्ग होना चाहिए वहाँ पर उसीके अनुरूप रङ्ग विद्यमान है. वहाँ पर न कोई वस्तु नई होती है और न ही कोई पुरानी होती है.

जवेर जुदे जुदे सोभित, अनेक रंग अपार ।

एक जवेर को अरस है, ज्यों रंग रस बन बिचार ॥ २०

वहाँके अलग-अलग रत्न भिन्न-भिन्न रङ्गोंमें अपार शोभा धारण करते हैं. यद्यपि परमधाम एक ही रत्नका है तथापि जैसे वनमें विविध प्रकारके रङ्ग और रस हैं उसी प्रकारकी शोभा वहाँ पर सर्वत्र दिखाई देती है.

वन सबे एक रस हैं, कै रंग वृख अनेक ।

रंग रस स्वाद जुदे जुदे, कहां लों कहूं विवेक ॥ २१

यद्यपि वनमें अनेक रङ्गोंके अनेकों वृक्ष हैं तथा उनके फल भी अलग-अलग रङ्ग तथा स्वादके हैं तथापि वन एक रस दिखाई देता है. उसका वर्णन कहाँ तक करें ?

हर जातें कै वृख हैं, रंग रस निरमल नेक ।

स्वाद अलेखें अपार है, पर असल वन रस एक ॥ २२

इन वनोंमें विभिन्न जातिके अनेकों वृक्ष हैं. उनके फलोंके रङ्ग तथा रस निर्मल हैं. इसी प्रकार उनका स्वाद भी अपार है तथापि सभी वनोंका मूल रस एक (प्रेम) ही है.

गृद अरस के देखिया, जहां लों नजर पोहोंचत ।

एकल छत्री वन की, छेदर ना गेहेरा कित ॥ २३

रङ्गमहलके चारों ओर जहाँ तक मेरी दृष्टि पहुँची है वहाँ तक सर्वत्र मैंने

देखा. वनके सभी वृक्षोंके ऊपरका भाग एक छत्रकी भाँति दिखाई देता है. सबकी छाया भी एक समान सघन है. न कहीं कम है और न ही कहीं अधिक है.

ज्यों जडाव एक चंद्रवा, जवेर जडे बहु विध ।

वन बेली कटाव कै, सोभित सोने की सनंध ॥ २४

जिस प्रकार चँदवामें विभिन्न प्रकारके रत्न लगे हुए हैं उसी प्रकार वृक्षोंकी छत्री भी वनकी लताओंकी चित्रकारीसे स्वर्ण जैसी चमकती हुई सुशोभित हो रही है.

अनेक रंगों जवेर, जो जिन संग सोभित ।

तिन ठौर बने तिन मिसलें, कै हुए कटाव जुगत ॥ २५

परमधाममें अनेक रङ्गोंके रत्न, जो जहाँ जिस प्रकार सुशोभित हो सकते हैं वे उसी प्रकारसे उसी स्थान पर युक्ति पूर्वक एवं चित्रकारीके साथ जड़ायमान हैं.

एक जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास ।

तिन जिमी के जवेर को, क्यों कर कहूं प्रकास ॥ २६

इस दिव्य भूमिके एक कणका प्रकाश भी जब सम्पूर्ण आकाशमें समाता नहीं है तो वहाँके रत्नोंके दिव्य प्रकाशके सन्दर्भमें किस प्रकार कहा जाए ?

एह चंद्रवा वन का, नूर रोसन गृदवाए ।

तलें जिमी अति रोसनी, ए ऊपर वन सोभाए ॥ २७

वनके ऊपर वृक्षोंकी शाखाओंका बना हुआ यह चँदवा चारों ओरसे प्रकाशमान दिखाई देता है. इसके नीचेकी भूमि भी ज्योतिर्मयी है जिसके ऊपर यह वन अद्वितीय शोभा धारण कर रहा है.

जरे जरा सब नूर में, छज्जे दिवाल सब नूर ।

जिमी वन बीच आकास में, मावत नहीं जहूर ॥ २८

परमधामका प्रत्येक कण प्रकाशपुञ्जसे युक्त है. वहाँके छज्जे तथा दीवारें भी

प्रकाशमयी हैं। इस दिव्य भूमिकी तथा वनकी किरणें आकाशमें भी समाती नहीं हैं।

सोभा जानवर अरस के, ताके एक बाल की रोसन ।

मावत नहीं आकास में, जुबां क्या करे सिफत इन ॥ २९

परमधामके पशु भी इतने शोभायमान हैं कि उनके एक रोमकी प्रकाशमयी किरणें भी आकाशमें समाती नहीं हैं। यह जिह्वा उनकी शोभाका वर्णन कैसे कर सकती है ?

सिफत न होए एक बाल की, तो क्यों होए सिफत वजूद ।

ए केहेनी में न आवत, तो क्यों कहे जुबां नाबूद ॥ ३०

जब इन पशु-पक्षियोंके एक रोमकी शोभाका भी वर्णन नहीं हो सकता है तो फिर उनके पूरे शरीरकी शोभा कैसे व्यक्त की जा सकेगी है। यह शोभा शब्दोंकी सीमामें ही नहीं आ सकती तो जिह्वाके द्वारा कैसे व्यक्त हो सकेगी ?

एक बाल ना गिरे पसुअन का, ना खिरे पंखी का पर ।

पात पुराना ना होवहीं, अरस जंगल या जानवर ॥ ३१

इन पशुओंका एक रोम भी नहीं गिरता है और पक्षियोंका पंख भी नहीं गिरता है। इसी प्रकार यहाँके वृक्षोंका एक पत्ता भी नहीं गिरता है। इस प्रकार परमधामके वन एवं पशु-पक्षी सभी शाश्वत हैं।

इन जिमी के जानवर, ताए देखत हक नजर ।

ए दिल में तो आवहीं, जो रूह देखें बिचार कर ॥ ३२

इस दिव्यभूमिके पशुपक्षियों पर श्रीराजजीकी कृपादृष्टि बनी रहती है। जब आत्मा हृदयपूर्वक विचार करेगी तभी यह कृपा उसके हृदयमें उतर आएगी।

पार ना खूबी खुसबोए को, पार ना पसू पंखियन ।

मीठी बानी अति बोलत, अंग सोभित चित्रामन ॥ ३३

इन वनोंकी शोभा तथा सुगन्धिका भी कोई पारावार नहीं है इसी प्रकार पशुपक्षीकी शोभाका भी कोई पारावार नहीं है। ये अति मधुर वाणी बोलते

हैं और इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग पर चित्रित की हुई कलाकृतियाँ भी अति सुन्दर लगती हैं।

सोभा क्यों होए रंग सुरंग की, नैन श्रवन चोंच बान ।

सुख देवें कै भांत सों, कै बोलें मीठी जुबान ॥ ३४

इन पशुपक्षियोंके सुन्दर रङ्गकी शोभा कैसे व्यक्त की जाए ? इनके नेत्र, कान, चञ्चु (चोंच) तथा वाणी अत्यन्त शोभायमान हैं। ये पशुपक्षी अपनी मधुर वाणीसे विभिन्न प्रकारके सुख प्रदान करते हैं।

एक हक को रिझावें खेलके, कै हंसावे मुख बोल ।

कोई नहीं निमूना इनका, जो दीजे इनकी तौल ॥ ३५

इनमें-से कोई श्रीराजजीको अपनी क्रीड़ा द्वारा प्रसन्न करते हैं तो कोई अपनी वाणीसे उन्हें हँसाते हैं। इनके लिए कोई उदाहरण ही नहीं है जिससे इनकी तुलना हो सके।

सोभा लेत जिमी जंगल, माहें टोलें कै खेलत ।

ए खूब खेलौने हक के, ए बुजरक इन निसबत ॥ ३६

ये पशुपक्षी यहाँकी दिव्य भूमि पर या वनोंमें अपने समूहके साथ क्रीड़ा करते हैं। श्रीराजजीके इन खिलौनोंकी यही विशेषता है कि इनका सम्बन्ध उनके साथ नित्य एवं श्रेष्ठ है।

कै पीउ पीउ कर पुकारहीं, कै करें खसम खसम ।

कै धनी धनी मुख बोलहीं, कै कहें भी तुम भी तुम ॥ ३७

इनमें-से कोई पीऊ-पीऊ कहकर पुकार करते हैं तो कोई मेरे स्वामी कहते हैं तो कोई मेरे धामधनी कहते हैं। इस प्रकार वे श्रीराजजीको बार-बार 'आप ही हमारे सर्वस्व हैं' ऐसा कहते हैं।

इन विध मैं केते कहूं, बोलें जुबां अनेक ।

पर सबों एही जिकर, कहें मुख वाहेदत एक ॥ ३८

इस प्रकार मैं कहाँ तक उल्लेख करूँ ? ये अनेक प्रकारसे धनीकी पुकार करते

हैं. सभी धामधनीका ही गुणगान करते हुए उनको ही अपना सर्वस्व समझते हैं.

घास करत हैं सेजदा, करें सेजदा दरखत ।

तो क्यों न करें चेतन, यों फुरमान फुरमावत ॥ ३९

जब परमधामके घास तथा वृक्ष भी धामधनीको प्रणाम करते हैं तो फिर ये चेतन पशुपक्षी अपने स्वामीके चरणोंमें क्यों नमन नहीं करेंगे ? कुरानमें भी ऐसा ही उल्लेख आता है.

घास पसु सब नूर के, जिमी जंगल सब नूर ।

आसमान सितारे नूर के, क्यों कहूं नूर चांद सूर ॥ ४०

वैसे तो परमधामके घास, पशुपक्षी, भूमि, वन आदि सभी प्रकाशमय हैं. वहाँका आकाश, उसमें चमकते हुए नक्षत्र भी प्रकाशमय हैं तो सूर्य, चन्द्र आदिके प्रकाशका वर्णन कैसे हो सकता है ?

आगूं जरे घास अरस के, ख्वाब हैवान इन्सान ।

क्यों दीजे निमूना झूठ का, कायम जिमी जरा रेहेमान ॥ ४१

परमधामके घासके एक तृणके समक्ष भी इस नश्वर जगतके मनुष्य तथा पशुओंका कोई अस्तित्व नहीं होता है. इसलिए अनित्य वस्तुओंकी उपमा किस प्रकार दी जाए ? परमधामकी भूमि तथा वहाँकी प्रत्येक वस्तु शाश्वत हैं.

इत जरा छोटा बड़ा नूर का, या हौज जोए मोहोलात ।

अरस जरे की इन जुबां, सिफत न कही जात ॥ ४२

यहाँ पर छोटेसे कणसे लेकर हौजकौसर ताल यमुनाजी तथा विभिन्न प्रासाद आदि बड़े-बड़े सभी ज्योतिर्मय हैं. इस प्रकार परमधामके कणमात्रकी शोभा भी जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती है.

आगूं द्वार अरस के, चौक बन्या चबूतर ।

कबूं हक तखत बैठहीं, आगे खेलें जानवर ॥ ४३

रङ्गभवनके द्वारके सम्मुख चाँदनी चौक पर बहुत बड़े चबूतरे हैं. कभी-

कभी श्रीराजजी यहाँ पर आकर सिंहासन पर विराजमान होते हैं. उस समय उनके आगे पशुपक्षी क्रीड़ा करते हैं.

कै कदले कुरसियां, ऊपर रूहें बैठत ।

सुमार नहीं पसु पंखियों, कै विध खेल करत ॥ ४४

इन चबूतरों पर अनेक गद्दे तथा कुर्सियाँ सुशोभित हैं जिन पर ब्रह्मात्माएँ बैठती हैं. यहाँ पर असंख्य पशुपक्षी हैं जो विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं.

इन दरगाह की रूहन सों, दोस्ती हक की हमेसगी ।

इन जुबां सो सिफत, क्यों होवे इनकी ॥ ४५

परमधामकी इन ब्रह्मात्माओंके साथ श्रीराजजीका अटूट प्रेम (मैत्री) है. इसलिए इन ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसा जिह्वाके द्वारा कैसे की जाए ?

जो नजीकी निस दिन, हक हादी हमेस ।

क्यों कहूं अरस अरवाहों को, ए जो कायम खुदाई खेस ॥ ४६

जो अहर्निश श्रीराजजीके निकट रहती हैं ऐसी ब्रह्मात्माओंके विषयमें क्या कहा जाए ? वे तो सर्वदा श्रीराजजीके ही अङ्गस्वरूप हैं.

सोभा जाए न कही रूहन की, जो बडी रूह के अंग नूर ।

कहा कहे खूबी इन जुबां, जो असल जात अंकूर ॥ ४७

इन ब्रह्मात्माओंकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती. ये तो श्यामाजीके अङ्गकी ज्योति हैं. जिनका सम्बन्ध ही अखण्ड धनीके साथ है ऐसी ब्रह्मात्माओंकी शोभा जिह्वाके द्वारा कैसे व्यक्त हो सकती है ?

अब देखो अंतर बिचार के, कैसा सुंदर सरूप रूहन ।

किन विध खूबी रूहन की, क्यों वस्तर क्यों भूषन ॥ ४८

हे सुन्दरसाथजी ! अन्तर्हृदयसे विचार करके देखो, ब्रह्मात्माओंका चिन्मय स्वरूप कितना सुन्दर है. उनके वस्त्र, आभूषण एवं स्वरूपकी सुन्दरता किस प्रकार व्यक्त की जाए ?

देखो कौन सरूप बडी रूह का, आपन रूहें जाको अंग ।

हक प्याले पिलावत, बैठाए के अपने संग ॥ ४९

देखो, श्यामाजीका स्वरूप कितना सुन्दर है. हम सभी ब्रह्मात्माएँ उनकी अङ्गस्वरूपा हैं. स्वयं धामधनी इनको अपने निकट बैठाकर प्रेमसुधाका पान करवाते हैं.

कायम हमेसा बुजरकी, सिरदार इन रूहन ।

ए जुबां झूठे वजूद की, क्यों करे सिफत इन ॥ ५०

इन ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि श्यामाजी सर्वदा सर्वश्रेष्ठ हैं. नश्वर तनकी यह जिह्वा उनकी विशेषताका वर्णन कैसे कर सकेगी ?

ए सिरदार कदीम रूहन के, हक जात का नूर ।

तिन नूर को नूर सबे रूहें, ए वाहेदत एकै जहूर ॥ ५१

श्रीराजजीकी तेजोमयी अङ्गरूपा श्यामाजी सदा सर्वदा ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि हैं. ब्रह्मात्माएँ उनकी ज्योतिकी भी ज्योतिस्वरूपा हैं. इस प्रकार इन सभीका प्रकाश अद्वैत स्वरूप है.

अरस जरे की सिफत को, पोहोंचत नहीं जुबान ।

तो अरस रूहें सिरदार की, क्यों होवे सिफत बयान ॥ ५२

परमधामके कण मात्रकी शोभाका वर्णन भी जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता तो फिर ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि श्यामाजीकी महिमाका वर्णन कैसे हो सकता है ?

इन अरस का खावंद, ताकी सिफत होवे क्यों कर ।

एह जुबां क्यों केहेवहीं, इन अकल की फिकर ॥ ५३

ऐसे दिव्य परमधामके स्वामी धामधनीकी महिमाका वर्णन कैसे सम्भव होगा ? नश्वर जगतकी यह बुद्धि जिह्वाके द्वारा इस दिव्य शोभाका वर्णन कैसे कर सकेगी ?

सूरत हक के जात की, सिफत करू मुख किन ।

जुबां न पोहोंचे जरे लग, तो कैसा सबद कहूं इन ॥ ५४

धामधनीकी अङ्गरूपा ब्रह्मात्माओंके स्वरूपकी महिमा इस जिह्वाके द्वारा कैसे

गाई जाए ? जब यह जिह्वा एक कण मात्रका भी वर्णन नहीं कर सकती तो फिर अखण्ड शोभाके लिए किन शब्दोंका प्रयोग किया जाए ?

सिफत हक सूरत की, क्योंए न आवे जुबांएं ।

कछू लज्जत तो पाइए, जो आवे फैल हाल मांहीं ॥ ५५

धामधनीके तेजोमय स्वरूपकी महिमा जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती. उनके अखण्ड आनन्दका अल्प अनुभव भी तभी हो सकता है जब मन एवं आचरणके द्वारा उनकी नित्यताका अनुभव हो सके.

कैसा सरूप है हक का, जो इन सबों का खावंद ।

क्यों देखूं निमूना इन का, इन जुबां मत मंद ॥ ५६

ऐसे दिव्य परमधामके स्वामी श्रीराजजीका स्वरूप कैसा है, उनकी उपमा किस प्रकार दी जाए ? इस नश्वर तनकी जिह्वा तथा बुद्धि यहीं पर कुण्ठित हो जाती है.

सोभा सुंदरता जात की, एक हक जात सूरत ।

अंतर आंखें खोल तूं, अपनी रूह की इत ॥ ५७

श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके दिव्य स्वरूपकी सुन्दरताको हे आत्मा ! तू अपनी अन्तःचक्षुको खोलकर यहीं पर दर्शन कर.

रहे ठाढी इन जिमी पर, देख अपना खसम ।

देख मिलावा अरस का, और देख अपनी रसम ॥ ५८

हे आत्मा ! तू इसी संसारमें खड़ी रहकर अपने धनीके दर्शन कर तथा धामधनी एवं ब्रह्मात्माओंका मिलन (मूलमिलावा) एवं अपनी चाल-चलन तथा रीतिका अनुभव कर.

देख तलें तरफ जिमीय के, उज्जल जोत अपार ।

वन रोसन भर्या आसमान लों, किरना नहीं सुमार ॥ ५९

परमधामकी दिव्य भूमिको देख. जिसकी उज्ज्वल किरणें सर्वत्र प्रकाशित हो रहीं हैं. सम्पूर्ण वन प्रदेशका प्रकाश भी आकाश तक व्याप्त हुआ है. उनकी किरणोंका कोई पारावार नहीं है.

ऊपर देख तरफ बन के, फल फूल बेली रंग रस ।

कहूं जडाव ज्यों चंद्रवा, कै कटाव कै नकस ॥ ६०

वनकी ओर दृष्टिपात कर, वहाँ पर विभिन्न रङ्गके फल, फूल तथा लताएँ सुशोभित हैं। रत्न जड़ित चँदवाकी भाँति उन पुष्पलताओंसे यहाँ पर विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी है।

चारों तरफों चंद्रवा, अरस के यों कर ।

दौड दौड के देखिए, आवत यों ही नजर ॥ ६१

इस प्रकार रङ्ग भवनके चारों ओर वन प्रदेशमें पुष्प-लताओंका चँदवा है। दूर-दूर तक दृष्टि दौड़ाकर देखते हैं तो सर्वत्र चंदवा ही दिखाई देता है।

फेर फेर वन को देखिए, भांत चंद्रवा जे ।

केहे केहे फेर पछतात हों, ऐसे झूठे निमूना दे ॥ ६२

वारंवार देखने पर भी चँदवाकी भाँति यह वन प्रदेश सुशोभित दिखाई देता है किन्तु नश्वर उपमा देकर परमधामका वर्णन करते हुए मुझे वारंवार पश्चात्ताप होता है।

एक जरा कायम देखिए, उडे चौदे तबक वजूद ।

सिफत अरस की क्यों करे, ए जुबां जो नाबूद ॥ ६३

अखण्ड परमधामके कणमात्रमें भी इतनी शक्ति है कि उसके समक्ष चौदह लोकोंका अस्तित्व उड़ सकता है। फिर ऐसे दिव्य परमधामकी अनन्त शोभाका वर्णन नश्वर जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकता है ?

कहे सूरज सोना जवेर, ख्वाब में बुजरक ए ।

क्यों पोहोंचे निमूना झूठ का, अरस कायम हक के ॥ ६४

यद्यपि सूर्य, स्वर्ण तथा रत्न आदिकी उपमा देते हैं, ये सभी वस्तुएँ इस नश्वर जगतमें ही श्रेष्ठ कहलाती हैं। इसलिए इन नश्वर वस्तुओंकी उपमा धामधनीके अखण्ड परमधामकी सामग्रियोंके लिए कैसे दी जाए ?

ए मैं देख दुख पावत, दिल में बिचारत यों ।

जो कदी यों जान बोलों नहीं, तो कहे बिना बने क्यों ॥ ६५

यह सोचकर हृदयमें बड़ा खेद होता है। यदि ऐसा समझकर मैं कुछ भी न

कहूँ तो भी वर्णन किए बिना ब्रह्मात्माओंमें कैसे जागृति आएगी ?

इन कहे होत है रोसनी, रूह पावत है सुख ।

और इसक अंग उपजे, हक सों होत सनमुख ॥ ६६

इस प्रकार परमधामका वर्णन करने पर मेरी आत्माको विशेष आनन्द होता है एवं हृदयमें प्रेम प्रकट होने पर वह श्रीराजजीके सम्मुख हो जाती हैं.

उमंग अंग में रोसनी, अलेखें उपजत ।

इन कहे अरवाहें अरस की, अनेक सुख पावत ॥ ६७

इस प्रकारके वर्णनसे मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें उमङ्ग भर जाती है तथा अपार सुख प्राप्त होता है. साथ ही परमधामकी ब्रह्मात्माएँ भी ऐसे वर्णनसे अपार सुख प्राप्त करती हैं.

जित जित देखों नजरोँ, हक जिमी अरस वतन ।

कहे सेंती कै कोट गुना, आवत अंदर रोसन ॥ ६८

धामधनीके दिव्य परमधामकी भूमि पर जहाँ कहीं भी दृष्टि डालते हैं उसका वर्णन करते ही हृदयमें करोड़ों गुणा अधिक प्रकाश भर आता है.

कै कोट गुना बढत है, बडा नफा रूह जान ।

बढत बढत हक अरस की, आवत इसक पेहेचान ॥ ६९

इस प्रकार परमधामका थोड़ा-सा भी वर्णन करने पर ब्रह्मात्माओंको करोड़ों गुणा लाभ प्राप्त होता है. इस आनन्दके बढ़ते चले जानेसे धामधनी तथा परमधामके शाश्वत प्रेमकी पहचान हो जाती है.

इन कहे से ऐसा होत है, पीछे आवत फैल हाल ।

तो ख्वाब में कायम अरस का, सुख लीजे नूर जमाल ॥ ७०

इतना कहने मात्रसे ही ऐसा लाभ होता है तो फिर जब यह प्रेम हृदयमें उतर कर आचरणमें परिणत होगा तो इस नश्वर जगतमें भी अक्षरातीत धामधनीका अखण्ड सुख प्राप्त हो जाएगा.

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, बडी रूह भेजी इत ।

इन जिमी रूहें जगाए के, कर दर्ई ए निसबत ॥ ७१

हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीके इस असीम कृपाको देखो. उन्होंने अपनी अङ्गरूपा श्यामाजीको यहाँ पर सद्गुरुके रूपमें भेजा है. उन्होंने इस जगतमें आकर ब्रह्मात्माओंको जागृत करते हुए धामधनीके साथके शाश्वत सम्बन्धकी पहचान करवाई है.

ए हक का दिया पाइए, कौल फैल या हाल ।

ए साहेब कायम देवहीं, केहेनी अरस कमाल ॥ ७२

धामधनीकी असीम कृपासे ही मन, वचन एवं आचरणमें परिवर्तन होता है. इस प्रकार धामधनी परमधामका वर्णन करनेकी अब्धुत शक्ति निरन्तर प्रदान करते हैं.

जब केहेनी आई अंग में, तब फैल को नाहीं बेर ।

फैल आए हाल आइयां, लेत कायम रोसनी घेर ॥ ७३

जब ये वर्णित सुख हृदयमें समा जाएँगे तब आचरणमें आनेमें कोई बिलम्ब नहीं होगा. आचरणमें परिवर्तन आते ही श्रीराजजीके अनन्य प्रेममें मग्न होनेमें समय नहीं लगेगा. फिर तो परमधामके अखण्ड आनन्दसे हृदय भर जाएगा.

तलें से ऊपर चढत है, जिमी की रोसन ।

और जिमी पर उतरत है, ऊपर का नूर वन ॥ ७४

परमधामकी दिव्यभूमिकी ज्योतिर्मयी किरणें नीचेसे लेकर ऊपर आकाश तक पहुँचती हैं और ऊपरसे उतरकर वनप्रदेशको प्रकाशित करती हुई भूमि पर लौट आती हैं.

देखों जहां जहां दौड के, इसी भाँत वन छाहीं ।

जिमी वन नूर देखके, सुख उपजत रूह माहिं ॥ ७५

अपनी दृष्टिको दौड़ाकर जहाँ भी देखते हैं समस्त वन प्रदेशमें वृक्षोंकी समान छाया दिखाई देती है. वहाँकी भूमि तथा वनप्रदेशके प्रकाशको देखकर अन्तरात्मा आनन्दित हो जाती है.

ए बाग गृदवाए अरस के, और ए बाग गृदवाए जोए ।

एही बाग गृद हौज के, सब नूर पूर खुसबोए ॥ ७६

जो वन, उपवन रङ्ग भवनके चारों ओर व्याप्त हैं, वे ही यमुनाजी तथा हौजकौसर तालकी चारों ओर भी व्याप्त हैं. यह सम्पूर्ण वन प्रदेश प्रकाश तथा सुगन्धिसे परिपूर्ण है.

जिमी भी सब एक रस, तिनमें कै जुगत ।

जित जैसा रंग चाहिए, तित तैसा ही देखत ॥ ७७

परमधामकी समस्त भूमि एक रस है. उसकी रचना ऐसी अद्भुत है कि जहाँ जैसा रङ्ग आवश्यक प्रतीत होता है वहाँ वैसा ही रङ्ग दिखाई देता है.

रेत किनारें जोए पर, और रेत जिमी पर जेती ।

ताल पाल कै मोहोलों पर, कहूं जल खूबी केती ॥ ७८

यमुनाजीके तट पर तथा परमधामकी भूमि पर स्थित रेतकी जितनी शोभा है वही शोभा हौजकौसर ताल तथा उसके पाल पर स्थित महलों एवं तालके जलकी है.

पहाड जवेर केते कहूं, तलें बीच ऊपर ।

कै जवेर कै रंग के, क्यों कहूं सोभा सुंदर ॥ ७९

यहाँके पर्वतोंके रत्नोंकी बात ही क्या करें ? नीचेसे लेकर ऊपर तक सर्वत्र वे व्याप्त हैं. यहाँ पर विभिन्न रङ्गोंके विभिन्न रत्न दिखाई देते हैं उनकी सुन्दर शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

एही जिमी नूर जलाल की, जिन जानो बाग और ।

याही जवेर को मंदिर, तार्थें एक रस सब ठौर ॥ ८०

इसी प्रकारकी दिव्यभूमि अक्षरधाममें भी है. वहाँके वन, उपवन तथा रत्नमय मन्दिर आदि भी एक समान हैं. इसलिए सर्वत्र एक रस दिखाई देता है.

ना समार्या अरस को, ना किए नूर मंदर ।

ना किए हौज जोए को, ना परवत वन जानवर ॥ ८१

परमधाम तथा अक्षरधामको न किसीने सुसज्जित किया है और न ही निर्मित

किया है. वहाँके प्रासाद, पर्वत, वन, उपवन, यमुनाजी, हौजकौसर ताल तथा पशुपक्षी आदि सभी शाश्वत हैं.

ना समारी जिमी जल को, ना आकास चांद सूर ।

बाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर ॥ ८२

वहाँकी भूमि, जल, आकाश, सूर्य, चन्द्र आदिको भी किसीने सुसज्जित नहीं किया है. वहाँके तेज, वायु आदि सभी सर्वदा श्रीराजजीके शाश्वत एवं अखण्ड प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

है नूर सब नूर जमाल को, फिरस्ते नूर सिफात ।

रूहें नूर बडी रूह को, ए सब मिल एक हक जात ॥ ८३

यह सम्पूर्ण प्रकाश अक्षरातीत धनीका है. अक्षरब्रह्म तथा अन्य देवदूत (फरिश्ते) भी उन्हींके प्रकाशसे आलोकित हैं. ब्रह्मात्माएँ श्रीश्यामाजीकी अङ्गरूपा हैं तथा श्रीश्यामाजी स्वयं अक्षरातीत धामधनीके अङ्गरूपा हैं. इस प्रकार सभी मिलकर एक ही परब्रह्म परमात्माके अङ्गस्वरूप हैं.

दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूर जमाल ।

ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल ॥ ८४

अक्षरातीत धनीके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य कोई है ही नहीं. यहाँके सभी वस्तुओंमें धामधनीका ही दिव्य तेज व्याप्त है. यहाँकी वाणी, आचरण तथा मनोभाव सभी धामधनीके तेजसे परिपूर्ण हैं.

महामत कहे ऐ मोमिनो, जो अरवा अरस अजीम ।

इसक प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम ॥ ८५

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! जो परमधामकी आत्मा होगी वह प्रियतम धनीकी प्रेमसुधाको प्याले भर-भरकर पान करेगी.

प्रकरण ३२ चौपाई १७८७

खिलवत में हांसी फरामोसी दें

अब देखो अंदर अरस के, रूहें बैठी बारे हजार ।

उतरीं लैलत कदर में, खेल देखन तीन तकरार ॥ १

देखो ! रङ्गभवनके अन्दर मूलमिलावामें बारह हजार ब्रह्मात्माएँ बैठी हैं. वहाँ

बैठे-बैठे इस महिमामयी रात्रिके तीन खण्डों (व्रज, रास एवं जागनी) को देखनेके लिए वे इस नश्वर जगतमें सुरता रूपसे उतरी हैं।

वास्ते हांसी के मने किए, किया हांसी को दिल हुकम ।

तो हांसी को दिल उपज्या, मांग्या हांसी को खेल खसम ॥ २

पहले तो धामधनीने तुम्हें हँसी करनेके लिए मना किया फिर अन्तरसे खेल देखनेके लिए प्रेरणा दी. वस्तुतः हँसीके लिए ही तुम्हारे हृदयमें यह इच्छा उत्पन्न हुई है और तुमने भी हँसीके लिए ही धामधनीसे खेल देखनेकी माँग की है.

ए देखो भोम तलें की, बैठा हक मिलावा जित ।

आप अरस में अरवाहों को, खेल मेहेर का देखावत ॥ ३

देखो, रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकामें स्थित मूलमिलावाके अन्दर ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके निकट बैठी हुई हैं. धामधनी परमधाममें ही बैठाकर ब्रह्मात्माओंको कृपापूर्वक यह नश्वर खेल दिखा रहे हैं.

साहेब बैठे तखत पर, खेलावत कर प्यार ।

ए हांसी फरामोसीय की, कबू देखी ना बेसुमार ॥ ४

स्वयं धामधनी सिंहासन ऊपर विराजमान होकर प्रेम पूर्वक यह खेल दिखा रहे हैं. ब्रह्मात्माओंने भी भ्रमरूपी निद्राके ऐसे उपहासपूर्ण तथा पारावार रहित खेलको कभी नहीं देखा था.

उठके गिर गिर पडसी, फरामोसी हांसी के खेल ।

ए जो तीनों तकरार, हकें देखाए माहें लैल ॥ ५

हँसीके लिए बनाया गया मायाका खेल ही इस प्रकारका है कि इस भ्रमरूपी निद्रासे जागृत होने पर ब्रह्मात्माएँ स्वयं हँसती हुई एक-दूसरे पर गिरेंगी. श्रीराजजीने अज्ञानताका यह खेल ब्रह्मात्माओंको महिमामयी रात्रिके तीन खण्डोंमें दिखाया है.

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें यों कह्या उतरते ।

जो केहेत हों तुमको, जिन भूलो खेल में ए ॥ ६

ब्रह्मात्माओंके इन सुखोंका वर्णन कैसे किया जाए ? जब धामधनीने उन्हें

इस खेलमें आते हुए इस प्रकार कहा, 'मैं तुम्हें पहले कह रहा हूँ कि तुम खेलमें जाकर मुझे तथा परमधामको मत भूलना.'

क्यों कहूँ सुख रूहन के, हक इन विध हांसी करत ।

आप देत भुलाए के, आपै जगावत ॥ ७

ब्रह्मात्माओंके इन सुखोंका वर्णन भी कैसे किया जाए ? जब श्रीराजजी सर्वप्रथम उन्हें भ्रममें डालकर पश्चात् स्वयं जागृत कर रहे हैं.

क्यों कहूँ सुख रूहन के, हकें कौल से किए हुसियार ।

दिल नींद दे ऊपर जगावत, करने हांसी अपार ॥ ८

ब्रह्मात्माओंके उन सुखोंका भी वर्णन कैसे किया जाए ? जब धामधनी स्वयं अपने वचनोंसे उन्हें सचेत कर रहे हैं. उनकी अपार हँसीके लिए ही वे अन्दरसे उनके हृदय पर अज्ञानका आवरण डालते हुए ऊपरसे जागृत कर रहे हैं.

खेल किया हांसी वास्ते, वास्ते हांसी किए फरामोस ।

वास्ते हांसी ऊपर पुकारहीं, वास्ते हांसी न आवत होस ॥ ९

वस्तुतः ब्रह्मात्माओंकी हँसी करनेके लिए ही यह खेल बनाया है और उन पर अज्ञानरूपी नींदका आवरण डाल दिया है. इसी प्रकार हँसीके लिए ही वे ऊपरसे उन्हें जागृत भी कर रहे हैं तथापि उपहासके कारण ही ब्रह्मात्माओंको सुधि नहीं हो रही है.

आप फरामोसी ऐसी दई, जो भूलियां आप हक घर ।

ऊपर कै विध केहे केहे थके, पर जाग न सके क्योंए कर ॥ १०

धामधनीने ब्रह्मात्माओं पर नींदका ऐसा आवरण डाला जिससे वे स्वयंको, अपने धनीको तथा परमधामको ही भूल गईं. पुनः स्वयं धनी सद्गुरुके रूपमें आकर उन्हें जागृत करते हुए थक गए तथापि वे किसी भी प्रकार जागृत नहीं हो रहीं हैं.

ऐसी दारू ल्याए रूहअल्ला, जासों मुरदा जीवता होए ।

पर फरामोसी इन हांसी की, उठ न सके कोए ॥ ११

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज तारतम ज्ञानरूपी ऐसी औषधि लेकर आए

हैं जिससे मृतकके समान मूर्च्छित जीव भी सचेत हो सकते हैं किन्तु ब्रह्मात्माओं पर अज्ञानका ऐसा आवरण डाला गया है कि वे किसी भी प्रकार जागृत नहीं हो रही हैं.

इन विध हांसी न जाए कही, कै कोट विधों जगावत ।

कै दारू उपाए कर कर थके, दिल ठौर क्यों न आवत ॥ १२

इस प्रकार धामधनी द्वारा की जा रही हँसीके विषयमें कुछ कहा नहीं जा सकता. वे स्वयं ब्रह्मात्माओंको करोड़ों बार जगा रहे हैं. उन्होंने तारतम ज्ञानरूपी औषधि भी अनेक प्रकारसे प्रदान की है. तथापि ब्रह्मात्माओंके हृदयमें विश्वास नहीं हो रहा है.

हांसी होसी अति बडी, ए खेल किया वास्ते इन ।

औलिया लिल्ला दोस्त कहावहीं, पर बल न चल्या इत किन ॥ १३

परमधाममें जागृत होने पर ब्रह्मात्माओंकी बड़ी हँसी होगी. इसीके लिए खेलकी रचना हुई है. यद्यपि ब्रह्मात्माओंको परमात्माके मित्र कहा गया है तथापि यहाँ पर उनकी शक्ति काम नहीं कर रही है.

हांसी इसही बात की, फेर फेर होसी ए ।

उठ उठ गिर गिर पडसी, वखत जागने के ॥ १४

जागृत होने पर परमधाममें बार-बार इसी बातकी हँसी होगी. जागृतिके समय पर ब्रह्मात्माएँ हँसती हुई एक दूसरी पर गिर कर लोट-पोट हो जाएँगी.

आपन को फरामोस की, नींद आई निहायत ।

अरस अजीम में कूदते, कछू चल्या न हक्सों इत ॥ १५

निश्चय ही हमें यह भ्रमरूपी नींद अत्यधिक प्रभावित कर रही है. यद्यपि हम परमधाममें श्रीराजजीके समक्ष अपने प्रेमको बड़ा कहती हुई उछलतीं, कूदतीं थीं किन्तु इस संसारमें आने पर श्रीराजजीके समक्ष हमारा कुछ भी नहीं चला.

अरवाहें हमेसा अरस की, कहावें खास उमत ।

पर कछू बल चल्या नहीं, ना तो रखते हक निसबत ॥ १६

सदैव परमधाममें रहने वाली ब्रह्मात्माओंको ब्रह्मसृष्टिका विशेष समुदाय कहा जाता है किन्तु इस संसारकी मायामें इनका कोई भी बल नहीं चला. अन्यथा यहाँ पर भी वे श्रीराजजीके साथ सम्बन्ध बनाए रखतीं.

हंसते हंसते उठसी, ऐसी हुई न होसी कब ।

हक हंससी आपन पर, ऐसी हुई जो हांसी अब ॥ १७

खेल समाप्त होने पर ये सभी आत्माएँ हँसती-हँसती जागृत होंगी. ब्रह्मात्माओंका ऐसा उपहास न कभी हुआ है और न ही कभी होगा. इस बार तो ऐसी हँसी हुई है कि धामधनी उन पर बहुत हँसेंगे.

कै हांसी खुसाली अरस में, करी मिनो मिने रूहन ।

पर ए हांसी ऐसी होएसी, जो हुई नहीं कोई दिन ॥ १८

ब्रह्मात्माओंने परमधाममें विभिन्न लीलाएँ करती हुई परस्पर अनेक बार हँसी की है किन्तु यह हँसी उन पर ऐसी होगी कि जो आज तक कभी नहीं हुई थी.

एते दिन हांसी खुसाली, करी रूहों दिल चाही जे ।

पर ए हांसी दिल हक चाही, ताथें बडी हांसी हुई ए ॥ १९

आज तक ब्रह्मात्माओंने परमधाममें इच्छानुसार हास्य विनोद किया किन्तु यह हँसी तो श्रीराजजीकी हार्दिक इच्छासे प्रेरित हुई है. इसीलिए यह सबसे बड़ी हँसी होगी.

रूह अपनी इन मेले से, जुदी करो जिन खिन ।

न्यारी निमख न होए सकें, जो होए अरवा मोमिन ॥ २०

इसीलिए क्षणमात्रके लिए भी अपनी आत्माको मूलमिलावासे दूर होने मत दो. जो आत्माएँ परमधामकी होंगी वे एक क्षणके लिए भी परमधामसे दूर नहीं होंगी.

इन ठौर ए मिलावा, जिन जुदा जाने आप ।

इतहीं तेरी क्यामत, याही ठौर मिलाप ॥ २१

जब ब्रह्मात्माएँ स्वयंको एक दूसरेसे भिन्न नहीं समझेंगी उस समय उसी स्थानको मूल मिलावा समझना चाहिए. इसलिए हे आत्मा ! यहीं पर तेरी जागृति होगी और तू मूलमिलावाकी बैठकका अनुभव कर सकेगी.

हक हादी इतहीं, इतहीं असलू तन ।

खोल आंखें इत रूह की, एह तेरा बका वतन ॥ २२

यहीं पर श्रीराजश्यामाजी हैं और अपने मूलतन (परात्मा) भी यहीं पर हैं. हे आत्मा ! तू अपने अन्तःचक्षु खोलकर देख यहीं पर तेरा अखण्ड परमधाम तथा मूलमिलावा है.

ए ठौर नजर में लीजिए, लगने न दीजे पल ।

कौल फैल या हाल सों, देख हक हांसी असल ॥ २३

इसीलिए इस मूलमिलावाको अपने हृदयमें अङ्कित कर. इसके लिए क्षणभरका भी विलम्ब मत कर. मन, वचन तथा कर्मसे तन्मयताके साथ उस उपहासको देख जो श्रीराजजीने तेरे साथ किया है.

इत देख फेर फेर तूं, अपनी रूह की आंखां खोल ।

कर कुरबानी आपको, आए पोहोंच्या क्यामत कौल ॥ २४

अपनी आत्मदृष्टिको खोलकर तू बार-बार मूलमिलावाके इस दृश्यको देख, और स्वयंको समर्पित कर . क्योंकि आत्मजागृतिका समय आ गया है.

ए हांसी करी हक ने, फरामोसी की दे ।

क्यों न विचारें आपन, ए तरंग इसक के ॥ २५

इस प्रकार भ्रमका आवरण डालकर श्रीराजजीने हमारी हँसी की है. इस पर हम क्यों विचार नहीं करतीं. यह भी श्रीराजजीके प्रेमकी ही तरङ्गें हैं.

याथें देखो हक इसक, हेत प्रीत मेहेरबान ।

ए हकें करी ऐसी हांसियां, खोल आंखें दिल आन ॥ २६

इसलिए श्रीराजजीके प्रेमको हृदयङ्गम करो. वे कृपापूर्वक प्रेम तथा स्नेह

प्रदान कर रहे हैं. धामधनीने जिस प्रकार हमारी हँसी की है उसको भी अन्तःचक्षुसे देखनेका प्रयत्न करो.

ऐसा हेत देख्या हक का, तो भी लगे न कलेजें घाए ।

ऐसी रब रमूजें सुनके, हाए हाए उडत नहीं अरवाए ॥ २७

श्रीराजजीके इस अपार प्रेमको देखकर भी हमारे हृदयमें आघात नहीं पहुँचता. धामधनीके गूढ़ सङ्केतोंको सुनकर भी हाय ! यह आत्मा शरीरको नहीं छोड़ रही है.

ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान ।

हक देत याद कै विध सों, हाए हाए ऐसी लगी नींद निदान ॥ २८

यह कैसी बिडम्बना है कि परमधामका अखण्ड आनन्द क्षण भरके लिए भी याद नहीं आ रहा है. हम धामधनीके उपकारको भी याद नहीं कर रहे हैं. धामधनी अनेक प्रकारसे हमें स्मरण करवा रहे हैं तथापि खेद है कि हमें इतनी गाढ़ नींद आ गई है.

ना तो ऐसी मेहेर इसक सों, हक करत आपन सों ।

जगाए के पेहेचान सब दर्ई, हाए हाए आवत ना होस मों ॥ २९

अन्यथा धामधनी तो हमें अपनी अङ्गना समझकर प्रेमपूर्वक अनुग्रह कर रहे हैं. हमें जागृत कर उन्होंने पहचान भी करवाई तथापि खेदकी बात है कि हमें लेशमात्र भी सुधि नहीं हुई है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए देखो हक की मेहेर ।

जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर ॥ ३०

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीकी इस अपार कृपाको देखो. यदि धामधनीके एक उपकारको भी समझा जाए तो चौदह लोकोंके सुख विषतुल्य लगने लगेंगे.

प्रकरण ३३ चौपाई १८१७

बेवरा अगली भोम का, मेहेराब और झरोखे ।

खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए ॥ १

रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकाकी बाह्य दीवारका विवरण इस प्रकार है, इस दीवार पर तोरण (मेहराब) तथा झरोखे शोभायमान हैं, इनकी विशेषताका वर्णन नहीं किया जा सकता.

गृदवाए मेहेराब झरोखे, फेर देखिए तरफ चार ।

इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार ॥ २

इस दीवारके चारों ओर देखने पर इनमें तोरण (कमान) तथा झरोखे शोभायमान दिखाई देते हैं. इनकी शोभा तभी कही जा सकती है जब इनकी कोई सीमा हो.

बेसुमार जो फेर फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे ।

तो सबद में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनो के ॥ ३

परमधामकी शोभाको वारंवार असीम कहा जाता है. वह हृदयमें अङ्कित नहीं हो सकती है. उसको शब्दोंके द्वारा व्यक्त करनेका प्रयत्न किया है ताकि ब्रह्मात्माओंके हृदयमें थोड़ी-सी अनुभूति हो जाए.

पार ना कहूं अरस का, सो कहा बीच दिल मोमिन ।

ए बिचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन ॥ ४

परमधामका कोई पारावार ही नहीं है किन्तु उसे ब्रह्मात्माओंके हृदयके अन्दर कहा गया है. जरा विचारपूर्वक देखो, ब्रह्मात्माओंके हृदयके अन्दर ही अखण्ड परमधामको अङ्कित कर दिया है.

हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहें ।

हक देत लुंदनी मेहेर कर, हक अरस आवें बीच जुबांए ॥ ५

परमधामकी शोभाको सीमाबद्ध किए बिना धामधनी हृदयमें कैसे विराजमान

हो सकते हैं। जब वे स्वयं कृपापूर्वक तारतम ज्ञान प्रदान कर रहे हैं तभी यह जिह्वा परमधाम तथा धामधनीका वर्णन करनेमें समर्थ हुई है।

दोऊ तरफ बडे द्वार के, ए जो हांसें कही पचास ।

सामी चौक चांदनी, क्यों कहूं खूबी खास ॥ ६

रङ्गभवनके मुख्य द्वारके दोनों ओर दीवारमें पचास पहल (हास) हैं तथा सामने चाँदनी चौक है। उसकी विशेष शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

देहेलान ऊपर द्वार के, जो ऊपर चबूतरों दोए ।

चार चार मंदिर दोऊ तरफ के, ऊपर लग चांदनी सोए ॥ ७

मुख्य द्वारके दोनों ओर ऊपरी भागमें दो बड़े चबूतरे हैं। जिनकी लम्बाई चार-चार मन्दिर है। यह दृश्य चाँदनी तक सुशोभित है।

हांस पचास अगली दिवालें, दोऊ तरफों पचीस पचीस ।

दो मेहेराब बीच झरोखा, हर हांसें मंदिर तीस ॥ ८

रङ्गभवनके पूर्वकी दीवारमें पचास पहल (हास) हैं। मुख्य द्वारके दोनों ओर पचीस-पचीस पहल हैं। प्रत्येक पहलमें तीस-तीस मन्दिर हैं तथा प्रत्येक मन्दिरमें दो तोरणद्वार (मेहराब) तथा बीचमें एक झरोखा है।

हर मंदिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए ।

आए लग्या वन दिवालें, देत मीठी खुसबोए ॥ ९

प्रत्येक मन्दिरमें दो-दो तोरणों (मेहराब) के मध्य एक झरोखा है। इसकी शोभाका वर्णन कैसे हो सकता है ? समीपके वृक्षोंकी शाखाएँ दीवारके इन झरोखोंके साथ लगी हुई हैं। इन वृक्षोंसे मधुर सुगन्धि आती है।

दोए भोम कही जो वन की, खिडकी मोहोल तिन वन ।

भोम दूजी मोहोल झरोखे, इत बसत पसु पंखियन ॥ १०

इन वनोंकी दो भूमिकाएँ कही गई हैं जिनमें महल तथा खिड़कियाँ हैं। इनकी दूसरी भूमिकाकी शाखाएँ रङ्गमहलकी प्रथम भूमिकाके झरोखोंसे लगती हैं। इन वृक्षोंके भवनोंमें पशु-पक्षी रहते हैं।

उतर झरोखों से जाड़े, दूजी भोम बन माहें ।

बन सोभे पसू पंखियों, कै हक जस गावें जुबाएं ॥ ११

रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकाके झरोखोंसे वनकी दूसरी भूमिका पर चले जाने पर वहाँ पर पशुपक्षियोंके निवासकी विशेष शोभा दिखाई देती है। ये पशुपक्षी अपनी वाणीमें धामधनीका यशोगान करते हैं।

चल जाड़े सातों घाट लग, खूबी देख होड़े खुसाल ।

कै विध हक जिकर करें, पसू पंखी अपने हाल ॥ १२

आगे सातों घाटों तक जाएँ तो वहाँकी सुन्दरता देखकर मन प्रसन्न होता है। यहाँ पर भी अनेक पशुपक्षी अपनी-अपनी वाणीके द्वारा धामधनीका गुणगान करते हुए दिखाई देते हैं।

इसक जुबां बानी गावहीं, खूब सोभित अति नैन ।

मगन होत हक सिफत में, मुख मीठी बानी बैन ॥ १३

ये पशुपक्षी अपनी मधुर वाणीके द्वारा प्रेमभाव प्रकट करते हैं। इनके नेत्र अति सुन्दर हैं। ये अपने मुखसे मधुर स्वर निकालकर श्रीराजजीके गुणगानमें ही मग्न रहते हैं।

किन विध कहूं पसू पंखियों, परों पर चित्रामन ।

मुख बोलें हक के हालमें, तिन अंबर भरे रोसन ॥ १४

इन पशुपक्षियोंके पङ्क्तियों पर विविध रङ्गोंमें चित्रकारी की हुई है। उसकी शोभाका वर्णन कैसे करें ? उनसे निकलता हुआ प्रकाश आकाश तक फैला हुआ है। ये सभी अपनी जिह्वासे श्री राजजीका ही गुणगान करते हैं।

जैसी सोभा पसू पंखियों, सोभा तैसी भोम बीच वन ।

सो सोभा मीठी हक जिकर, यों हाल खुसाल रात दिन ॥ १५

जैसी शोभा इन पशुपक्षियोंकी है वैसी ही शोभा वनके इन भूमिकाओंकी भी है। इन पशुपक्षियोंकी शोभा वही है कि वे अहर्निश प्रसन्न होकर धामधनीका गुणगान करते रहते हैं।

सोभा जाए ना कही बन पंखियों, और जिकर करत हैं जे ।

तो हक हादी रूहें मिलावा, कहूं किन विध सोभा ए ॥ १६

वनमें विहार करनेवाले इन पशुपक्षियोंकी शोभा ही शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती जो प्रतिक्षण धामधनीका गुणगान करते हैं। फिर श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंकी बैठककी शोभा किस प्रकार व्यक्त की जाए ?

इतथें चलके जाइए, ऊपर दोऊ पुलन ।

ए खूबी मैं क्यों कहूं, जो नूर जमाल मोहोलन ॥ १७

यहाँसे सातों घाटोंसे होकर यमुनाजीके दोनों पुलों पर चले जाएँ। उन पुलोंकी शोभा को कैसे व्यक्त करें जिन पर धामधनीके प्रासाद हैं।

सात घाट कहे बीच में, माहें पसू पंखी खेलत ।

तलें भोम या ऊपर, बन में केल करत ॥ १८

इन दोनों पुलोंके मध्यमें सात घाट शोभायमान हैं। जिनमें पशुपक्षी विहार करते हैं। ये पशुपक्षी नीचे भूमि पर हों अथवा ऊपर वृक्षों पर हों, अनेक प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं।

केल लिबोई अनार, बाईं तरफ खूबी देत ।

जांबू नारंगी बट दांहिने, नूर सनमुख सोभा लेत ॥ १९

इन सातों घाटोंमें बायीं ओर केल, निम्बू तथा अनारके घाट सुशोभित हैं। दायीं ओर जामुन, नारङ्गी तथा वटके घाट शोभायमान हैं। मध्यके पाटके घाटके सम्मुख अक्षरधाम सुशोभित है।

दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट बिराजत ।

बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत ॥ २०

इन दोनों पुलों एवं सातों घाटोंके मध्यमें पाटका घाट शोभायमान है। रङ्ग भवन तथा अक्षरधामके बीचमें इन वनों (घाटों) की प्रकाशमयी किरणें आकाशको भी व्याप्त करती हैं।

जो घडनाले पुल तलें, दस दस दोऊ के ।

दस नेहरें चलें दोरी बंध, बडी अचरज खूबी ए ॥ २१

इन दोनों पुलोंके नीचे यमुनाजीका जल दस जलधाराओं द्वारा प्रवाहित होता

है. यहाँ पर दस नहरें पङ्क्तिबद्ध दिखाई देती हैं. यमुनाजीकी यह विशेषता बड़ी आश्चर्यजनक है.

दोऊ पुल देख के आइए, निकुंज मंदिरों पर ।

इत देख देख के देखिए, खूबी जुबां कहे क्यों कर ॥ २२

दोनों पुलोंकी शोभा देखकर दक्षिणकी ओर कुञ्ज-निकुञ्जवनके प्रासादोंमें चलें. यहाँकी शोभा तो देखते ही बनती है. इसकी विशेषताका वर्णन कैसे किया जाए ?

आगूं इतथें हिडोले, जित चौकी बट पीपल ।

चार चौकी बट हिडोले, इतथें न सकिए निकल ॥ २३

इन मन्दिरोंके आगे वट-पीपलकी चौकी है, जहाँ पर झूले लगे हुए हैं. चार-चार वटवृक्षोंकी चौकियोंके तोरणों (मेहराबों) पर झूले लगे हुए हैं. यह स्थान इतना सुन्दर है कि यहाँसे अन्यत्र कहीं जानेकी इच्छा ही नहीं होती है.

दूजी भोम जो चौकियों, दौड जाइए तितथें ।

बीच मेहेराबों कूदके, उतर आइए अरस में ॥ २४

वट-पीपलकी चौकीकी दूसरी भूमिका (मंजील) से दौड़ते हुए झरोखों तथा तोरणों (मेहराबों)के मध्यसे होकर रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकामें चले आएँ.

पेहेली भोम के झरोखे, सो दूजी भोम लग बन ।

ए झरोखे के बराबर, भोम दूजी हिडोलन ॥ २५

रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकाके झरोखे वटपीपलके वनकी द्वितीय भूमिकाके साथ जुड़े हुए हैं. इन झरोखोंके समतल वटपीपलकी चौकीकी दूसरी भूमिकामें भी झूले लगे हुए हैं.

पेहेली भोम फूल बाग लों, दिवाल देखिए दिल धर ।

फिरते मेहेराब झरोखे, बेन आवे अंदर थें नजर ॥ २६

रङ्गभवनके पश्चिमकी ओर प्रथम भूमिकाके साथ फूलबाग जुड़ा हुआ है. यहाँसे देखने पर रङ्गभवनकी दीवार पर चारों ओर तोरण (मेहराब) एवं

झरोखे दिखाई देते हैं। इन झरोखोंके अन्दरसे सम्पूर्ण वन दृष्टिगोचर होता है।

फेर देखिए फूल बाग लों, हर मंदिर मेहेराब दोए ।

बीच बीच उचेरा झरोखा, कहूं किन मुख सोभा सोए ॥ २७

पुनः फूलबाग पर्यन्त इस दीवारकी सुन्दरता देखते हैं। यहाँ पर प्रत्येक मन्दिरमें दो-दो तोरण शोभायमान हैं। उनके मध्यमें ऊँचे-ऊँचे झरोखे हैं। इन सभीकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

भोम तलें वन हिंडोले, अति सोभित इतथें ।

मेहेराब झरोखे सुंदर, जब बैठ देखिए वनमें ॥ २८

वट-पीपलकी प्रथम भूमिकामें लगे हुए झूले यहाँसे अति सुन्दर दिखाई देते हैं। जब इस वनमें बैठकर देखते हैं तो रङ्गभवनकी दीवार पर बने हुए तोरण तथा झरोखोंकी सुन्दरता दिखाई देती है।

कै जिकर करें जानवर, मीठे स्वर बयान ।

इसक खूबी अति बड़ी, सिफत बका सुभान ॥ २९

इस वनमें अनेक पशुपक्षी मधुर स्वरसे धामधनीका नाम लेते हैं। इनके प्रेमकी इतनी बड़ी विशेषता है कि वे प्रतिक्षण अपने धनीके गुणगानमें लगे रहते हैं।

इत क्यों कहूं खूबी हिंडोले, जित हींचे रूहें हादी हक ।

बयान न होए एक जंजीर, जो उमर जाए मुतलक ॥ ३०

यहाँके झूलोंकी शोभाका वर्णन क्या करें ? जहाँ पर स्वयं श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ झूलते हैं। इन झूलोंमें लगी एक शृङ्खला (जंजीर) की शोभाका वर्णन करने लगूँ तो भी सम्पूर्ण जीवन ही व्यतीत हो सकता है।

ए भोम तलें की दिवाल में, मेहेराब आवें न सिफतमों ।

देख देख के देखिए, फेर चलिए फूल बागलों ॥ ३१

इधरसे दिखाई देनेवाली रङ्ग भवनकी प्रथम भूमिकाकी दीवारमें जो तोरण (मेहराब) दिखाई देते हैं उनकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती।

इस सुन्दरताको बार-बार देखकर फिर फूलबागकी ओर चलते हैं।

दूसरी भोम जो अरस की, सो तीसरी भोम लग वन ।

जाइए झरोखे से हिडोले, ए सोभा कहूं मुख किन ॥ ३२

रङ्गभवनकी द्वितीय भूमिका (मंजील) इस वटपीपलके वनकी तृतीय भूमिकासे मिलती है। रङ्गभवनके झरोखोंसे इन झूलों तक जाया जाता है। इनकी शोभाका वर्णन किस मुखसे किया जाए ?

चौथी भोम के वन से, आइए तीसरी भोम अरस ।

ए भोम झरोखे बराबर, ए बन मोहोल अरस परस ॥ ३३

इस वनकी चतुर्थ भूमिकासे रङ्गभवनकी तृतीय भूमिकामें आएँ। वन तथा रङ्गभवनकी ये दोनों भूमिकाएँ परस्पर समतल हैं।

पांचमी भोम वन चांदनी, अति खूबी लेत इत ए ।

चल जाइए चौथी भोम अरस, मोहोल देखो बैठ झरोखे ॥ ३४

इस वनकी पाँचवीं भूमिका पर बनी हुई चाँदनी अति सुन्दर दिखाई देती है। रङ्गभवनकी चतुर्थ भूमिकासे यहाँ पर जाया जा सकता है। चतुर्थ भूमिकाके झरोखोंमें बैठकर वनके इन प्रासादोंकी सुन्दरताको देखें।

बट पीपल की चौकियां, एक घाट लग हद ।

लंबी चांदनी फूलबागलों, ए सोभा न आवे माहें सबद ॥ ३५

वटपीपलकी चौकीकी सीमा पूर्वकी ओर नारङ्गीके घाटके वृक्षों तक तथा पश्चिमकी ओर फूलबाग तक विस्तृत है। इस वनकी शोभा शब्दोंमें व्यक्त नहीं हो सकती।

हर हांस तीस मंदिर, हर मंदिर झरोखा एक ।

दोऊ तरफो दो मेहेराब, मंदिरों खूबी विसेक ॥ ३६

रङ्गभवनके दो सौ पहल (हाँस) मध्ये प्रत्येक पहलमें तीस-तीस मन्दिर हैं तथा प्रत्येक मन्दिरमें एक झरोखा है। झरोखेके दोनों ओर तोरण हैं। मन्दिरोंकी शोभा अति विशेष है।

हर हांस साठ मेहेराब, इनों बीच बीच झरोखा ।

भोम तलें अति रोसनी, मुख क्यों कहूं सोभा बका ॥ ३७

इस प्रकार प्रत्येक पहलके तीस-तीस मन्दिरोंमें प्रत्येकमें दो-दो तोरण(मेहराब)के अनुसार कुल साठ तोरण हैं. दो-दो तोरणोंके मध्यमें एक-एक झरोखा है. रङ्गभवनकी यह प्रथम भूमिका ही अत्यन्त प्रकाशमय है. इस अखण्ड भूमिकाकी शोभाका वर्णन कैसे करें ?

इन विध हांसे फिरतियां, चारों तरफों सौ दोए ।

चारों तरफ का बेवरा, नेक केहेत हुकम सोए ॥ ३८

इस प्रकार रङ्ग भवनके चारों ओर दो सौ पहल (हांस) हैं. धामधनीके आदेशसे मैं चारों ओरका विवरण संक्षेपमें दे रहा हूँ.

एक तरफ आगूं द्वारने, तरफ दूजी चौकी हिडोले ।

फूल बाग तरफ तीसरी, चौथी चबूतरे चेहेबच्चे ॥ ३९

रङ्गभवनमें पूर्वकी ओर विशाल द्वारके सम्मुख चाँदनी चौक तथा वन आदि हैं. दूसरी ओर दक्षिणमें वटपीपलकी चौकी है, उन पर झूले लगे हुए हैं. तीसरी ओर पश्चिममें फूलबाग है तथा चौथी ओर उत्तरमें लालचबूतरा एवं जलकुण्ड (खड़ोकली) हैं.

चार चार नेहरें जंजीर ज्यों, मिल मिल फिरें गृदवाए ।

बीच बीच सोभित बगीचों, अचरज एह देखाए ॥ ४०

फूलबागके चारों ओर शृङ्खलाओंकी भाँति चार-चार नहरोंसे जल प्रवाहित होता है. इन नहरोंके मध्यमें सुन्दर उपवन सुशोभित हैं. यह दृश्य देखने पर बड़ा आश्चर्य होता है.

बीच झरोखे कांरजे, चारों तरफों चार चलत ।

ए चारों बीच चेहेबच्चे, एकै ठौर पडत ॥ ४१

रङ्गभवनके झरोखेमें बैठकर देखने पर इस उपवनमें चारों ओर चार गतिशील फुहारोंकी शोभा देखी जा सकती है. इन चारों फुहारोंका जल मध्यमें स्थित जलकुण्डमें गिरता है.

कहूं कारंज एक बीच में, एक ठौर उछलत ।

सो चारों फुहारें होए के, चारों खूटों गिरत ॥ ४२

इस जलकुण्डके मध्यमें एक और फुहारा है जिसका जल सीधा ऊपर तक पहुँचकर वहीं पर गिरता है। वही जल कभी-कभी चारों फुहारोंके द्वारा चारों कोनेमें जा गिरता है।

सो ए फूल बाग की, सोभा इन मुख कही न जाए ।

नूर जोत फूल पातन की, जानों अंबर में न समाए ॥ ४३

इस प्रकार फूलबागकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती। यहाँके पुष्पों तथा पत्तोंकी ज्योति आकाशमें भी नहीं समाती है।

चार खूंट चारों हांसों, कै जिनसों फूल देखाए ।

कै जुगतें पात सोभित, सब खुसबोए रही भराए ॥ ४४

फूलबागके चारों कोनों पर चारों दिशाओंमें विभिन्न प्रकारके (रङ्ग-विरङ्गे) पुष्प दिखाई देते हैं। उनके पत्ते भी विभिन्न प्रकारसे सुशोभित हैं। उनकी सुगन्धिसे चारों ओरका वातावरण भर जाता है।

फूल कहूं कै रंग के, गिनती न आवे सुमार ।

ना गिनती रंग पात की, खूबी क्यों कहूं इनों किनार ॥ ४५

यहाँ पर अनेक रङ्गोंके फूल हैं जिनकी गणना नहीं हो सकती है। उनके पत्तोंके रङ्गोंकी भी गणना नहीं हो सकती है। इसलिए फूलबागके किनारोंकी शोभाकी विशेषता कैसे व्यक्त की जाए ?

जानों के गंज नूर को, भराए रह्यो आकास ।

जब नीके नजर दे देखिए, तब कछू पाइए खूबी खास ॥ ४६

ऐसा आभास होता है, मानों यहाँका प्रकाशपुञ्ज सम्पूर्ण आकाशको आच्छादित कर रहा है। जब ध्यानपूर्वक देखा जाए तो इस उपवनकी शोभा कुछ विशेष ही दिखाई देती है।

विवेक कर जब देखिए, तब पाइए फूल पांखड़ी पात ।

कै जिनसें जुगते कांगरी, नूर आगे देखी न जात ॥ ४७

विवेकपूर्वक देखने पर इन पुष्पोंके पुष्पदल तथा पत्तोंकी विविधताका अनुभव होगा. इनके द्वारा बनी हुई विभिन्न प्रकारकी कांगरी अत्यधिक प्रकाशके कारण आखोंसे दिखाई नहीं देती है.

कै जिनस जुगत रंग फूल में, कै जिनस जुगत पात रंग ।

नूर बाग खासी हक हादी रूहें, खूबी क्यों कहूं जुबां इन अंग ॥ ४८

इस उपवनके पुष्पोंमें विभिन्न प्रकारके रङ्ग हैं. उनके पुष्पदलके रङ्ग भी विभिन्न प्रकारके हैं. जब श्रीराज श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विशेष रूपमें इस नूर बाग (प्रकाशमय उपवन) में आते हैं उस समय इसकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता.

ए बाग चौड़ा लंबा सोहना, माहें जुदी जुदी कै जिनस ।

कै एक रंगों बगीचे, जानों एक से और सरस ॥ ४९

यह लम्बा-चौड़ा बाग अत्यन्त सुन्दर है. यहाँ पर बीच-बीचमें विभिन्न प्रकारके अनेक रङ्गोंके उपवन हैं. वे एक-दूसरेसे बढ़कर सुन्दर दिखाई देते हैं.

एक एक दरखत में कै रंग, यों कै बगीचे विवेक ।

कै बगीचे चेहेबचे, जानों जो देखों सोई विसेक ॥ ५०

इस उपवनके एक-एक वृक्षमें अनेक रङ्ग हैं. यहाँ पर इस प्रकारके अनेक उपवन हैं. अनेक उपवनोंमें जलकुण्ड हैं. उनमें जिसको भी देखते हैं उसीकी शोभा दूसरेसे विशेष दिखाई देती है.

नेहेरें चलत कै बीच में, चेहेबचे बगीचों ।

कै बैठकें कारंजों, जल उछलत फुहारों ॥ ५१

इन उपवनोंमें स्थित जलकुण्डोंके माध्यमसे अनेक नहरें प्रवाहित होती हैं. वहाँ पर बैठनेके लिए अनेक स्थान हैं जिनमें फुहारोंसे उछलते हुए जलका आनन्द लिया जा सकता है.

कै मोहोल मंदिरों चबूतरों, इत बने हैं बनके ।
 इत हक हादी रूहें बैठक, अति खुसाली ठौर ए ॥ ५२
 यहाँ पर वनके विभिन्न प्रासाद, मन्दिर, चबूतरे आदि हैं, जहाँ पर ब्रह्मात्माओं
 सहित श्रीराजश्यामाजी आकर बैठते हैं. इस प्रकार यह स्थान अत्यन्त
 आनन्दप्रद है.

चारों खूटों बडे चार चेहेबच्चे, तिन हर एक में कै कारंज ।
 सब नेहेरें तहां से चलें, वह चेहेबच्चों भर्या जल गंज ॥ ५३
 इस उपवनके चारों कोनों पर चार बड़े-बड़े जलकुण्ड हैं. प्रत्येक कुण्डमें
 अनेक फुहारे चलते हैं. सभी नहरें वहींसे प्रवाहित होकर आगे जाती हैं. इन
 जलकुण्डोंमें अथाह जल भरा हुआ है.

पांच पांच हांसों बगीचा, भए पचास हांसों बाग दस ।
 ए सोभा इन जुगतें, याकों क्यों कहूं रूप रंग रस ॥ ५४
 यहाँके एक-एक उपवन पाँच-पाँच पहल (हांस)के लम्बे-चौड़े हैं. इस
 प्रकार पचास पहलोंमें दस उपवन हैं. इनकी शोभा इतनी सुन्दर है कि इनके
 रूप, रस तथा रङ्गका वर्णन नहीं हो सकता है.

ए बडा बाग ऊपर चबूतरे, ता पर वन की दिवाल ।
 ए नूर फूलन का क्यों कहूं, सेत स्याम नीले पीले लाल ॥ ५५
 नूरबागकी छत (चबूतरे) पर बना हुआ यह फूलबाग बहुत बड़ा है. इसके
 तीनों ओर (उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिणमें) बड़ेवनके पाँच वृक्ष दीवारके सदृश
 शोभायमान हैं. यहाँ पर खिले हुए श्वेत, श्याम, नील, पीत तथा रक्तवर्णके
 पुष्पोंके प्रकाशका वर्णन कैसे करें ?

तलें तीन तरफ मेहेराब, ए जो कही दिवाल गृदवाए ।
 ऊपर दिवालें वनकी, ए सिफत कही न जाए ॥ ५६
 इस फूलबागके नीचे (नूरबागमें) तीनों ओर बड़े वनके वृक्षोंकी दीवारमें
 तोरण (मेहराब) हैं. (चौथी ओर रङ्गमहलका चबूतरा है) ऊपर पाँचवीं

भूमिका तक वनके इन वृक्षोंकी दीवार है। जिसकी शोभा व्यक्त नहीं हो सकती।

इन सौ बगीचों चेहेबच्चे, जुदी जुदी जिनस जुगत ।

ए बाग नेहरें देखते, नैना क्योंए ना होए त्रपत ॥ ५७

फूलबागके इन सौ उपवनोंमें कलात्मक ढङ्गके अलग-अलग जलकुण्ड शोभायमान हैं। इस उपवनमें प्रवाहित हो रही नहरोंको देखकर हमारे नेत्र कदापि तृप्त नहीं होते हैं।

जो बाग तलें चबूतरा, सो छाया बीच दरखत ।

बीच अरस के उसी जुबां, हक आगूं होए सिफत ॥ ५८

फूलबागके चबूतरेके नीचे नूरबाग है। जहाँ पर वृक्षोंकी प्रकाशमयी छाया है। इसकी शोभा तथा सुन्दरताका वर्णन परमधाममें, धामधनीके समक्ष, वहींकी रसनासे हो सकेगा।

ए वृख जो अरस भोम के, सो अरसै के हैं नंग ।

ए जोत कहूं क्यों इन जुबां, और किन विध कहूं तरंग ॥ ५९

परमधामकी दिव्य भूमिके ये वृक्ष वहींके दिव्य रत्नोंकी भाँति शोभायमान हैं। उनसे निकलते हुए प्रकाशकी तरङ्गोंकी शोभाको जिह्वाके द्वारा कैसे व्यक्त करूँ ?

जिमी तलें जो दरखत, एह जिनस कछू और ।

खूबी फल फूल पात की, किन मुख कहूं ए ठौर ॥ ६०

फूलबागके नीचे नूरबागके वृक्ष कुछ भिन्न प्रकारके हैं। इनके फल, फूल तथा पत्तेकी शोभा कैसे व्यक्त की जाए ?

रंग जोत खूबी खुसबोए की, क्यों कर कहूं ए वन ।

फल फूल पात तलें जिमी, जानों सूर हुए रोसन ॥ ६१

इन वृक्षोंकी रङ्गमयी छटा, ज्योतिर्मयी किरणें तथा भीनी-भीनी सुगन्धकी शोभा कैसे व्यक्त की जाए ? यहाँ पर खिले हुए पुष्प, फल तथा पत्ते इतने प्रकाशमय हैं, मानों कोई सूर्य ही प्रकाशित हो रहा हो ऐसा दिखाई देता है।

कै नेहरें कै चेहेबच्चे, कै कारंजें जल उछलत ।

कै मोहोल माहें बैठके, हक हादी रूहें खेलत ॥ ६२

इस नूरबागमें भी अनेक नहरें प्रवाहित होती हैं तथा अनेक जलकुण्डोंसे फुहारोंके द्वारा जल उछलता है। यहाँ पर स्थित अनेक प्रासादोंमें बैठनेके सुन्दर स्थान हैं जहाँ आकर श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विविध प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं।

तले बाग जो दरखत, बडा वन गिरदवाए ।

चारों खूटों बराबर, खूबी जरे की कही न जाए ॥ ६३

फूलबागके नीचे स्थित नूरबागके वृक्षोंको बड़ेवनने घेर लिया है। इस उपवनके चारों कोने (लम्बाई-चौड़ाई) एक समान हैं। यहाँके कणमात्रकी शोभा भी शब्दोंमें व्यक्त नहीं हो सकती।

तो क्यों कहूं सारे बागकी, जिन की खूबी कही ए ।

ऐसा जरा कह्या जिन का, तो क्यों कहूं ठौर हक के ॥ ६४

तो फिर पूरे उपवनकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? जब मात्र एक कणकी भी ऐसी शोभा है तो धामधनीके इस विशेष स्थानकी शोभाका वर्णन कैसे करें ?

जेता बाग ऊपर, तेता तलें विस्तार ।

चारों खूटों बराबर, ए सिफत न आवे सुमार ॥ ६५

ऊपरके फूलबागका विस्तार जितना लम्बा-चौड़ा है उसीके अनुरूप नीचे नूरबागका भी विस्तार है। इसके चारों कोने एक समान हैं। इनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

अति खूबी बाग ऊपर, तले तिनसे अधिकाए ।

वह खूबी इन मुखसे, मोपें कही न जाए ॥ ६६

ऊपर फूलबागकी जैसी अद्वितीय शोभा है उसके नीचे नूरबागकी शोभा उससे भी अधिक है। इसकी यह विशेषता इस मुखके द्वारा नहीं कही जा सकती है।

बाग पांच पांच हांसके, हैं दस बाग हांस पचास ।

यों मोहोलातें सौ बागकी, कहूं किन विध खूबी खास ॥ ६७

इस बागमें पाँच-पाँच पहल (हास) के उपवन हैं। इस प्रकार पचास पहलमें एक पङ्क्तिमें दस उपवन हैं। इस प्रकार दस पङ्क्तियोंमें स्थित कुल एक सौ उपवनोंमें प्रासादोंकी अद्वितीय शोभा है। इनकी विशेषताका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

चारों तरफों चलती, नेहरें बीच बाग के ।

बीच मेहेराबों से देखिए, सोभित वृक्षों तलें ॥ ६८

इस उपवनके मध्यसे नहरोंसे चारों ओर जल प्रवाहित होता है। वृक्षोंके कमान (मेहराब) से देखें तो वृक्षोंके नीचे जलका प्रवाह अति शोभायमान दिखाई देता है।

पचास हांस तरफ बागके, हर हांसें तीस मंदर ।

मेहेराब बीच झरोखा, तीन तीन सबों अंदर ॥ ६९

इस उपवनकी ओर रङ्गभवनके पचास पहल (हांस) हैं। प्रत्येक पहलमें तीस-तीस मन्दिर हैं। प्रत्येक मन्दिरमें दो-दो तोरण (मेहराब) तथा उनके मध्यमें एक-एक झरोखा (इस प्रकार तीन) हैं।

इन हांस चेहेबच्चे से चलिए, दूसरे पोहोंचिए जाए ।

मोहोल मेहेराबों देखिए, बाग इतथें और सोभाए ॥ ७०

इन पहलोंके प्रथम जलकुण्ड (चेहबच्चा)से चलकर दूसरे जलकुण्ड पर पहुँचते हैं तो प्रासादों तथा मन्दिरोंके तोरण दिखाई देते हैं। यहाँसे यह उपवन और भी अधिक सुन्दर दिखाई देता है।

एक एक मंदिर में आएके, फेर देखिए गृदवाए ।

इन विध रूहें देखिए, उलट अंग न समाए ॥ ७१

हे ब्रह्मात्माओ ! उक्त एक-एक मन्दिरमें आकर इस उपवनके चारों ओर देखने पर जो आनन्द प्राप्त होता है वह अङ्गोंमें नहीं समाता है।

ए बाग मेहेराब देखके, आए बडे चेहेबच्चे ।

आया आगूं लाल चबूतरा, खूबी किन विध कहूं मैं ए ॥ ७२

यह उपवन तथा उसके तोरणों (मेहराब) को देखकर सोलह पहल (हाँस) के बड़े कुण्ड पर चलें। इसके साथ लाल चबूतरा संलग्न है। इसकी विशेषता का वर्णन कैसे किया जाए ?

चालीस हांसों चबूतरा, बडे मेहेराब इन पर ।

देख देख के देखिए, खूबी क्यों कहूं इन चबूतर ॥ ७३

यह चबूतरा रङ्गभवनके चालीस पहल तक विस्तृत है। यहाँ पर दीवारोंमें (मन्दिरोंके झरोखोंके स्थान पर) बड़े-बड़ें तोरण हैं। इस चबूतरेकी शोभा देखते ही बनती है, इसे व्यक्त नहीं किया जा सकता।

तीन हजार छे सै बने, मेहेराब बराबर ।

सोभा हांसों चालीस, इन जुबां कहूं क्यों कर ॥ ७४

इस लाल चबूतरे पर तीन हजार छ सौ (३६००) तोरण (मेहराब) एक समान सुशोभित हैं। इस प्रकार इस चबूतरे पर स्थित चालीस पहल (हांसों) की शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

ए ठौर सोभा अति बडी, और बन विस्तार ।

ए ठौर बैठक बडी, पसु पंखी खेलें अपार ॥ ७५

इस विशाल चबूतरेकी शोभा अद्वितीय है। यहाँ पर वनका विस्तार भी अति बड़ा है। साथ ही इस चबूतरे पर बैठनेका विशाल स्थान है। असंख्य पशुपक्षी भी यहाँ पर आकर क्रीड़ा करते हैं।

अति खूबी आगूं कठेडे, हांसों चालीसों सोभित ।

देखत अरस आंखन सों, खूबी उत जुबां बोलत ॥ ७६

इस चबूतरेके किनारे पर चालीस पहल (हांस) तक कटहरा सुशोभित है। यह शोभा परमधामकी दृष्टिसे देखकर वहीं पर बताई जा सकती है।

जुदी जुदी जिनसों सोभित, जुदी जुदी जिनसों फल फूल ।

पात रंग जुदी जिनसों, देख देख होइए सनकूल ॥ ७७

यहाँ पर विभिन्न सामग्रियाँ सुशोभित हैं। यहाँके फल-फूल भी विभिन्न

प्रकारके हैं। इन वृक्षोंके पत्तोंके रङ्ग भी विविध प्रकारके हैं। इनको देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है।

हर मंदिर माहें आए के, चढिए हर झरोखे ।

जब आइए हर मेहेराब में, तब खूबी देखो बाग ए ॥ ७८

प्रत्येक मन्दिरमें आकर प्रत्येक झरोखा पर चढ़ें। जब प्रत्येक तोरण (मेहराब) से होकर आगे बढ़ते हैं तो सामने बड़े वनकी शोभा भलीभाँति दिखाई देती है।

बड़े मेहेराब बराबर, एक दूजे को लगता ।

हांस चालीस ऊपर चबूतरे, सोभा न आवे सबद में बका ॥ ७९

लालचबूतरे पर एक दूसरेसे लगते हुए बड़े-बड़े तोरण (मेहराब) सुशोभित हैं। चालीस पहल (हांस) पर स्थित इस चबूतरेकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती।

एह भोम एह चबूतरा, लगते पेड दरखत ।

ए ठौर वरनन करते, हाए हाए छती नाहीं फटत ॥ ८०

प्रथम भूमिका पर स्थित यह चबूतरा तथा इसके साथके वृक्ष अति सुन्दर हैं। इस सुन्दर स्थानका वर्णन करते हुए मेरा हृदय क्यों विदीर्ण नहीं हो रहा है ?

आगूं भोम चबूतरे, चारों तरफों चौगान ।

गृदवाए परे पुखराज के, जिमी रोसन खेलें रेहेमान ॥ ८१

प्रथम भूमिका तक ऊँचे इस चबूतरेसे आगे चारों ओरका वन प्रदेश मैदानकी भाँति दिखाई देता है। यह प्रदेश पुखराजकी चारों ओर व्याप्त होकर उससे भी आगे तक पहुँचा है। इसकी प्रकाशमय भूमिमें कृपानिधान धामधनी लीला करते हैं।

जिमी ऊंची नीची कहूं नहीं, बराबर एक थाल ।

पसु पंखी सबमें खेलहीं, ए खेलौने नूर जमाल ॥ ८२

यहाँकी भूमि कहीं भी ऊँची-नीची नहीं है। सर्वत्र समतल है। श्रीराजजीके खिलौने समान पशुपक्षी इस भूमि पर सर्वत्र खेलते हैं।

बडा वन ऊंचे हिडोले, तलें हाथी जात आवत ।

कहूं केते बडे जानवर, इन चौगान खेल करत ॥ ८३

यहाँ पर बड़े-वनमें ऊँचे झूले लगे हुए हैं। उनके नीचेसे हाथी आते-जाते हैं। यहाँ पर अनेक बड़े-बड़े पशु हैं जो इस मैदानमें क्रीड़ा करते हैं।

बाघ केसरी चीते खेलहीं, और मोर मुरग बांदर ।

हर जात जात कै जिनसें, कहूं कहां लग खेल जानवर ॥ ८४

यहाँ पर बाघ, सिंह, चीते जैसे बड़े-बड़े पशु तथा मयूर, मुर्ग, वानर जैसे छोटे पशुपक्षी सहित विभिन्न जातिके पशुपक्षी विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करते हैं। उनका वर्णन कहाँ तक करें।

हर जिनसें कै खेलत, एक एक में खेल अपार ।

खेलें कूदें नाचें उड़ें, गावें कै विध जुबां न सुमार ॥ ८५

ये पशुपक्षी विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ा करते हैं। उनकी एक-एक (मुख्य) क्रीडामें भी अनेक अवान्तर (गौण) क्रीड़ाएँ होती हैं। खेलते हुए ये दौड़ते हैं, नाचते हैं, उड़ते हैं तथा गाते हैं। इस प्रकार इनकी क्रीड़ाका कोई पारावार नहीं है।

इन मुख सोभा क्यों कहूं, और क्यों कहूं सोभा जिकर ।

सोभा पर चित्रामन, ए जुबां फना कहे क्यों कर ॥ ८६

इनके मुख तथा उनसे किए गए श्रीराजजीके गुणगानकी शोभा कैसे बताई जाए? इनके पङ्क्तु पर भी विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी अङ्कित है। यह नश्वर जिह्वा उनका वर्णन कैसे कर सकती है ?

सोभा कही न जाए दरखतों, और ना कही जाए इन भोम ।

जो देखों सोभा पसुअन की, करे अति रोसन एक रोम ॥ ८७

परमधामके इन वृक्षों तथा भूमिकी शोभा नहीं बताई जा सकती। यदि यहाँके पशुपक्षियोंकी शोभा देखना चाहें तो उनके रोम-रोमसे प्रकाश निकल रहा हो ऐसा दिखाई देता है।

कै नाचत नट बांदर, कै बाजे बजावत ।

ए खेलौने हक हादीय के, केहेनी जुबां क्यों पोहोंचत ॥ ८८

यहाँ पर अनेक वानर नटकी भाँति नृत्य करते हैं तो अनेक वाद्ययन्त्र बजाते हैं। ये सभी श्रीराजश्यामाजीके खिलौने हैं इसलिए यह जिह्वा इनकी शोभाका वर्णन कैसे कर सकेगी ?

चढ ऊंचे लेत गुलाटियां, फेर गुलाटियों उतरत ।

ए नट विद्या बहुविध की, क्यों कर करूं सिफत ॥ ८९

ये वानर गुलाटियाँ मारते हुए वृक्षों पर चढ़ते हैं और गुलाटियाँ मारते हुए वृक्षोंसे उतरते हैं। इनकी नटविद्या (नृत्यकला) विभिन्न प्रकारकी है। जिसकी प्रशंसा किस प्रकार करूँ ?

कूदत फांदत नाचत, लेत भमरियां दे पडताल ।

नई नई विद्या देख के, हक हादी रूहें होत खुसाल ॥ ९०

कतिपय वानर दौड़ते हैं, उछल-कूद करते हैं एवं घूमते हुए भूमि पर पड़ताल देते हैं। इनकी नवीन कलाओंको देखकर श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ आनन्दित होते हैं।

चढ कूदें कै दरखतों, पेड पेड से पेड ऊपर ।

तले जो अंठीख आएके, फिरत चढत ऊंचे उतर ॥ ९१

ये वानर दौड़कर अनेक वृक्षों पर चढ़ते हैं तथा एकसे दूसरे, दूसरेसे तीसरे वृक्ष पर ऊपरा ऊपरी छलाङ्ग लगाते हैं। ऊपरसे छलाङ्ग लगाते हुए आकाशमें नीचे तक आकर फिर ऊपर चढ़ जाते हैं।

जंत्र बेन बजावहीं, रबाब ताल मृदंग ।

अमृत सारंगी झरमरी, झाँझ तंबूरा चंग ॥ ९२

अनेक वानर वाद्ययन्त्र बजाते हैं जिनमें वंशी, रबाब, करताल, मृदङ्ग, झरमरी, झाँझ, तम्बूरा, चङ्ग मुख्य हैं। उनसे अमृतमय ध्वनि सुनाई देती है।

सरनाई भेरी नफेरी, और बाजे कै बजाए ।

तुरही नरसिंघा महुअर, और नगारे करनाए ॥ ९३

कतिपय वानर शहनाइयाँ, भेरी, तुरही (नफोरी), नरसिंहा, महुवर, नगारे तथा

लम्बे-लम्बे बिगुल आदि अनेक वाद्ययन्त्र बजाते हैं।

लेत तलें से गुलाटियां, चढत जात आसमान ।

उतरे भी गुलाटियों, फेर फेर गुलाटों दे तान ॥ ९४

ये वानर नीचेसे गुलाटियाँ खाते हुए ऊँचे आकाशमें छलाङ्ग लगाते हैं और उसी प्रकार गुलाटियाँ खाते हुए नीचे उतरते हैं एवं गुलाटियाँ खाते हुए वाद्ययन्त्रोंकी तान देते हैं।

अंत्रीख मिने गुलाटियां, देत जात फिरत ।

इन विध लेत भमरियां, यों कै विध केल करत ॥ ९५

अनेक वानर तो अन्तरिक्षमें ही गुलाटियाँ खाते हुए घूमते हैं। इस प्रकार गोलाईमें घूमते हुए ये वानर विभिन्न प्रकारसे क्रीड़ा करते हैं।

देखो बांदर खेल अरस में, बडा देख्या अचरज ए ।

ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, हक हादी आगूं होत है जे ॥ ९६

देखो, परमधाममें वानरोंकी क्रीड़ाओंमें भी बड़ी अद्भुतता है। इस समयकी प्रसन्नताकी बात ही कैसे करें, यह क्रीड़ा तो स्वयं श्रीराजजी तथा श्यामाजीके आगे होती है।

ए नट विद्या कै नाचत, बाजे दिल चाहे बजावत ।

ए खेल अचंभा देख के, हक हादी रूहें राचत ॥ ९७

कतिपय वानर नटविद्यामें निपुणकी भाँति नृत्य करते हैं। नृत्य करते हुए इच्छानुसार वाद्ययन्त्र बजाते हैं। इनकी अद्भुत क्रीड़ा देखकर श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ प्रसन्न होते हैं।

इत आगूं लाल चबूतरे, भोम क्यों कहूं वन विस्तार ।

खेल पसु पंखियन को, जुबां कहे जो होवे कहूं पार ॥ ९८

इस लाल चबूतरेसे आगेकी भूमि पर वनका बड़ा विस्तार है। यहाँ पर होने वाली पशुपक्षियोंकी क्रीड़ाओंको तभी बताया जा सकता है जब उनकी कोई सीमा हो।

बाघ केसरी खेलहीं, चीते खेलें स्याहगोस ।

सब विद्या अपनी साधहीं, सब खेलें इसक के जोस ॥ १९

यहाँ पर बाघ, सिंह, चीते, वन विडाल आदि अपनी-अपनी कलाएँ दिखाते हुए क्रीड़ा करते हैं। ये सभी अपनी विद्यामें निपुण होकर श्रीराजजी द्वारा प्रदान किए गए प्रेमके आवेशमें खेलते हैं।

हर खांचें जातें जुदी जुदी, आप अपनी विद्या खेलत ।

गाए नाचें जिकर करें, हर भातें रूहों रिझावत ॥ १००

यहाँ पर प्रत्येक जातिके पशुपक्षी अपनी-अपनी कुशलताके अनुरूप क्रीड़ा करते हैं तथा श्रीराजजीका गुणगान करते हुए नृत्य तथा गायनके द्वारा ब्रह्मात्माओंको हर प्रकारसे प्रसन्न करते हैं।

हाथी घोड़े बैल बकर, साम्हर चीतल हरन ।

मेढे पाडे पस्वाडे, कै खेलें ऊंट अरन ॥ १०१

यहाँ पर हाथी, घोड़े, बैल, गाय बारहसिंगा, चीता, हरिण, भेड़, पाड़े, भैंस, ऊंट आदि अनेक पशु क्रीड़ा करते हैं।

चालीस हासों की ए कही, करें आप अपना खेल ।

छेडें न हांस मरजादा, हक आगे करें सब केल ॥ १०२

यह चबूतरा चालीस पहल (हांस)का कहा गया है। यहाँ पर सभी पशुपक्षी अपनी-अपनी ढङ्गसे क्रीड़ा करते हैं। अपने पहलकी सीमाका उल्लंघन किए बिना ये सभी धामधनीके आगे क्रीड़ा करते हैं।

दस हांसे बाकी रही, ताके मंदिर झरोखे ।

तित ढिग दो दो मेहेराब, खूबी लेत वन पर ए ॥ १०३

चालीस पहल (हांस)के चबूतरेसे आगे रङ्गभवनकी उत्तर दिशामें दस पहल (हांस) शेष रहते हैं। उनमें मन्दिर तथा झरोखे हैं। साथ ही दो-दो तोरण (मेहराब) भी वनप्रदेशकी ओर शोभायमान हैं।

एक सौ दस छेली हारक के, ए जो मोहोल भूलवनी के ।

एक सौ दस चारों तरफों, ए जो बारे हजार कहे ॥ १०४

रङ्गमहलकी दूसरी भूमिकामें स्थित भूलभुलवनीमें चारों ओर मन्दिरोंकी एक

सौ दस पङ्क्तियाँ हैं. इस प्रकार इन मन्दिरोंकी संख्या बारह हजार होती है.

चबूतरे चेहेबच्चे लग, बीच चालीस मंदर ।

चालीस चेहेबच्चे परे, असी बीच तीस अंदर ॥ १०५

लाल चबूतरासे जलकुण्ड (खड़ोकली) तक चालीस मन्दिर हैं और चालीस मन्दिर जलकुण्डके पूर्वमें हैं. इन अस्सी मन्दिरोंके मध्यमें तीस मन्दिर जलकुण्डके हैं. (इस प्रकार इनकी कुल संख्या एक सौ दस है).

तीस चेहेबच्चे ऊपर, बने जो झरोखे ।

चार चार द्वार इन मंदिरों, मुख क्यों कहूं सोभा ए ॥ १०६

इस जलकुण्ड (खड़ोकली) के ऊपर तीस मन्दिरके तीस झरोखे शोभायमान हैं. इन मन्दिरोंमें चार-चार द्वार हैं. इनकी शोभा अवर्णनीय है.

इत लगते जो मंदिर, हारें भूलवनी ।

केहे केहे मुख कहा केहे, सोभा अतंत घनी ॥ १०७

इनके साथ भूलभुलवनीके मन्दिरकी पङ्क्तियाँ संलग्न हैं. इनकी शोभा अनन्त है, जिसका वर्णन नहीं हो सकता है.

छे हांस ऊपर दस मंदिर, हांसे पोहोंची लग पचास ।

एक झरोखा दो मेहेराब, ए जो फिरती खूबी खास ॥ १०८

(भूलभुलवनीके एक सौ दस मन्दिरोंके अतिरिक्त) छःपहल (हांस) और दस मन्दिर होनेसे लाल चबूतरेकी चालीस पहल सहित कुल पचास पहल होते हैं. प्रत्येक मन्दिरमें चारों ओर एक-एक झरोखा और दो-दो तोरण विशेष सुशोभित हैं.

ए मोहोल फिरते वन ऊपर, ए जो सोभा लेत हैं इत ।

वन झरोखे सोभा तो कहूं, जो होए निमूना कहूं कित ॥ १०९

ये मन्दिर ताड़वनके ऊपर अत्यन्त सुशोभित हैं. इनके झरोखे तथा वनकी शोभा तभी कही जा सकती है जब इनकी उपमा कहीं दिखाई दे.

ए जो घाट अनारका, आए मिल्या दिवाल ।

ए खूबी क्यों कहूं इन जुबां, रूह देखत बदले हाल ॥ ११०

इससे आगे अनारका घाट रङ्गभवनकी दीवार तक पहुँचा हुआ है। इसकी विशेषताका वर्णन इस रसनाके द्वारा कैसे हो सकता है ? इसकी शोभाको देखते हुए आत्माकी स्थिति ही बदल जाती है।

घाट लिबोई हिंडोलों, आए मिल्या इत ए ।

खूबी ताड़ बन की, क्यों कहूं बल जुबां के ॥ १११

उससे आगे निम्बूका घाट है। वह ताड़वनके झूलों तक पहुँचा हुआ है। नश्वर जिह्वाके बलसे ताड़वनकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

केल वन आगूं चल्या, मधुवन मिल्या आए ।

इत सोभा बडे वन की, इन अंग मुख कही न जाए ॥ ११२

उससे आगे केलवन है। यह उत्तरकी ओर मधुवन तक पहुँचा है। यहाँ पर पश्चिमकी ओर बड़ावन शोभायमान है। इस नश्वर देहकी रसनासे इसका वर्णन नहीं हो सकता है।

और हांसे पचास जो, आगूं बडे दरबार ।

सोभित झरोखे मेहेराब, आगूं चौक सोभे वन हार ॥ ११३

रङ्गभवनके सम्मुख पचास पहलों (हाँसों)में मन्दिरों पर झरोखे तथा तोरण (मेहराब) की शोभा है। उनके सम्मुख नीचे चाँदनी चौक तथा वृक्षोंकी पङ्क्तियाँ सुशोभित हैं।

ए जो बडी कही पडसाल, ऊपर बडे द्वार ।

दोऊ तरफों तले दस थंभ, एक एक रंग के चार चार ॥ ११४

रङ्गभवनके द्वारके ऊपर विशाल प्रतिशाला (पड़साल) शोभायमान है। इसके नीचे द्वारके दोनों ओर दस-दस स्तम्भ हैं जिनमें एक-एक रङ्गके चार-चार स्तम्भ हैं।

सामी दस थंभ दिवाल में, करे जोत जोत सों जंग ।

बीस थंभ रंग रंग मुकाबिल, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ ११५

उन दस स्तम्भोंके सम्मुख दीवारके साथ लगे हुए (अक्षी) अन्य दस स्तम्भ हैं। इनकी ज्योति परस्पर स्पर्धा करती है। इस प्रकार आमने-सामनेके बीस स्तम्भोंकी ज्योतिके रङ्ग परस्पर स्पर्धा करते हैं जिनसे विभिन्न रङ्गोंकी तरङ्गें निकलती हैं।

जो थंभ आगूं द्वार ने, अति उज्जल हीरों के ।

दोऊ तरफो जोडे चार थंभ, ए चारों मानिक रंग लगते ॥ ११६

द्वारके सम्मुख हीरेके अति उज्ज्वल चार स्तम्भ हैं। उनके साथ ही एक दूसरेके सम्मुख दोनों ओर माणिक्यके चार स्तम्भ लाल रङ्गके हैं।

तिन जोडे भी चार थंभ, सो पीत रंग पुखराज ।

तिन परे चारों पाच के, दोऊ तरफों रहे बराज ॥ ११७

माणिक्यके इन चार स्तम्भोंके साथ ही पुखराजके पीले रङ्गके चार स्तम्भ हैं। उनके बाद दोनों ओर पाचके हरे रङ्गके चार स्तम्भ शोभायमान हैं।

चारों खूटों थंभ नीलवी, सोभा लेत इत ए ।

पांच थंभों के लगते, हुए बीस दस जोडे ॥ ११८

चारों कोनों पर नीलमणि (नीलवी)के चार स्तम्भ शोभायमान हैं। इस प्रकार यहाँ पर पाँच रङ्गोंके कुल बीस स्तम्भ (दस जोड़ी) सुशोभित हैं।

ए बीस थंभों का बेवरा, इनों क्यों कहूं रोसन नूर ।

कटाव किनारें कांगरियों, क्यों कहूं इन द्वार जहूर ॥ ११९

इस प्रकार इन बीस स्तम्भोंका विवरण है। इनसे निकलते हुए प्रकाशका वर्णन कैसे किया जाए ? इनके किनारों पर चित्रकारीपूर्ण काँगरी है। इस प्रकार इस द्वारकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

चार चार मेहेराब दाएं बाएं, आठ हुए तरफ दोए ।

सोभा आगूं बडे द्वार के, सो इन मुख खूबी क्यों होए ॥ १२०

इसके दोनों ओर चबूतरों पर चार-चार तोरण (मेहराब) शोभायमान हैं। इस प्रकार दोनों ओरके तोरणों (मेहराबों) की संख्या आठ है। सामनेसे देखने पर इस विशाल द्वारकी शोभा अद्वितीय लगती है जिसका वर्णन नहीं हो सकता है।

दोऊ तरफ दोए चबूतरे, ए जो लगते दिवाल ।

तीनों तरफों कठेडा, क्यों देऊं इन मिसाल ॥ १२१

इस द्वारके दोनों ओर दीवारसे लगते हुए दो चबूतरे हैं। उन चबूतरों पर तीनों ओर कटहरा है। इसकी उपमा भी नहीं दी जा सकती है।

कठेडा रंग कंचन, जानों के मीना माहें ।

सोभा लेत थंभ कठेडे, ए केहे न सके जुबाएं ॥ १२२

यह कटहरा कञ्चन रङ्गका है जिसमें सुन्दर चित्रकारी (मीनाकारी) है। यहाँकै स्तम्भों तथा कटहराकी शोभा शब्दोंमें व्यक्त नहीं हो सकती है।

कै रंग जवेर चबूतरों, कै दिवालें रंग नंग ।

ऊपर तलें का नूर मिल, करत अंबर में जंग ॥ १२३

इन चबूतरों पर विभिन्न रङ्गोंके रत्न जड़ायमान हैं। इसी प्रकार दीवारोंमें भी अनेक रत्नोंकी आभा झलकती है। इस प्रकार ऊपर-नीचेके इन रत्नोंकी किरणें आकाशमें परस्पर द्वन्द्व करती हैं।

ए अरस नूर जमाल का, तिन अरस बडा दरबार ।

एह जोत आकास में, मावत नहीं झलकार ॥ १२४

यह परमधाम पूर्णब्रह्म परमात्माका है। इसमें भी यह तो विशाल रङ्गभवन है। इसकी ज्योति झिलमिलाती हुई आकाशमें भी नहीं समाती है।

आठ भोम इन ऊपर, तिन आठों भोम पडसाल ।

जाए पोहोंच्या लग चांदनी, ऊपर गुमटियां लाल ॥ १२५

इस रङ्ग भवनमें द्वारके ऊपर आठों भूमिकाओंमें विशाल प्रतिशालाएँ

(पड़साल) हैं। इसी प्रकारकी शोभा चाँदनी पर्यन्त है। उनके ऊपर लाल गुमटियाँ शोभायमान हैं।

ए सोभा अचरज अब्दुत, जानें अरस अरवाए ।

इन भोम रूह सो जानहीं, जिन मोमिन कलेजें घाए ॥ १२६

रङ्गभवनकी इस अब्दुत शोभाको परमधामकी आत्माएँ ही जान सकती हैं। इस दिव्यभूमिको वे ब्रह्मात्माएँ ही समझ सकती हैं जिनके हृदयमें सद्गुरुके वचनोंकी गहरी चोट लगी हो।

आगूं तलें चौक चांदनी, उतर जाइए सिढियन ।

आगूं दोए चबूतरे चौक के, ऊपर हरा लाल दोऊ बन ॥ १२७

रङ्गभवनके द्वारके सम्मुख नीचे चाँदनी चौकका प्राङ्गण है। सीढ़ियोंसे उतरकर यहाँ पर चले आते हैं। यहाँ पर दोनों ओर दो चबूतरे शोभायमान हैं। उनके ऊपर हरित और रक्तवर्णके दो वृक्ष हैं।

इत सोभा चौक चांदनी, इन मोहोलों मुजरा जानवर ।

इन जुबां खूबी क्यों कहूं, ए जो बन में करें जिकर ॥ १२८

रङ्गभवनके सम्मुख स्थित इस चाँदनी चौककी शोभा अनुपम है। पशुपक्षी यहीं पर आकर श्रीराजजीके दर्शन (मुजरा) करते हैं। इन पशुपक्षियोंकी शोभाका वर्णन कैसे करें जो वनोंमें बोलते हुए भी श्रीराजजीका ही गुणगान करते हैं।

ए जो रस्ता वन का, जोए जमुना लग किनार ।

सात घाट दोए पुल बीच में, कै चौक बने कै हार ॥ १२९

चाँदनी चौकसे आगे अमृतवनसे होता हुआ एक मार्ग यमुना तट तक पहुँचता है। वहाँ पर दोनों पुलोंके मध्यमें सातों घाटोंके वृक्षोंकी अनेक पड़ितियाँ तथा चौक हैं।

द्वार सामी पाट घाट का, सो रस्ता बराबर ।

जोए परे रस्ता नूर लग, आवे साम सामी द्वार नजर ॥ १३०

रङ्गभवनके सामनेसे पाटघाट तक जो मार्ग पहुँचता है उसीके समाने

यमुनाजीके पार भी अक्षरधाम तक वैसा ही मार्ग है. इस प्रकार दोनों धामोंके द्वार आमने-सामने दिखाई देते हैं.

ऊपर पाट चौक चाँदनी, चारों खूटों अति सोभाए ।

नंग जंग करें रंग पांच के, बारे थंभ गृदवाए ॥ १३१

पाटघाटके ऊपर नीलमणिके सोलह स्तम्भों पर चाँदनी है. इसके चारों कोने अत्यन्त सुन्दर हैं. इस चाँदनी पर चारों ओर पाँच रत्नों (हीरा, नीलमणि, पाच, माणिक्य, पुखराज) के बारह स्तम्भ सुशोभित हैं.

चारों तरफों थंभ दो दो, जानो बने चार द्वार ।

मानिक हीरे पाच पोखरे, ए चारों द्वार नंग चार ॥ १३२

इन चारों ओरके स्तम्भोंमें मध्यमें स्थित दो-दो स्तम्भ चारों द्वारोंकी भाँति प्रतीत होते हैं. ये स्तम्भ माणिक्य, हीरा, पाच और पुखराज जैसे रत्नके हैं.

नूर दिस थंभ दोए मानिक, बट दिस हीरा थंभ दोए ।

दोए थंभ पाच दिस अरस के, थंभ पोखरे केल दिस सोए ॥ १३३

इन स्तम्भोंमें अक्षरधामकी ओर दो स्तम्भ माणिक्यके हैं. वटपुलकी दिशामें दो स्तम्भ हीराके, रङ्गभवनकी ओर दो स्तम्भ पाचके एवं केलके पुलकी ओर दो स्तम्भ पुखराजके हैं.

चार थंभ चार खूट के, नीलवी के झलकत ।

ए बारे थंभों का बेवरा, माहें जलसों जंग करत ॥ १३४

चारों कोनों पर चार स्तम्भ नीलमणिके झलकते हुए दिखाई देते हैं. इस प्रकार इन बारह स्तम्भोंका विवरण है. जलमें प्रतिबिम्बित होने पर ये स्तम्भ जलके साथ द्वन्द्व करते हुए-से प्रतीत होते हैं.

सोभा लेत अति कठेडा, ऊपर ढांप चली किनार ।

सोभा जल में झलकत, जल नंग तरंग करे मार ॥ १३५

पाटके घाटकी चाँदनी पर सुन्दर कटहरा शोभायमान है. वृक्षोंकी शाखाओंसे

यमुनाजीका किनार ढँका हुआ है। इन सभीकी शोभा जलमें प्रतिबिम्बित होती है। जलकी तरङ्गें घाटके रत्नमय स्तम्भोंके साथ टकराती हैं।

ए दोऊ द्वार के बीच में, भरी जोत जिमी अंबर ।

और उठत जोत बन की, नूर अरस कहूं क्यों कर ॥ १३६

रङ्गभवन तथा अक्षरधामके दोनों द्वारोंके मध्यमें स्थित पाटके घाटकी प्रकाशमयी किरणें भूमि और आकाशको व्याप्त करती हैं। दोनों ओरके उपवनोंसे भी प्रकाशमयी किरणें निकलती हैं जिनका वर्णन कैसे किया जाए ?

नूर और नूर तजल्ला, आकास जिमी सब नूर ।

देत देखाई सब नूरै, नूर जहूर भरपूर ॥ १३७

अक्षरधाम तथा परमधामकी भूमि एवं आकाश सभी प्रकाशमय हैं। वहाँ पर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश परिपूर्ण दिखाई देता है।

सबद न अब आगे चले, जित पर जले जबरईल ।

इत आवें रूहें अरस की, जो होए अरवा असील ॥ १३८

ऐसे दिव्य परमधामकी शोभाको व्यक्त करनेके लिए नश्वर जगतके ये शब्द आगे ही नहीं बढ़ते हैं जहाँ पर जाते हुए जिब्रील फरिश्ताके पङ्ख भी जलने लगे थे। वहाँ पर केवल ब्रह्मात्माएँ ही आ सकती हैं, जो स्वयं मूल परमधामकी कहलाती हैं।

महामत कहे सुनो मोमिनो, ए अरस नूर जमाल ।

एही अरस अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल ॥ १३९

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, यह अक्षरातीत परब्रह्मका परमधाम है। इसीको सर्वश्रेष्ठ परमधाम कहा गया है। ब्रह्मात्माएँ इसी अद्भुत ब्रह्मधाममें विराजमान हैं।

प्रकरण ३४ चौपाई १९५६

नूर परिकरमा अंदर दस भोम

मंगलाचरन

बडी रूह रूहें नूर में, लें अरस नूर आराम ।

नूर जमाल के नूरमें, नूर मगन आठों जाम ॥ १

श्रीश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके दिव्य तेजसे परिपूर्ण हैं एवं देदीप्यमान परमधाममें सदा आनन्दमें मग्न रहती हैं। श्रीराजजीकी तेजरूपा ये सभी आत्माएँ आठों प्रहर उनके ही दिव्य तेजसे ओत-प्रोत रहती हैं।

तिनका जरा सब नूरमें, नूर जिमी वृख बाग ।

नूर फल फूल पात नूर, रूहें निस दिन नूर सोहाग ॥ २

परमधाममें छोटे-से तृण (तिनका) से लेकर समस्त भूमि, वृक्ष, वन तथा उनके फल, फूल, पत्ते आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं। ब्रह्मात्माएँ भी रात-दिन अपने प्रियतम धनीकी तेजोमय सुहाग प्राप्त करती हैं।

नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग ।

नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूं नूर के रंग ॥ ३

यमुनाजीका सम्पूर्ण तट तथा प्रवाहित होते हुए जलकी लहरें सभी प्रकाशमान हैं। साथ ही तट पर स्थित प्रासादोंसे उठती हुई विविध रङ्गोंकी ज्योतिर्मयी किरणें भी विभिन्न रङ्गोंमें प्रकाशित होती हैं। इनके रङ्ग तथा तेजका वर्णन कैसे करें ?

नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल ।

नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल ॥ ४

कुञ्ज-निकुञ्ज वनकी भूमि, वन, हौजकौसर ताल, उसका जल, आसपासकी भूमि, मध्यमें स्थित द्वीप प्रासाद, तालकी पाल, उस पर स्थित भवन, समीपके वृक्ष आदि सभी तेजोमय हैं।

नूर जल किनार सिढियों, नूर चबूतरा गृदवाए ।

नूर मोहोल मेहेराब फिरते, नूर झाँई जल में बनराए ॥ ५

तालके तट पर शोभायमान जलके अन्दरकी सीढ़ियाँ, चारों ओरका चबूतरा,

चारों ओरके प्रासाद, उनके तोरण (मेहराब) एवं जलमें प्रतिबिम्बित हो रहे वृक्ष आदि सभी दिव्य प्रकाशसे परिपूर्ण हैं।

नूर जरे तिनके का, मैं नूर कह्या दिल धर ।

नूर समूह की क्यों कहूं, रूहें नूर देखें सहूर कर ॥ ६

मैंने अभी तक परमधामके कण तथा तृणमात्रके प्रकाशका हृदयपूर्वक वर्णन किया है। वहाँके प्रकाश समूहका तो वर्णन ही नहीं हो सकता है। ब्रह्मात्माएँ आत्म-दृष्टिसे ही उसका अनुभव करती हैं।

सुपेत जिमी नूर झलके, नूर आकास लग भरपूर ।

नूर सामी आकास का, क्यों कहूं जोर जंग नूर ॥ ७

इस दिव्यभूमिका धवल प्रकाश पूरे आकाश तक व्याप्त होता है। सामनेसे आकाशका प्रकाश भी भूमिकी ओर आता है। इस प्रकार दोनों ओरके स्पर्धा करते हुए प्रकाशका वर्णन कैसे करें ?

नूर बाग हिडोले रोसन, बिना हिसाबें नूर के ।

हक हादी रूहें नूर में, नूर हीचें अरस लगते ॥ ८

समस्त वन, उपवन तथा उनमें लगे हुए झूले आदि सभी प्रकाशयुक्त हैं उनका प्रकाश भी असीम है। श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ रङ्गभवनके समीपके इन प्रकाशमय झूलोंमें बैठकर झूलते हैं।

हक बडी रूहे हीचें नूर में, और रूहें नूर बारे हजार ।

जोत नूर आकास में, नूर भर्यो करे झलकार ॥ ९

इन प्रकाशमय झूलोंमें श्रीराजजी श्यामाजी तथा बारह हजार ब्रह्मात्माएँ झूलते हैं। इनका देदीप्यमान प्रकाश आकाशको भी झँकृत करता है।

खोल आंखें रूह नूर की, क्यों नूर न देखे बेर बेर ।

क्यों न आवे बीच नूर के, ज्यों नूर लेवे तोहे घेर ॥ १०

ब्रह्मात्माएँ अपनी प्रकाशमयी दृष्टि खोलकर इस दिव्य प्रकाशको बारंबार क्यों नहीं देखती हैं तथा इससे ओत-प्रोत क्यों नहीं हो रही है, जिससे यह सारा प्रकाश उनके चारों ओर व्याप्त हो जाए।

ए रोसन करत कौन नूर की, नूर केहेत आगूं किन ।

केहेत है नूर किनका, नूर रूह केहे चली मोमिन ॥ ११

हे सुन्दरसाथजी ! इस दिव्य प्रकाशको कौन प्रकाशित कर रहा है, इस प्रकाशके विषयमें किनके समक्ष कहा जा रहा है, किसके प्रकाशके सन्दर्भमें कहा जा रहा है ? जबकि स्वयं प्रकाशमयी आत्मा ही ब्रह्मात्माओंको कह रही है.

देखो मोहोलातें नूर की, अंदर सब पूर नूर ।

कहां लग कहूं माहें नूर की, नूर के नूर जहूर ॥ १२

परमधामकी इन सभी तेजोमय प्रासादोंको देखो. उनके अन्दर भी सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश भरपूर है इस असीम प्रकाशके विषयमें क्या कहा जाए. सर्वत्र इसका अलौकिक तेज ही प्रकाशित हो रहा है.

सब चीजें इत नूर की, बिना नूर कछुए नाहिं ।

नूर माहें अंदर बाहेर, सब नूर नूर के माहिं ॥ १३

यहाँकी सभी सामग्रियाँ प्रकाशमय हैं. प्रकाशके अतिरिक्त यहाँ पर कुछ भी नहीं है. यहाँ पर भीतर-बाहर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश है. इस प्रकार प्रकाशके अन्दर प्रकाश समाहित हुआ है.

नूर नजरों नूर श्रवनों, नूर को नूर विचार ।

नूर सेज्या सुख नूर अंग, नूर रोसन नूर सिनगार ॥ १४

यहाँके दृश्यमान सभी दृश्य प्रकाशमय हैं. जो कुछ सुनाई देता है वह भी प्रकाशमय है और जिसका चिन्तन होता है वह भी प्रकाशमय है. यहाँकी शय्या भी प्रकाशमय है तथा यहाँके स्वरूप उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग, उनका शृङ्गार तथा उनको प्राप्त होनेवाला सुख आदि सभी प्रकाशमय हैं.

नूर खाना नूर पीवना, नूर मुख मजकूर ।

इसक अंग सब नूर के, सब नूर पूर नूर ॥ १५

यहाँका आहार, पेय आदि सभी प्रकाश ही प्रकाश है. ब्रह्मात्माएँ अपनी

वार्तामें भी सर्वत्र प्रकाशका ही उल्लेख करती हैं. उनके प्रेममय अङ्ग-प्रत्यङ्ग भी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

गुण अंग सब नूरके, नूर इन्दी नूर पख ।

रीत रसम सब नूर की, प्रीत प्रेम नूर लख ॥ १६

इन ब्रह्मात्माओंके गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि सभी तेजोमय हैं. उनका व्यवहार, अन्तःकरण, रीति, प्रेम, प्रीति, दृष्टि आदि सभी प्रकाशमय हैं.

आसमान जिमी तारे नूर के, नूर चांद और सूर ।

रंग रूत नूर बाए बादल, गाजे बीज नूर भरपूर ॥ १७

ब्रह्मधाममें आकाश, भूमि, तारागण, चन्द्रमा, सूर्य आदि सभी नक्षत्र प्रकाश युक्त हैं. वहाँकी ऋतुएँ, उनका रङ्ग, वायुका प्रवाह, मेघोंकी गर्जना, बिजलीकी चमक आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

मोहोल मंदिर सब नूर में, झाँखन झरोखे नूर ।

द्वार दिवालें नूर सब, सब नूर हजूर या दूर ॥ १८

परमधामके सभी प्रासाद, मन्दिर, झाँकनेके लिए बने हुए झरोखे, द्वार, दीवारें आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं, भला वे श्रीराजजीके निकट हों या दूर हों.

थंभ दिवालें नूर की, नूर के झरोखे ।

नूर सरूप माहें झाँकत, नूर सब नूर देखें ए ॥ १९

वहाँके स्तम्भ, दीवारें, झरोखें सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं. प्रकाशपूर्ण स्वरूप ही इन झरोखेंसे झाँकते हैं. इस प्रकार यहाँ पर द्रष्टा तथा दृश्य सभी तेजोमय स्वरूप हैं.

मोहोल मंदिर सब नूर के, नूर मेहेराब खिडकियां द्वार ।

नूर सीढियां सोभा नूर की, बीच गृदवाए नूर झलकार ॥ २०

परमधामके प्रासाद, मन्दिर तथा उनके तोरण, खिड़कियाँ, द्वार आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं. इसी प्रकार सीढियाँ एवं उनकी शोभा भी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं. वहाँ पर चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश झलकता है.

कहा कहूं नूर नवे भोम का, नूर क्यों कहूं नूर बिसात ।

नूर वस्तर कहे न जावहीं, तो क्यों कहूं नूर हक जात ॥ २१

रङ्गमहलकी नवों भूमिकाओं तथा वहाँकी यावत् सामग्रीके प्रकाशके विषयमें क्या कहा जाए ? जब ब्रह्मात्माओंके वस्त्र एवं आभूषणके प्रकाशका भी वर्णन नहीं हो सकता तो स्वयं ब्रह्मात्माओंके तेजका वर्णन कैसे हो सकेगा ?

रहें नूर सरूप पानी मिने, तो भीजें ना नूर तन ।

नूर तन रहें जो आग में, तो भी नूर न जलें अग्नि ॥ २२

यदि ये तेजोमयी ब्रह्मात्माएँ जलमें भी रहेंगी तो इनका तेजोमय शरीर जलसे भीगता नहीं है। इसी प्रकार यदि इनके तन अग्निमें भी रहें तो भी अग्नि उनको जला नहीं सकती।

कहे हक नूर बैठ नासूत में, करें नूर लाहूत के काम ।

नूर रूहें जिमी दुख में, लेवें नूर लाहूती आराम ॥ २३

पूर्णब्रह्म परमात्माका दिव्य तेज इस नश्वर जगतमें आकर भी परमधामके दिव्य (तेजोमय) कार्योको ही पूर्ण करता है। इस प्रकार ये तेजोमयी ब्रह्मात्माएँ इस दुःखपूर्ण जगतमें भी दिव्य परमधामके सुखोंका ही अनुभव करती हैं।

दिल मोमिन अरस नूर में, नूर इसक आग जलाए ।

एक नूर वाहेदत बिना, और नूर आग कहूं न बचाए ॥ २४

ब्रह्मात्माओंका हृदय ही तेजोमय परमधाम है। उनके हृदयमें भी प्रेमरूपी अग्नि प्रज्ज्वलित होती है। परमधामके अद्वैत (एकात्म) भावके बिना इस तेजोमय अग्निसे अखिल ब्रह्माण्डमें कोई भी नहीं बच सकता है।

कै गलियां नूर पौरियां, कै नूर चौक चौबट ।

नूर बसे जो इन दिलों, तो नूर खुल जावे पट ॥ २५

परमधामकी सभी वीथिकाएँ (गलियाँ), तोरण (मेहराब), चौक, चौराहें, आदि सभी प्रकाशयुक्त हैं। यदि यह दिव्य प्रकाश हृदयकी गहराईमें उतर जाए तो अन्तरके पट तत्काल खुल जाएंगे।

नूर सीढियां नूर चबूतरे, नूर के थंभ दिवाल ।

बीच खाली सोभा नूर की, ए नूर कहूं किन हाल ॥ २६

प्रासादोंकी सीढियाँ, चबूतरे, स्तम्भ, दीवारें आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं। यदि इन स्तम्भोंके मध्य कोई स्थान रिक्त भी है तो वह भी प्रकाशसे ओत-प्रोत है इसका वर्णन कहाँ तक किया जाए ?

बाजे बासन सब नूर के, पलंग चौकी सब नूर ।

नूर बिना जरा नहीं, नूर नूर में नूर जहूर ॥ २७

यहाँके वाद्ययन्त्र, वर्तन, पलङ्ग, चौकी आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं। प्रकाशसे अतिरिक्त परमधाममें अन्य कुछ भी नहीं है। वहाँ पर सर्वत्र प्रकाशका ही विस्तार है।

दसों दिसा सब नूर की, नूर का आकास ।

इन जुबां नूर बिलंद की, क्यों कहूं नूर प्रकास ॥ २८

परमधामकी दसों दिशाओंमें प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है, सम्पूर्ण आकाश भी प्रकाशसे ही आच्छादित है। परमधामके इस दिव्य प्रकाशका वर्णन नश्वर रसनाके द्वारा नहीं हो सकता है।

बाग जंगल राह नूर के, पसु पंखी नूर पूर ।

ख्वाब जिमी में नूर अरस की, नूर जुबां कहा करे मजकूर ॥ २९

परमधामके वन, उपवन, मार्ग, और पशुपक्षी आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं। इस स्वप्नवत् जगतमें बैठकर दिव्यधामके प्रकाशके सम्बन्धमें यह जिह्वा किस प्रकार वर्णन कर सकती है ?

होत नूर थें दूजा बोलते, दूजा नूर बिना कछू नाहिं ।

एक वाहेदत नूर है, सब हक नूर के माहिं ॥ ३०

परमधाममें प्रकाशके अतिरिक्त यदि कुछ होता तो उसके विषयमें कुछ कहा जा सकता। किन्तु वहाँ इसके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं, मात्र प्रकाशका ही अद्वैत स्वरूप है। इस प्रकार परमधामकी यावत् सामग्री श्रीराजजीके प्रकाशसे ओत-प्रोत हैं।

नूर कहे महामत रूहें, देखो नजरों नूर इलम ।

वाहेदत आप नूर होए के, पकडो नूर जमाल कदम ॥ ३१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीके प्रकाशस्वरूप इस तारतम ज्ञानको देखो एवं स्वयं भी तेजोमय अद्वैत स्वरूपमें जागृत होकर धामधनीके चरण कमलोंको हृदयमें धारण करो.

प्रकरण ३५ चौपाई १९८७

नूर परिकरमा अंदर तांई

नूर तरफ पाट घाट नूर का, बारे थंभ नूरके ।

ऊपर चांदनी नूर रोसन, नूर क्यों कहूं किनार बन ए ॥ १

अक्षरधामकी ओर भी पाटका घाट है. वहाँ पर भी तेजोमय बारह स्तम्भ हैं. उनके ऊपर देदीप्यमान चाँदनी सुशोभित है. यमुना तट पर स्थित वनके प्रकाशका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

नूर घाट जांबू बन का, और नूर घाट नारंग ।

बट घाट छत्री नूर हिंडोले, पुल सोभे मोहोल नूर रंग ॥ २

इसके समीप ही जामुन तथा नारङ्गीके तेजोमय घाट हैं. वटके घाट पर वटवृक्षोंकी शाखाएँ छत्रीकी भाँति सुशोभित हैं. उन पर प्रकाशमय झूले लगे हुए हैं. यमुनाजीके ऊपर दोनों पुलों पर प्रकाशमय प्रासाद सुशोभित हैं.

नूर किनारें रेती नूर में, मोहोल चबूतरे नूर किनार ।

ताल हिंडोले बीच नूर बन, नूर सोभा निकुंज अपार ॥ ३

यमुनाजीके तट पर बिछी हुई रेती, दोनों तट पर शोभायमान प्रासाद, चूबतरे, हौजकौसर ताल, वृक्षों पर शोभायमान झूले, कुञ्ज-निकुञ्जवन आदि सभीकी शोभा प्रकाशमय है.

नूर नेहरें मोहोलों तलें, नूर ढांपे चले अनेक ।

नूर चले नूर चक्राव ज्यों, नूर सुख पाइए देख विवेक ॥ ४

प्रासादोंके नीचेसे प्रवाहित होनेवाली रत्नमयी (जवेरोंकी) नहरें भी प्रकाशमयी हैं. वे विभिन्न स्थानोंमें ढँकी हुई चलती हैं तो कतिपय स्थानोंमें

खुली चलती हैं। साथ ही कहीं पर चक्राकार रूपमें प्रवाहित होती हैं। इनकी अद्वितीय शोभाको देखकर बड़ा आनन्द होता है।

मोहोल मानिक पहाड नूर के, कै नेहरें चादरें नूर ताल ।

कै मोहोल हिडोले नूर के, ए नूर देखें बदले हाल ॥ ५

माणिक पर्वत, उस पर स्थित प्रासाद सभी प्रकाशयुक्त हैं। वहाँ पर प्रवाहित हो रही नहरें, जलधाराएँ, ताल, विभिन्न प्रासाद, उन पर लगे हुए झूले सभी प्रकाशमय हैं। इनकी दिव्य शोभाको देखकर मनःस्थिति बदल जाती है।

कहा कहूं हिडोले नूर के, नूर रूहें झूले बारे हजार ।

इन विध नूर हिडोले, नाहीन नूर सुमार ॥ ६

माणिक पर्वतके प्रासादोंके असंख्य तेजोमय झूलोंमें प्रत्येकमें बारह हजार ब्रह्मात्माएँ एक साथ झूलती हैं। इस प्रकार इन विभिन्न झूलोंके प्रकाशका कोई पारावार नहीं है।

बन नूर नेहरें ढांपी चली, कै नेहरें वन नूर विस्तार ।

कै नूर नेहरें मिली सागरों, कै नूर नेहरे आवें वार ॥ ७

यहाँ पर वन, उपवनमें अनेक नहरें ढँकी हुई प्रवाहित होती हैं। उन नहरोंका प्रकाश पूरे वनमें आच्छादित होता है। ये प्रकाशमयी नहरें आगे बहती हुई सागरोंमें जाकर समाहित होती हैं।

कै मोहोलातें इत नूर की, कै टापू नूर मोहोलात ।

ए निपट बडे मोहोल नूर के, मोहोल नूर आकास में न समात ॥ ८

यहाँ पर अनेक प्रासाद प्रकाशमय हैं। सागरोंके द्वीप पर स्थित प्रासाद भी तेजोमय हैं। इन प्रासादोंका प्रकाश इतना देदीप्यमान है जो आकाशमें भी नहीं समाता नहीं है।

नूर परिकरमा दीजिए, फिरत जाइए नूर बन में ।

बाग परे नूर अनं वन, आगूं वन बिना नूर जिमी ए ॥ ९

ऐसे देदीप्यमान परमधामकी परिक्रमा करते हुए नूरबागमें चलें। इसके आगे तेजोमय अन्नवन है। उससे भी आगे वृक्ष रहित प्रकाशमयी भूमि है।

दूब दुलीचे नूर में, नूर लग्या जाए आसमान ।

दूर लग नूर या विध, नूर खेलें इत चौगान ॥ १०

इस प्रकाशमयी भूमि पर कालीनकी भाँति बिछी हुई दूब (दूब-दुलीचा) भी प्रकाशमयी है जिसका प्रकाश ऊँचे आकाशतक पहुँचता है। इस प्रकार दूर-दूर तककी भूमि (पश्चिमका चौगान) में फैले हुए प्रकाशमें ब्रह्मात्माएँ क्रीड़ा करती हैं।

आगू बड़ा बन नूर का, आए नूर मधुवन ।

कै हिडोले नूर के, हुआ आसमान नूर रोसन ॥ ११

इस मैदानसे आगे स्थित विशाल बड़ा वन भी प्रकाशमय है। जो मधुवन तक विस्तृत है। यहाँ पर विभिन्न प्रकारके प्रकाशमय झूले लगे हुए हैं जिनका प्रकाश आकाश तक व्याप्त होता है।

नूर पाँच पेड़ पुखराज के, दो नूर सीढ़ी तीसरा ताल ।

ए आठों पहाड तलें नूर में, ऊपर नूर मोहोल ना मिसाल ॥ १२

पुखराज पर्वत पर स्थित विशाल पाँच वृक्ष भी प्रकाशमय हैं। उनके उत्तर और पश्चिमकी ओर प्रकाशमयी सीढ़ियाँ हैं, साथ ही वहाँका ताल भी प्रकाशमय है। इस प्रकार पुखराज पर्वतके ये आठों चिह्न प्रकाशमय हैं। उनके ऊपर भी प्रकाशमय प्रासाद हैं जिनकी कोई उपमा नहीं है।

हजार गुरज नूर चांदनी, चांदनी नूर आसमान ।

ता पर मोहोल नूर आकासी, ए नूर आकास मोहोल सुभान ॥ १३

पुखराज पर्वत पर प्रकाशमयी चाँदनीमें एक हजार गुर्ज हैं। वहाँ पर आकाशीमें प्रकाश युक्त प्रासाद (आकाशी महल) हैं। धामधनीके इन प्रासादोंका तेज आकाश तक व्याप्त होता है।

इत बड़े जानवर नूर में, नूर खेलत रूहें खुसाल ।

इत निपट बड़ा खेल नूर का, हंसें रूहे हादी नूर जमाल ॥ १४

इन प्रासादोंके दिव्य प्रकाशमें तेजोमय पशुपक्षी खेलते हैं। जिनकी क्रीड़ाको देखकर ब्रह्मात्माएँ प्रसन्न होती हैं। इनकी प्रकाशमयी क्रीड़ाको देखकर

श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ प्रसन्न होते हैं।

चारों तरफ मोहोल नूर ताल के, नूर जल चादरों गिरत ।

सो परत बीच नूर कुंड के, रूहें देख देख नूर हंसत ॥ १५

पुखराज पर्वतमें पुखराजी तालके चारों ओर प्रकाशमय प्रासाद शोभायमान हैं। उनकी चाँदनीसे चार जल धाराओंके द्वारा जल पुखराजी तालमें गिरता है। वहाँसे सोलह धाराओंमें विभक्त होकर यह जल अधबीचके कुण्डमें गिरता है। इस दृश्यको देखकर ब्रह्मात्माएँ आनन्दित होती हैं।

तलें बंगले नेहेरें नूर की, चले चक्राव नूर इत ।

चारों तरफ बडी नूर पौरी, नूर सोभा न देखी कित ॥ १६

पुखराजजी तालके नीचे स्थित प्रासादों (बंगलों) में चारों ओर प्रकाशयुक्त नेहेरें चक्राकार होकर प्रवाहित होती हैं, जिनसे चारों ओर प्रकाशपूर्ण तोरण (कमान) दिखाई देते हैं। ऐसी शोभा अन्यत्र कहीं भी दिखाई नहीं देती है।

इत बंगले बगीचे नूर के, नूर कारंजें कै उछलत ।

खूब खुसाली नूर भरी, नूर हंसें खेलें रमत ॥ १७

यहाँके प्रासाद, वन-उपवन, तथा उनमें शोभायमान फुहारोंसे जलकी धाराएँ ऊँचे आकाश तक उछलती हैं। यहाँ पर ब्रह्मात्माओंकी तेजोमयी परिचारिकाएँ (खूबखुशालियाँ) हँसती हुई क्रीड़ा करती हैं।

नूर बाहेर नेहेरें आई कुंड में, आगूं नूर चबूतरे ।

जोए ढांपी चली मोहोल नूर के, नेहेर खुली नूर किनारें ॥ १८

इन नहरोंका प्रकाशयुक्त जल ढँके हुए चबूतरेसे होकर बाहर मूलकुण्डमें आता है जहाँसे ढँकी हुई यमुनाजी प्रवाहित होती है। यमुनाजीके तट पर प्रकाशमय प्रासाद (देहुरियाँ) हैं। आगे जाकर यमुनाजी नहरकी भाँति खुले रूपमें प्रवाहित होती हैं। उनके दोनों तट तेजोमय हैं।

दोऊ ढांपे किनारे नूर के, जोए फिरी नूर तरफ ताल ।

नूर एक मोहोल एक चबूतरा, ए नूर देख होइए खुसाल ॥ १९

इन दोनों प्रकाशमय किनारोंसे ढँकी हुई यमुनाजी कुछ आगे प्रवाहित होकर

हौजकौसर तालकी ओर प्रवाहित होनेके लिए मुड़ जाती हैं। मोड़ पर दोनों तटोंमें क्रमशः प्रकाशमय एक प्रासाद एवं एक चबूतरा सुशोभित हैं। इनके प्रकाशको देखकर मन आनन्दित होता है।

बडा वन मोहोल नूर का, ए नूर अति सोभित ।

जोए नूर आई पुल तलें, सो क्यों कही जाए नूर सिफत ॥ २०

यमुना तट पर स्थित विशाल वन प्रदेशमें अनेक प्रकाशमय प्रासाद सुशोभित हैं। इनकी शोभा अद्वितीय है। जब यह प्रकाशमयी यमुनाजी केलके पुलके नीचे तक पहुँचती है तो उसके प्रकाशकी दिव्य शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती।

ए मोहोल नूर जमाल के, दोए नूर पुल जोए ऊपर ।

नूर नेहेरें दस घडनाले, ए खूबी नूर जुबां कहे क्यों कर ॥ २१

यमुनाजीके ऊपर स्थित दोनों पुलों पर धामधनीके प्रकाशमय प्रासाद शोभायमान हैं। इन दोनों पुलोंके मध्यमें यमुनाजी दस जलधाराओंके द्वारा नहरोंके रूपमें प्रवाहित होती हैं। यह जिह्वा इस दिव्य शोभाका वर्णन नहीं कर सकती है।

केल घाट नूर कतरे, चौकी सोभित नूर किनार ।

पोहोंची नूर पुल बराबर, आगूं लिबोई नूर अनार ॥ २२

केलके घाट पर केलेके प्रकाशयुक्त गुच्छे पङ्क्तिबद्ध सुशोभित हैं। यमुनाजीके तट पर अनेक चौकियाँ हैं। यह वन प्रकाशमय (केलके) पुल तक पहुँचा है। इससे आगे निम्बू तथा अनारके वन हैं।

ए नूर चौकी भोम चार की, नूर पुल से आए तीन घाट ।

अति सोभा आगूं छत्री नूर की, ऊपर जल नूर पाट ॥ २३

यहाँ पर पाँच-पाँच भूमिका वाले वृक्षोंकी प्रकाशमयी चार चौकियाँ हैं। इस प्रकाशयुक्त केल घाटके आगे अन्य तीन घाट हैं। यहाँके वृक्ष छत्रीकी भाँति सुशोभित हैं। उनसे आगे यमुनाजीके जलके ऊपर पाटका घाट सुशोभित है।

नूर मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर द्वार से आए फेर द्वार ।

चारों खूटों नूर थंभ नीलवी, नूर पांच रंग बारे सुमार ॥ २४

पाटके घाट पर माणिक्य, हीरा, पाच और पुखराजके प्रकाशमय स्तम्भोंके चार द्वार सुशोभित हैं। चारों कोनोंमें नीलमणिके स्तम्भ प्रकाशित हैं। इस प्रकार पाँच रङ्गोंमें कुल बारह स्तम्भ प्रकाशित होते हैं।

नूर नेहेरें तीन तलें चलें, नूर पाट एता जल पर ।

ठौर खेलन नूर जमाल के, ए नूर रूहें देखें दिल धर ॥ २५

इस घाटके नीचे तीन जलद्वारोंसे यमुनाजीकी धाराएँ नहरोंकी भाँति प्रवाहित होती हैं। यहाँ पर श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके लिए बैठने तथा क्रीड़ाके लिए सुन्दर स्थान हैं। ब्रह्मात्माएँ इस दिव्य शोभाका हृदयपूर्वक दर्शन करती हैं।

दोऊ पुल नूर सात घाट बीच में, रूहें देखें नूर रोसन ।

हक जिकर नूर पंखियों, होत नूर में रात दिन ॥ २६

इन दोनों प्रकाशमय पुलोंके मध्यमें सातघाट सुशोभित हैं। ब्रह्मात्माएँ इनके तेजोमय दृश्यको आनन्दके साथ देखती हैं। यहाँ पर प्रकाशमय पशुपक्षी रात-दिन धामधनीका गुणगान करते हैं।

नूर भोम दूजी बैठक, पसू पंखियों एह नूर ठौर ।

कै जिनसें नूर जिकर, बिना हक न बोले नूर और ॥ २७

यहाँके वृक्षोंकी प्रकाशमयी द्वितीय भूमिकामें पशुपक्षी रहते हैं। ये पशुपक्षी विभिन्न प्रकारसे धामधनीका गुणगान करते हैं। धामधनीके यशोगानके अतिरिक्त इनका अन्य कोई कार्य नहीं है।

आगूं द्वार नूर चांदनी, रेती रोसन नूर आसमान ।

नूर जंग होत सबों बीचों, कोई सके न नूर काहूं भान ॥ २८

रङ्गभवनके द्वारके सम्मुख तेजोमय चाँदनी चौक है। उसकी रेतीका प्रकाश आकाश तक व्याप्त होता है। यहाँ पर भूमि तथा आकाशके प्रकाशकी स्पर्धा होती है। ये किरणें एक दूसरेको निस्तेज नहीं कर पातीं।

आगूं दोए नूर चबूतरे, दोऊ पर नूर दरखत ।

लाल हरे रंग नूर के, ए नूर जाने हक सिफत ॥ २९

रङ्गभवनके द्वारके सम्मुख इस चौक पर दो प्रकाशमय चबूतरे शोभायमान हैं। उन पर हरा तथा लाल दो प्रकाशयुक्त वृक्ष हैं। इनके दिव्य प्रकाशको स्वयं धामधनी ही जानते हैं।

नूर आगूं दरबार के, नूर लग चांदनी झलकार ।

हांस पचासों नूर पूरन, नूर जोत न कहूं सुमार ॥ ३०

रङ्गभवनके सम्मुख स्थित चाँदनी चौकमें सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है। इस प्रकार पचास पहल तक विस्तृत इस चौकमें प्रकाशका कोई पारावार नहीं है।

नूर सामी नूर द्वार का, होत नूर नूर सों जंग ।

खडियां आगूं नूर चांदनी, नूर देखें अरस नूर अंग ॥ ३१

रङ्गभवनके द्वार तथा उसके सम्मुख शोभायमान अक्षरधामके द्वारके तेजोमय प्रकाश परस्पर स्पर्धा करते हैं। तेजोमयी ब्रह्मात्माएँ रङ्गभवनके सम्मुख चाँदनी चौकमें खड़ी होकर इस द्वन्द्वको देखती हैं।

नूर हीरे मानिक पोखरे, पाच नीलवी नूर थंभ ।

नूर पांच रंग दोऊ तरफों, दस दिवालें नूर अचंभ ॥ ३२

रङ्गभवनके द्वारके दोनों ओर स्थित चबूतरों पर हीरा, माणिक्य, पुखराज, पाच तथा नीलमणिके प्रकाशमय स्तम्भ हैं। दोनों ओर स्थित पाँच रङ्गोंके इन स्तम्भोंमें दस स्थम्भ दीवारके साथ हैं।

अंदर आओ नूर द्वार के, फेर देख नूर अरस ।

नूर मंदिर चौक चबूतरे, नूर एक पैं और सरस ॥ ३३

अब इन प्रकाशमय द्वारोंसे अन्दर प्रवेशकर रङ्गमहलके भीतरी दृश्यका दर्शन करते हैं। यहाँ पर स्थित प्रकाशमय मन्दिर, चौक, चबूतरे आदि एक दूसरेसे बढ़कर सुन्दर हैं।

नूरै के मोहोल मंदिर, नूर दिवालें द्वार ।

नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बडो विस्तार ॥ ३४

यहाँके प्रासाद, मन्दिर, दीवार, द्वार आदि सभी प्रकाशमय हैं। उन पर अङ्कित चित्रकारी भी प्रकाशयुक्त है। इस प्रकार प्रकाशके इस अनन्त विस्तारकी शोभा कैसे व्यक्त की जाए ?

चले नूर द्वार से नूर ले, दे नूर तवाफ गृदवाए ।

देख मेहेराब नूर झरोखे, नूर बाग देख फेर आए ॥ ३५

रङ्गभवनके प्रकाशमय द्वारसे होकर चारों ओर (बाह्य) परिक्रमा करते हैं एवं यहाँ पर स्थित तोरण (मेहेराब) खिड़कियोंका प्रकाश एवं उपवनोंका दृश्य देखते हुए पुनः लौट आते हैं।

नूर चेहेबच्चे नूर चबूतरे, ए नूर फेर फेर देख ।

फेर नूर चौक द्वारने, नूरै नूर विसेख ॥ ३६

यहाँ पर तेजोमय जलकुण्ड तथा चबूतरे हैं। इनकी शोभाको बार-बार देखते हुए पुनः द्वारके अन्दर चौकके प्रकाशको विशेष रूपसे देखें।

दो दो मंदिर हारें नूर की, बीच दो दो नूर थंभ हार ।

यों नवे भोम नूर मंदिर, नूर झरोखे किनार ॥ ३७

यहाँ पर प्रकाशमय मन्दिरोंकी दो-दो पङ्क्तियाँ दोनों ओर शोभायमान हैं। उनके मध्यमें प्रकाशयुक्त स्तम्भोंकी दो पङ्क्तियाँ सुशोभित हैं। इस प्रकार नवों भूमिकाओं तक इसी प्रकारके प्रकाशयुक्त मन्दिर तथा स्तम्भ एवं उनके किनारे पर झरोखे आदि दिखाई देते हैं।

यों सब भोमें नूर गृदवाए, थंभ गलियां नूर मंदर ।

मेहेराब झरोखे नूर के, देख नूर लगता इनों अंदर ॥ ३८

इस प्रकार नवों भूमिकाओंमें चारों ओर तेजोमय मन्दिर, गलियाँ तथा स्तम्भ सुशोभित हैं। इन मन्दिरोंके तोरण (कमान) तथा खिड़कियाँ सभी प्रकाशयुक्त हैं इनके अन्दर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है।

इन अंदर नूर हवेलियां, नूर मोहोल फिरते लग तिन ।

साम सामी मोहोल नूर के, दो दो चौक आगूं नूर इन ॥ ३९

इस प्रकार रङ्गभवनके अन्दर प्रकाशमय प्रासाद तथा मन्दिर आदि चारों ओर सुशोभित हैं। इन पङ्क्तिबद्ध तेजोमय प्रासादों (हवेलियों) के द्वारोंके सम्मुख प्रकाशमय दो-दो चबूतरे सुशोभित हैं।

इन अंदर हवेलियां नूर की, नूर हवेलियों दोए हार ।

नूर चौक बीच तिन हारों, नूर चौक आगूं दोए द्वार ॥ ४०

इन प्रासादोंके अन्दर भी प्रकाशमय प्रासादोंकी पङ्क्तियाँ सुशोभित हैं। उनके मध्यमें स्तम्भोंकी दो पङ्क्तियाँ हैं। इन पङ्क्तियोंके मध्यमें भी प्रकाशमय चौक सुशोभित हैं। उन चौकोंके आमने-सामने प्रासादोंके द्वार सुशोभित हैं।

ए जो फिरती नूर हवेलियां, नूर लग लग बराबर ।

आगूं नूर द्वार चबूतरे, नूर सिफत अति सुंदर ॥ ४१

ये चारों ओरके प्रकाशयुक्त प्रासाद (हवेलियाँ) एक दूसरेसे जुड़े हुए हैं। इनके द्वारोंके आगे दो-दो प्रकाशयुक्त चबूतरे हैं। उनका प्रकाश तथा सौन्दर्यका वर्णन नहीं हो सकता है।

आये फिरते नूर द्वार लग, सोभा फिरती नूर लेत ।

नूर द्वार सामी नूर द्वारने, सामी हवेली नूर सोभा देत ॥ ४२

इस प्रकार ये सभी प्रासाद चारों ओरसे होकर मुख्यद्वार तक पहुँचे हैं। इन प्रासादोंमें एक पङ्क्तिके प्रकाशमय द्वारके सामनेके दूसरी पङ्क्तिके प्रासादोंके प्रकाशमय द्वार अत्यन्त सुशोभित होते हैं।

द्वार द्वार नूर मुकाबिल, नूर चबूतरों चबूतरे ।

नूर मोहोलों मोहोल मुकाबिल, दोऊ तरफों सोभा नूर ए ॥ ४३

इस प्रकार इन प्रासादोंमें तेजोमय द्वार तथा तेजोमय चबूतरे एक दूसरेसे सम्मुख सुशोभित हैं। ये तेजोमय प्रासाद एक दूसरेके सम्मुख सुशोभित होनेसे इनके प्रकाशकी शोभा दोनों ओर सुन्दर दिखाई देती है।

दोऊ मोहोलों बीच नूर गली, नूर चबूतरे चौक चार ।

नूर गली आई बीच में, दोऊ साम सामी नूर द्वार ॥ ४४

दोनों प्रासादोंके मध्यमें प्रकाशमयी वीथिका (गलियाँ), चौक एवं चार चबूतरे सुशोभित हैं। दोनों ओरके चबूतरोंके मध्यमें एक वीथिका है। इस प्रकार दोनों ओरके द्वार प्रकाशमय दिखाई देते हैं।

जेते फिरते नूर द्वारने, आगूं नूर चबूतरे दोए दोए ।

नूर चौक चारों चबूतरों, दोऊ नूर द्वार बीच सोए ॥ ४५

इन प्रासादोंकी चारों दिशाओंके चारों द्वारोंके दोनों ओर दो चबूतरे हैं। इसी प्रकारकी रचना दूसरी पङ्क्तिके प्रासादोंमें भी है। इस प्रकार एक-दूसरेके सम्मुख द्वारोंके दोनों ओरके चारों चबूतरे प्रकाशसे परिपूर्ण हैं।

नूर चौक ऐसे ही गृदवाए, नूर फिरते आए सब में ।

बीच फिरती आई नूर गली, नूर गली सोभा पौरी ए ॥ ४६

इसी प्रकार सभी प्रासादों (हवेलियों) के चारों ओर प्रकाशयुक्त चौक हैं। दो चौकोंके मध्यमें वीथिका है और उनके ऊपर तेजोमय तोरण (मेहराब) की शोभा दिखाई देती है।

एक पौरी चौरे नूर से, आइए और चौरे नूर किनार ।

दोऊ चौरे नूर गली पर, नूर बनी पौरी चार ॥ ४७

इन प्रासादोंके चतुर्मुख पर चारों दिशाओंके दो स्तम्भोंकी पङ्क्तियोंके मध्य चार स्तम्भों पर चार तेजोमय तोरण (मेहराब) सुशोभित हैं। इसी प्रकारकी स्थिति दूसरे चतुर्मुख पर भी है।

चार थंभ नूर हर चौरे, चार पौरी आगूं नूर द्वार ।

नूर पौरी चार हर चौरे, ए नूर सोभा ना किन सुमार ॥ ४८

इन प्रासादोंके चारों द्वारोंके ऊपर चार प्रकाशयुक्त स्तम्भ हैं। दोनों ओरके चबूतरों पर भी चार-चार तोरण (मेहराब) हैं। इनके प्रकाशकी शोभाका कोई पारावार नहीं है।

हर दोऊ द्वार आगूं नूर चौक, नूर चौकों चार चबूतर ।

हर चौकों नूर पौरी चौबीस, यों चौक बने नूर भर ॥ ४९

प्रत्येक प्रासादके द्वारके आमने-सामने प्रकाशयुक्त दो चौक हैं। उनके साथ लगे हुए दो-दो (चार) चबूतरे हैं। प्रत्येक चौकमें चौबीस तोरण हैं। इस प्रकार ये सभी चौक प्रकाशसे परिपूर्ण हैं।

दो हार नूर थंभन की, नूर गली चली गृदवाए ।

बीच नूर गली कै पौरियां, ए नूर सोभा क्यों कही जाए ॥ ५०

इन प्रासादोंके चारों ओर प्रकाशयुक्त स्तम्भोंकी दो पङ्क्तियाँ हैं। इन स्तम्भोंके मध्य चारों ओर प्रकाशयुक्त वीथिकाएँ (गलीयाँ) हैं जिनमें अनेक तोरण सुशोभित हैं। इनके प्रकाशकी शोभाका वर्णन कैसे करें ?

आड़ी आवत नूर गलियां, नूर चौक होत तिनसे ।

नूर गली दोए दाएं बाएं, गली चली नूर हवेलियों में ॥ ५१

जब ये प्रकाशमयी वीथिकाएँ (गलीयाँ) घूमती हुई आती हैं तो प्रासादोंके कोनों पर उनसे चौक बन जाते हैं। इन चौकोंकी दायीं तथा बायीं ओर प्रासादोंसे लगती हुई प्रकाशमयी वीथिकाएँ सुशोभित हैं।

इन विध नूर गलियां, बीच नूर हवेलियों निकसत ।

ए नूर गली दोऊ तरफों, आखर नूर मोहोल पोहोंचत ॥ ५२

इस प्रकार ये प्रकाशयुक्त वीथिकाएँ (गलियाँ) प्रकाशमय प्रासादोंसे निकलकर दोनों ओरसे होती हुई अन्तमें प्रकाशमय प्रासादोंमें ही पहुँचती हैं।

याही विध नूर गृदवाए, चौक हुए नूर गलियों के ।

नूर तवाफ दे देखिए, यों चौक गली सोभे नूर ए ॥ ५३

इस प्रकार प्रासादोंके कोनों पर चारों ओर प्रकाशपूर्ण चौक तथा वीथिकाएँ (गलियाँ) हैं। इस तेजोमयी परिक्रमामें प्रकाशमय चौक तथा वीथिकाओंकी शोभा अद्वितीय है।

यों नूर फिरती चार मोहोलातें, ए नूर खूबी अतंत ।

ए हुकम कहावे नूर गंज के, ए नूर ना सुमार सिफत ॥ ५४

इस प्रकार चारों ओर पङ्क्तिबद्ध चार प्रासादों (हवेली) की शोभा अनन्त है। श्रीराजजीके आदेशके द्वारा ही यह प्रकाशपुञ्ज प्रकट हुआ है इसलिए इसकी व्याख्या नहीं हो सकती है।

इन अंदर मोहोल कै नूर के, कै जुदी जुदी नूर जिनस ।

कै मोहोल मंदिर नूर गलियां, नूर देखों सोई सरस ॥ ५५

इसके अन्दर भी अनेक तेजोमय प्रासाद हैं। उनसे विभिन्न प्रकारका प्रकाश निकलता है। इन प्रासादोंमें अनेक वीथिकाएँ तथा मन्दिर प्रकाशमय दिखाई देते हैं। इनका प्रकाश जितना देखते हैं उतना ही सुन्दर लगता है।

इन अंदर नूर कै जुगतेँ, नूर कै मंदिर मोहोलात ।

नूर जिनसेँ कै जुगतेँ नूर अरस गंज कह्यो न जात ॥ ५६

इन प्रासादोंमें विभिन्न प्रकारके प्रकाशयुक्त मन्दिर हैं जहाँ पर विभिन्न प्रकारकी सामग्री सुशोभित हैं। इन सामग्रियोंसे निकलते हुए प्रकाशपुञ्जकी शोभा शब्दोंकी सीमामें नहीं आ सकती है।

फेर देख नूर भोम दस का, होए हिरदेँ नूर जहूर ।

महामत मोमिन नूर का, नूर देखें अरस सहूर ॥ ५७

रङ्गभवनकी दसों भूमिकाओंके प्रकाशको पुनः देखने पर हृदय प्रकाशित हो जाता है। महामति कहते हैं, ब्रह्मात्माएँ ही इस दिव्य प्रकाशका विवेकपूर्वक अनुभव कर सकती हैं।

प्रकरण ३६ चौपाई २०४४

भोम पेहेली, नूर खिलवत

कहे आमर नूर अरस का, ए जो अरस नूर जमाल ।

दिल अरस मोमिन नूर का, नूर सुनके बदले हाल ॥ १

धामधनीकी आज्ञासे परमधामके प्रकाशका वर्णन किया जा रहा है। यह सम्पूर्ण प्रकाश स्वयं अक्षरातीत धनीका है। परमधामकी ब्रह्मात्माओंका हृदय

भी इसी दिव्य प्रकाशसे आलोकित है। इस प्रकाशकी विशेषताको सुनकर जीवनशैली ही बदल जाती है।

ताथें नेक कहूं नूर बीच का, नूर भोम तले खिलवत ।

हक हादी नूर मोमिन, ए नूर गंज हक वाहेदत ॥ २

इसलिए सर्वप्रथम मैं रङ्गभवनके अन्दर प्रथम भूमिकामें स्थित मूल मिलावाका वर्णन करता हूँ जहाँ पर श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं। यह सम्पूर्ण प्रकाश अक्षरातीत धनीका अद्वैत स्वरूप है।

बीच नूर चबूतरा, चौसठ थंभ नूर के ।

फिरता कठेडा नूर का, नूर क्यों कहूं नूर बीच ए ॥ ३

इस मूलमिलावाकी हवेलीके मध्यमें एक चबूतरा है। जिसके किनारे पर चौसठ स्तम्भ शोभायमान हैं। इस चबूतरेके चारों ओर प्रकाशमय कटहरा सुशोभित है। इस प्रकार प्रकाशसे परिपूर्ण इस चबूतरेकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

ऊपर चंद्रवा नूर का, और नूरै की झालर ।

ऊपर तले सब नूर में, सब नूरै रूह नजर ॥ ४

इस चबूतरेके ऊपर प्रकाशमय चंद्रवा सुशोभित है जिसमें सुन्दर झालर लगी हुई है। यहाँ पर ऊपर-नीचे सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है।

बिछौने सब नूर के, और तकिए नूर गृदवाए ।

रूहे बैठी नूर भरपूर, रह्या नूरै नूर समाए ॥ ५

इस चबूतरे पर बिछाया हुआ गलींचा भी प्रकाशमय है। उस पर चारों ओर लगे हुए गोल तकिए भी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं। यहाँ पर तेजोमयी ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं। इस प्रकार सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश छाया हुआ है।

चरनी सीढियां नूर की, चढ उतर नूर झलकार ।

थंभ पडसालें नूर की, नूरै के द्वार चार ॥ ६

इस चबूतरेकी सीढ़ियाँ भी प्रकाशयुक्त हैं। यहाँसे चढ़ते-उतरते प्रकाश ही

झलकता है। यहाँ पर स्तम्भ, प्रतिशाला (पड़साल) तथा चारों ओरके चार द्वार सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं।

नूर के मोहोल मंदिर, नूर दिवाले द्वार ।

नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बडो विस्तार ॥ ७

यहाँके अनेक प्रासाद तथा मन्दिर, उनकी दीवारें तथा द्वार एवं उन पर अङ्कित चित्रकारी सभी प्रकाशमय हैं। इस प्रकार इस दिव्य प्रकाशके विस्तारका वर्णन कहाँ तक करें ?

मुखारबिंद सब नूर के, नूर वस्त्र भूषण ।

सब सिनगार साजे नूर के, नूर कहाँ लग कहूं रोसन ॥ ८

ब्रह्मात्माओंका मुखारविन्द, उनके वस्त्र आभूषण तथा सभी शृङ्गार प्रकाशमय हैं। इनके प्रकाशका वर्णन कैसे किया जाए ?

इत बीच सिंघासन नूर का, नूर का बिछौना ।

बैठे जुगलकिसोर नूर में, कछू नाहीं नूर बिना ॥ ९

चबूतरे पर मध्यमें प्रकाशमय सिंहासन सुशोभित है। उस पर प्रकाशका ही बिछौना है। ऐसे प्रकाशमय सिंहासन पर श्रीराजश्यामाजी विराजमान हैं। यहाँ पर प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है।

कै विध नूर सिंघासन, कै विध बिछौने नूर ।

कछू नजरों न आवे नूर बिना, सब दिसा नूर जहूर ॥ १०

यहाँ पर दिव्य सिंहासन तथा इसके बिछौनेसे विभिन्न प्रकारका प्रकाश निकलता है। जिससे सब दिशाओंमें प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है। प्रकाशके अतिरिक्त यहाँ अन्य कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता है।

वस्त्र भूषण नूर के, सब नूर का सिनगार ।

नूर सागर होए रह्या, नूर वार न पार सुमार ॥ ११

श्रीराजश्यामाजीके वस्त्र आभूषण तथा सम्पूर्ण शृङ्गार ही प्रकाशमय है। इस दिव्य शृङ्गारका प्रकाश सागरकी भाँति लहराता हुआ दिखाई देता है जिसका

कोई पारावार नहीं है.

नूर बोलत जुबां नूर की, नूर सुनत नूर श्रवन ।

खुसबोए नूर नासिका, नूर नैन देखें ना नूर बिन ॥ १२

धामधनी तथा ब्रह्मात्माओंकी वाणी भी प्रकाशयुक्त है. वे प्रकाशमय श्रवणोंसे सुनते हैं, प्रकाशमयी नासिकासे सुगन्ध लेते हैं तथा प्रकाशयुक्त नेत्रोंसे देखते हैं. इस प्रकार प्रकाशके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य कुछ भी नहीं है.

अंग सारे नूर के, नूरै का नूर आहार ।

कौल फैल हाल नूरका, हाल चाल नूर बेहेवार ॥ १३

उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग प्रकाशमय हैं. उनका आहार-विहार, व्यवहार तथा मन, वचन सभी दिव्य प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

नूर मंदिर पेहेली भोम के, नूर रसोई चौक ठौर ।

ए अंदर नूर द्वार के, कछू नूर बिना नहीं और ॥ १४

इस प्रकार प्रथम भूमिकाके मन्दिर, रसोईका चौक, द्वार आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं. यहाँ पर प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है.

भोम दूजी, नूर भूलवनी

दूजी भोम जो नूर की, नूर चेहेबच्चे जल ।

नूर मंदिर भूलवन के, नूर एक सौ दस मोहोल ॥ १५

रङ्गभवनकी प्रकाशमयी द्वितीय भूमिकामें जलकुण्डका जल भी प्रकाशमय है तथा एक सौ दस मन्दिरोंकी एक सौ दस पङ्क्तियोंमें स्थित भूलभुलवनीके मन्दिर भी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

एक सौ दस हारें नूर की, नूर ऐसे ही गृदवाए ।

ए बारे हजार मोहोल नूर की, बीच नूर चौक रह्या भराए ॥ १६

इन मन्दिरोंकी एक सौ दस पङ्क्तियाँ चारों ओरसे प्रकाशित हो रहीं हैं. इस प्रकार ये बारह हजार मन्दिर तथा मध्यमें स्थित सौ मन्दिरका चौक भी प्रकाशसे परिपूर्ण है.

नूर भोम दूजी से तलें लग, भर्या चेहेबच्चा नूर जल ।

लंबा चौड़ा नूर एक हांस लग, ऊपर आया नूर बन चल ॥ १७

इस द्वितीय भूमिकामें स्थित जलकुण्डमें नीचेसे ऊपर तक प्रकाशमय जल परिपूर्ण है। यह जलकुण्ड एक पहलका लम्बा चौड़ा है तथा ऊपरसे ताड़वनके प्रकाशयुक्त वृक्षशाखाओंसे आच्छादित है।

नूर तीनों तरफों झलूबिया, तरफ चौथी नूर झरोखे ।

नूर बन छाया जल पर, खासी बैठक नूर ठौर ए ॥ १८

इस जलकुण्डके तीनों ओर ताड़वनके वृक्षोंकी प्रकाशमयी शाखाएँ झूल रही हैं तथा चौथी ओर रङ्गभवनकी दीवारमें स्थित झरोखे हैं। यहाँ पर वृक्षोंकी प्रकाशयुक्त छाया है। श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंको बैठनेके लिए यह अति सुन्दर स्थान है।

नूर झरोखे बैठक, नूर जल नूर ऊपर ।

नूर झरोखे तीसों मिले, जितथें आवे नूर नजर ॥ १९

जलके ऊपर शोभायमान इन झरोखोंमें तेजोमयी ब्रह्मात्माएँ बैठती हैं। इस भूमिकामें जहाँ पर तीस झरोखे साथ मिलते हैं वहाँसे सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिगोचर होता है।

नूर मंदिर तीस इन तलें, ताके चार चार नूर द्वार ।

आगूं तीन गली नूर थंभ की, ए जो मंदिर नूर किनार ॥ २०

इस जलकुण्डके सामने झरोखेके नीचे प्रकाशमय तीस मन्दिर हैं। जिनमें प्रत्येकमें चार-चार द्वार हैं। इनके सामने दो स्तम्भोंकी पङ्क्तियोंमें तीन तेजोमयी वीथिकाएँ (गलियाँ) हैं। इस प्रकार प्रथम पङ्क्तिके तेजोमय मन्दिर सुशोभित हैं।

नूर मंदिर एक सौ दस, एक अंदर की नूर हार ।

चारों तरफों मंदिर नूर के, ए नूर गिनती बारे हजार ॥ २१

यहाँ पर एक सौ दस प्रकाशमय मन्दिरोंकी पङ्क्तियाँ हैं, प्रत्येक पङ्क्तिमें

एक सौ दस मन्दिर हैं. इस प्रकार भूलभुलवनीके मन्दिरोंकी कुल संख्या बारह हजार है.

नूर मंदिर भोम गिनती का, बीच नूर चबूतरा ।

हक हादी रूहें नूर बैठकें, अति रंग रस नूर भर्या ॥ २२

इन मन्दिरोंके मध्यमें एक सौ मन्दिरोंके स्थान पर चौंसठ मन्दिरका एक प्रकाशमय चबूतरा है. जहाँ पर श्रीराजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी बैठकें हैं. यह स्थान अत्यन्त प्रकाशमय होनेसे आनन्ददायी है.

द्वार जो नूर मंदिर, नूर के चार चार ।

लगते द्वार सब नूर के, माहें भूलवनी नूर अपार ॥ २३

यहाँके प्रत्येक मन्दिरमें चार-चार तेजोमय द्वार हैं, जो एक दूसरे मन्दिरसे संलग्न हैं. इन मन्दिरोंमें भूलभुलैयाके अनेकों खेल होते हैं.

हक हादी रूहें नूर भरे, खेले नूर में कर सिनगार ।

नूर बिना कछू न पाइए, नूर झलकारों झलकार ॥ २४

इन प्रकाशमय मन्दिरोंके मध्य चौकमें श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ प्रकाशमय शृङ्गार कर लीला करते हैं. यहाँ पर प्रकाशके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है. सर्वत्र प्रकाश ही झलकता हुआ दृष्टिगोचर होता है.

वस्त्र भूषण नूर के, नूर सरूप साज समार ।

नूर ले खेलें नूर में, नूर झलकारों झलकार ॥ २५

इन ब्रह्मात्माओंके वस्त्र, आभूषण तथा उनका स्वरूप एवं शृङ्गार सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं. इस प्रकाशमय भूमिकामें ब्रह्मात्माएँ प्रकाशमयी क्रीड़ाएँ करती हैं. इसीलिए सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश झलकता हुआ दिखाई देता है.

नूर सरूप देखत दिवालों, नूर सरूप देखत द्वार ।

नूर सरूप देखत नूर बीच, नूर झलकारों झरकार ॥ २६

इन मन्दिरोंकी दीवारों तथा द्वारों पर ब्रह्मात्माओंका चिन्मय स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है. इस प्रकार इन मन्दिरोंमें सर्वत्र ब्रह्मात्माओंके दिव्य स्वरूप झिलमिलाते हुए दिखाई देते हैं.

नूर सरूप पैठें एक द्वार से, जाए निकसैं नूर किनार ।

यों नूर सरूप दौड़ें सब में, नूर झलकारों झलकार ॥ २७

ये प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ इन मन्दिरोंमें एक द्वारसे प्रवेश कर दूसरे द्वारसे निकलती हैं। इस प्रकार ब्रह्मात्माएँ सब मन्दिरोंमें दौड़ती हैं तो सर्वत्र उनका ही दिव्य प्रकाश जगमगाता हुआ दिखाई देता है।

नूर सरूप सब नूर के, ले नूर दौड़ें बारे हजार ।

बारे हजार नूर मंदिरों, नूर झलकारों झलकार ॥ २८

ये बारह हजार ब्रह्मात्माएँ स्वयं प्रकाश स्वरूपा हैं और अपने दिव्य प्रकाशको लेकर दौड़ती हैं। ये बारह हजार मन्दिर भी प्रकाशमय होनेसे सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश झलकता हुआ दिखाई देता है।

एक नूर मंदिर से आवत, नूर निकसे परली हार ।

नूर हंसें खेलें गिरें नूर में, नूर झलकारों झलकार ॥ २९

ब्रह्मात्माएँ इन प्रकाशमय मन्दिरोंमें एक पङ्क्ति के मन्दिरसे प्रवेश कर दूसरी पङ्क्ति के मन्दिरसे निकलती हैं। इस प्रकार ये प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ इन प्रकाशमय मन्दिरोंमें हँसती हैं, क्रीड़ा करती हैं तथा क्रीड़ा करती हुई गिरती हैं। सर्वत्र उनका ही प्रकाश जगमगाता हुआ प्रतीत होता है।

नूर सरूप पैठें एक तरफ से, नूर निकसैं जाए नूर पार ।

नूर फिरत बीच गूँदवाए, नूर झलकारों झलकार ॥ ३०

ये दिव्य स्वरूप मन्दिरमें एक ओरसे प्रवेश कर दूसरी ओरसे निकलते हैं तथा कई बार अन्दर ही अन्दर चारों ओर घूमते फिरते हैं, सर्वत्र उनका ही प्रकाश जगमगाता है।

हार किनार पार नूर में, नूर सागर हुआ द्वार द्वार ।

नूर वार पार या बीच में, नूर झलकारों झलकार ॥ ३१

इस प्रकार इन मन्दिरोंकी पङ्क्तिमें एक किनारेसे लेकर दूसरे किनारे तक प्रकाशका सागर उमड़ रहा हो ऐसा प्रतीत होता है। इन मन्दिरोंके वारपार तथा मध्यमें सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है।

इन विध नूर केता कहूं, नूर समे खेलन ।

नूर बिना कछू न देखिए, नूर के नूर रोसन ॥ ३२

इस प्रकार इस दिव्य प्रकाशके सम्बन्धमें कितना कहूं. यहाँकी लीलाएँ ही प्रकाशमयी हैं. प्रकाशके अतिरिक्त यहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देता है. यहाँ पर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है.

दूजी भोम सब नूर में, रूहें फेर देखें नूर ले ।

नूर प्याले हक हादी नूर, रूहों भर भर नूर के दें ॥ ३३

यह द्वितीय भूमिका प्रकाशसे परिपूर्ण है. इसी प्रकाशको हृदयमें धारण कर ब्रह्मात्माएँ यहाँकी दिव्यताका अनुभव करती हैं. श्रीराजश्यामाजी यहाँ पर प्रकाशमय प्यालोंको भर-भरकर ब्रह्मात्माओंको अपनी प्रेमसुधाका पान करवाते हैं.

भोम तीसरी, नूर झरोखा

तीसरी भोम का नूर जो, नूर इन मुख कछा न जाए ।

बडी बैठक नूर इन भोमें, इत नूर आप दीदारें आए ॥ ३४

तृतीय भूमिकाकी प्रकाशमय शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता. यहाँ पर बैठनेके लिए विशाल प्रकाशमयी बैठक है. यहीं पर विराजमान धामधनीके दर्शनके लिए अक्षरब्रह्म नित्यप्रति चाँदनी चौकमें आते हैं.

नूर द्वार नूर ऊपर, नूर बडी बैठक नूर भर ।

कर दीदार नूर जमाल का, फेर आए नूर कादर ॥ ३५

रङ्गभवनके प्रकाशमय द्वारके ऊपर शोभायमान यह प्रकाशमयी बैठक है. यहीं पर विराजमान धामधनीके दर्शन कर अक्षरब्रह्म चाँदनी चौकसे लौट जाते हैं.

ए बैठक कही जो नूर की, सो नूरै नूर गृदवाए ।

बीच चौक गली सब नूर की, रहे द्वार मंदिर नूर भराए ॥ ३६

इस प्रकाशमयी बैठकके चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है. यहाँ पर मध्यमें स्थित चौक, वीथिकाएँ (गलियाँ), द्वार तथा मन्दिर सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

मुख नूर चौक भर पूरन, नूर दस मंदिर पडसाल ।

इन भोम नूर रूहें देखहीं, तो नूर बदले नूर हाल ॥ ३७

दस मन्दिरका यह चौक श्रीराजजीके मुखारविन्दके दिव्य प्रकाशसे प्रकाशित है। यदि आत्मा इस दिव्य भूमिकाके तेजका दर्शन करती है तो उसकी स्थिति ही बदल जाती है।

अंदर नूर पडसाल के, नूर द्वार मंदिर दोए दोए ।

नूर सीढियां आगूं इन माहिं, दोऊ तरफ मेहेराब नूर सोए ॥ ३८

इस विशाल प्रतिशाला (पडसाल) के अन्दर स्थित मन्दिरके पूर्वकी ओर दो-दो द्वार हैं। पश्चिमकी दीवारसे आट्टाईस स्तम्भके चौकके लिए नीचे प्रकाशमयी सीढियाँ उतरी हैं। इन मन्दिरोंके द्वारके दायें-वायें दोनों ओर प्रकाशमय तोरण (मेहेराब) शोभायमान हैं।

नूर मेहेराब आगूं सीढी नहीं, आगूं बढती नूर पडसाल ।

नूर मेहेराब इन ऊपर, नूर पडसालें माहें चाल ॥ ३९

इन तेजोमय कमानोंके आगे सीढियाँ नहीं अपितु तेजोमयी प्रतिशालाएँ (पडसाल) हैं। जिनके ऊपर तोरण हैं। इन्हीं तोरणोंसे होकर इस चौकमें आना जाना होता है।

और नूर मंदिर छे द्वारने, नूर दोऊ तरफों के ।

ए दसों भोम नूर मंदिर, नूर पडसाल बराबर ए ॥ ४०

इन चार मन्दिरोंके चौकके दोनों ओर तीन-तीन तेजोमय मन्दिर हैं। ये मन्दिर पडसालके समतल हैं। पडसालकी यह शोभा दसों भूमिकाओं तक समान रूपसे है।

नूर द्वार दोऊ ओर बराबर, नूर द्वार सीढी दोए तरफ ।

नूर छे चौक आगूं देहरी, रूहें नूर देखें तो बोलें ना हरफ ॥ ४१

दालानके दोनों ओर एक समान प्रकाशमय द्वार हैं तथा द्वारोंके दोनों ओर सीढियाँ शोभायमान हैं। इन मन्दिरोंकी देहुरीके सामने दोनों ओर छः चौक हैं। यहाँके दिव्य प्रकाशको देखकर ब्रह्मात्माएँ इनका वर्णन नहीं कर पाती हैं।

ए छे नूर द्वार दाएं बाएं, नूर दोऊ तरफों तीन तीन ।

ए रूहें देखें नूर विवेक, जो देवे हुकम नूर यकीन ॥ ४२

इस विशाल चौकसे जुड़ी हुई मन्दिरोंकी पङ्क्तिके मध्यके चार मन्दिरोंकी दालानके दोनों ओर तीन-तीन प्रकाशमय मन्दिरोंके कुल छः द्वार हैं. श्रीराजजीके आदेशसे हृदयमें विश्वास उत्पन्न होने पर ब्रह्मात्माएँ इन्हें विवेकपूर्वक देख सकती हैं.

ए बडी बैठक नूर पडसालें, नूर भोम आरोंगें बेर दोए ।

पूर नूर होए रूहें अरस की, ए नूर बेवरा देखें सोए ॥ ४३

इस विशाल तेजोमय स्थानमें श्रीराजश्यामाजी दो बार (प्रातः एवं मध्याह्न) भोजन लीला करते हैं. जो ब्रह्मात्माएँ परमधामके प्रकाशसे ओत-प्रोत होंगी वे ही इस भूमिकाका विवरण समझ सकेंगी.

नूर सेज्या पौढें इतहीं, नूर मोहोल बडा ए ।

इत नूर मेला पोहोर तीन लग, नूर हुकम कहावें जे ॥ ४४

यहाँ पर पीत रङ्गके भवनमें प्रकाशमयी शय्या है. धामधनी यहीं पर विश्राम करते हैं. प्रातःकालसे लेकर तृतीय प्रहर पर्यन्त यहाँ पर बैठक होती है. धामधनीके आदेशसे ही इस प्रकार वर्णन हो रहा है.

भोम चौथी, नूर निरत की

भोम चौथी जो नूर की, नूर में नूर विस्तार ।

ए नूर कहा तो जावहीं, जो होवे नूर सुमार ॥ ४५

यह चतुर्थ भूमिका भी प्रकाशमयी है. यहाँ भी सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है. इस प्रकाशकी कोई सीमा होती तभी इसका वर्णन हो सकता.

नूर गंज मध मंदिर, नूर चौक ठौर निरत ।

नूर रात नूर वरसत, रूहें देखें नूर की सूरत ॥ ४६

यहाँ पर प्रकाशमय मन्दिरोंके मध्यमें प्रकाशमय चौक है. जहाँ पर नृत्यकी लीला होती है. यहाँ पर रात्रिके समय नृत्यलीलाके तेजकी वर्षा होती है. तेजोमयी ब्रह्मात्माएँ इसका दर्शन करती हैं.

नूर तखत नूर चौक में, बैठें नूर में जुगलकिसोर ।

नूर सरूप निरत नवरंग, बीच नूर बैठें भर जोर ॥ ४७

इस प्रकाशमय चौकके मध्यमें एक देदीप्यमान सिंहासन है, जहाँ पर युगल स्वरूप (श्रीराजश्यामाजी) विराजमान होते हैं। नवरङ्गबाई प्रकाशमय स्वरूप धारण कर यहाँ पर मध्यमें नृत्यलीला करती है और चारों ओर प्रकाशमयी सखियाँ बैठी हुई हैं।

नूर खेलत नूर देखत, और नूरै नूर वरसत ।

रुहें आइयां जो इत नूर से, सो नूर नूरै को दरसत ॥ ४८

यहाँ पर नृत्य करनेवाली तथा नृत्यको देखनेवाली ब्रह्मात्माएँ स्वयं प्रकाशमयी हैं। इसलिए उनसे सर्वत्र प्रकाशकी ही वर्षा होती है। स्वयं प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ यहाँ आई हुई होनेसे वे यहाँ पर दिव्य प्रकाशको ही प्रकट करती हैं।

नूर मंदिर द्वार नूर, नूर जिमी चौक शंभ दिवाल ।

नूर भरपूर नूर में, सब नूरै की हाल चाल ॥ ४९

यहाँ पर मन्दिर, उनके द्वार, भूमि, चौक, स्तम्भ, दीवार आदि सभी प्रकाशमय हैं। सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त होनेसे प्रकाशमयी आत्माओंका रहन-सहन भी प्रकाशमय ही दिखाई देता है।

नूर नूर को देखहीं, नूर की नूर सुनत ।

नूर नाचत नूर बाजत, नूर कहां लों को गिनत ॥ ५०

ये प्रकाशस्वरूपा ब्रह्मात्माएँ प्रकाशमय नृत्य देखती हैं तथा प्रकाशमय वाद्ययन्त्रोंका स्वर सुनती हैं। यहाँ पर नृत्य करनेवाली तथा वाद्ययन्त्र बजानेवाली आत्माएँ स्वयं प्रकाशमयी हैं। इसलिए उनके प्रकाशकी गणना कहाँ तक की जाए ?

नूर बाजे नूर बजावहीं, नूर गावें नूर सरूप ।

नूर देखें फेर फेर नूर को, नूर नाचत नूर अनूप ॥ ५१

यहाँ पर वाद्ययन्त्र भी प्रकाशमय हैं और बजानेवाली ब्रह्मात्माएँ भी प्रकाशमयी

हैं तथा ये प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ प्रकाशमय गायन करती हैं। इस प्रकार प्रकाशमयी आत्माएँ प्रकाशमयी आत्माओंके अनुपम नृत्यको वारंवार देखती हैं।

ऊपर तले बीच नूर में, जानू भर्या सागर नूर ।

दसों दिसा देखों नूर नजरोँ, जानो तीखे आवें नूर के पूर ॥ ५२

यहाँ पर ऊपर-नीचे तथा मध्यमें प्रकाश ही प्रकाश होनेसे सर्वत्र प्रकाशका सागर लहराता है। दसों दिशाओंमें प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देनेसे लगता है मानों प्रकाशका तीव्र प्रवाह बहता हुआ चला आ रहा हो।

जानों नूर देखों मासूक का, तो जुगल नूर सब पर ।

सब नूर देखों जित तितहीं, भरी नूरै नूर नजर ॥ ५३

जब प्रियतम धनीके दिव्य प्रकाशको देखना चाहते हैं तो उन्हीं युगलस्वरूपका दिव्य प्रकाश सबके ऊपर छाया हुआ दिखाई देता है। अपनी प्रकाशमयी दृष्टिसे जहाँ भी देखते हैं वहाँ पर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है।

हक नूर बिना जरा नहीं, नूर सब में रह्या भराए ।

नूर बिना खाली कहूं नहीं, रह्या नूरै नूर जमाए ॥ ५४

यहाँ पर धामधनीके दिव्य प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। सर्वत्र उनका ही दिव्य प्रकाश भरा हुआ है। कोई भी स्थान इस दिव्य प्रकाशके बिना रिक्त नहीं है। सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश है।

फेर नूर दिवालों देखिए, नूर बन झरोखे जित ।

नूर खिडकी थंभ द्वारने, देख्या नूर बिना न कित ॥ ५५

इन प्रकाशपूर्ण दीवारोंको पुनः देखें, जहाँ पर वनकी ओर प्रकाशमय झरोखे हैं। इस प्रकार खिड़कियाँ, स्तम्भ, द्वार आदि सभी प्रकाशमय हैं। प्रकाशके अतिरिक्त यहाँ पर कुछ भी दिखाई नहीं देता है।

रूहें दौड़ें नूर हाल में, नूर देखें सब ठौर ।

फेर आइए नूर द्वारने, नाही नूर बिना कछू और ॥ ५६

इसी दिव्य प्रकाशको लेकर ब्रह्मात्माएँ आनन्दमग्न होती हुई दौड़ती हैं तथा

चारों ओर प्रकाशका दर्शन कर पुनः प्रकाशमय द्वारोंकी ओर चली आती हैं। यहाँ पर प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

भोम पांचमी, नूर सेज्या

नूर देखो भोम पांचमी, जित मंदिर नूर सेज ।

बारे हजार मोहोल नूर के, सब नूरै रेजारेज ॥ ५७

अब पाँचवीं भूमिकाके प्रकाशको देखें, जहाँ पर प्रकाशमय मन्दिरमें प्रकाशमयी शय्या है। यहाँके बारह हजार भवन प्रकाशमय हैं। उनके कण-कणसे दिव्य प्रकाश निकलता है।

नूर पौरी नूर द्वारने, नूर गलियां थंभ अरस ।

नूर प्याले रूहें पीवहीं, लें भर भर नूर सरस ॥ ५८

यहाँके तोरण (कमान), द्वार, वीथिकाएँ (गलियाँ), स्तम्भ आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं। यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ प्रकाशमय प्याले भर-भरकर धामधनीकी प्रेमसुधाका पान करती हुई आनन्दित होती हैं।

ए नूर के चौक चबूतरे, माहें नूर के मोहोल मंदर ।

नूर सरूप लेहेरें लेवहीं, माहें नूर बाहेर अंदर ॥ ५९

यहाँके चौक, चबूतरे तथा अन्दरके भवन सभी प्रकाशमय हैं। यहाँ पर बाहर तथा अन्दर सर्वत्र प्रकाश व्याप्त है। ब्रह्मात्माएँ इस तरङ्गित प्रकाशका आनन्द लेती हैं।

चौकी सन्दूकें नूर की, सब सुन्दर नूर सामान ।

नूर भरे मोहोल सोभित, ए क्यों होए नूर बयान ॥ ६०

यहाँकी चौकी, सन्दूक आदि सभी सामग्रियाँ प्रकाशमयी हैं। यहाँके सभी भवन प्रकाशसे परिपूर्ण होनेसे शोभायमान हो रहे हैं। इनके प्रकाशका वर्णन कैसे करें ?

सब जोगवाई नूर की, नूरै का सब साज ।

कहां लग कहूं मैं नूर की, सब नूरै रह्या विराज ॥ ६१

यहाँकी सभी सामग्रियाँ प्रकाशमयी हैं। प्रकाशसे ही वे सजी हुई हैं। इनके

प्रकाशकी शोभाका वर्णन कहाँ तक करूँ ? यहाँकी सम्पूर्ण साज-सज्जा प्रकाशयुक्त है.

सब मोहोल एक नंग नूर के, ज्यों नूर सागर माहें तरंग ।

यों कै विध मोहोल नूर के, माहें कै नूर रस रंग ॥ ६२

यहाँके सभी प्रासाद एक ही रत्नके प्रकाशसे परिपूर्ण हैं. इनके प्रकाशको देखते हुए ऐसा लगता है जैसे प्रकाशके सागरमें तरङ्गें उठ रही हैं. इस प्रकार यहाँ पर अनेक प्रकाशमय भवन हैं जिनमें विभिन्न रङ्गोंमें प्रकाश प्रदीप्त होता है.

ए नूर भोम फेर देखिए, नूर झरोखे नूर बन ।

नूर द्वार आए फेर, नूर नूर नूर रोसन ॥ ६३

इस प्रकाशमयी भूमिकाको बार-बार देखिए. यहाँ पर वन तथा झरोखे भी प्रकाशमय हैं. पुनः प्रकाशमय द्वार पर आकर उसे देखें तो सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश प्रकाशित होता हुआ दिखाई देगा.

कै चौक देखिए नूर के, कै सीढियाँ नूर दिवाल ।

कै थंभ गलियाँ नूरकी, कै मोहोल नूर पडसाल ॥ ६४

यहाँ पर अनेक चौक, सीढियाँ, स्तम्भ वीथिकाएँ (गलियाँ), दीवार, भवन तथा प्रतिशाला (पडसाल) सभी प्रकाशयुक्त हैं.

नूर ऊपर तले माहें बाहेर, कै बेल फूल नूर नकस ।

घोडे कमाडी नूर चौकठ, भर्या सागर नूर रस ॥ ६५

यहाँ तक की ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर सर्वत्र प्रकाश व्याप्त है. यहाँ पर विभिन्न प्रकारकी प्रकाशमयी लताएँ, फूल आदि चित्रित हैं. यहाँ पर घोड़ी (अर्गला), किवाड़, चौखट आदि सभी इस प्रकार प्रकाशसे ओत-प्रोत हैं जैसे चारों ओर प्रकाश रसका सागर परिपूर्ण हो.

झरोखे नूर गूढ़वाए, नूर सोभा कही न जाए ।

कछू नूर स्वाद तो आवहीं, जो नूर लीजे दिल ल्याए ॥ ६६

यहाँ पर चारों ओरके झरोखे तथा उनकी शोभा भी प्रकाशमयी है जिसका वर्णन नहीं हो सकता. इस दिव्य प्रकाशके आनन्दकी अनुभूति तभी हो

सकती है जब इसे अपने हृदयमें धारण कर लिया जाए.

नूर मंदिर फेर देखिए, फेर देखिए नूर झरोखे ।

तब नूर बन आवे नजरों, नूर पसु पंखी खेलें जे ॥ ६७

यहाँके प्रकाशमय मन्दिर तथा झरोखोंसे बार-बार देखने पर बाहरके वन प्रदेशका प्रकाश दृष्टिगोचर होता है जहाँ पर पशुपक्षी आदि सभी प्रकाशमयी क्रीड़ाएँ करते हैं.

भोम छठी, नूर सुखपाल

भोम छठी नूर झिलमिले, सब ठौरों नूर नाम ।

नूर रूहें खेलें नूर में, सब रह्या नूर में जाम ॥ ६८

छट्टी भूमिका पर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश झिलमिला रहा है यहाँके विभिन्न नाम भी प्रकाशमय हैं. प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ इन दिव्य प्रकाशमें क्रीड़ा करती हैं. सर्वत्र प्रकाशकी मादकता व्याप्त है.

नूर चौक मंदिर फिरते, नूर चबूतरा बैठक ।

नूर वरसत कै हवेलियां, नूर बैठक रूहें हादी हक ॥ ६९

यहाँके मन्दिरोंमें चारों ओर प्रकाशयुक्त चौक हैं. मध्यमें बैठकके लिए प्रकाशमय चबूतरे शोभायमान हैं. अनेक भवनोंसे प्रकाशकी वर्षा होती है. यहाँकी बैठकोंमें श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विराजमान होते हैं.

नूर बैठत नूर ऊठत, नूर चलत नूर निदान ।

सब ठौरों नूर पूरन, जानों सब गंज नूर समान ॥ ७०

यहाँ पर प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ बैठती हैं, उठती हैं, तथा चलती-फिरती हैं. सभी स्थानोंमें प्रकाश परिपूर्ण है. ऐसा लगता है जैसे प्रकाशका पुञ्ज सर्वत्र व्याप्त हो रहा हो.

एक मध्य चौक भर्या नूर का, और फिरते मोहोल नूर तिन ।

तिन गृद नूर हवेलियां, ए नूर गिनती कसूँ जुबां किन ॥ ७१

इस भूमिकाके मध्यमें एक प्रकाशयुक्त चौक है, जिसके चारों ओर तेजोमय

प्रासाद शोभायमान हैं. इन प्रासादोंके चारों ओर प्रकाशमय भवन हैं. यहाँके प्रकाशकी गणना कौन-सी जिह्वाके द्वारा की जाए ?

तिन परे नूर नूर के परे, नूर मोहोल की गिनती नाहिं ।

नूर जिनसें कै जुदी जुदी, ए नूर आवे न हिसाब माहिं ॥ ७२

इन प्रकाशमय भवनोंसे आगे जो अन्य प्रकाशमय भवन हैं. उनकी गणना नहीं हो सकती है. यहाँ पर सजाई हुई अलग-अलग प्रकारकी सामग्रियोंकी भी कोई गणना नहीं हो सकती है.

जो मोहोल नूर किनार के, नूर लेखे में आवे क्यों कर ।

ए नूर रूहें देखत, फेर फेर नूर नजर ॥ ७३

इस भूमिकाके बाहरी पङ्क्तिके भवनोंके प्रकाशका लेखा-जोखा नहीं हो सकता है. ब्रह्मात्माएँ ही अपनी तेजोमयी दृष्टिसे इन भवनोंके प्रकाशको देख सकती हैं.

मोहोल झरोखे जो नूर के, आवत नूर बयार ।

इन जुबां इन नूर को, ए नूर आवे न माहें सुमार ॥ ७४

इन प्रकाशयुक्त भवनोंके झरोखोंसे सुगन्धित वायु प्रवाहित होता है. इस नश्वर जिह्वाकी सीमामें यहाँका प्रकाश नहीं आ सकता है.

कै मोहोलों में नूर थंभ, तिन कै थंभों नूर नकस ।

नेक नकस नूर देखिए, जानो ए नूर सबथें सरस ॥ ७५

यहाँके अनेक भवनोंमें प्रकाशमय स्तम्भ हैं. उन स्तम्भोंमें अङ्कित चित्रकारी भी प्रकाशमयी हैं. चित्रकारीके थोड़े-से प्रकाशको देखने पर लगता है कि यही प्रकाश सबसे श्रेष्ठ है.

कै बन बेली नूर की, कै नूर पसू जानवर ।

कै नूर कटाव तिन बीच में, नूर कहाँ लग कहूं क्यों कर ॥ ७६

यहाँ पर अनेक स्थानोंमें वृक्ष, लताएँ तथा पशुपक्षी आदि चित्रित हैं. उनके मध्यमें अन्य अनेक चित्रकारी भी हैं. इन सबसे प्रकाश निकलता है. इस प्रकाशका वर्णन कहाँ तक करूँ ?

कह्यो न जाए नूर पात को, कै नूर कांगरी पात माहिं ।

कै नूर बेली एक पात में, सो कब लग कहूं नूर कांहीं ॥ ७७

यहाँ पर अङ्कित पत्तोंके प्रकाशका भी वर्णन नहीं हो सकता है. एक ही पत्तेमें अनेक काँगरी तथा लताएँ अङ्कित हैं. उनके प्रकाशका वर्णन कहा तक किया जाए ?

एक पात कांगरी नूर देखिए, नूर देखत उमर जाए ।

तो सोभा देखत नूर कांगरी, रूहें नूर क्योंए न त्रपताए ॥ ७८

यदि किसी एक पत्तेकी प्रकाशपूर्ण काँगरीको देखें तो पूरी आयु ही बीत जाती है. इस प्रकाशमयी काँगरीको वारंवार देखती हुई ब्रह्मात्माएँ कभी भी तृप्त नहीं होती हैं.

छठी भोम नूर पूरन, जित रेहेत नूर सुखपाल ।

बडी बडी नूर हवेलियां, बडे बडे नूर पडसाल ॥ ७९

यह छठी भूमिका इस प्रकार प्रकाशमयी है. यहाँ प्रकाशमय विमान (सुखपाल) रहते हैं. यहाँ पर प्रकाशमयी बड़ी-बड़ी हवेलियाँ हैं और बड़े-बड़े खुले स्थान (पड़साल) भी प्रकाशमय हैं.

फेर देखिए नूर द्वारको, मोहोल नूर चौक झलकत ।

रूहें खेलें खुसाली नूर में, नूर नूर में मलपत ॥ ८०

यह सब देखकर पुनः द्वार पर आते हैं. यहाँके प्रकाशयुक्त भवन तथा उनके चौक चमकते हुए दिखाई देते हैं. यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ आनन्दमग्न होकर प्रकाशके साथ क्रीड़ा करती हैं. इस प्रकार श्रीराजजीके दिव्य प्रकाशसे प्रकाशित होती हुई वे मग्न हो जाती हैं.

भोम सातमी, नूर हिडोले

नूर भरी भोम सातमी, नूर मोहोल बिना हिसाब ।

बिना हिसाब चौक नूर के, सो भर्यो सागर नूर आब ॥ ८१

सप्तमी भूमिका भी प्रकाशसे परिपूर्ण है. यहाँ पर असंख्य भवन तथा असंख्य

चौक प्रकाशयुक्त हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे यहाँ पर प्रकाशयुक्त जलका अथाह सागर दिखाई दे रहा हो।

हिसाब नहीं नूर दिवालों, हिसाब नहीं नूर गलियां ।

हिसाब नहीं बीच नूर थंभ, नूर आवें नूर बीच से चलियां ॥ ८२

यहाँकी दीवारें, वीथिकाएँ (गलियाँ) तथा उनके बीचके स्तम्भके प्रकाशकी कोई सीमा नहीं है। प्रकाशपूर्ण ब्रह्मात्माएँ इन्हीं प्रकाशमयी वीथिकाओं (गलियों) में चलती फिरती हैं।

नूर भरे ताक खिड़कियां, बार साखे नूर द्वार ।

कै मोहोल मंदिर नूर के, ना गिनती नूर सुमार ॥ ८३

यहाँके भवनोंमें प्रकाशपूर्ण गवाक्ष (रोशनदान), खिड़कियाँ, चौखट तथा द्वार सुशोभित हैं। यहाँके अनेक भवन तथा मन्दिर प्रकाशसे परिपूर्ण हैं जिनकी गणना नहीं की जा सकती।

कै छूटक मंदिर नूर के, कै मंदिरों नूर मोहोलात ।

कै फिरते मंदिर नूर के, बीच बैठक नूर विसात ॥ ८४

यहाँ पर अनेक प्रकाशमय मन्दिर अलग-अलग हैं तथा अनेक मन्दिर भवनके साथ संयुक्त हैं। विभिन्न स्थानों पर चारों ओर प्रकाशमयी मन्दिर हैं एवं मध्यमें तेजोमयी बैठक शोभायमान है।

नूर झरोखे किनार के, तिन में नूर मंदर ।

नूर थंभ दो दो आगूं इन, हर मंदिर नूर अंदर ॥ ८५

बाहरी किनारे पर अनेक प्रकाशयुक्त मन्दिर तथा उनके झरोखे हैं। इन सभी मन्दिरोंके आगे प्रकाशमय स्तम्भोंकी दो-दो पङ्क्तियाँ हैं। इस प्रकार प्रत्येक मन्दिरमें प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है।

इन अंदर मोहोल कै नूर के, कै जुदी जुदी नूर जिनस ।

कै मोहोल मंदिर नूर गलियां, नूर देखूं सोई सरस ॥ ८६

इस भूमिकाके अन्दर अनेक प्रकाशमय भवन हैं जिनमें विभिन्न प्रकारकी

प्रकाशमयी सामग्रियाँ शोभायमान हैं. यहाँके प्रासाद, मन्दिर तथा वीथिकाएँ (गलियाँ) सभी प्रकाशमय हैं. उनमें-जिसको भी देखते हैं वे ही अधिक सुन्दर प्रतीत होते हैं.

ए जो मंदिर नूर किनार के, दो हारें नूर मंदर ।

साम सामी नूर हिडोले, नूर झलकत है अंदर ॥ ८७

इस भूमिकामें किनार पर दो पंडितियोंमें प्रकाशमय मन्दिर हैं. इन मन्दिरोंके मध्यमें स्थित दो स्तम्भोंकी पंडितियोंमें आमने-सामने झूले लगे हुए हैं. जिनमें-से प्रकाश झलकता है.

यों फिरते नूर हिडोले, नूर के गृदवाए ।

नूर सरूप रूहें बैठत, झूलें नूर जुगल दिल ल्याए ॥ ८८

यहाँ पर चारों ओर प्रकाशमय झूले हैं. उन पर प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ श्रीराजश्यामाजीके स्वरूपको हृदयमें धारण कर उनके साथ झूलती हैं.

दो दो सरूप नूर झूलत, नूर साम सामी मुकाबिल ।

कडे झनझनें नूर के, नूर खेलें झूलें हिल मिल ॥ ८९

इन प्रकाशपूर्ण झूलोंमें दो-दो ब्रह्मात्माएँ आमने-सामने बैठकर झूलती हैं. उस समय इन झूलोंकी शृङ्खलामें लगे हुए कड़े झन्-झन् ध्वनि करते हैं. इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माएँ हिलमिलकर झूलती हैं.

कै नूर चौक चबूतरे, कै नूर थंभ दिवाल ।

कै बार साखे ताके नूर के, क्यों कहूं नूर बिना मिसाल ॥ ९०

यहाँ पर मध्यमें अनेक स्थानों पर प्रकाशमय चौक, चबूतरे, स्तम्भ, दीवार आदि शोभायमान हैं. यहाँके भवनोंके चौखट तथा गवाक्ष (रोशनदान) आदि भी प्रकाशमय हैं. उनके प्रकाशके लिए उपमा नहीं दी जा सकती.

कै रंगों नूर झलकत, कै नूर रंग तलें ऊपर ।

सब तरफों नूर जगमगें, ए नूर जोत कहूं क्योंकर ॥ ९१

यहाँ पर अनेक रङ्गोंमें प्रकाश झलकता है, अनेक रंग ऊपर नीचे दिखाई

देते हैं. इस प्रकार सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश जगमगाता है. इसका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है.

कै गलियां नूर चरनियां, कै नूर मेहेराब झरोखे ।

कै नूर अरस की रोसनी, क्यों सिफत कहूं नूर ए ॥ ९२

यहाँ पर अनेक वीथिकाएँ गलियाँ, सीढ़ियाँ, तोरण तथा झरोखे प्रकाशसे परिपूर्ण हैं. इस प्रकार परमधामके इस दिव्य प्रकाशकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

भोम आठमी, नूर हिडोले

नूर गंज भोम आठमी, नूर चार तरफ झूलन ।

चारों चौक नूर हिडोले, रूहें झूलत नूर रोसन ॥ ९३

यह आठमी भूमिका प्रकाशपुञ्जसे परिपूर्ण है. इसके चारों ओर प्रकाशमय झूले शोभायमान हैं. यहाँ पर चार-चार स्तम्भोंके चौकोंमें प्रकाशमय झूले हैं. जिनमें बैठकर ब्रह्मात्माएँ प्रकाश बिखेरती हुई झूलती हैं.

गृदवाए नूर हिडोले, झलकत नूर जंजीर ।

क्यों कहूं झूले नूर के, रूहें हंसत मुख नूर नीर ॥ ९४

चारों ओर लगे हुए इन प्रकाशमय झूलोंमें लगी हुई शृङ्खलाएँ (जंजीरें) भी प्रकाशमयी हैं. इन झूलोंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ हँसती हुई झूलती हैं.

रूहें झूलें जब नूर में, तब अरस नूर झलकार ।

बोलें नूर पडछंदे नूर मंदिरों, होत हांसी नूर अपार ॥ ९५

ब्रह्मात्माएँ इन प्रकाशमय झूलोंमें झूलती हैं तो उनका प्रकाश पूरे परमधाममें फैल जाता है. उनके आभूषणोंकी ध्वनि मन्दिरोंमें प्रतिध्वनित होती है, जिससे अपार हँसीका वातावरण बन जाता है.

यों गृदवाए नूर सबन में, झनकत नूर झलकत ।

ए जो हिंडोले नूर के, कही जाए ना नूर सिफत ॥ ९६

इस प्रकार सभीमें चारों ओर दिव्य प्रकाश व्याप्त है. झूलोंकी झञ्झनाहटमें

भी प्रकाश ही झलकता है. इन प्रकाशमय झूलोंकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

हक हादी रूहें नूर में, झूलत नूर खुसाल ।

इन समें नूर बिलंद का, किन विध कहूं नूर हाल ॥ १७

श्री राज श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ इन्हीं प्रकाशमय झूलोंमें झूलते हुए आनन्दका अनुभव करते हैं. इस समयकी परमधामकी दिव्यता एवं भव्यताका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

ए झूले भोम नंग नूर के, गंज जाहेर नूर अंबार ।

जब नूर मोहोलों इत खेलत, अरस नूर न आवत पार ॥ १८

इस भूमिकामें झूलोंसे भी रत्नोंका प्रकाशपुञ्ज निकलता है. जब ब्रह्मात्माएँ यहाँके प्रकाशमय भवनोंमें खेलती हैं तब उनके प्रकाशसे पूरा परमधाम छा जाता है.

इन अंदर नूर कै विध का, नूर बैठक मोहोल खेलन ।

जुदी जुदी विध नूर जुगतें, हक सुख देत नूर रूहन ॥ १९

यहाँके भवनोंमें विविध रङ्गोंमें प्रकाश झलकता है. यहाँ पर बैठने तथा खेलनेके लिए सुन्दर प्रकाशमयी बैठकें हैं. धामधनी इस भूमिकामें बैठकर ब्रह्मात्माओंको अपार सुख प्रदान करते हैं.

कै विध नूर चबूतरे, कै विध नूर मंदर ।

कै विध रोसन नूर किनारें, कै विध नूर अंदर ॥ १००

यहाँ पर विभिन्न प्रकारके चबूतरे तथा भवन प्रकाशमय हैं. किनारोंके भवन तथा अन्दरके भवनोंसे अनेक प्रकारकी प्रकाशमयी किरणें निकलती हैं.

बारे हजार रूहें नूर हिंडोले, हर नूर रूहें हक संग ।

इन समें नूर क्यों कहूं, नूर होत उछरंग ॥ १०१

इन झूलोंमें बारह हजार ब्रह्मात्माएँ झूलती हैं. उनके साथ प्रत्येक झूलोंमें श्रीराजजी विराजमान होते हैं. इस समयके दिव्य प्रकाशका वर्णन कैसे किया जाए ? सभी ब्रह्मात्माएँ आनन्दसे उल्लसित हो जाती हैं.

चार चार हिडोले नूर के, अरस मावे ना नूर झनकार ।

लेत लेहेरें नूर सागर, जानों नूर गंज भरे अंबार ॥ १०२

इस भूमिकामें चार-चार झूलोंकी एक साथ ताली लगती है, इनके झन्झनाहटसे निकला हुआ प्रकाश पूरे परमधाममें समाता नहीं है। ऐसा लगता है, यहाँ पर प्रकाशका सागर ही ऊँची-ऊँची लहरोंके साथ उमड़ रहा हो।

नूर हिडोलों जंजीरों, कडे खटकत नूर जुगत ।

ए घाए पडघाए नूर पडछंदे, नूर हर ठौरों बोलें बिगत ॥ १०३

इन प्रकाशमय झूलोंकी शृङ्खलाओंमें युक्ति पूर्वक जड़े हुए कड़े जब खनखनाते हैं तो उनकी कर्णप्रिय ध्वनि सर्वत्र गूँज जाती है। ब्रह्मात्माओंके दौड़नेसे उनके पादाघात (पाँवकी ठोकर) की ध्वनि प्रतिध्वनित होती हुई सर्वत्र गूँज जाती है।

भोम नौमी, नूर गोख बैठक

भोम नौमी नूर नूरै, गृदवाए नूर तखत ।

ए नूर विचारे ना उडे, हाए हाए नूर जीवरा बडा सखत ॥ १०४

यह नवमी भूमिका भी प्रकाशसे परिपूर्ण है। यहाँ पर चारों ओर बैठनेके लिए सिंहासन तथा कुर्सियाँ शोभायमान हैं। यह जीव इतना कठोर हो गया है कि इस शोभाको समझकर भी नश्वर तनको नहीं छोड़ता है।

इन नूर भोम की सिफत, कही जाए ना नूर मुख इन ।

ए नूर मंदिर नूर झरोखे, कै नूर फिरते सिंघासन ॥ १०५

इस भूमिकाके दिव्य प्रकाशकी शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है। यहाँ पर चारों ओर के मन्दिर, झरोखे, कुर्सियाँ एवं सिंहासन भी प्रकाशमय हैं।

ए मंदिर झरोखे नूर एकै, फिरती नूर पडसाल ।

तो कहूं नूर रोसन की, जो होवे नूर इन मिसाल ॥ १०६

इस भूमिकामें प्रकाशमय मन्दिर तथा झरोखोंके चारों ओर एक ही दालान है। यदि इसके दिव्य प्रकाशकी कोई उपमा हो तभी इसका वर्णन हो सकता है।

ए मंदिर झरोखे नूर के, भोम नूर बराबर ।

नूर द्वार ज्यों और मंदिर, नूर रूहें आवें सीढियों उतर ॥ १०७

ये मन्दिर तथा झरोखे सभी प्रकाशमय हैं। पूरी भूमिकामें समान रूपसे प्रकाश छाया हुआ है। अन्य मन्दिरोंकी भाँति यहाँके द्वार भी प्रकाशमय हैं। यहाँके प्रकाशमयी सीढियोंमें ब्रह्मात्माएँ चढ़तीं तथा उतरतीं हैं।

हर हांसों हक नूर बैठक, हर हांसों नूर तखत ।

हक हादी रूहें नूर मिलावा, हर हांसों नूर न्यामत ॥ १०८

प्रत्येक पहल (हाँस)में श्रीराजजीके लिए प्रकाशमय बैठक तथा सिंहासन हैं। प्रत्येक पहल (हाँस)में श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विराजमान होते हैं। इसप्रकार प्रत्येक पहलमें अखूट सम्पदा शोभायमान है।

नूर थंभ गली देखिए, जानों नूर मंदिर द्वार ।

माहें मंदिर झरोखे नूर एकै, हर बैठक नूर विस्तार ॥ १०९

यहाँ पर प्रकाशमय स्तम्भोंके बीचमें मन्दिरके द्वारकी भाँति वीथिकाएँ (गलियाँ) प्रतीत होतीं हैं। यहाँ पर मन्दिरोंकी दीवार तथा झरोखे प्रकाशमय हैं, प्रत्येक बैठकमें प्रकाशका ही विस्तार है।

नूर दूर से देखत नजरोँ, सो नूर बैठक इत ।

दो सै हांसें नूर की, हक मेले नूर बरकत ॥ ११०

इन प्रकाशमय बैठकोंमें बैठकर ब्रह्मात्माएँ दूर-दूरके दृश्योंका अवलोकन करतीं हैं। इस भूमिकाके सभी दो सौ पहल प्रकाशसे परिपूर्ण हैं। श्रीराजजीके बैठनेसे इनके प्रकाशमें और अभिवृद्धि होती है।

सोभा हक नूर सिंघासन, नूर इन भोम बिराजत ।

ए बात केहेते हक नूर की, हाए हाए नूर जीवरा ना उडत ॥ १११

इस प्रकाशमय सिंहासन पर जब श्रीराजजी विराजमान होते हैं तब पूरी भूमिकाकी शोभामें अभिवृद्धि होती है। श्रीराजजीकी इस दिव्य शोभाका वर्णन करते हुए हाय ! यह जीव नश्वर शरीरको क्यों नहीं छोड़ देता।

और नूर मोहोल कै अंदर, सो नूर बडो विस्तार ।
 कै नूर भांत विध जुगतें, नूर अलेखें बेसुमार ॥ ११२

यहाँ पर अनेकों प्रकाशमय भवन हैं. उनके प्रकाशका अनन्त विस्तार है. इनकी शोभाको शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

नवें भोम नूर वरनन, नूर क्यों कहूं ख्वाब जुबांएं ।
 ए नूर हक हुकम कहे, ना तो नूर आवे ना सबद माहें ॥ ११३

इस नवम भूमिकाके प्रकाशका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकता है यह तो श्रीराजजीके आदेशके द्वारा ही वर्णन हुआ है अन्यथा एक शब्दका भी उच्चारण नहीं हो सकता.

अरस नूर जरा जुबां कहे, अरस मता नूर अपार ।
 सो नूर बरनन क्यों होवहीं, जिन नूर को न कहूं सुमार ॥ ११४

इस नश्वर जिह्वाने दिव्य परमधामके तेजका लेशमात्र वर्णन किया है. वस्तुतः परमधामकी विभिन्न सामग्रियोंका तेज अपार है. उस दिव्य प्रकाशका वर्णन कैसे हो सकता है जिसकी कोई सीमा ही नहीं है.

दसमी भोम, नूर चांदनी

नूर रूहें चढ चांदनी, नूर नवों भोमों पर ।
 खूबी नूर भोम दसमी, ए नूर सोभा न काहूं सरभर ॥ ११५

जब ब्रह्मात्माएँ नवमी भूमिकाके ऊपर प्रकाशमयी चाँदनी पर चढ़ती हैं उस समय इस दशमी भूमिकाकी शोभामें वृद्धि हो जाती है. इस शोभाकी समानता किसीसे भी नहीं हो सकती है.

ऊपर जल नूर चेहेबच्चे, नूर कारंजे ऊछलत ।
 ऊपर नूर इत बगीचे, नूर क्यों कहूं हक न्यामत ॥ ११६

इस भूमिकामें चाँदनी पर प्रकाशमय जलकुण्ड हैं. उनसे फुहारोंके द्वारा प्रकाशमय जल उछलता है. यहाँ पर प्रकाशमय उपवन सुशोभित हैं, धामधनीकी इस अखण्ड सम्पदाका वर्णन कैसे करें ?

इत कै नूर सिंघासन, बीच नूर तख्त बैठक ।

हादी रूहें नूर मिलाए के, बैठत नूर ले हक ॥ ११७

यहाँ पर अनेक प्रकाशमय बैठकस्थल हैं। उन पर स्थित तेजोमय सिंहासन पर श्रीराजश्यामाजी विराजमान होते हैं। ब्रह्मात्माएँ धामधनीका ही प्रकाश लेकर उनके चारों ओर बैठती हैं।

नूर भर्या आकास में, सामी आया आकास नूर ले ।

नूर भर्या दरिया नूर का, माहें कै उठें तरंग नूर के ॥ ११८

उस समय श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका तेज पूरे आकाशमें छा जाता है और पुनः आकाशकी ओरसे लौटकर भूमि पर पड़ता है। इस प्रकार भूमि और आकाशके मध्य प्रकाशका सागर बन जाता है जिससे विभिन्न प्रकारकी प्रकाशमयी लहरें निकलती हैं।

दो सै एक गुरजें नूर के, नूर गुमटियां बारे हजार ।

बीच नूर रूहें बैठक, थंभ नूर सोभा अपार ॥ ११९

इस चाँदनी पर दो सौ एक प्रकाशमय गुर्ज हैं तथा उनके मध्यमें चारों ओर बारह हजार प्रकाशमयी गुमटियाँ हैं। जब ब्रह्मात्माएँ इन सबके मध्य चाँदनी पर श्रीराजश्यामाजीके साथ विराजमान होती हैं तब उनका प्रकाश स्तम्भकी भाँति प्रतीत होता हुआ अपार शोभा युक्त लगता है।

दसमी भोम नूर चांदनी, नूर गुमटियां देखत ।

ए मोहोल गृदवाए नूर के, नूर में हक हादी रूहें खेलत ॥ १२०

इस प्रकार इस दशमी भूमिकाकी प्रकाशपूर्ण चाँदनीके किनारे पर चारों ओर प्रकाशपूर्ण गुमटियाँ सुशोभित हैं। इन गुमटियोंके नीचे चारों ओर प्रकाशमय भवन हैं जिनके प्रकाशमें श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विभिन्न लीलाएँ करते हैं।

नूर गुरज हांसों पर, बीच कांगरी नूर किनार ।

बीच बीच बैरखें नूर के, मोजें आवत नूर झलकार ॥ १२१

यहाँ पर प्रत्येक पहल पर प्रकाशपूर्ण गुर्ज हैं। उनके बीचमें किनारे पर काँगरी

शोभायमान हैं. बीच-बीचमें प्रकाशपूर्ण ध्वजा लहराती है. उनका प्रकाश आकाशमें तरङ्गित होता है.

इत सोभित नूर कांगरी, और सोभित नूर कलस ।

ए कलस कांगरी नूर के, सोभित नूर पर सरस ॥ १२२

यहाँ पर प्रकाशमय काँगरी तथा कलश सुशोभित हैं. ये कलश एवं काँगरी प्रकाशमय होनेसे उन दोनोंका प्रकाश परस्पर अति सुन्दर सुशोभित होता है.

दसों दिसा नूर नूर में, नूरै नूर खेलत ।

नूर उठें बैठें नूर में, नूर नूरै में चलत ॥ १२३

यहाँ दसों दिशाओंमें सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश है. यहाँ पर प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ प्रकाशपूर्ण लीलाएँ करती हैं. ये प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ यहाँके प्रकाशमें उठती हैं, बैठती हैं तथा चलती-फिरती हैं.

नूर भरया आसमान में, नूर चांदनी नूर चौक ।

नूर बिना कछू न देखिए, नूरै में नूर सौक ॥ १२४

इस प्रकाशमय चाँदनी पर स्थित चबूतरेका प्रकाश पूरे आकाशमें छा जाता है. यहाँ पर प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता है. प्रकाश ही प्रकाशके साथ सर्वत्र मिल रहा है.

नूर देख्या भोम दस में, नूर सबहीं के सिरे ।

नूर ले नौमी भोम में, नूर नूरै में उतरे ॥ १२५

इस प्रकार प्रकाशमय नवों भूमिकाओंके ऊपर इस दशमी चाँदनीमें सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है. यहाँके दिव्य प्रकाशको लेकर प्रकाशमयी ब्रह्मात्माएँ नवमी भूमिकामें उतर आती हैं.

ए नूर सुख बैठक देख के, नूर भोम आठमी आए ।

लिए नूर सुख हिडोले, ए चारों नूर सुखदाए ॥ १२६

नवमी भूमिकाकी प्रकाशमयी बैठकोंका आनन्द लेकर ब्रह्मात्माएँ पुनः आठवीं भूमिकामें आती हैं. वहाँसे चारों ओर प्रकाशमय झूलोंका आनन्द लेकर नीचे उतरती हैं.

आए नूर भोम सुख सातमी, नूर सुख हिडोले दोए दोए ।

ए सुख नूर रूहें बिना, नूर सुख लेवें जो होवे कोए ॥ १२७

ब्रह्मात्माएँ आठवीं भूमिकासे उतर कर सातवीं भूमिकाके प्रकाशमय झूलोंमें एक-एक में दो-दो बैठकर आनन्दका अनुभव करती हैं। ब्रह्मात्माओंके बिना अन्य कौन हो सकता है जो इस परमसुखको प्राप्त कर सके।

नूर लिया छठी भोम में, भोम अरस बिवेक बिचार ।

मोहोल लिया सुख नूर का, नूर नूर में नूर न सुमार ॥ १२८

इस प्रकार सातवीं भूमिकासे नीचे उतरकर छठी भूमिकाके अपार सुखोंका अनुभव किया जा सकता है। यहाँके भवनोंसे अपार सुख प्राप्त होता है। उनके प्रकाशका वर्णन नहीं हो सकता है।

नूर भरी भोम पांचमी, जित नूर सेज्या सुख ।

रात सुख नूर अति बडा, हक सुख नूर सनमुख ॥ १२९

इसी प्रकार पाँचवीं भूमिका भी प्रकाशसे परिपूर्ण है, जहाँ पर शय्यासुख प्राप्त किया जाता है। यहाँ पर रात्रिके समय अपार सुख प्राप्त होता है। श्रीराजजीके सम्मुखका तेजोमय सुख भी अपार होता है।

भोम चौथी नूर में, नट निरत नूर खेलत ।

नूर बिना कछू न पाइए, सुख सनमुख नूर अतंत ॥ १३०

चतुर्थ भूमिकामें भी प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है जहाँ पर ब्रह्मात्माएँ नटोंकी भाँति नृत्य लीला करती हैं। यहाँ पर भी प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। श्रीराजजीके सम्मुख यहाँ पर अपार सुखका अनुभव होता है।

तीसरी भोम जो नूर की, जित है नूर पडसाल ।

हक हादी रूहें नूर बैठक, आवें दीदारें नूर जलाल ॥ १३१

तृतीय भूमिका भी प्रकाशमयी है जहाँ पर विशाल बैठक स्थल (पड़साल) प्रकाशित है। इस दिव्य प्रकाशमें श्रीराजजी श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके साथ विराजमान होते हैं। इसी भूमिकामें विराजमान श्रीराजजीका दर्शन करनेके

लिए अक्षरब्रह्म चाँदनी चौकमें आते हैं.

दूसरी भोम का नूर जो, चेहेबच्चा नूर झीलन ।

हक हादी सुख नूर भूलवनी, देत नूर सुख अपने तन ॥ १३२

द्वितीय भूमिका भी प्रकाशमयी है. यहाँ पर स्नानके लिए जलकुण्ड (खड़ोकली) शोभायमान है. इस भूमिकामें धामधनी श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको भूलभुलवनीका अपार सुख प्रदान करते हैं.

नूर द्वार सुख पेहेली भोमें, सुख अव्वल भोम नूर पूर ।

फिरता सुख सब नूर में, मध्य नूर नूर नूर ॥ १३३

प्रथम भूमिकामें चारों ओर प्रकाशकी लहरें उठती हैं. यहाँ पर प्रकाशमय द्वारसे भी अपार सुखका अनुभव होता है. यहाँ पर चारों ओरके मन्दिर स्तम्भ आदि भी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं एवं मध्यके प्रासाद (मूलमिलावा) में श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका तेजोमय स्वरूप विराजमान है.

इत नूर खिलवत हक की, रूहें नूर मोमिनो न्यामत ।

नूर मेला मूल मोमिनो, बीच हक का नूर तखत ॥ १३४

इसी प्रथम भूमिकामें धामधनीका एकान्तस्थल मूलमिलावा शोभायमान है. यह ब्रह्मात्माओंकी अमूल्य निधि है. यहीं पर मध्यमें श्रीराजजीका प्रकाशमय सिंहासन शोभायमान है. उसके चारों ओरके प्रकाशमें ब्रह्मात्माएँ बैठी हुई हैं.

हक हादी रूहें नूर ठौर, हक जात नूर वाहेदत ।

कहे महामत नूर बिलंद में, ए अपनी नूर क्यामत ॥ १३५

परमधाममें यह प्रकाशमय स्थल श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका एकान्तस्थल है. महामति कहते हैं, यही हमारा विशिष्ट स्थान है. यहीं पर हमें अपनी आत्माको जागृत करना है.

नूरकी परिकरमा तमाम

प्रकरण ३७ चौपाई २१७९

बरनन धाम को, कहूं साथ सुनो चित दे ।

कै हुए ब्रह्मांड कै होएसी, कोई कहे न हम बिन ए ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! ध्यानपूर्वक सुनो, मैं परमधामका वर्णन कर रहा हूँ ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड पहले हुए हैं और भविष्यमें भी होंगे किन्तु हमारे अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा वर्णन नहीं कर पाएगा.

क्यों कहूं धाम अंदर की, विस्तार बडो अतंत ।

क्यों कहे जुबां झूठी देह की, अखंड पार के पार जो सत ॥ २

परमधाम रङ्गभवनके अन्दरका वर्णन कैसे करें, इसका विस्तार अनन्त है. नश्वर देहकी जिह्वासे उसका वर्णन कैसे किया जाए वह तो शाश्वत एवं अखण्ड है तथा क्षर, अक्षरसे भी परे है.

तो भी नेक केहेना साथ कारने, माफक जुबां इन बुध ।

अद्वैत अखंड पार की, करूं साथ के हिरदें सुध ॥ ३

तथापि सुन्दरसाथको समझानेके लिए मैं इसी नश्वर जगतकी बुद्धि तथा जिह्वाके अनुसार अखण्ड अद्वैत परमधामका वर्णन कर रहा हूँ जिससे सुन्दरसाथके हृदयमें इसकी सुधि हो जाए.

थंभ दिवालें गलियां, कै सीढियां पडसाल ।

मंदिर कमाडी द्वार ने, माहें कै नंग रंग रसाल ॥ ४

यहाँ पर स्तम्भ, दीवारें, वीथिकाएँ (गलियाँ), सीढ़ियाँ, चौक तथा मन्दिर शोभायमान है. इनके किवाड़ तथा द्वारोंमें जड़े हुए विभिन्न प्रकारके रत्नोंसे ज्योतिर्मयी किरणें निकलती हैं.

गली माहें कै गलियां, कै चौक चबूतरे अनेक ।

खिडकी माहें कै खिडकियां, जित देखूं जानों सोई विसेक ॥ ५

यहाँ पर एक वीथिकासे अनेकों वीथिकाएँ निकलती हैं. इसी प्रकार चौक तथा चबूतरे भी अनेक हैं. एक खिड़कीमें भी अनेक खिड़कियाँ हैं. जहाँ

भी दृष्टि पड़ती है वहींका दृश्य विशेष प्रतीत होता है.

दूजी भोम का चेहेबच्चा, जल पर झरोखे तिन ।

सोभा लेत अति सुंदर, तीनों तरफों बन ॥ ६

रङ्गभवनकी दूसरी भूमिकामें जलकुण्ड (खड़ोकली) शोभायमान है. उसके जलके ऊपर रङ्गभवनकी दीवारके तीस झरोखे शोभायमान हैं. जलकुण्डके तीनों ओर सुन्दर वन प्रदेश सुशोभित है.

तीनों तरफ बन डारियां, करत छाया जल पर ।

एक तरफ के झरोखे, जल छाए लिया अंदर ॥ ७

इस जलकुण्डके तीनों ओर वृक्ष हैं जिनकी शाखाओंकी छाया कुण्डके जलपर पड़ती है. एक ओर झरोखे हैं उसकी भी छाया जल पर पड़ती है.

तीनों तरफों कठेडा, नेक नेक पडसाल ।

चारों तरफों उतरती सीढियां, पानी बीच विसाल ॥ ८

इस जलकुण्डके तीनों ओर कटहरा शोभायमान है. बीचमें छोटी-सी बैठक (पडसाल) है. पालके चारों ओरसे जलकी ओर सीढ़ियाँ उतरती हैं. जल कुण्डमें अथाह जल भरा हुआ है.

आगूं मंदिर चबूतरा, थंभ सोभित तरफ चार ।

इत आवत रूहें नहाए के, बैठ करत सिनगार ॥ ९

इस जलकुण्डके सामने भूलभुलवनीके मन्दिर तथा मध्यमें चबूतरा है. इसके चारों ओर स्तम्भ सुशोभित हैं. स्नानके बाद ब्रह्मात्माएँ यहाँ आकर बैठती हैं एवं शृङ्गार करती हैं.

इत दाहिनी तरफ जो मंदिर, गिनती बारे हजार ।

इन मंदिरों खेलें भूलवनी, हर मंदिर द्वार चार ॥ १०

इस जलकुण्डके दायीं ओर मन्दिर शोभायमान हैं, उनकी संख्या बारह हजार है. इन्हीं मन्दिरोंमें ब्रह्मात्माएँ भूलभुलैयाकी क्रीड़ा करती हैं. यहाँके प्रत्येक मन्दिरोंमें चार-चार द्वार हैं.

कर सिनगार इत खेलत, ए जो मंदिर हैं भुलवन ।

दौडै खेलें हंसैं रूहें, देख अपनी आभा रोसन ॥ ११

शृङ्गारके बाद ब्रह्मात्माएँ भूलभुलैयाके इन मन्दिरोंमें आकर खेलतीं हैं। वे यहाँ पर खेलती-दौड़ती हुई अपनी ही प्रतिबिम्बित छविको देखकर परस्पर हँसतीं हैं।

कै फिरते चबूतरे, फिरते मंदिर गृदवाए ।

थंभ तिन आगूं फिरते, बीच फिरता चौक सोभाए ॥ १२

यहाँ पर हवेलियोंके चारों ओर मन्दिर तथा चबूतरे शोभायमान हैं। उनके सामने चारों ओर स्तम्भ सुशोभित हैं। मध्यमें स्थित चोक भी अपनी अलग शोभा धारण करता है।

कै चौखूने चबूतरे, चारों तरफों मंदर ।

थंभ फिरते चारों तरफों, ए सोभा अति सुंदर ॥ १३

यहाँ पर चारों ओरके मन्दिरोंके सामने अनेक चौरस चबूतरे हैं जिनके चारों ओर स्तम्भ हैं। इन सभीकी शोभा अति सुन्दर है।

कै चौखूटे चबूतरे, मंदिर आठों हार ।

चली चार गलियां चौक थें, हार आठ थंभ गली बार ॥ १४

यहाँ पर हवेलियोंके मध्यमें अनेक चौरस चबूतरे हैं। इन हवेलियोंके चारों कोनोंमें मन्दिरोंकी आठ पङ्क्तियाँ हैं। मध्यमें स्थित चौकसे चारों ओर चार वीथिकाएँ (गलियाँ) निकलीं हैं। इन चारों वीथिकाओंमें प्रत्येकमें स्तम्भोंकी दो-दो पङ्क्तियाँ होनेसे कुल स्तम्भोंकी आठ पङ्क्तियाँ एवं बारह वीथिकाएँ हैं।

कही एक ठौर के चौक की, जित बैठत धनी आए ।

चौक चबूतरे इन भोम के, कै जुगत क्यों कही जाए ॥ १५

इस प्रकार यहाँ पर एक ही स्थानके चौकका वर्णन हुआ है। धामधनी यहाँ आकर विराजमान होते हैं। इस भूमिकामें ऐसे अनेक चौक तथा चबूतरे हैं। शब्दोंके द्वारा उनकी कलात्मक शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है।

ऊपर थंभ झलकत, और तले भोम झलकार ।

सामग्री सब झलकत, और थंभ दिवालों द्वार ॥ १६

यहाँ पर ऊपर स्तम्भ प्रतिबिम्बित होते हैं जिससे नीचेकी भूमि प्रकाशित होती है. स्तम्भ, दीवार तथा द्वार आदि यहाँकी सभी सामग्रियाँ प्रकाशमय हैं.

क्यों कहूं हिसाब मंदिरन को, दिवालां चौक थंभ कै लाख ।

अमोल अतोल अनगिनती, कछू कह्यो न जाए मुख भाख ॥ १७

यहाँके मन्दिर, दीवार, चौक, स्तम्भ आदिकी गणना कैसे करें. ये तो लाखोंकी संख्यामें हैं. यहाँकी अमूल्य, अतुलनीय तथा असंख्य निधिका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है ।

ए सुख इन मंदिरन में, वाही सरूपों सुध ।

विध विध बिलास इन धाम को, कहा कहे जुबां इन बुध ॥ १८

इन दिव्य मन्दिरोंसे प्राप्त होनेवाले आनन्दकी अनुभूति मात्र ब्रह्मात्माओंको ही हो सकती है. नश्वर बुद्धि तथा जिह्वाके द्वारा परमधामके विविध आनन्द विलासका वर्णन कैसे हो सकता है ?

जो वस्तु जिन मिसल की, सोई बनी ठौर तित ।

सेज्या संदूक सिंघासन, कहूं केती कै जुगत ॥ १९

जो वस्तु जहाँ पर शोभायुक्त हो सकती है वहाँ पर वही वस्तु शोभायमान है. यहाँ पर शय्या, सन्दूक, सिंहासन आदि जिस कलात्मक ढङ्गसे सुशोभित हैं उनका वर्णन नहीं हो सकता है.

कै जुगतें कै जिनसें, कै सामग्री सनंध ।

क्यों करूं वरनन धाम को, ए झूठी देह मत मंद ॥ २०

यहाँ पर विभिन्न सामग्रियाँ युक्तिपूर्वक ढङ्गसे सजी हुई हैं. इस नश्वर देहकी अल्पबुद्धिके द्वारा ऐसे दिव्य परमधामका वर्णन कैसे हो सकता है ?

कै वेली एक दिवाल में, कै बेल फूल तिन पात ।

तिन पात पात कै नंग हैं, एक नंग रंग कह्यो न जात ॥ २१

यहाँकी एक-एक दीवारमें अनेक लताएँ चित्रित हैं. उन एक-एक लताओंमें

अनेक फूल तथा पत्ते शोभायमान हैं. उनके पत्ते-पत्तेमें अनेक रत्न हैं. उनमें एक रत्नके रङ्गका भी वर्णन नहीं हो सकता है.

पात पात को देख के, हंसत बेल संग बेल ।

सैन करें पंखी पंखी सों, जानो दौड करसी अब केल ॥ २२

लताओंके इन प्रकाशमान पत्तोंको देखकर ऐसा लगता है मानों एक लता दूसरी लतासे हँस रही हो. इन दीवारों पर चित्रित पशुपक्षी भी एक-दूसरेको सङ्केत करते हुए दिखाई देते हैं. ऐसा लगता है मानों, ये अभी दौड़कर खेलने लग जाएँगे.

फूल फूल कै पांखडी, तिन हर पांखडी कै नंग ।

नंग देख नंग हंसत, फूल फूल के संग ॥ २३

यहाँके प्रत्येक पुष्पमें अनेक पुष्पदल हैं. प्रत्येक पुष्पदलमें अनेकों रत्न सुशोभित हैं. ऐसा लगता है मानों, ये रत्न तथा पुष्प एक दूसरेको देखकर परस्पर हँस रहे हो.

अपनी अपनी जात ले, ठाढे हैं सकल ।

करने खुसाल धनीयको, करत हैं अति बल ॥ २४

यहाँ पर विभिन्न जातिके रत्न अपने-अपने समूह सहित धामधनीको प्रसन्न करनेका प्रयत्न करते हैं.

त्थों त्थों जोत बढत है, ज्यों ज्यों देखें नूर जमाल ।

नाचत हरखत हंसत, देख धनी को खुसाल ॥ २५

जैसे-जैसे श्रीराजजीके दर्शन करते हैं वैसे-वैसे उनकी ज्योति प्रदीप्त होती है. ऐसा प्रतीत होता है मानों धामधनीको प्रसन्न मुद्रामें देखकर ये रत्न भी स्वयं प्रसन्न होकर हँसते हुए नाच रहे हों.

करें खुसाल धनीय को, होए आप खुसाली हाल ।

ए सोभा इन मुख क्यों कहूं, ए देखे सब मछराल ॥ २६

ये सभी स्वयं प्रसन्न होकर धामधनीको प्रसन्न करते हैं. धामधनीके

मुखकमलको देखकर ये सभी आनन्दित होते हैं. उनकी इस शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा कैसे करूँ ?

कै पसु पंखी जवेरन के, कै रंग विरंग कै विध ।

जानों के खेल पर सब खडे, ए क्यों कही जाए सनंध ॥ २७

यहाँ पर चित्रित विभिन्न रत्नोंके पशुपक्षी विभिन्न रङ्गोंमें सुशोभित हैं. ऐसा प्रतीत होता है ये सभी खेलने के लिए तैयार होकर खड़े हैं. इनकी शोभाका वर्णन कैसे करें ?

होत कछू पडताल पाउं से, बोलें सब स्वर अपनी बान ।

पसु पंखी देखे बोलते, सब आप अपनी तान ॥ २८

जब पाँवसे भूमि पर थोड़ा भी आघात पड़ता है तब ये सभी पशुपक्षी अपनी-अपनी वाणीसे मधुर स्वर निकालते हैं. इस प्रकार यहाँ पर चित्रित पशुपक्षी अपनी तानके साथ गाते हुए दिखाई देते हैं.

कछू थोडे ही पडताल से, धाम सबद धमकार ।

बोलें पसु पंखी बानी नई नई, जुबां जुदी जुदी अनेक अपार ॥ २९

यहाँ पर पाँवकी हल्की-सी तालसे ही सम्पूर्ण धाम प्रतिध्वनित होता है. ऐसा लगता है, मानों ये पशुपक्षी विभिन्न स्वरोंमें अलग-अलग प्रकारका गायन कर रहे हैं.

जिमी चेतन बन चेतन, पसु पंखी सुध बुध ।

थिर चर सबे चेतन, याकी सोभा है कै विध ॥ ३०

परमधामकी दिव्य भूमि तथा वन आदि सभी चेतनमय हैं. यहाँके पशुपक्षीकी सुधि तथा बुद्धि भी विलक्षण है. यहाँके चल-अचल सभी चैतन्य हैं. इनकी विविध शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

तो कह्या थावर चेतन, अपनी अपनी मिसल ।

ए अंतर आंखें खुले पाइए, पर आतम सुख नेहेचल ॥ ३१

परमधामके सभी स्थावर पदार्थ भी चैतन्य कहलाते हैं. अपने-अपने समूहमें

ये सभी चेतन हैं. किन्तु अन्तर्दृष्टि खुलने पर ही पर -आत्माके अखण्ड आनन्दका अनुभव किया जा सकता है.

एक थंभ कै चित्रामन, हर चित्रामन कै नकस ।

नकस नकस कै पांखडी, जो देखों सोई सरस ॥ ३२

यहाँके एक स्तम्भमें भी अनेक चित्र अङ्कित हैं. प्रत्येक चित्रमें अनेक प्रकारसे चित्रकारी की हुई है. प्रत्येक चित्रकारीमें अनेक पुष्पदल हैं जो एकसे एक सुन्दर दिखाई देते हैं.

तिन हर पांखडी कै कांगरी, हर कांगरी कै नंग ।

एक नंग को वरनन ना होवहीं, तो सारे थंभ को क्यों कहूं रंग ॥ ३३

इन प्रत्येक पुष्पदलमें अनेक काँगरी सुशोभित हैं एवं प्रत्येक काँगरीमें अनेक रत्न जड़ाया है. इन रत्नोंमें-से मात्र एक रत्नका भी वर्णन नहीं हो सकता तो सभी स्तम्भों पर प्रकाशित हो रहे रत्नोंका वर्णन किस प्रकार किया जाए.

मोर मैना मुरग बांदर, कै जुदी जुदी सब जुबान ।

नेक सबद उठे भोम का, बोलें आप अपनी बान ॥ ३४

इन स्तम्भों पर चित्रित मोर, मैना, मुर्ग, वानर आदि सभी अपनी-अपनी वाणीमें बोलते हुए प्रतीत होते हैं. ये सभी हल्की-सी आहट सुनते ही अपनी-अपनी ध्वनिको मुखरित करते हैं.

एक सबद के उठतें, उठें सबद अनेक ।

पसु पंखी जो चित्रामन के, कै विध बोलें विवेक ॥ ३५

यहाँ पर उच्चारित मात्र एक शब्द भी अनेक शब्दोंमें प्रतिध्वनित होता है. इस प्रकार चित्र पर अङ्कित पशुपक्षी विभिन्न प्रकारकी वाणी बोलते हुए लगते हैं.

कै जुदे जुदे रंगों पुतली, कै बने चित्रामन ।

कै विध खेल जो खेलहीं, मुख मीठी बान रोसन ॥ ३६

इन स्तम्भ आदिमें विभिन्न रत्नोंकी अनेक पुतलियाँ चित्रित हैं. ये सभी अनेक

प्रकारसे क्रीड़ा करती हुई मुखसे कर्णप्रिय मधुर वाणी बोलती हैं।

सो भी खेल बोल स्वर उठत, रंग रस होत रमन ।

सोभा सुंदरता इनकी, केहे न सकौं मुख इन ॥ ३७

इन पुतलियोंकी क्रीड़ासे जो ध्वनि उठती है उसका अपना ही रङ्ग तथा अपना ही आनन्द होता है। इस सुन्दरताको शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।

चित्रामन सारे चेतन, सब लिए खडे गुमान ।

जोत लरत है जोत सों, कोई सके न काहूं भान ॥ ३८

चित्र पर अङ्कित ये सभी पशुपक्षी चैतन्यके समान स्वाभिमानके साथ वहाँ पर स्थित हैं। इनसे उठने वाली ज्योतिर्मयी किरणें परस्पर स्पर्धा करती हुई एक दूसरेके प्रकाशको परास्त नहीं कर सकतीं।

करे जोत लडाई जोत सों, तेज तेज के संग ।

किरन किरन सों लडत हैं, आठों जाम अभंग ॥ ३९

इन पशुपक्षियोंकी ज्योति परस्पर द्वन्द्व करती हैं। इनका तेज तथा उसकी किरणें आठों प्रहर परस्पर स्पर्धा करती हैं।

नूर नूर जहूर सों, करत सफजंग दोए ।

एक दूजे के समनुख, ठेल न सके कोए ॥ ४०

इन सभी चित्रोंका तेज तथा प्रकाश परस्पर संग्राम करता हुआ प्रतीत होता है किन्तु एक दूसरेको परास्त नहीं कर सकता।

जंग करत अंगों अंगें, साथ नंग के नंग ।

रंग सों रंग लडत हैं, तरंग संग तरंग ॥ ४१

इन चित्रोंके अङ्ग-प्रत्यङ्ग तथा उनमें जड़ायमान रत्न परस्पर स्पर्धा करते हैं। इतना ही नहीं उन रत्नोंके रङ्ग तथा उनसे उठते हुए प्रकाश तरङ्ग भी परस्पर स्पर्धा करते हैं।

एक रंग को नंग कहावहीं, तामें कै रंग उठत ।

ताको एक रंग कह्यो न जावहीं, आगे कहा कहूं विध इत ॥ ४२

यहाँ पर एक रङ्गका कहलानेवाले रत्नसे भी अनेक रङ्गोंकी किरणें उठतीं हैं. उसके एक रङ्गका भी विवरण नहीं कहा जा सकता तो इससे अधिक इनकी विशेषताओंका क्या वर्णन करें ?

जित देखूं तित सूरमें, एक दूजे थें अधिक देखाए ।

कै ऊपर तले कै बीच में, याको जुध न समाए ॥ ४३

जहाँ भी देखें वहीं पर ये रत्न योद्धाकी भाँति एक दूसरेसे अधिक ओजपूर्ण दिखाई देते हैं. चाहे ये रत्न ऊपर-नीचे तथा मध्यमें जड़े हुए क्यों न हों उनकी परस्पर स्पर्धा बनी रहती है.

तेज जोत उदोत आकास लों, किरना न काहूं अटकाए ।

देख देख जंग निरने कियो, कोई पीछा न पांड फिराए ॥ ४४

इन रत्नोंका तेज तथा उनसे उठने वाली ज्योतिर्मयी किरणें सम्पूर्ण आकाशको आच्छादित करतीं हैं. इनके इस पारस्परिक संग्रामको देखकर यह निर्णय लिया कि इन रत्नोंमें कोई भी अपनी पराजय स्वीकार नहीं करेगा.

चलते हलते धाम में, सबे होत चलवन ।

कै कोट जुबां इत क्या कहे, कै विध थंभ दिवालन ॥ ४५

धाममें परस्पर हलन-चलनसे दीवार तथा स्तम्भों पर अङ्कित इन चित्रोंमें भी स्फूर्णा होती है. इस प्रकार करोड़ों जिह्वासे भी इन स्तम्भों तथा दीवालोंनेकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता.

एक सरूप के नख की, सोभा वरनी न जाए ।

देख देख के देखिए, तो नेत्र क्योंए न त्रपताए ॥ ४६

परमधामके दिव्य स्वरूपके एक नखमात्रकी शोभा भी शब्दोंमें व्यक्त नहीं की जा सकती. इन्हें जितनी बार भी देखते हैं ये नेत्र किसी भी प्रकार तृप्त नहीं होते.

तो सारे सरूप की क्यों कहूं, और क्यों कहूं इनों के खेल ।

बन बेली पसू पंखी, माहें करें रंग रस केल ॥ ४७

फिर इन सभी स्वरूपों तथा उनकी क्रीड़ाओंके सन्दर्भमें क्या कहा जाए? यहाँके वृक्ष, लताएँ, पशुपक्षी सभी परस्पर क्रीड़ा करते हुए आनन्द प्रदान करते हैं.

जात न कही एक सरूप की, अति सोभा सुंदर मुख ।

तेज जोत रंग क्यों कहूं, ए तो साख्यातों के सुख ॥ ४८

परमधामकी एक जातिके इन स्वरूपोंमें किसी एककी शोभा, सौन्दर्य एवं दिव्य तेजका वर्णन नहीं हो सकता तो उन सभीकी तेजस्विता तथा ज्योतिर्मय रङ्ग, रूपकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? ये तो साक्षात् धामधनीके प्रत्यक्ष सुखका अनुभव करते हैं.

सोभा जाए ना कही वृक्षपात की, तो क्यों कहूं फल फूल वास ।

क्यों होए वरनन सारे वृक्ष को, ए तो सुख साथ को उलास ॥ ४९

जब परमधामके एक वृक्ष तथा उसके एक पत्तेमात्रकी शोभा भी व्यक्त नहीं की जा सकती तो फिर उसके फल तथा फूलसे आने वाली सुगन्धको कैसे व्यक्त किया जा सकता है ? इस प्रकार वनके सम्पूर्ण वृक्षोंकी शोभाका वर्णन तो हो ही नहीं सकता. इस प्रेमानन्द उल्लासको केवल ब्रह्मात्माएँ ही हृदयङ्गम कर सकती हैं.

जो एता भी कहा न जावहीं, तो क्यों कहूं थंभ चित्राम ।

पर आतम हमारियां, ए तिनके सुख आराम ॥ ५०

जब इतना भी वर्णन नहीं हो पाता तो स्तम्भों पर अङ्कित चित्रकारीके सन्दर्भमें क्या कहा जाए ? हम ब्रह्मात्माओंकी पर -आत्मा ही परमधामके इन शाश्वत सुखोंकी अधिकारिणी है.

एक थंभ की एह विध कही, ऐसे कै थंभ दिवालें द्वार ।

फेर देखों एक भोम को, तो अतंत बडो विस्तार ॥ ५१

अभी तो एक स्तम्भकी शोभाकी ही चर्चा हुई है. ऐसे तो अनेक स्तम्भ,

दीवार तथा द्वार वहाँ पर शोभायमान हैं. मात्र एक भूमिकाको भी चारों ओरसे देखेंगे तो उसकी शोभाका विस्तार अनन्त लगेगा.

पार नहीं थंभन को, नहीं दिवालौ पार ।

ना कछू पार सीढियन को, ना पार कमाडी द्वार ॥ ५२

एक भूमिकामें शोभायमान स्तम्भोंका भी कोई पारापार नहीं है और न ही दीवारकी शोभाका कोई पारावर है. इसी प्रकार सीढियों, द्वार तथा उनकी किवाड़की शोभाकी भी कोई सीमा नहीं है.

नवों भोमका तुम साथ जी, कर देखो आतम बिचार ।

क्यों आवे जुबां इन अकलें, ए जो अपारै अपार ॥ ५३

इस प्रकार हे सुन्दरसाथजी ! नवों भूमिकाकी शोभाके विषयमें हृदयपूर्वक विचार करो. यह अपार शोभा इस अल्पबुद्धि तथा सांसारिक जिह्वाके द्वारा कैसे व्यक्त हो सकती है.

चित्रामन एक थंभ की, क्यों कहूं केते रंग ।

बन बेली फूल पात की, जुदी जुदी जिनसों नंग ॥ ५४

एक ही स्तम्भमें अङ्कित चित्रकारीमें ही अनेकों रङ्ग हैं, उनके कितने रङ्गोंका वर्णन करें ? वहाँ पर तो वन, वृक्षों पर चढ़ी हुई लताएँ, उनके फूल, पत्ते आदि पर विभिन्न रत्न जड़े हुए हैं.

पसु पंखी हाथ पाउं नैन के, कै विध केस परन ।

कै खेल पुतलियन के, कै वस्तर कै भूषन ॥ ५५

इन पशुपक्षियोंके हाथ, पाँव, नेत्र, पङ्ख तथा रोमावलीकी शोभा अतुलनीय है. साथ ही इन पुतलियोंकी क्रीड़ाएँ तथा वस्त्र आभूषण आदिकी शोभा भी अद्भुत है.

कै विध सोभा भोम की, कै रंग नंग नकस अनेक ।

कै ठौर अलेखे जडित में, जो देखों सोई नेक से नेक ॥ ५६

इन भूमिकाओंकी शोभा अद्वितीय है, जहाँ पर विभिन्न रङ्गोंके रत्नों पर चित्रकारी हुई है. अनेक स्थानों पर असंख्य रत्न जड़ायायमान है. उनमें जिसको

भी देखते हैं वही एकसे बढ़कर सुन्दर लगता है।

ए कही न जाए एक जिनस, सो जिनस अखंड अलेखें ।

सत सरूप सुख लेत हैं, देख देख के देखें ॥ ५७

मात्र एक सामग्रीकी शोभा भी शब्दोंमें व्यक्त नहीं हो सकती, ऐसी असंख्य सामग्रियाँ यहाँ पर हैं। उनको बार-बार देखकर सत्य स्वरूप ब्रह्मात्माएँ उनके आनन्दका अनुभव कर सकती हैं।

अति सोभा सुंदर ऊपर की, कै नकस बैल फूल ।

कै जिनसें कहा कहूं, होत पर आतम सनकूल ॥ ५८

इन भूमिकाओंके ऊपर छतकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है। उन पर लताओं तथा पुष्पोंकी अनेक चित्रकारियाँ हैं। यहाँ पर इतने विविध चित्र अङ्कित हैं कि उन्हें देखकर पर-आत्माको अपार आनन्दका अनुभव होता है।

कै जिनसें जुगत थंभन में, कै जिनसें जुगत दिवाल ।

कै जिनसें द्वार क्यों कहूं, ए जो जिनस जुगत पडसाल ॥ ५९

यहाँके स्तम्भों, दीवारों, द्वारों तथा खुले स्थानों (पडसाल) में भी विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी है।

कै जिनसें जुगत सीढियां, कै जुगतें जिनसें मंदर ।

कै जिनस झरोखे जालियां, कै जिनस जुगत अंदर ॥ ६०

इसी प्रकार यहाँकी सीढ़ियाँ, मन्दिर, झरोखे, गवाक्ष (रोशनदान) आदिमें अन्दरके भागमें सर्वत्र विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी अङ्कित है।

सामग्री कै सनंधें, कै जिनसें सेज्या सिंघासन ।

कै सनंधें चौकी सन्दूकें, कै विध भरे भूषण ॥ ६१

यहाँ पर विभिन्न प्रकारकी सामग्रियाँ हैं। सिंहासन, चौकी, सन्दूक तथा उनमें विभिन्न प्रकारके आभूषण भरे हुए हैं।

कै जिनसों वस्तर भरे, कै विध विध के विवेक ।

बस्तर भूषण किन विध कहूं, कै विध जुगत अनेक ॥ ६२

इन सन्दूकोंमें विभिन्न प्रकारके सुन्दर वस्त्र विवेकपूर्वक भरे हुए हैं। इन वस्त्रों

तथा आभूषणोंकी अनुपम शोभाका वर्णन किन शब्दोंमें करें. विभिन्न प्रकारकी ये सामग्रियाँ अति सुन्दर लगती हैं.

कै विध प्याले सीसे सीकियां, कै डब्बे तबके दिवाल ।

सोभित सुंदर मंदिरन में, कै लटकत रंग रसाल ॥ ६३

यहाँ पर अनेक प्रकारके प्याले, दर्पण, छीके, डिब्बे, तस्तरियाँ आदि मन्दिरके दीवारों पर शोभायमान हैं. इसी प्रकार कई रसीले पदार्थ भी छीकों पर लटक रहे हैं.

कै जुगतें हिडोलों मंदिरों, कै जंजीरा झलकत ।

माहें डब्बे पुतलियां झनझनें, कै विध झूलत बाजत ॥ ६४

यहाँ पर मन्दिरोंमें अनेक प्रकारके झूले सुशोभित हैं. उनमें विभिन्न प्रकारकी शृङ्खलाएँ (जञ्जीरें) झलकती हैं. इन झूलोंमें लगे हुए डिब्बे पुतलियाँ आदि झूला झूलते समय परस्पर बजने लगते हैं.

कै मिलावे साथ के, सुंदर झरोखे झांकत ।

सोभा देखत बन की, मोहोल इन समें सोभित ॥ ६५

यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ अलग-अलग समूहमें होकर विभिन्न झरोखोंसे बाहरके दृश्योंका अवलोकन करती हुई वनप्रदेश तथा उनमें स्थित प्रासादोंकी शोभा देखती हैं.

दौडत खेलत सखियां, एक साम सामी आवत ।

हांसी रमूज एक दूजीसों, अरस परस ल्यावत ॥ ६६

कतिपय सखियाँ दौड़ती हुई, खेलती हुई आमने-सामने आ जाती हैं. परस्पर हास्यविनोद करती हुई पारस्परिक आनन्दका अनुभव करती हैं.

नवों भोम के मंदिरों, माहें सखियां खेल करत ।

चारों जाम हांस विलास में, रंग रस दिन भरत ॥ ६७

इस प्रकार रङ्गभवनकी नवों भूमिकाओंके मन्दिरोंमें सखियाँ परस्पर क्रीड़ा करती हैं. दिनके चारों प्रहर प्रियतम धनीके साथ हास्यविलासके रङ्गरसमें ये सभी सखियाँ निमग्न होती हैं.

झरोखे नवों भोम के, मिल मिल बैठत जाए ।

निस दिन हेत प्रीत चितसों, मन वांछित सुख पाए ॥ ६८

सभी सखियाँ नवों भूमिकाओंमें स्थित झरोखों पर एक साथ मिलकर बैठती हैं। इस प्रकार रात-दिन प्रेम तथा प्रीतिपूर्ण हृदयसे इच्छित सुखका अनुभव करती हैं।

विध विध के सुख वन में, सैयां खेलें झरोखों माहिं ।

वाउ ठंढा प्रेमल गरमीय में, सुख लेवें सीतल छाहिं ॥ ६९

वनमें बने हुए प्रासादोंमें भी सखियाँ झरोखे पर बैठकर विभिन्न सुखोंका अनुभव करती हैं। ग्रीष्म ऋतुके समय शीतल मन्द पवनके झोकेमें वृक्षोंकी शीतल छायामें बैठकर प्रेमपूर्वक आनन्दका अनुभव करती हैं।

सुख वरसाती और विध, बीज चमके घटा चौफेर ।

सेहेरां गरजत बूंदें वरसत, घटा टोप लिया वन घेर ॥ ७०

वर्षा ऋतुका आनन्द कुछ और ही प्रकारका होता है। उस समय आकाशमें श्यामल घटाएँ छा जाती हैं एवं चारों ओर बिजली चमकती है। मेघोंकी गर्जना होने पर वर्षाकी बूंदें टपकती हैं। इस समय घनघोर घटाओंसे पूरा वनप्रदेश आच्छादित होता है।

ज्यों ज्यों अंबर गाजत, मोर कोयल करें टहुंकार ।

भमरा तिमरा गान गुंजत, स्वर मीठे पंखी मलार ॥ ७१

ज्यों-ज्यों आकाशमें मेघोंकी गर्जना होती है। त्यों-त्यों मयूर नृत्य करने लगते हैं तथा कोकिलका कण्ठ मुखरित होता है। भ्रमर तथा झींगूर भी गुन-गुनाने लगते हैं एवं पशुपक्षी मीठे स्वरोंमें मल्हार राग अलापते हैं।

सीत काले सुख धूप को, पहलें पोहोंचत झरोखों आए ।

इत आराम घडी दोए तीन का, प्रभात समें सुखदाए ॥ ७२

शीत ऋतुमें सुहाने धूपका आनन्द लेनेके लिए सभी ब्रह्मात्माएँ पहले ही झरोखोंमें पहुँच जाती हैं। प्रभातकी मङ्गल वेलामें इन झरोखोंमें बैठकर दो-तीन घड़ीके लिए विश्राम करती हैं।

दौड़ें कूदें सखियां ठेकत, कै अंग अटपटी चाल ।

मटके चटके पांउ लटके, अंग मरोरत मुख मछराल ॥ ७३

कभी ये ब्रह्मात्माएँ दौड़ती हैं, कूदती हैं, उछलती हैं तथा अङ्ग-प्रत्यङ्गोंसे अनेक मुद्राएँ बनाती हुई अटपटी चालमें चलती हैं. कतिपय तो मटकती हैं, चटकती हैं एवं पाँवके तालके साथ अङ्गोंसे ऐसा हावभाव बनाती हैं कि उनका प्रभावपूर्ण मुखकमल भी खिल उठता है.

जुदे जुदे जुथों प्रेम रस, अलबेलियां अति अंग ।

हंसत आवत धनी के चरनों, रस भरियां अंग उमंग ॥ ७४

ये सखियाँ अलग-अलग समूहोंमें प्रेमविभोर होती हुई अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गमें मादकता लिए मुस्कुराती हुई अपने प्रियतम धनीके चरणोंमें आकर नमन करती हैं. उस समय आनन्दसे ओत-प्रोत इनका अङ्ग उमङ्गसे भर जाता है.

कै हाथों फिरावत छडियां, कै हाथों फिरावत फूल ।

कै आवत गेंद उछालती, कै आवत हैं इन सूल ॥ ७५

इस समय कतिपय ब्रह्मात्माएँ अपने हाथोंमें छड़ी घुमाती हुई, कतिपय पुष्पोंको फिराती हुई तो कतिपय गेंद उछालती हुई एक दूसरेका अनुसरण करती हुई चली आती हैं.

सब आए आए चरनों लगें, एक एक आगूं दूजी के ।

ए बडा सुखकारी समया, सोभा लेत इत ए ॥ ७६

इस प्रकार सभी सखियाँ एक-दूसरेसे आगे होती हुई आकर धामधनीके चरणोंमें प्रणाम करती हैं. यह समय अत्यन्त आनन्ददायी होता है. उसकी शोभा शब्दोंकी सीमामें नहीं बँध सकती.

बात बडी देख देखिए, प्रेम प्रघल भरपूर ।

प्रेम अंग कह्यो न जावहीं, सूरों में सूर सूर ॥ ७७

इस अद्वितीय शोभाको बार-बार देखिए. इस समय शाश्वत प्रेमका प्रवाह भरपूर प्रवाहित होता है. इस प्रेमके स्वरूपका वर्णन नहीं हो सकता. मानों यह शूरवीरोंसे भी अधिक शक्तिशाली है.

रंग नंग नकस न जाए कहे, तो क्यों कही जाए थंभ दिवालें द्वार ।

तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार ॥ ७८

जब परमधामके एक रत्नका रङ्ग तथा उसमें चित्रित चित्रकारीका भी वर्णन नहीं हो सकता तो वहाँके स्तम्भ, दीवार तथा द्वारोंकी शोभाका वर्णन कैसे हो सकता है ? उन सम्पूर्ण सामग्रियोंकी शोभा शब्दोंमें कैसे सीमित हो सकती है जब उन सामग्रियोंका ही कोई पारावार नहीं है।

रंग नंग नकस अनगिनती, कह्यो न जाए सुमार ।

ज्यों बट बीज माहे खडा, कर देखो आतम विचार ॥ ७९

वहाँ पर मात्र एक रत्नमें भी रङ्ग तथा चित्रकारी असंख्य होती है, जिसकी कोई सीमा नहीं होती। जैसे एक छोटे-से बीजमें विशाल वटवृक्ष छीपा हुआ होता है उसी प्रकार इस थोड़े-से वर्णनमें विशाल शोभाका चिन्तन कर आत्मा द्वारा अनुभव करना चाहिए।

कै दिवालें कै चौक थंभ, कै मंदिर कमाडी द्वार ।

एक भोम को वरनन ना केहे सकों, ए तो नवों भोम विस्तार ॥ ८०

परमधाम-रङ्गभवनमें अनेक दीवारें, चौक स्तम्भ, मन्दिर, किवाड़ तथा द्वार हैं। जब एक भूमिकाका वर्णन भी असम्भव है, इस रङ्गभवनमें तो ऐसी नौ-नौ भूमिकाओंका विस्तार है।

दसमी भोमें चांदनी, ऊपर कांगरी जोत ।

तेज पुंज इन नूर को, जानो आकास सब उदोत ॥ ८१

दसमी भूमिकामें चाँदनी शोभायमान है। उसके चारों ओर किनारों पर काँगरी प्रकाशमान है। इसके अलौकिक तेजपुञ्जसे पूरा आकाश ही द्योतित होता है।

हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूं मुख जेता ।

नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता ॥ ८२

वहाँके स्वर्ण, रत्न तथा उनके रङ्ग आदिकी विविधताके विषयमें जो कुछ कहा जा सकता था वह कह दिया। उनके दिव्य तेजकी झलक तुच्छ बुद्धि तथा जिह्वाके द्वारा इतनी ही व्यक्त हो सकी है।

महामत कहे सुनो साथजी, बुध जुबां करे वरनन ।

ले सको सो लीजियो, ए नेक कहा तुम कारन ॥ ८३

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! सुनो, अल्पमतिके अनुसार जिह्वाके द्वारा इस प्रकारका वर्णन हुआ है. तुम्हारे लिए ही यहाँ पर लेशमात्र वर्णन किया है. इसमें-से जो कुछ ग्रहण कर सकते हो करो.

प्रकरण ३८ चौपाई २२६२

प्रेम को अंग वरनन

प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन ।

प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुम्हें अपने मूल घर दिव्य परमधामके प्रेमका परिचय देता हूँ. यह प्रेम अक्षरातीत धनी श्रीराजजीका अङ्ग है. उनके अतिरिक्त अन्य कहीसे भी यह प्राप्त नहीं होता है.

प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्म सृष्ट ल्याई इत ।

ए प्रेम इनों जाहेर किया, ना तो प्रेम दुनी में कित ॥ २

ब्रह्मात्माएँ ही यह प्रेम लेकर इस जगतमें अवतीर्ण हुई हैं. इन्होंने ही जगतमें प्रेम प्रकट किया है. अन्यथा संसारमें अभी तक कहीं भी प्रेम नहीं था.

ए दुनियां पूजे त्रिगुन को, करके परमेस्वर ।

सास्त्र अरथ ऐसा लेत हैं, कहे कोई नहीं इन ऊपर ॥ ३

इस जगतके मनुष्य त्रिगुण स्वरूप (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को ही परमेश्वर मानकर उनकी पूजा करते हैं. शास्त्रोंका अर्थघटन भी वे इसी प्रकार करते हैं कि त्रिगुणस्वरूपके ऊपर अन्य कोई भी नहीं है.

सुक व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास ।

प्रेम वसत ब्रह्म सष्टि में, जो खेले सरूप ब्रज रास ॥ ४

जब कि व्यासजी तथा शुकदेवजीने श्रीमद्भागवतमें स्पष्ट कहा है कि त्रिगुण स्वरूपमें नितान्त प्रेम नहीं है. यह तो ब्रह्मसृष्टियोंके हृदयमें ही अन्तर्निहित है जिन्होंने ब्रज तथा रासकी लीला की है.

तो नवधा से न्यारा कहा, चौदे भवन में नाहिं ।

सो प्रेम कहाँ से पाइए, जो रहेत गोपिका माहिं ॥ ५

इसीलिए प्रेमको नवधा भक्तिसे श्रेष्ठ कहा है क्योंकि इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमें यह प्राप्य नहीं है. जिसका स्थान ही गोपियोंका हृदयस्थल है ऐसे प्रेमकी सहज एवं स्वाभाविक अनुभूति अन्यत्र कहाँसे प्राप्त हो सकती है ?

नाम खुदाएका कुरान में, लिख्या है आसक ।

पढे इसक औरों में तो कहे, जो हुए नहीं बेसक ॥ ६

कुरानमें भी परमात्माको ब्रह्मात्माओंका प्रेमी (आसिक) कहा है. कुरानके पाठक कुरानको पढ़ने पर भी इसके गूढ़ रहस्योंको न समझते हुए प्रेमको कहीं अन्यत्र ही मानते हैं. इसीलिए वे अभी तक भी सन्देह रहित नहीं हो सके हैं.

आसिक नाम अल्लाह का, तो लिख्या इमदाए ।

इसक न पाइए और कहूं, बिना एक खुदाए ॥ ७

कुरानमें आरम्भसे ही अल्लाहको इसीलिए आसिक कहा है कि उनके अतिरिक्त अन्य कहींसे भी प्रेमको प्राप्त नहीं किया जा सकता.

पढे तब पावें इसक को, जब खुले माएने मगज ।

इसक बिना करें बंदगी, कहें हम टालत हैं करज ॥ ८

कुरानको पढ़नेवाले प्रेमके रहस्यको तभी समझ सकते हैं जब कुरानका गूढ़ रहस्य शुद्धरूपमें प्रकट हो जाए. इसीलिए वे प्रेमके बिना ही परमात्माकी उपासना करते हैं और उपासनाको भी ऋण समझकर उससे उऋण होनेमें लगे हुए हैं.

मगज न पाया माएना, दुनी पढे कतेब वेद ।

प्रेम दुनी में तो कहे, जो पावत नाहीं भेद ॥ ९

यद्यपि संसारके अनेक व्यक्ति वेद तथा कतेब आदि ग्रन्थोंका अध्ययन करते हैं तथापि वे उनमें निहित गूढ़ अर्थको समझ नहीं पाते. इसीलिए प्रेमके मर्मको समझे बिना वे यही कहा करते हैं कि प्रेम इसी संसारमें है.

प्रेम ब्रह्म दोऊ एक है, सो दोऊ दुनी में नाहिं ।

पढे दोऊ बतावें दुनी में, जो समझत ना सास्त्रों माहिं ॥ १०

प्रेम और ब्रह्म दोनों एक हैं। इसीलिए ये दोनों ही इस नश्वर जगत्‌में नहीं हैं। शास्त्रोंका अध्ययन करने पर भी उनके मर्मको समझे बिना ये लोग यही कहते हैं कि प्रेम और ब्रह्म दोनों इसी संसारमें हैं।

तो न्यारा कहा सबद थे, प्रेम ना मिने त्रगुन ।

कै कोट ब्रह्मांडों न पाइए, प्रेम धाम धानी बिन ॥ ११

इसीलिए प्रेमको शब्दातीत कहा है कि वह त्रिगुण स्वरूपोंमें नहीं है। अक्षरातीत धनी श्रीराजजीके अतिरिक्त यह प्रेम अन्यत्र करोड़ों ब्रह्माण्डोंमें भी प्राप्त नहीं हो सकता है।

प्रेम सबदातीत तो कहा, जो हुआ ब्रह्म के घर ।

सो तो निराकार के पार के पार, सो इत दुनी पावे क्यों कर ॥ १२

प्रेमको इसीलिए शब्दातीत कहा है कि वह ब्रह्मधाममें ही है। इसलिए निराकारके पारसे भी परे दिव्य परमधामके प्रेमको इस नश्वर जगत्‌के प्राणी यहाँ पर कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

प्रेम बताऊं ब्रह्म सृष्टि का, पेहेलें देखो धाम वरनन ।

पीछे प्रेम बताऊं ब्रह्म सृष्टि का, जो धाम धनी के तन ॥ १३

अब मैं ब्रह्मात्माओंके प्रेमका वर्णन करता हूँ इससे पूर्व तुम परमधामका वर्णन देखो। फिर ब्रह्मात्माओंका प्रेम देखना जो स्वयं धामधनीकी अङ्गनाएँ हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जिन सिर नूर जमाल ।

कै कोट ब्रह्मांडों न पाइए, इनका औरै हाल ॥ १४

जो ब्रह्मात्माएँ स्वयं धामधनीके अधीनस्थ हैं उनके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ? वैसे तो करोड़ों ब्रह्माण्डोंमें भी यह प्रेम दिखाई नहीं देता है किन्तु ब्रह्मात्माओंकी स्थिति कुछ और ही है।

क्यों न होए प्रेम इन को, धनी अक्षरातीत जिन सिर ।

ब्रह्मसृष्टि बिना न पाइए, देखो कोट ब्रह्मांडों फिर फिर ॥ १५

जो ब्रह्मात्माएँ अक्षरातीत धनीके संरक्षणमें हैं उनके हृदयमें प्रेम क्यों नहीं होगा. चाहे करोड़ों ब्रह्माण्डोंमें विचरण करके देखो किन्तु ब्रह्मसृष्टिके अतिरिक्त अन्यत्र कही भी प्रेम दिखाई नहीं देगा.

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको धनी राखत रुख ।

धाम मंदिर मोहोलन में, धनी देत सेज्या पर सुख ॥ १६

जिन ब्रह्मात्माओंकी सभी मनोकामनाएँ स्वयं धामधनी पूर्ण करते हैं उनके हृदयमें यह दिव्य प्रेम क्यों नहीं होगा ? धामधनी परमधामके मन्दिरों तथा प्रासादोंमें इन ब्रह्मात्माओंके हृदयरूपी आसन पर विराजमान होकर उन्हें अनन्त सुख प्रदान करते हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, सोहागनियां बड भाग ।

क्यों कहूं इन रूहन की, जाए देत धनी सोहाग ॥ १७

जिन ब्रह्मात्माओंको अक्षरातीत धनीकी सुहागिनी होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है उनके हृदयमें प्रेम क्यों नहीं होगा. इन ब्रह्मात्माओंकी महिमाका गुणगान किन शब्दोंमें किया जाए जिनको स्वयं धामधनी अपना अखण्ड सुहाग (सुख) प्रदान करते हैं.

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके घर यह धाम ।

स्याम स्यामाजी साथ में, जाको इत विश्राम ॥ १८

जिन ब्रह्मात्माओंका निवास ही अखण्ड परमधाममें है एवं जो स्वयं श्रीश्यामश्यामाजीके साथ वहाँ पर विश्राम करती हैं, उनके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इनहीं में रहे हिल मिल ।

सकल अंग सुख देत हैं, धाम धनी के दिल ॥ १९

जो ब्रह्मात्माएँ अर्हर्निश श्रीश्यामश्यामाजीके साथ हिलमिलकर रहती हैं उनके

हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ? स्वयं धामधनी उनके हृदयमें विराजमान होकर उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें अखण्ड सुखका सञ्चार करते हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो रहे इन मोहोलों मंदर ।

दिल दे विहार करत हैं, ले दिल धनी अंदर ॥ २०

जो परमधामके दिव्य प्रासादों तथा मन्दिरोंमें रहती हैं उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम क्यों नहीं होगा ? ब्रह्मात्माएँ अपने हृदयमें धामधनीको बैठाकर स्वयंको उनके चरणोंमें समर्पित करती हुई सदा उन्हींके साथ आनन्द विहार करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके ए वस्तर भूषण ।

साजत हैं सबों अंगों, धाम धनी कारन ॥ २१

जिनके वस्त्र एवं आभूषण ही ऐसे दिव्य हैं तथा जो धामधनीको प्रसन्न करनेके लिए ही अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें शृङ्गार सजाती हैं, उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके ए सोभा सिनगार ।

सबों अंगों सुख धनी को, निस दिन देत समार ॥ २२

जिन ब्रह्मात्माओंकी शोभा एवं शृङ्गार ही ऐसे हैं कि उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग अहर्निश धामधनीकी सेवामें हैं। उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन धनी सों विहार ।

निस दिन केल करत हैं, सब अंगों सुखकार ॥ २३

जो ब्रह्मात्माएँ रात-दिवस धामधनीके साथ आनन्द विहार करती हैं। जिसके कारण उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग आनन्दित होते हैं उनके हृदयमें प्रेम क्यों नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखत धाम धनी ।

रात दिन सुख लेत हैं, सब अंगों आप अपनी ॥ २४

जो ब्रह्मात्माएँ रात-दिन धामधनीके चिन्मय स्वरूपके दर्शन कर अपने अङ्ग-

प्रत्यङ्गोंसे आनन्दका अनुभव करती हैं उनके हृदयमें प्रेम कैसे नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो धनी की सैना लेत ।

नैनो नैन मिलाए के, सामी इसारत देत ॥ २५

जो ब्रह्मात्माएँ धामधनीके सङ्केतको समझती हैं एवं उनके नयनोंसे अपने नेत्र मिलाकर उनको सङ्केत देती हैं, उन ब्रह्मात्माओंमें प्रेम क्यों नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो धाम धनी अरधांग ।

अहेनिस अनभव होत है, इन पीउकी सेज सुरंग ॥ २६

जो ब्रह्मात्माएँ स्वयं धामधनीकी अर्धाङ्गिनी हैं उनके हृदयमें भला प्रेम कैसे नहीं होगा ? वे अपने हृदयरूपी शय्या पर अहर्निश धामधनीके विराजमान होनेका आनन्द अनुभव करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन मेलेमें बैठत ।

अरस परस रंग अहेनिस, नए नए खेल करत ॥ २७

जो ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधाममें मूलमिलावामें समूहके साथ बैठती हैं एवं अपने प्रियतम धनीके साथ हास परिहास करती हुई विभिन्न लीलाएँ करती हैं। उनके हृदयमें भला प्रेम कैसे नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको ए धनी सरूप ।

रात दिन सुख लेत हैं, जाके सब अंग अनूप ॥ २८

जो ब्रह्मात्माएँ धामधनीकी अङ्गस्वरूपा हैं एवं रात-दिन उनसे अखण्ड सुख प्राप्त करती हैं, जिनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग ही अनुपम शोभायुक्त हैं उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको निस दिन एही रमन ।

सब अंगों आनंद होत है, मिलावे धनी इन ॥ २९

जो ब्रह्मात्माएँ अहर्निश धामधनीके साथ आनन्द विहार करती हुई अङ्ग-प्रत्यङ्गोंसे उनके सान्निध्यका अनुभव करती हैं, उनके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन धनी की गलतान ।

निस दिन धनी खेलावत, विध विध के देत मान ॥ ३०

जो अपने प्रियतमके प्रति पूर्णरूपसे समर्पित हुई हों तथा जिनको धामधनी अहर्निश सम्मान देते हुए विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ा करवाते हों उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें भला प्रेम भाव कैसे नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो लेत धनी को सुख ।

आठों जाम सेवा मिने, सदा खडे सनमुख ॥ ३१

जो ब्रह्मात्माएँ धामधनीसे अखण्ड सुख प्राप्त करती रहती हैं एवं आठों प्रहर उनकी सेवाके लिए सर्वदा उनके सम्मुख खड़ी रहती हैं, ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको इन साथ में रस रंग ।

निस दिन विहार करत है, धाम धनी के संग ॥ ३२

जिन ब्रह्मात्माओंको श्रीराजजीका सान्निध्य प्राप्त है एवं उन्हींके रसरङ्गमें डूबी हुई वे अहर्निश उनके साथ ही विहार करती रहती हैं, उनके हृदयमें भला यह प्रेम कैसे सञ्चरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो रहे इन साथ के माहिं ।

निस दिन आराम पीउ का, न्यारे निमख न होवें काहिं ॥ ३३

जो ब्रह्मात्माएँ सर्वदा एकात्मभावसे रहती हैं एवं अहर्निश अपने प्रियतम धनीके आनन्दमें निमग्न रहती हुई क्षण भरके लिए भी उनसे पृथक् नहीं होतीं, उनके हृदयमें प्रेमभाव क्यों नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो धनी को लेवें माहें नैन ।

न्यारे निमख न करें, निस दिन एही सुख चैन ॥ ३४

उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें कैसे प्रेमका सञ्चार नहीं होगा जो अपने प्रियतमकी छविको नयनोंमें बसा लेती हैं एवं क्षणभरके लिए भी उसे अलग नहीं करती तथा जो अहर्निश इसीसे अखण्ड सुखका अनुभव करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो निरखें धनी के अंग ।

पलक ना पीछी फेरत, आठों जाम उछरंग ॥ ३५

जो ब्रह्मात्माएँ सदा सर्वदा प्रियतम धनीके दिव्य स्वरूपको निहारतीं रहतीं हैं तथा आठों प्रहर प्रेमकी मस्तीमें आनन्दविभोर होती हुई पलमात्रके लिए भी धामधनीसे अपनी दृष्टिको नहीं हटातीं हैं, उनके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको याही साथ में खेल ।

मंदिर या मोहोलन में, पीउ सों रमन रंग रेल ॥ ३६

जो आत्माएँ सदा अपने धामकी आत्माओंके साथ मिलकर क्रीड़ा करतीं हैं एवं मन्दिरों तथा प्रासादोंमें अपने प्रियतम धनीके साथ रमण करती हुई आनन्द विनोद करतीं हैं उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे सञ्चरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको मिलाप इन घर ।

विहार करत अंग उछरंग, धनी सों विध विध कर ॥ ३७

जो ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधाममें धामधनीके साथ रहती हुई उनके साथ विभिन्न प्रकारसे आनन्द विहार करती हुई आनन्द विभोर होतीं हैं, उनके हृदयमें प्रेम कैसे प्रकट नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो बैठत पीउ के पास ।

निस दिन रामत रमूज में, होत न वृथा एक स्वास ॥ ३८

जो ब्रह्मात्माएँ सर्वदा धामधनीके सान्निध्यमें रहतीं हैं एवं उनके साथ ही हास-परिहास करती हुई एक श्वासको भी व्यर्थ जाने नहीं देतीं हैं, उनके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा.

क्यों न होए प्रेम इन को, हांस विनोद में दिन जाए ।

सेज्या संग इन धनी के, रस रंग रैन विहाए ॥ ३९

जो ब्रह्मात्माएँ पूरा दिन धामधनीके साथ हास्य विनोदमें व्यतीत करतीं हैं

एवं पूरे रात भी अपने हृदयमें धामधनीको बैठाकर आनन्दका अनुभव करती हैं उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे अङ्कुरित नहीं होगा ?

क्यों न होए प्रेम इन को, जो धाम धनी के तन ।

इन मोहोलों में इन पीउ संग, हींचत हिंडोलन ॥ ४०

उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे प्रकट नहीं होगा जो स्वयं धामधनीकी अङ्गरूपा हैं। वे तो परमधामके विभिन्न प्रासादोंमें लगे हुए झूलोंमें धामधनीके साथ झूलती रहती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो झांकत झरोखे इन ।

झूलत हैं इन पीउ संग, बीच इन हिंडोलन ॥ ४१

उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें प्रेम कैसे नहीं होगा जो सदा इन झरोखोंमें बैठकर बाहरके सभी दृश्योंका अवलोकन करती हैं एवं अपने प्रियतमके साथ बैठकर झूला झूलती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो करें इन हिंडोलों विहार ।

झूलत बोलें इनझनैं, यों मंदिर होत झलकार ॥ ४२

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार कैसे नहीं होगा जो इन झूलोंमें बैठकर अपने प्रियतमके साथ आनन्द विहार करती हैं। झूला झूलते समय झुन-झुनकी कर्णप्रिय ध्वनि सभी मन्दिरोंमें गूँज उठती है।

क्यों न होए प्रेम इन को, ऊपर झूलत हैं यों कर ।

अरस परस इन धनी सों, दोऊ बैठत बांध नजर ॥ ४३

उनके हृदयमें प्रेम कैसे नहीं होगा जो सदा आनन्दमें निमग्न होकर झूला झूलती हैं और एक-दूसरेके सम्मुख बैठकर झूलती हुई अपनी दृष्टि अपने प्रियतमसे सदा मिलाए रखती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो लें इन हिंडोलों सुख ।

झलकत भूषन झूलते, बैठत हैं सनमुख ॥ ४४

उनके हृदयमें प्रेम कैसे नहीं होगा जो सदा अपने प्रियतमके सम्मुख बैठकर

इन झूलोंमें झूलनेका आनन्द लेती हैं। उनके आभूषण भी झूलते समय दिव्य तेजके कारण चमक उठते हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो लें झूलते रंग रस ।

उछरंग अंग न मावहीं, अंक भर अरस परस ॥ ४५

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार कैसे नहीं होगा जो झूला झूलते समय आनन्दका अनुभव करती हैं। वह आनन्द उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें नहीं समाता क्योंकि वे परस्पर एक दूसरेको अङ्कपाशमें लेती हुई आत्म-विभोर होकर झूलती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो झूलते होए मगन ।

फेर फेर प्रेम पूरन, उमंग अंग सबन ॥ ४६

उनके हृदयमें प्रेम अङ्कुरित कैसे नहीं होगा जो झूला झूलते समय प्रेममें मगन हो जाती हैं। प्रेमकी पूर्णताके साथ वे बार-बार अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गमें उमङ्ग लिए झूलती रहती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन हिडोलों झूलत ।

इन समें सोभा मंदिरों, कडे हिडोले खटकत ॥ ४७

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार कैसे नहीं होगा जो इन झूलोंमें बैठकर झूलती हैं। इस समय मन्दिरोंकी शोभा बढ़ जाती है। झूलोंमें लगे हुए कड़े ध्वनि करते हैं तो इनकी प्रतिध्वनि मन्दिरोंमें सुनाई देती है।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पौढत इन पीउ संग ।

अरस परस दोऊ हींचत, अंग लगाए के अंग ॥ ४८

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार कैसे नहीं होगा जो अपने प्रियतमके साथ आलिङ्गनबद्ध होकर झूलती हुई विश्राम करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो लेत इतकी खुसबोए ।

सिनगार कर सेज्या पर, केल करें संग दोए ॥ ४९

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों नहीं होगा जो परमधामके वन-उपवनकी सुगन्ध लेती रहती हैं तथा शृङ्गारके बाद अपने प्रियतमके साथ शय्या पर आनन्दका अनुभव करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन मोहोलों में नेहेचल ।

दोऊ हिडोलों हींचत, करें दिल चाह्या मिल ॥ ५०

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो इन प्रासादोंमें निश्चय ही बड़े आनन्दके साथ रहती हैं। सातवीं और आठवीं भूमिकामें लगे हुए झूलोंमें अपने हृदयकी आकांक्षाके अनुरूप झूलते हुए आनन्द प्राप्त करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो लेवें इन हिडोलों सुख ।

अखंड इन मोहोलन में, लेवें सदा सनमुख ॥ ५१

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो इन झूलोंमें झूलनेका आनन्द लेती हैं और इन प्रासादोंमें रहती हुई अपने प्रियतमके सम्मुख ही शाश्वत सुख प्राप्त करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन हिडोलों पौढत ।

मन चाहे इन मंदिरों, अखंड केल करत ॥ ५२

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो इन झूलोंमें ही विश्राम करती हैं। अपनी इच्छाके अनुकूल ही इन मन्दिरोंमें अखण्ड आनन्द प्राप्त करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो खेलत इन मोहोलन ।

हिडोलों या पलंगों, सुख लेवें चाहे मन ॥ ५३

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो इन प्रासादोंमें विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हैं तथा झूलोंमें अथवा शय्या पर अपनी इच्छानुरूप आनन्द प्राप्त करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन मोहोलों या पलंग ।

चित चाहे सुख अनभवी, इन धनी के संग ॥ ५४

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो इन प्रासादों अथवा शय्या पर अपने धनीके साथ इच्छानुरूप आनन्दका अनुभव करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको देखें धनी नजर ।

प्रेम प्याले पीवत, धनी देत भर भर ॥ ५५

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनको धामधनी श्रीराजजी प्रेमभरी

दृष्टिसे निहारते हैं एवं स्वयं प्याले भर-भर कर अपनी प्रेम सुधाका पान करवाते हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो सेज समारे हेत कर ।

चारों जाम इन धनी को, राखत हैं उर पर ॥ ५६

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतमके लिए बड़े प्रेमसे शय्या सुसज्जित करती हैं एवं चारों प्रहर उनके दिव्य स्वरूपको अपने हृदयरूपी सिंहासन पर आसीन करती हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो फूलन सेज बिछाए ।

चारों पोहोर रंग रेहेस में, केलै करते जाए ॥ ५७

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतमकी शय्याको प्रेमरूपी पुष्पोंसे सुसज्जित करती हैं एवं चारों प्रहर उनके साथ आनन्दमयी क्रीड़ा करती हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको धनी निरखत नैन भर ।

आठों जाम अंग उनके, उलसत उमंग कर ॥ ५८

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनको स्वयं श्रीराजजी अपनी कृपा दृष्टिसे निहारते हैं, जिससे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग आठों प्रहर उमङ्गसे भरे रहते हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, रंग रची सेज समार ।

चारों जाम पीउ सबों अंगों, देत सुख अपार ॥ ५९

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतमकी शय्या बड़े उत्साहसे सम्हारती हैं. धामधनी उन्हें चारों प्रहर अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गका अनन्त सुख प्रदान करते हैं,

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पीउसों पीवें प्रेम रस ।

कर कर साज सबों अंगों, पीउसों अरस परस ॥ ६०

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतमके अखण्ड प्रेमसुधाका पान शाश्वतरूपमें करती रहती हैं. साथ ही विभिन्न शृङ्गारोंसे सुसज्जित होकर अपने प्रियतमके साथ परस्पर आनन्दका अनुभव करती हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पीउ के सुने बंके बैन ।

याके आठों जाम हिरदें मिने, चुभ रहेत पीउ के चैन ॥ ६१

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतमके व्यङ्गपूर्ण वचनोंको सुनकर प्रसन्न होती हैं। धामधनीके ये वचन उनके हृदयमें आठों प्रहर अङ्कित रहते हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके निरखें धनी भूषन ।

याही नजर अंगना अंग में, चुभ रहेत निस दिन ॥ ६२

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनके वस्त्र और आभूषणोंको स्वयं श्रीराजजी प्रेमपूर्वक निहारते हैं। धामधनीकी यह कृपादृष्टि ब्रह्मात्माओंके हृदयको रात-दिन व्याकुल कर देती है।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको पीउ एती दिलासा देत ।

सामी ओ तो अंग इसक के, कोट गुना कर लेत ॥ ६३

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनको स्वयं धामधनी इतनी अधिक सान्त्वना देते हैं। इससे वे अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गमें धनीके प्रेमको करोड़ों गुणा वृद्धि कर लेती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके निरखें धनी वस्तर ।

सो रूहें अपना अंग हैं, लेत खैंच नजर ॥ ६४

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनके वस्त्रोंको स्वयं धामधनी निहारते हैं। यह जानते हुए कि ब्रह्मात्माएँ मेरी अभिन्न अङ्ग हैं, धामधनी अपनी प्रेममयी दृष्टिसे उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करते हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, धनी वरसत निज नजर ।

ताके अंग रोम रोम में, प्रेम आवत भर भर ॥ ६५

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिन पर धामधनीकी अपार कृपाकी वर्षा होती रहती है। जिससे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें तथा रोम-रोममें प्रेमका प्रबल प्रवाह बहने लगता है।

क्यों न होए प्रेम इन को, धनीसों नैनों नैन मिलाए ।

ताको इन सरूप बिना, पल पट दै न जाए ॥ ६६

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतम धनी श्रीराजजीके नयनोंसे अपने नयन मिलातीं रहतीं हैं। ऐसे धामधनीके दिव्य स्वरूपके दर्शनके बिना उनके आँखोंकी पलक भी नहीं झपकतीं हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके धनी निरखें नैन ।

आठों जाम याके अंग में, चूभ रहेत बंके बैन ॥ ६७

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनके नयनोंको स्वयं श्रीराजजी निहारते हैं। उन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें आठों प्रहर धामधनीके उपालम्भपूर्ण वचन चुभे रहते हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पीउ की निरखें बंकी पाग ।

निस दिन नजर न छूटहीं, पीउसों करें रंग राग ॥ ६८

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो धामधनीकी तिरछी पागको निहारतीं रहतीं हैं। उनकी दृष्टि अहर्निश धामधनीसे अलग नहीं होती एवं वे सदैव उनके प्रेमानन्दमें ही मग्न रहतीं हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो लेत पिया के दिल ।

ए निस दिन पिए सुधा रस, पिउसों प्याले मिल ॥ ६९

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतम धनीके हृदयको जीत लेतीं हैं एवं धामधनीसे मिलकर रात-दिन प्रेमसुधाका पान करतीं रहतीं हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके ए मोहोल ए सेज ।

ले सोहाग सबों अंगों, जिन पर धनी को हेज ॥ ७०

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनकी शय्या ही परमधामके दिव्य प्रासादोंमें हैं एवं जो अङ्ग प्रत्यङ्गोंसे धामधनीका सुहाग प्राप्त करतीं हैं एवं जिन पर धामधनीकी प्रीति बनी रहती है।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो धनी को रिझावत ।

आठों पोहोर सबों अंगों, अरस परस रंग रमत ॥ ७१

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो धामधनीको प्रसन्न करती रहती हैं एवं आठों प्रहर अङ्ग प्रत्यङ्गोंसे पारस्परिक आनन्दका अनुभव करती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको धनी सों अंतर नाहिं ।

अरस परस एक भए, झीलें प्रेम रस माहिं ॥ ७२

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनके साथ धामधनी कोई अन्तर नहीं रखते हैं। वे धामधनीके साथ परस्पर एकरूप होकर प्रेमरसमें निमग्न रहती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पीउ सों करें एकांत ।

आठों जाम इन सरूप सों, सुख लेत भांत भांत ॥ ७३

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो धामधनीके एकान्त सुखका अनुभव करती हैं एवं आठों प्रहर ऐसे धामधनीसे भाँति-भाँतिके सुख प्राप्त करती रहती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पीउ को निरखें नीके कर ।

आठो पोहोर इनों पर, धनी की अमी नजर ॥ ७४

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो अपने प्रियतम धनीको प्रेमपूर्वक निहारती हैं। इन ब्रह्मात्माओंके ऊपर आठों प्रहर धामधनीकी कृपादृष्टि बनी रहती है।

क्यों न होए प्रेम इन को, जिनका एह चलन ।

आठों पोहोर इन धनी सों, रस भर रंग रमन ॥ ७५

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनका रहन-सहन ही ऐसा हो कि वे आठों प्रहर धामधनीके साथ आनन्द मग्न होकर विहार करती रहती हैं।

क्यों न होए प्रेम इन को, प्रेम बासा इन ठौर ।

एही कहे प्रेम के पात्र, प्रेम नहीं कहूं और ॥ ७६

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जिनका वास ही दिव्य परमधाममें

है. इन्हीं ब्रह्मात्माओंको प्रेमका पात्र (आश्रय) कहा है. इनके अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी प्रेम नहीं है.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन बन में करे विलास ।

निस दिन इन धनीय सों, करत विनोद कै हांस ॥ ७७

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो परमधामके दिव्य वनोंमें धामधनीके साथ विलास करती हुई नित्यप्रति हास्यविनोद करती रहती हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो बसत धाम बन माहिं ।

जो बन हमेसा कायम, एक पात गिरे कबू नाहिं ॥ ७८

उनके हृदयमें प्रेम क्यों न हो जो परमधामके वनोंमें बैठती हैं, जो सर्वदा शाश्वत कहलाते हैं. इनके वृक्षोंका एक पत्ता भी कभी नहीं गिरता है.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो सदा खेलत इन बन ।

एक पात की जोत देखिए, करे अंबर जिमी रोसन ॥ ७९

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो इन वनोंमें सदा सर्वदा क्रीड़ा करती हैं. यहाँके वृक्षोंके एक पत्तेके प्रकाशको भी देखें तो वह भूमिसे लेकर आकाश तक सभीको प्रकाशित कर रहा होता है.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन बन में करें विलास ।

सोहागिन अंग धनी धाम की, प्रेम पुंज नूर प्रकास ॥ ८०

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो ऐसे दिव्य वनोंमें विलास करती हों. ये सुहागिनी आत्माएँ धामधनीकी ही अङ्गना हैं एवं उनके प्रेमरूपी प्रकाशकी पुञ्जस्वरूप हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, जो करें धाम धनी सों केल ।

इन बन इन धनीय सों, रमन अहेनिस खेल ॥ ८१

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो सदा सर्वदा धामधनीके साथ इन दिव्य वनोंमें नित्य लीला करती रहती हैं.

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको इन बन में है हांस ।

कमी कबू न होवहीं, सदा फल फूल बास ॥ ८२

उनके हृदयमें प्रेमका सञ्चार क्यों न हो जो इन वनोंमें हास्यविनोद करती हैं। इन वनोंकी विशेषता यह है कि यहाँके फल फूल आदिसे कभी भी सुगन्ध कम नहीं होती है।

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन वन को रस लेत ।

फल फूल सुगंध बेलियां, बाउ सीतल सुख देत ॥ ८३

उनके हृदयमें प्रेम क्यों न हो जो इन वनोंमें विहार कर आनन्दका अनुभव करती हैं। यहाँके पुष्प, फल तथा लताओंसे होकर बहता हुआ शीतल मन्द सुगन्ध वायु इनको अखण्ड सुख प्रदान करता है।

महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उडाए ।

नैना खोल के अंग भर, लीजे कंठ लगाए ॥ ८४

महामति कहते हैं, हे धामधनी ! अब अज्ञानरूपी आवरणको उड़ाकर हमारी आँखें खोल दीजिए एवं हमें प्रेमपूर्वक अपने गले लगा लीजिए।

प्रकरण ३९ चौपाई २३४६

धामकी रामतें-चरचरी

एक चित्रामन दिवालें बन, चढिए तिन पर धाए ।

एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए ॥ १

एक ब्रह्मात्मा दूसरीको चुटकी भरती हुई वृक्षोंके चित्र चित्रित दीवारों पर दौड़कर चढ़ती है एवं ताली बजाकर सङ्केत करती है कि आओ, और मुझे पकड़ लो।

एक गली घर में दे परकरमें, उमंग अंग न माए ।

एक का कपडा धाए के पकडा, खँच चली चित चाहे ॥ २

कोई एक ब्रह्मात्मा किसी वीथिका (गली) से दौड़कर आती हुई भवनकी परिक्रमा करती है। उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें उमङ्ग नहीं समाता है। कोई दौड़कर किसीका वस्त्र पकड़ लेती है एवं उसे खींच कर इच्छानुसार ले जाती है।

छज्जे चढ एक दूजी देवें ठेक, यों कै ठेकतियां जाए ।

एक दोऊ पाउं ठेकें खेल वैसेकें, जानो लगत न छज्जें पाए ॥ ३

कोई सखी छज्जे पर चढ़कर अपने एक पाँवसे ताल देती हुई दौड़ती है। कोई दोनों पाँवसे ताल देती हुई विशेष प्रकारसे क्रीड़ा करती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे इनके पाँव छज्जों पर लगते ही न हों।

सखियां चढ धाए छज्जें न माए, खेल रच्यो इन दाए ।

एक दिवालौं घोडे तित चढ दौडे, नए नए खेल उपाए ॥ ४

जब ब्रह्मात्माएँ एक साथ छज्जों पर चढ़ जाती हैं तो लगता है कि वे वहाँ पर समा नहीं पाएँगी। इस प्रकार वे खेलती हैं। उनमें कतिपय दीवारों पर चित्रित घोड़ों पर चढ़ती हैं तो कतिपय दौड़ती हैं। इस प्रकार नई-नई क्रीड़ाएँ करती हैं।

एक दूजी को ठेले तीसरी हडसेले, यों पडियां तीनों गिर ।

कै और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्योंकर ॥ ५

इनमें कतिपय एक दूसरीको धकेलती हैं, दूसरी तीसरीको धकेलती है और तीनों गिर पड़ती हैं। पीछेसे और भी दौड़कर आती हुई उनके ऊपर गिर जाती हैं। इस प्रकार उनमें-से कोई भी उठ नहीं पाती।

एक दौडियां जाए दई हांसिए गिराए, हुआ ढेर उपरा ऊपर ।

एक खेलते हारी जाए पडी न्यारी, खेल होत इन पर ॥ ६

कोई एक दौड़ती हुई मुस्कराकर स्वयं गिर जाती है। उसके पीछे आती हुई अन्य सखियाँ भी उसके ऊपर गिर जाती हैं। इस प्रकार ऊपराऊपर ही ढेर हो जाती हैं। यदि इनमें-से कोई परास्त हो जाती है तो वह अलग ही बैठ जाती है। इस प्रकार इनके ऐसे अनेक खेल होते हैं।

होवे इन विध हांसी अंग उलासी, सूल आवत पेट भर ।

एक सूल भर पेटें इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर ॥ ७

खेलती हुई वे उत्साहसे इतनी ज्यादा हँसने लगती हैं कि हँसते-हँसते उनके

पेटमें बल पड़ जाता है जिससे धरती पर लोट-पोट होती हैं। इस खेलकी कुछ ऐसी ही शोभा है।

एक लेटतियां जाए सूल ऊभराए, उठावें कर पकर ।

आई तिन हांसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर ॥ ८

यदि कोई पेटमें बल पड़ जानेसे लेट जाती है तो दूसरी उसका हाथ पकड़ कर उठाती हुई अपनी हँसीको रोक नहीं पाती और उसका हाथ पकड़े हुए स्वयं भी उसके साथ गिर जाती है।

देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अंदर ।

सखियां बेसुमार हुओ अम्बार, ए देखो नीके नजर ॥ ९

यद्यपि इस क्रीड़ामें पेटमें बल पड़ जानेसे जो पीड़ा होती है वह उनके अङ्गोंमें नहीं समाती तथापि उनका मुखकमल प्रसन्न रहता है। इस प्रकार ब्रह्मात्माओंकी क्रीड़ाओंकी कोई सीमा नहीं होती है। आत्मदृष्टिसे इसे भलीभाँति देखा जा सकता है।

स्याम स्यामाजी आए देखो खेल बनाए, सब उठियां हंसकर ।

खेले महामति देखलावे इंद्रावती, खोले पट अंतर ॥ १०

उस समय श्रीश्यामश्यामाजीने वहाँ पर आकर सखियोंकी यह लीला देखी तो सभी सखियाँ हँसती हुई उठ गईं। इस प्रकार इन्द्रावती आदि सखियोंके इन खेलोंको दिखाते हुए महामति सभी सुन्दरसाथके अन्तर पटको खोल रहे हैं।

प्रकरण ४० चौपाई २३५६

रामत दूसरी

एक अंग अभिलाषी देवे साखी, कहे वचन विसाल ।

एक कर कंठ बाँहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल ॥ १

कोई ब्रह्मप्रिया अपने मनमें उमङ्ग एवं अभिलाषा लेकर माधुर्यपूर्ण शब्दोंमें साक्षी देती हुई कहती है एवं एक दूसरेके गले पर बाँहें डालकर आलिङ्गन करती हुई आनन्द पूर्ण क्रीड़ाएँ करती है।

एक आवें लटकतियां बोलें मीठी वतियां, चलें चमकती चाल ।

एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल ॥ २

कोई सखी लटकती-मचकती हुई चाल चलकर आती है और मधुर स्वरोंमें अपनी वाणीको मुखरित करती है। कोई आनन्दसे झूमती हुई अपनी चालमें मादकता लिए आती है। इस प्रकार आठों प्रहर उन्हें सुखद अनुभूति होती है।

एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूषन पांड पडताल ।

एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल ॥ ३

कोई नृत्य करती हुई भँवरेकी भाँति घुमती हुई आती है। जब उसके पाँव थिरकने लगते हैं तो उनमें बँधे हुए आभूषणोंके स्वर मुखरित होते हैं। कोई सखी गाती हुई आती है एवं गायनके साथ लयबद्ध हो जाती है तो कोई स्वरसे स्वर मिलाकर स्वरोंकी पूर्णताके लिए नृत्यको आकर्षक बनाती है।

एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल ।

एक निरखें नंग नूर भूषन जहूर, माहें देखें अपनी मिसाल ॥ ४

कोई सखी स्तम्भ तथा दीवारोंमें अङ्कित चित्रोंको देखकर मन्त्रमुग्ध हो जाती है। कोई आभूषणोंमें जड़े हुए रत्नोंकी आभाको देखती हुई उन रत्नोंमें प्रतिबिम्बित अपना स्वरूप देखती है।

एक मिलकर दौड़ें बांधके होड़ें, लंबी जहां पडसाल ।

एक पीउको देखें सुख वैसेकें, कहें आनंद कमाल ॥ ५

कोई परस्पर स्पर्धा करती हुई खुले स्थान (पडसाल) पर दौड़ती है। कोई प्रियतम धनीकी ओर देखती हुई विशेष आनन्दका अनुभव करती है। इनकी इस दिव्य अनुभूतिकी कोई सीमा नहीं है।

एक बेन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल ।

एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुंदर कंठ रसाल ॥ ६

कोई सखी मधुर स्वरमें वंशी नाद करती हुई श्रीराजजीका गुणगान करती है। उस समय उसके मादकता पूर्ण मुखारविन्दकी शोभा अद्वितीय होती है।

एक पूरे स्वर सारे हुंनर, छेक बालें तिन ताल ।

एक पीउसों हंस हंस बातें करें रंग रस, करें होए निहाल ॥ ७

कोई सखी अपनी कलाओंके साथ स्वरोंको मुखरित करती है। कोई उसके साथ ताल मिलाती हुई उसे पूर्णता प्रदान करती है। कोई अपने प्रियतमके साथ हास्यविनोद करती हुई बातें करती है एवं प्रियतमके रङ्गरसमें ओत-प्रोत हो जाती है।

एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूरजमाल ।

एक पीउसों बातें करें अब्ध्यातें, रंग रस भरियां रसाल ॥ ८

कोई सखी धामधनीके दिव्य, अब्धुत छविको देखती है। धामधनीके अनिर्वचनीय शोभाके विषयमें क्या कहा जाए ? कोई सखी प्रियतम धनीके साथ गुह्य वार्तालाप करती हुई प्रेममग्न हो जाती है।

एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल ।

एक अंग अलवेली आवें अकेली, हाथ में फूल गुलाल ॥ ९

कोई सखी आनन्दके साथ हृदयसे प्रेमका अहोभाव प्रकट करती है एवं अन्य सखियोंको भी अपना भाव दिखानेका प्रयत्न करती है। कोई सखी अपने अङ्गोंमें मस्ती लिए लाल पुष्पोंको हाथमें लेकर अकेली चली आती है।

एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथमें छडियां लाल ।

एक नेत्र अनियाले प्रेम रसाले, रंग लिए नूरजमाल ॥ १०

कोई सखी शीघ्रताके साथ लडखड़ाती हुई हाथमें छड़ी लेकर तिरछी चालसे चली आती है। कोई सखी अपने तीक्ष्ण नेत्रोंसे देखती हुई धामधनीके दिव्य छविको हृदयमें धारण कर प्रेमानन्दका अनुभव करती है।

कहे महामति इन रंग रति, उठी सो हंस दे ताल ॥ ११

महामति कहते हैं, इस प्रकार आनन्दमग्न हुई सभी ब्रह्मात्माएँ मुस्कराती हुई करताल ध्वनिके साथ जागृत होकर उठ जाती हैं।

प्रकरण ४१ चौपाई २३६७

कहियत नेहेचल नाम, सदा सुख दाई धाम ।
साथजी स्यामाजी स्याम, विलसत आठों जाम री ॥ १

अखण्ड परमधाम सदा शाश्वत एवं आनन्दमय है। यहाँ पर श्रीश्यामश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ आठों प्रहर आनन्द विलास करते हैं।

नित इत विश्राम, पूरन है प्रेम काम ।
हिरेदें न रहे हाम, इसक आराम री ॥ २

यहाँ पर नित्य विश्राम है एवं सभी मनोरथ प्रेमपूर्वक पूर्ण होते हैं। जहाँ पर कोई भी कामनाएँ शेष नहीं रहती है ऐसे दिव्यधाममें प्रेम और शान्तिके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

आराम तो इन विध लेवें, सबे भरी अहंकार ।
पूरन हित पीउसों चित, जिनको नहीं सुमार ॥ ३

सभी ब्रह्मात्माएँ जिस प्रकार यहाँ पर आनन्दका अनुभव करती हैं उस पर उन्हें गर्व है। वे सर्वदा धामधनीके प्रति पूर्णरूपसे प्रेमपूर्वक समर्पित होती हैं, जिसकी कोई सीमा नहीं है।

एक जुथ सहेली, मिल बैठी भेली, सुख केहेत न आवे पार ।
कोई छज्जे ऊपर, सखियां मिलकर, कहे पीउ को विहार ॥ ४

ब्रह्मात्माओंका एक समूह एक साथ मिलकर बैठता है। उसके अपरिमित आनन्दका वर्णन नहीं हो सकता। कतिपय सखियाँ मिलकर बैठती हैं तो कतिपय छज्जे ऊपर चढ़ जाती हैं। इस प्रकार नित्य प्रति धामधनीके विहारकी बातें करती हैं।

एक लंबे हिंडोले, मिल बैठी झूलें, लेवें सीतल सुगंध बयार ।
एक झरोखे माहिं, मिल बैठत जाहिं, करें रती रेहेस विचार ॥ ५

कतिपय सखियाँ ऊँचे-ऊँचे झूलोंमें मिलकर बैठती हैं एवं शीतल, मन्द, सुगन्ध वायुका आनन्द लेती हैं। कतिपय सखियाँ झरोखेमें जाकर एक साथ बैठती हैं एवं अपने धामधनीके साथ एकान्त लीला पर विचार करती हैं।

एक पीउ मद मतियां, आवें ठेकतियां, कंठ खलकते हार ।

एक जुदी जुदी आवें, स्वातं देखलावें, करें नूर रोसन झलकार ॥ ६

कोई सखी अपने प्रियतम धनीके प्रेमभावमें उन्मत्त होकर पाँवसे ताल देती हुई आती है। उस समय उनके कण्ठमें सुशोभित हारें भी हीलोरें लेने लगते हैं। कतिपय सखियाँ अलग-अलग आकर अपने अन्तःकरणके भावोंको प्रकट करती हैं। उनका प्रकाशमय स्वरूप झलकने लगता है।

एक बाँहें सों बाँहें, संग मिलाए, आवें लिए अहंकार ।

एक दूजी के साथें, लिए कंठ बाथें, भूषन उदोतकार ॥ ७

कतिपय सखियाँ एक-दूसरेके गलेमें बाँहें डालकर प्रेममें उन्मत्त होती हुई आती हैं। जब वे एक दूसरेसे गले मिलती हैं तो उनके आभूषणोंकी चमक आँखोंको चकाचौंध कर देती है।

एक कंठ हाथ छोड़ें, आगूं दौड़े, कहे आइयो मुझ लार ।

एक चढे गोखें, झांकत झरोखें, देखत बन विस्तार ॥ ८

कतिपय सखियाँ दूसरेके कण्ठमें डाली हुई बाँहको हटाकर दौड़ती हुई कहती हैं, तुम भी मेरा अनुसरण करो। इस प्रकार कोई झरोखेमें चढ़कर झाँकती हुई बाहरके वन विस्तारको देखती है।

एक बैठत पलंगें, पीउजीके संगे, खेलत प्रेम खुमार ।

आप अपने अंगे, करत हैं जंगे, कोई न देवें हार ॥ ९

कोई सखी अपने प्रियतम धनीके साथ पलंग पर बैठती है एवं प्रेमोन्मत्त होकर क्रीड़ा करती है। कतिपय सखियाँ ऐसा स्पर्धात्मक द्वन्द्व करती हैं कि उनमें कोई भी परास्त नहीं होती।

एक अंग अनंगे, भांत पतंगे, क्यों कहूं ए मनुहार ।

अति उछरंगे, होत न भंगे, सत सुख संग भरतार ॥ १०

कोई सखी अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें प्रेमभाव लेकर पतङ्गकी भाँति प्रियतमके पास पहुँचकर उनको प्रसन्न करती है। उसके मनमें बड़ा उत्साह होता है, उसे

कम होने दिए बिना ही वह प्रियतमके साथ अखण्ड सुखका अनुभव करती है.

एक प्रेम तरंगे, मद मछरंगे, बांहोंडी कंठ आधार ।

एक अंग मकरंदें, काढत निकंदे, आवत नाही पार ॥ ११

कोई सखी प्रेमभावको तरङ्गित करती हुई उन्मत्त होकर अपने बाँहोंका हार प्रियतमके कण्ठमें डालती है. इस प्रकार कोई सखी अपने प्रेमभावको ऐसे पूर्ण करती है जिसका कोई पारावार ही नहीं है.

बादलिया आवें, रंग देखलावें, करें मोर कोयल टहुंकार ।

अति घन गाजें, अंबर बिराजें, सोभित रुत मलार ॥ १२

किसी समय आकाशमें छाए हुए मेघ अपना रङ्ग दिखाते हैं तो मयुर नृत्य करने लगते हैं एवं कोकिल अपने कण्ठसे मधुर गान करती है. ऐसेमें मेघ गर्जना होती है एवं आकाशमें बिजली चमकती है. इस प्रकार वर्षाऋतु शोभायमान होती है.

रुचिया मेह, बढत सनेह, ए समया अति सार ।

एक केहे सखी सीढियां, दौड के चढियां, होत सकल भोम झनकार ॥ १३

जब वर्षाकी रुचिकर बूँदे गिरने लगती हैं उस समय स्नेह बढ़ता है. इस विशेष समयका वर्णन नहीं हो सकता. ऐसे समयमें किसी एक सखीके कहने पर अन्य सखियाँ दौड़ती हुई सीढ़ि पर चढ़ती हैं. उस समय उनके आभूषणोंके झङ्कारसे पूरी भूमिका गूँज उठती है.

एक साम सामी आवें, अंग न मिलावें, कहा कहूं चंचल आकार ।

एक दौड के धसियां, बनमें निकसियां, मस्त हुइयां देख मलार ॥ १४

कतिपय सखियाँ आमने-सामने दौड़ती हुई आती हैं तथापि परस्पर टकराती नहीं हैं. उनकी इस चपलताकी क्या उपमा दी जाए ? कतिपय सखियाँ वर्षा ऋतुको देखकर मस्त होती हुई दूसरीको धकेलकर दौड़ती हुई वनमें पहुँच जाती हैं.

एक आइयां सघन में, धाए चढी वन में, खेल होत अपार ।

एक झूलें डारी चढके, और पकडके, क्यों कहूं खेल सुमार ॥ १५

कतिपय सखियाँ सघन वनमें पहुँचकर दौड़ती हुई वृक्षों पर चढ़ती हैं एवं अनेक प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हैं। कोई सखी वृक्षोंकी शाखाको पकड़कर झूलने लगती है। ऐसी लीलाओंका वर्णन कैसे करें ?

एक भांत बांदर की, ठेक दे चढती, करती रंग रसाल ।

एक दौड़ें पातों पर, करें चढ उतर, खेलत माहें खुसाल ॥ १६

कोई सखी वानरकी भाँति अपने पाँवकी ताल देकर वृक्षों पर चढ़ती हुई दूसरोंको आनन्दित करती है। कतिपय सखियाँ दौड़ती हुई वृक्षोंके पत्तों पर ही चढ़ती-उतरती हैं। इस प्रकार सभी सखियाँ आनन्दित होकर खेलती हैं।

एक ठेक देती, बनसैं रेती, कहा कहूं इनको हाल ।

एक आइयां दौड़ रेती, इतथें जेती, खेलें एक दूजीके नाल ॥ १७

कोई सखी वनमें दौड़ती हुई रेतके कणोंको उड़ाती है। इनकी ऐसी स्थितिका वर्णन कैसे करें ? उनमें कोई दौड़कर आती है एवं दूसरीसे मिलकर रेत पर क्रीड़ा करने लगती है।

एक जाए गडें रेती, निकस न सकती, देवें एक दूजीको ताल ।

एक काढें घसीटें, और ऊपर लेटें, कहा कहूं इनकी चाल ॥ १८

कोई सखी दौड़ती हुई रेतीमें धँसकर बाहर नहीं निकल पाती तो वहींसे दूसरीको ताल देती है। कोई एक उसे घसीटती हुई बाहर निकालती है तो कोई उसके ऊपर ही लेट जाती है। इस प्रकार इनकी चालके विषयमें क्या कहा जाए ?

खेलते दिन जाए, हांसी न समाए, प्रेम पिएं संग लाल ।

एक ठेक देतियां, रेती में गडतियां, खेल होत कमाल ॥ १९

इस प्रकारकी क्रीड़ाओंमें उनका सारा दिन व्यतीत हो जाता है। उनके आनन्दकी कोई सीमा नहीं रहती। वे अपने प्रियतमकी प्रेमसुधाका पान कर मस्त हो जाती हैं। कोई पाँवसे ताली देती हुई रेतके कणोंमें धस जाती है। इस प्रकार अपूर्व लीला होती है।

केटलीक सखी संग, निकसी रमती रंग, रूप देखावें झुंझार ।

एक दौडके जावें, हौज में झंपावें, एक ले दूजी लार ॥ २०

कतिपय सखियाँ खेलती हुई एक साथ निकलती हैं तो उनका रूपलावण्य अति चञ्चल दिखाई देता है। कतिपय सखियाँ दौड़ती हुई जलकुण्डमें छलाङ्ग लगाती हैं तो अन्य सखियाँ भी उनका अनुसरण करती हैं।

एक आवें दौड कर, गिरे उपरा ऊपर, किन विध कहूं ए रंग ।

एक लरें पानी सें, जुथ जुथ सें, देखो इनको जंग ॥ २१

कोई सखी दौड़कर आती हुई गिर जाती है तो उसके पीछे आने वाली सखियाँ भी उस पर उपरा-उपरी गिरती हैं। इस आनन्दकी बात कैसे कहूँ ? कतिपय सखियाँ जलके अन्दर ही एक समूहसे दूसरे समूहके साथ द्वन्द्व करती हैं। उनका यह द्वन्द्व दर्शनीय होता है।

पानी ऐसा उडावें, जानों अंबर वरसावें, खेल करें न बीच में भंग ।

क्योंए न थके, ऐसे अंग अरसके, आगूं सोहें पुतलियां नंग ॥ २२

जलक्रीड़ा करती हुई सखियाँ इस प्रकार जल उछलती हैं मानों आकाशसे वर्षा हो रही हो, ऐसा प्रतीत होता है। इस प्रकार निरन्तर जलक्रीड़ा करती हुई वे नहीं थकती हैं। उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग ऐसे सुशोभित हैं मानों वे परमधामके रत्नोंकी कोई पुतलियाँ हों।

एक खेल छोड़ें, दूजे पर दौड़ें, अंग न माए उछरंग ।

एक छिन में अरस परे, खेल जाए करें, इन विध अंग उमंग ॥ २३

इस प्रकार खेलती हुई सखियाँ एक खेलको छोड़कर दूसरे खेलके लिए दौड़ती हैं। उनके अङ्गमें उमङ्ग नहीं समाती। क्षणमात्रमें वे रङ्गमहलसे परे दूर-दूर जाकर क्रीड़ा करती हैं एवं आनन्दका अनुभव करती हैं।

परिक्रमा कर आवें, पलमें फिर आवें, आए कदमों लगे सब अंग ।

कहे महामति सब रंग रति, क्यों कहूं प्रेम तरंग ॥ २४

इस प्रकार सखियाँ क्षणमात्रमें परमधामकी परिक्रमा कर लौट आती हैं एवं

धामधनीके चरणोंमें दण्डवत् प्रणाम करती हैं. महामति कहते हैं, सभी सखियाँ इस प्रकार प्रेमके चरमोत्कर्ष पर होती हैं. उनके प्रेमकी तरङ्गोंका वर्णन कैसे किया जाए ?

प्रकरण ४२ चौपाई २३९१

सागरों रांग मोहोलात मानिक पहाड

नूर कुंजी अगिन मुसाफ की, कले कुलफ खोलत हकीकत ।

सुध पाइए सागर नूर पार की, हक मारफत रूहों खिलवत ॥ १

श्रीराजजीके मुखारविन्दकी शोभाका नूर सागर परमधाममें अग्निकोणमें है. तारतम ज्ञानके द्वारा कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हुए हैं, जो अभी तक अस्पष्ट थे. इसी ज्ञानके द्वारा अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामके इस सागरकी सुधि प्राप्त हुई है. इसीके द्वारा श्रीराजजी एवं ब्रह्मात्माओंकी एकान्तस्थली (मूल मिलावा) की पहचान हुई है.

नूर दखिन सुख सागर, नूर वाहेदत मुख नीर ।

पाइए मारफत मुसाफ की, अरस अंग असल सरीर ॥ २

श्रीराजजीकी अङ्गभूता (अद्वैत स्वरूप) ब्रह्मात्माओंके मुखारविन्दकी नूरमयी आभा दक्षिण दिशामें पड़नेसे उसे सुखमय नीर सागरकी उपमा दी है. इस प्रकार परमधामकी इन ब्रह्मात्माओंके वास्तविक स्वरूपोंकी पहचान हुई जिसका सङ्केत कुरानमें भी दिया गया है.

नूर नैरित अंग उजलें, सोभा सुंदर सागर खीर ।

हक इलम देखावे उरफान, पिएँ इसक प्याले सूर धीर ॥ ३

रङ्गभवनके नैऋत्यकोणमें ब्रह्मप्रियाओंके उज्ज्वल एकात्मभाव एवं सौन्दर्यके प्रतीकके रूपमें क्षीर सागर सुशोभित है. श्रीराजजी द्वारा प्रदत्त तारतमज्ञानके द्वारा ही हम इसकी पहचान कर सकते हैं. मात्र ब्रह्मात्माएँ ही श्रीराजजीकी प्रेमसुधाका पान करनेकी अधिकारिणी हैं.

नूर दधि सागर सीतल, नूर पछिम अंग पूरन ।

ए सुख अतंत हमेसा, नूर वाहेदत पूर रोसन ॥ ४

श्रीराजजीका शाश्वत प्रेम तथा शीतल कृपादृष्टिके रूपमें ज्योतिर्मय दधिसागर

पश्चिम दिशामें है। यह ब्रह्मप्रियाओंके तेजोमय एवं अद्वितीय शृङ्गारका प्रतीक है।

नूर बाइब बल पूरन, नूर जहूर समन सागर ।

परख पूरन सुख सुंदर, सब विध नूर नजर ॥ ५

रङ्गभवनके वायव्यकोणमें ज्योतिर्मय घृत सागर है। जो श्रीराजजीके दिव्य आलोकमें झलकते अद्वैत भाव एवं ब्रह्मप्रियाओंके प्रेमका प्रतीक है। इससे धामधनीके सौन्दर्यकी परख होती है। साथ ही परमधामके आनन्द एवं श्रीराजजीकी कृपादृष्टि प्राप्त होती है।

नूर मीठा मधु उतर, सुख अतंत अंगो अंग ।

ए विध जाने रस रसना, उपजत इनके संग ॥ ६

रङ्गभवनकी उत्तर दिशामें प्रकाशमय मधुर मधुसागर है। उससे ब्रह्मात्माओंके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें अनन्त सुखोंकी अनुभूति होती है। ब्रह्मात्माओंकी रसना ही इस रसका स्वाद अनुभव कर सकती है। जिसके कारण इन्हें आनन्दका बोध होता है। [अतः इसे ज्ञान (इल्म) का सागर कहा है]

नूर अमृत सागर ईसान, सुख सीतल सुंदर ।

नूर नजर भर देखिए, सुख सब बाहेर अंदर ॥ ७

रङ्गभवनके ईशान (उत्तरपूर्व) कोणमें अमृतरसका सागर है, जो श्रीराजश्यामाजीके अलौकिक शीतल सुख प्रदान करता है। अन्तर्दृष्टिको प्रकाशित कर देखने पर ज्ञात होता है कि यह सागर बाहर एवं भीतर दोनों ओरसे अखण्ड सुख प्रदान करता है। इसलिए इसे सम्बन्ध (निसबत)का सागर कहा गया है।

नूर पूर सुख सागर, अतंत पूरव सुख दाए ।

ए सब रस सब विध सब सुख, नूर सब अंगों उपजाए ॥ ८

रङ्गभवनकी पूर्व दिशामें सभी सुखोंसे परिपूर्ण सर्वरस सागर है जो अनन्त सुखोंको प्रदान करने वाला है। इसमें सब प्रकारके रस तथा सब प्रकारके सुख सम्मिलित हैं। इससे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें आनन्द प्रकट होता है। इसलिए इसे कृपाका सागर (मेहरसागर) कहा गया है।

ए तरफ आठों नूर सागर, अंग आवत नूर मुतलक ।

ए देखतहीं सुख सागर, ए सहूर इलम नूर हक ॥ ९

इस प्रकार परमधाममें आठों दिशाओंमें प्रकाशमय आठ सागर हैं। जिनसे अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें सुख प्राप्त होता है। धामधनी द्वारा प्रदत्त तारतम्य ज्ञानसे विवेकके जागृत होने पर ही इन सुखदायी सागरोंकी महिमा समझी जा सकती है।

आठ तरफ जुदी जुदी जिमी, नूर एक से दूजी सरस ।

नूर बीच जिमी बीच सागर, जिमी सिफत न पार अरस ॥ १०

इन आठों सागरोंके मध्यमें सुशोभित अलग-अलग भूमि एक-दूसरेसे सुन्दर लगती हैं। इस प्रकार सागरके बीचमें भूमि एवं भूमिके बीचमें सागर अत्यन्त सुशोभित हैं। इस प्रकार अद्वैत भूमिकाकी शोभाका पार ही पाया नहीं जा सकता है।

पार जिमी ना पार सागर, नूर पाइए न काहूं इंतहाए ।

नूर जिमी देखो नूर सागर, नूर अपार अरस गृदवाए ॥ ११

यहाँकी भूमि तथा सागरके दिव्य प्रकाशका कोई पारावार नहीं है। इस प्रकार परमधाममें चारों ओर ज्योतिर्मयी भूमि एवं प्रकाशमय सागरोंकी शोभाका पार नहीं पाया जा सकता है।

नूर पसू पंखी नूरमें, जिमी जुदी जुदी नई सिफत ।

नई कहूं हिसाब इतके, ए नूर खूबी हमेसा अतंत ॥ १२

यहाँके पशुपक्षी आदि भी ज्योतिर्मय हैं। इस दिव्य भूमिकी शोभा एवं सुन्दरता ही अलग प्रकारकी है। इस दिव्य भूमिकी देदीप्यमान शोभाका कोई लेखा जोखा नहीं हो सकता है।

पार न जिमी अरस को, पार ना पसू जानवर ।

पार नहीं वृख बागको, पार ना पहाड सागर ॥ १३

इस प्रकार न परमधामकी भूमिका कोई पार पाया जा सकता है और न ही वहाँके पशुपक्षियोंका कोई पारावार है। वहाँके वन, उपवनके वृक्षों, पर्वतों एवं सागरोंका भी कोई पारावार नहीं है।

सब सुख एक एक चीज में, सब की सिफत नहीं पार ।

अरस पहाड या तिनका, सब देखेही पाइए बेसुमार ॥ १४

परमधामकी एक-एक वस्तुमें सब प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं. उन सभी सामग्रियोंकी शोभाका पार नहीं पाया जा सकता. दिव्य परमधाममें तिनकेसे लेकर पर्वत पर्यन्त सभी सामग्रियोंकी शोभा असीम दिखाई देती है.

ए पाल आडे जिमी सागर, नूर लगी रांग आसमान ।

इंतहाए नहीं गृद फिरवली, नूर सिफत कहा कहे जुबान ॥ १५

इन सागरों तथा भूमिके मध्य पाल सुशोभित है. उन पर दुर्गकी भाँति गगनचुम्बी प्रासाद हैं. चारों ओरके इन प्रासादोंका कोई अन्त नहीं है. इनके दिव्य प्रकाशकी शोभा भी शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती.

नूर रांग तरफ जो देखिए, इंतहाए न कहूं आवत ।

पार आवे जिन चीज को, तिनकी होए सिफत ॥ १६

जब इन प्रकाशमय दुर्गोंकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो इनका कहीं अन्त दिखाई नहीं देता. जिस वस्तुका पार पाया जा सकता हो वस्तुतः उसीकी शोभा पूर्ण रूपसे बताई जा सकती है.

इंतहाए नहीं जिन चीज को, ताकी सिफत न होए जुबांए ।

सहूर इत सो क्या करे, जो सिफत न सबद माहें ॥ १७

किन्तु जिस वस्तुकी कोई सीमा ही नहीं हो उसकी शोभा भी जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती. जिस शोभाका वर्णन करनेमें वाणी भी मौन हो जाती है उस पर विचार भी कैसे हो सकता है ?

हक ल्याए हिसाब में, जो कहावे अरस अपार ।

सो अरस दिल मोमिन का, ए किन विध कहूं सुमार ॥ १८

इस अपार परमधामका वर्णन धामधनीकी कृपासे ही सम्भव हुआ है. वस्तुतः ब्रह्मात्माओंका हृदय ही परमधाम है. उनकी अद्वितीय शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

ऐसे ही सागरों रांग के, बारे हजार द्वार ।

और खूबी खुसाली ज्यों खिड़कियाँ, कहूँ गिनती न आवे पार ॥ १९

सागरोंके तट पर स्थित दुर्गके बड़े प्रासादोंकी एक दिशामें बारह हजार बड़े द्वार हैं। साथ ही असंख्य सुखदायी खिड़कियाँ हैं जिनकी गणना असम्भव है।

यों अरस जिमी अपार के, सोभित गृदवाए द्वार ।

रूह के दिल से देख फेर फेर, ज्यों तू सुख पावे बेसुमार ॥ २०

इस प्रकार सागरोंकी इस दिव्य भूमि पर चारों ओर स्थित बड़े-बड़े प्रासादोंके चारों ओर द्वार शोभायमान हैं। हे आत्मा ! तू अन्तर्दृष्टिसे इस दिव्य शोभाको देख जिससे तूझे अपार सुखका अनुभव हो जाएगा।

आठ तरफ नूर जिमी के, तरफ आठ नूर सागर ।

ए गिन देख द्वार दिल अरस में, पार न आवे क्योंकर ॥ २१

परमधामकी आठों दिशाओंमें भूमिके साथ-साथ आठ सागर सुशोभित हैं। यहाँ पर सुशोभित प्रासादोंके द्वारोंकी गणना करने लगें तो इनका कोई पार नहीं है।

नूर पार जिमी और रांग की, जो फेर देख रूह दिल ।

कै पहाड मोहोल बाग नेहरें, जिमी बराबर टेढी न तिल ॥ २२

दुर्गके समान इन प्रासादोंके बाहर एवं अन्दरकी भूमिको आत्मदृष्टिसे देखने पर वहाँ पर अनेक पर्वत, प्रासाद, वन, उपवन तथा नहरें दिखाई देती हैं। यह दिव्यभूमि लेशमात्र भी टेढ़ीमेढ़ी नहीं अपितु पूर्णरूपसे समतल है।

ज्यों फिरती थाल अरस उज्जल, योंही साफ सिफत बराबर ।

अरस जिमी कही नूर की, कहूँ गढा न ऊँची टेकर ॥ २३

परमधामकी यह दिव्य उज्ज्वल भूमि स्थालीकी भाँति समतल है। यह समतल भूमि प्रकाशमयी है। वहाँ पर न कहीं खड्डे हैं और न ही कहीं ऊँची टेकरी हैं।

पार नहीं बीच थाल के, गृदवाए ना चौडी तूल ।

मोहोल पहाड नेहरें सर भर, मुख सिफत कहा कहे बोल ॥ २४

स्थालीकी भाँति दिखाई देने वाली यह भूमि चारों ओरसे लम्बाई-चौड़ाईमें

समान है. यहाँ पर स्थित प्रासाद, पर्वत, नहरें आदि जो भी शोभायमान हैं उनकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती.

तो नूर रंग पार की क्यों कहूँ, जाको सुमार नहीं वार पार ।

वह मोमिन देखें दिल अरस में, जो दिल अरस परवरदिगार ॥ २५

इस प्रकाशमय दुर्गके आसपासकी भूमिकी शोभाका वर्णन कैसे करें जिसका कोई पारावार ही नहीं है. ब्रह्मात्माएँ ही अपने हृदयधाममें इसका अवलोकन कर सकती हैं, जिनका हृदय स्वयं परब्रह्म परमात्माका धाम बना हुआ है.

कै जातें नूर पंखियन की, कै जातें नूर जानवर ।

जैसा रंग नूर जिमी का, पसू पंखी रंग सरभर ॥ २६

यहाँ पर तेजोमय पशु तथा पक्षियोंकी अनेक जातियाँ हैं. यहाँकी तेजोमय भूमि जिस रङ्गमें सुशोभित है पशुपक्षियोंकी शोभा भी उसी रङ्गमें है.

नए नए रंगों नूर बाग वन, इंतहाए नहीं वृख नूर ।

ना इंतहाए नूर पसू पंखी, क्यों कहूँ इन अंग जहूर ॥ २७

यहाँके प्रकाशमय वन उपवनोंमें नित्य नूतन रङ्ग दिखाई देते हैं. इस प्रकार इन वृक्षोंके प्रकाशका कोई पारावार नहीं है. इन वृक्षों पर रहनेवाले पशुपक्षी आदिके तेजकी भी कोई सीमा नहीं है. इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग भी प्रकाशमय हैं.

नूर जिमी या तूल चौडी, इंतहाए न तरफ आवत ।

कहूँ जुबां अरस गिनती, अंग अरस के जानें सिफत ॥ २८

इस ज्योतिर्मयी भूमिके अनन्त विस्तार (लम्बाई-चौड़ाई) की कोई सीमा नहीं है. इसकी गणना परमधामकी जिह्वासे ही हो सकती है एवं ब्रह्मात्माएँ ही इसकी शोभासे परिचित होंगी.

एक जिमी सिफत जो देखिए, तो जाए निकस नूर उमर ।

अपार जिमी इंतहाए सिफत, ए आवत नहीं क्योंए कर ॥ २९

इस दिव्य भूमिकाके केवल एक खण्डकी शोभा देखनेमें ही सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हो जाता है तो फिर इसके अनन्त विस्तारकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

नूर जिमी बराबर अरस की, कहूं चढती नहीं उतार ।

दूजी सोभा नूर रोसन, जिमी भरी अंबर झलकार ॥ ३०

परमधामकी यह प्रकाशमयी भूमि पूर्णरूपसे समतल है। कहीं भी नीची या ऊँची नहीं है। इसकी दूसरी शोभा यह है कि इसकी तेजोमयी किरणें सम्पूर्ण आकाशमें झलकती हैं।

कै रंग जिमी केती कहूं, और कै रंग नूर दरखत ।

सोई जिमी रंग पसू पंखियों, कर तुहीं तुहीं जिकर करत ॥ ३१

इस दिव्यभूमिसे विभिन्न रङ्गकी किरणें निकलती हैं जिससे यहाँके प्रकाशमय वृक्ष भी अनेक रङ्गोंके दिखाई देते हैं। यहाँके पशुपक्षियोंमें भी भूमिके अनुरूप रङ्ग सुशोभित हैं। वे बार-बार धामधनीको 'आप ही हमारे सर्वस्व हैं' ऐसा कहते हुए उनका गुणगान करते हैं।

ना गिनती नाम जो हक के, सो हर नामें करे जिकर ।

मुख चोंच सुंदर सोहनें, बोलें बानी मीठी सकर ॥ ३२

धामधनीके नामोंकी कोई गणना नहीं हो सकती। इसलिए ये सभी पशुपक्षी अलग-अलग नामोंसे उनका गुणगान करते हैं। इनके मुख, चोंच अति सुन्दर एवं प्रिय हैं। ये पशुपक्षी विभिन्न प्रकारसे मीठी वाणी बोलते हैं।

नूर वाउ चलत बहू विध की, सुगंध सोहत सीतल ।

सब चीजें खुसबोए नूर पूर, जिमी मोहोल वन जल ॥ ३३

यहाँ पर चारों ओरसे शीतल, मन्द तथा सुगन्धयुक्त पवन बहता है जिससे समस्त वातावरण सुरभित हो जाता है। यहाँकी भूमि, प्रासाद, वन, जल इत्यादि सभी पूर्ण रूपसे सुगन्धित हैं।

फल फूल वन पसू पंखी बेहेकत, कोई चीज न बिना खुसबोए ।

सदा सुगंध सबे सुख दायक, याकी सिफत किन विध होए ॥ ३४

यहाँ पर फल, फूल, वन, उपवन, पशु, पक्षी कोई भी सुगन्ध विहीन नहीं हैं। सर्वदा सुगन्धित ये सभी अखण्ड सुखदायी हैं। इनकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

नूर चीज सब चेतन आसिक, वाए बादल बीज अंबर ।

सब विध स्वाद पूर पूरन, सुख जाए ना कह्यो क्योंकर ॥ ३५

यहाँकी यावत् सामग्री चैतन्यमय है एवं प्रियतम धनीके प्रेमसे परिपूर्ण है। वायु, मेघ, आकाशमें चमकती हुई बिजली आदि सभी चैतन्य हैं। प्रत्येक वस्तुसे सब प्रकारका पूर्ण स्वाद प्राप्त होता है। इस प्रकार यहाँके शाश्वत सुखोंका वर्णन ही नहीं हो सकता है।

पार सोभा ना पार सागर, ना पार टापू ना इमारत ।

पार टापू ना मोहोल किनारें मोहोल, सोभा आसमान नूर झलकत ॥ ३६

यहाँ पर सागर, द्वीप तथा उनके प्रासाद आदिकी शोभाका कोई पार नहीं है। सागरमें स्थित द्वीप एवं उसके तटों पर शोभायमान प्रासादोंकी शोभा पूरे आकाशमें झलकती है।

अरस सूर कै एक मोहोल में, तैसे मोहोल टापू अपार किनार ।

एक मोहोल अंबर कै बीच में, तो जुबां क्यों कहे गिनती सुमार ॥ ३७

परमधामके एक ही प्रासादमें अनेक सूर्य प्रकाशित होते हैं। उसी प्रकार द्वीप या सागर तट पर स्थित प्रासादोंमें भी अनेक सूर्योंका प्रकाश है। जब एक ही प्रासादका प्रकाश पूरे आकाशको प्रकाशित कर देता है तो सभी प्रासादोंकी अनन्त शोभाका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

जो कोई होसी अंग अरस की, और जागी होए हक इलम ।

तो कछू बोए आवे इन सहूर की, जो करे मदत हक हुकम ॥ ३८

जो परमधामकी आत्माएँ होंगी और तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत हुई होंगी, यदि श्रीराजजीका आदेश उन्हें सहयोग करे तो उनको दिव्य परमधामकी थोड़ी-सी सुगन्ध प्राप्त होगी।

पर जो स्वाद हक उरफान में, सो केहे ना सके जुबां इन अंग ।

जो हक मेहेर कर देवहीं, तो प्याले पीजे हक हादी संग ॥ ३९

परन्तु धामधनीकी पहचानसे जो आस्वाद प्राप्त होता है उसे इस नश्वर तनकी जिह्वा द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। जब धामधनीकी अहैतुकी कृपा प्राप्त होगी तभी श्रीराजश्यामाजीके साथ बैठकर उनकी प्रेमसुधाका पान करनेका

सुअवसर प्राप्त होगा.

हक मेहेर बडी न्यामत, रूह जिन छोडें एह उमेद ।

ए फल सब बंदगीय का, जो कहे मुतलक अरस भेद ॥ ४०

धामधनीकी अपार कृपा वस्तुतः अमूल्य निधि है. ब्रह्मात्माएँ इस अहैतुकी कृपाको प्राप्त करनेकी आशा नहीं छोड़तीं. यह सब उनकी वन्दना (बन्दगी) का ही फल है कि वे परमधामके गूढ़ रहस्योंको प्रकट कर सकती हैं.

जिन दिल हुआ अरस हक का, सोई लीजो इन अरस सहूर ।

कहे हक हुकम ऐ मोमिनो, नूर पर नूर सिर नूर ॥ ४१

जिन आत्माओंका हृदय धामधनीका परमधाम बन गया है ऐसी आत्माएँ ही परमधामके इन रहस्यों पर विचार कर सकती हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीकी आज्ञासे ही मैंने इस प्रकार क्षर, अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामका वर्णन किया है.

इन नूर रांग की रोसनी, क्यों कहूं जुबां इन मुख ।

द्वार द्वारी कलस कंगूरे, ए लें हक हुकमें मोमिन सुख ॥ ४२

दुर्गकी इन गगनचुम्बी अट्टालिकाओंके दिव्य प्रकाशकी शोभा इस मुखसे कैसे व्यक्त की जाए ? ब्रह्मात्माएँ ही श्रीराजजीके आदेशसे इनके द्वार, खिड़कियाँ, कलश तथा कंगूरे आदिके अवलोकनसे आनन्द प्राप्त करती हैं.

दोए दोए गुरज बीच द्वार के, दो दो छोटी द्वारी के ।

ए छोटे बडे मेहेराब जो, सोभा क्यों कहूं सिफत ए ॥ ४३

इन अट्टालिकाओंके द्वारोंके दोनों ओर दो-दो गुर्ज एवं दो-दो छोटे तोरण (मेहराब) सुशोभित हैं. इन छोटे-बड़े तोरणोंकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

सोभा देत देखाई आसमान में, ऊंची सीढियों नहीं सुमार ।

चार चार आगूं द्वार चबूतरों, दो दो वन के रंग नहीं पार ॥ ४४

इनकी शोभा असीम आकाश तक दिखाई देती है. इन अट्टालिकाओंकी ऊँची-ऊँची सीढियोंका कोई पारावार नहीं है. प्रत्येक द्वारके सम्मुख दो

ऊपर तथा दो नीचे इस प्रकार चार चबूतरे हैं। नीचेके दो चबूतरों पर एक हरा और एक लाल इस प्रकार दो वृक्ष हैं जिनका कोई पारावार नहीं है।

दोए मुनारों लगते, कै छतें चबूतरों पर ।

दोए बीच सीढियां आगूं द्वार के, जुबां सिफत पोहोंचे क्यों कर ॥ ४५

दो गुर्जोंसे लगते हुए चबूतरों पर छतें हैं एवं द्वारके आगेके गुर्जोंके मध्यसे सीढियाँ उतरी हैं। इनकी शोभा जिह्वाके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती।

वृख बाग आगूं सब चबूतरों, कै जुदे जुदे बागों रंग बन ।

आगूं देत खूबी इन द्वारने, बन आसमान कियो रोसन ॥ ४६

इन चबूतरोंके आगे उपवनोंमें विभिन्न रङ्गोंके अनेक वृक्ष शोभायमान हैं। द्वारोंके सामने सुशोभित ये वृक्ष द्वारोंकी शोभा बढ़ाते हैं। इनका प्रकाश आकाशको भी प्रकाशित कर देता है।

सब बागों सोभित रस्ते, कहूं घट बढ नाही हार ।

कै चौक मोहोल मंदिरन के, कै गली चली बांध किनार ॥ ४७

सभी उपवनोंमें सुन्दर मार्ग सुशोभित हैं। वे सभी समान पङ्क्तिमें हैं। इन प्रासादों और मन्दिरोंके मध्य अनेक चौक हैं। उनके एक किनारेसे दूसरे किनारे तक सीधी वीथिकाएँ सुशोभित हैं।

लाल जिमी नूर लाल वन, सोभित पसू नूर लाल ।

लाल जानवर लाल पर, रंग फल फूल सब गुलाल ॥ ४८

धामधनीकी रक्तिम आभासे रङ्गभवनकी दक्षिण दिशामें लालिमा पूर्ण नीर सागर है। वहाँकी भूमि, वन, पशु, पक्षी, फल, फूल आदि सभी उस रक्तिमासे लालरङ्गके दिखाई देते हैं।

नूर जरद जिमी जानवर, नूर पीले पसू जरद जोत ।

फल फूल पीले वृख वेलियां, नूर पीला आकास उदोत ॥ ४९

नैऋत्य दिशामें स्थित क्षीर सागर पीतवर्णका होनेसे वहाँकी भूमि, पशुपक्षी, फल, फूल, वृक्ष, लताएँ आदि सभी पीतवर्णमें सुशोभित हैं। यहाँ तक कि वहाँके पीतवर्णकी किरणें पूरे आकाशमें व्याप्त हो जाती हैं।

नीली जिमी नूर पाच की, नूर नीले पसू जानवर ।

नूर नीला आसमान जिमी, ए नूर खूबी कहूं क्यों कर ॥ ५०

पश्चिम दिशामें स्थित दधिसागर हरितवर्ण (हरे रङ्ग) का है। इसलिए यहाँकी भूमि, पशुपक्षी तथा आकाश आदि सभी हरित वर्णमें सुशोभित हैं। इनके दिव्य प्रकाशकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

सेत जिमी सेत पसू पंखी, नूर आकास उज्जल ।

उजल नंग नूर सबे, वृख बेल सेत फूल फल ॥ ५१

अग्निकोणमें स्थित नूर सागर श्वेत वर्णका है। यहाँकी भूमि, पशु, पक्षी तथा आकाश भी उज्ज्वल धवल वर्णके हैं। यहाँके सभी रत्न, वृक्ष, लताएँ, उनके फल, फूल आदि भी उज्ज्वल हैं।

नूर स्याम जिमी आसमान लग, नूर स्याम पसू पंखी नूर ।

फल फूल स्याम नूर वृख बेली, नूर पसू पंखी सब जहूर ॥ ५२

उत्तर दिशामें स्थित मधुसागर श्यामरङ्गका है। यहाँ भूमिसे लेकर आकाश तक श्यामलता छायी हुई है। यहाँके पशुपक्षी, वन, वृक्ष, फल, फूल, लताएँ आदिसे श्याम रङ्गकी किरणें निकलती हैं।

नूर जिमी आसमानी आसमान नूर, रंग पसू पंखी नूर आसमान ।

फल फूल वृख बेल सोई रंग, नूर सोभा जंग सके न भान ॥ ५३

वायव्यदिशामें स्थित घृतसागर आकाशी (नीले) रङ्गका है। जिससे यहाँ पर भूमिसे लेकर आकाश तक सभी पशुपक्षी, वन, उपवन, वृक्ष, लताएँ तथा फल, फूल आदि सभी नीले रङ्गकी शोभा धारण किए हुए हैं। इनकी किरणें परस्पर द्वन्द्व करती हुई भी किसीको परास्त नहीं कर सकतीं।

दस दस रंग वृख बेल में, फल फूल रंग दस दस ।

रंग दस दस जिमी आकासें, नूर पसू पंखी याही रंग रस ॥ ५४

ईशानकोणमें स्थित रस सागर अमृततुल्य है। इसमें दसरङ्ग होनेसे यहाँके वन, उपवन, वृक्ष, लताएँ तथा फल, फूल आदिमें भी दस रङ्ग शोभायमान हैं। यहाँकी भूमि तथा आकाशमें भी दस रङ्ग हैं एवं यहाँके पशुपक्षी भी दस रङ्गके हैं।

कै रंगों जिमी कै आकासें, पसू पंखी बन कै रंग ।

सब चीजों सोभा सब आसमान, सोभा नूर सबों नें जंग ॥ ५५

रङ्गभवनकी पूर्वदिशामें स्थित कृपासागर (मेहरसागर) में सभी रङ्गोंका समावेश है। अतः यहाँ पर भूमि, आकाश, पशुपक्षी, वन, उपवन आदि सभी विभिन्न रङ्गोंमें सुशोभित हैं। सभी वस्तुओंकी शोभा आकाश तक पहुँचती है, जिससे सबकी अपनी-अपनी शोभा परस्पर स्पर्धा करती हुई दिखाई देती है।

अग्नि ईसान लाल नूर, पीत नीर रंग दखिन ।

नैरित खीर नीला रंग, दधि सेत पछिम रोसन ॥ ५६

इन सागरोंमें अग्नि तथा ईशान कोणके नूर तथा रस सागरके क्रमशः श्वेत एवं दस रङ्गमें लाल रङ्गकी आभा दिखाई देती है। दक्षिणमें स्थित नीर सागरके लाल रङ्गमें पीले रङ्गकी आभा है। नैऋत्य कोणके क्षीरसागरके पीले रङ्गमें हरा रङ्ग झलकता है एवं पश्चिम दिशाके दधि सागरके हरे रङ्गमें श्वेत रङ्गकी आभा झलकती है।

घृत वाड़व बल स्याम रंग, रंग आसमानी मधु उतर ।

दस रंग अमृत ईसान, रस पूरव रंग सरभर ॥ ५७

इसी प्रकार वायव्य दिशाके घृत सागरके नीले (आकाशी) रङ्गमें श्याम रङ्गकी आभा है एवं उत्तर दिशाके मधुसागरके श्याम रङ्गमें नीले (आकाशी) रङ्गकी आभा झलकती है। ईशानकोणके रस सागरमें दस रङ्ग शोभायमान हैं तथा पूर्व दिशाके सर्वरस सागरमें सब प्रकारके रङ्ग सुशोभित हैं।

[उक्त दोनों चौपाइयोंमें सागरोंके रङ्ग बदलनेकी चर्चा हुई है। इसका तात्पर्य ब्रह्मात्माओंकी जागृतिसे सम्बन्धित माना गया है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है—

ईशान कोणमें ब्रह्मात्माओंके सम्बन्धका रस सागर है जिसके दस रङ्ग कहे गए हैं। इसी प्रकार अग्निकोणमें स्थित नूर सागरको श्रीराजजीके जोशका सागर कहा गया है जिसका रङ्ग श्वेत है। दक्षिणमें स्थित नीर सागर ब्रह्मात्माओंकी प्रकाशमयी शोभाका सागर है। इसका रङ्ग लाल है।

ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतका खेल देखनेकी इच्छा हुई जिससे नीर सागरका लाल रङ्ग रस सागरमें आ गया जब धामधनीके जोशने खेल दिखानेके लिए चिन्तन किया तो नीर सागरके लाल रङ्गकी आभा नूर सागरमें प्रकाशित होने लगी. धामधनीके जोशने ब्रह्मात्माओंकी सुरताको जागृत कर धनीजीसे मिलनेके लिए एकात्मभाव (एकदिली) की आवश्यकताका अवगत करवाया तो एकात्मभावके क्षीर सागरका पीला रङ्ग नीर सागरमें भासित होने लगा एवं क्षीर सागरके पीले रङ्गमें दधि सागरके हरित रङ्गकी आभा झलकने लगी अर्थात् ब्रह्मात्माओंको तारतम ज्ञानसे ज्ञात हुआ कि धनीजीसे मिलनेके लिए शाश्वत प्रेमका शृङ्गार आवश्यक है. अतः उन्होंने शृङ्गार धारण किया. इसी लिए प्रेमके प्रतीक घृत सागरके नीले रङ्गमें ज्ञानके प्रतीक मधुसागरके श्याम रङ्गकी आभा झलकने लगी एवं मधु सागरके श्याम रङ्गमें घृत सागरके नीले रङ्गकी आभा झलकने लगी. जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि ज्ञानके बिना पहचान नहीं होगी तब मधु सागरके श्याम रङ्गमें घृत सागरके नीले रङ्गकी आभा झलकने लगी. इस प्रकार ज्ञान और प्रेम एकाकार हो गए. (क्योंकि आत्मजागृतिके लिए दोनों अति आवश्यक हैं.) अब ब्रह्मात्माएँ प्रेम एवं ज्ञानके प्रतापसे अपनी पर-आत्माका चिन्तन करने लगीं जिससे उन्हें अपने मूल सम्बन्धका बोध हो गया और उनकी आत्मा जागृत होकर श्रीराजजीकी अपार कृपाका अनुभव करने लगी.]

ए साफ अगिन नूर उज्जल, दखिन नीर रंग लाल ।

नैरित खीर पीत रंग, दधि पछिम नीला कमाल ॥ ५८

वास्तवमें अग्निकोणमें स्थित नूर सागरका रङ्ग उज्ज्वल (श्वेत) है, दक्षिणमें स्थित नीर सागरका रङ्ग लाल है, नैऋत्य दिशामें स्थित क्षीरसागरका रङ्ग पीला है और पश्चिम दिशामें स्थित दधिसागरका रङ्ग हरा है.

रंग जिमी दिस सागर, एक एक दोए बीच जान ।

ले इसक गिन अगिन से, ज्यों सब होए अरस पेहेचान ॥ ५९

जिस दिशामें जो सागर हैं वहाँके मध्यकी भूमिमें दोनों ओरसे सागरकी छाया पड़नेसे आधी एक रङ्गकी और आधी दूसरे रङ्गकी दिखाई देती है. इस

प्रकार परमधाममें अग्निकोणसे लेकर सर्वरस सागर तककी शोभाकी गणना प्रेमपूर्वक करने पर पूरे परमधामकी पहचान हो सकती है।

नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर ।

रस सब रस सागर, बिना मोमिन न पावे कोई और ॥ ६०

परमधामकी दिव्य भूमिमें नूरसागर, नीरसागर, क्षीरसागर, दधिसागर, घृतसागर, मधुसागर, रससागर एवं सर्वरससागर सुशोभित हैं। ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी इस दिव्य शोभाका अनुभव नहीं कर सकता।

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक ।

यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक ॥ ६१

दो सागरोंके मध्य एक भूखण्ड एवं दो भूखण्डोंके मध्य एक सागर होनेसे इन आठों सागरोंके मध्य आठ भूखण्ड हैं। विवेकपूर्वक गिनती करने पर इनका अनुभव हो सकता है।

दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार ।

देख जिमी या सागर, कहूं गिनती न पाइए सुमार ॥ ६२

सागर एवं दुर्गके परेकी भूमिकी शोभा अद्वितीय है। दिव्यभूमि अथवा सागरोंकी शोभा देखते रहने पर भी इसका पार पाया नहीं जा सकता।

और कही जो विध रांगकी, कलस कंगूरे बीच आसमान ।

द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होए सिफत बयान ॥ ६३

इस दुर्गकी गगनचुम्बी अट्टालिकाओंका संक्षिप्त वर्णन हुआ है। उसके कलश, कंगूरे आदि आकाशको स्पर्श करते हैं। इनके द्वार तथा खिड़कियोंकी गणना की है किन्तु इनकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता।

मोहोल मानिक पहाड

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार ।

सोभा सुंदरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार ॥ ६४

हे सुन्दरसाथजी ! अब माणिक्य पर्वत (मानिक पहाड) की शोभाको देखो।

जिनके चारों ओर (पङ्क्तिबद्ध) बारह हजार प्रासाद सुशोभित हैं. इनमें बारह हजार द्वार हैं. इनकी शोभा तथा सुन्दरताका कोई पारावर नहीं है.

एक देख्या मोहोल मानिकका, ताए बडे द्वार बारे हजार ।

हिसाब न छोटे द्वारोंका, सोभा सिफत न आवे पार ॥ ६५

इस माणिक्य पर्वत पर एक ही प्रासाद इतना विशाल है कि उसमें बड़े-बड़े बारह हजार द्वार सुशोभित हैं. उसके छोटे द्वारोंकी तो कोई गणना ही नहीं है. इस प्रकार इस पर्वतकी दिव्य शोभाका कोई पारावार नहीं है.

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहिं ।

सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहिं ॥ ६६

यहाँ पर भूमिसे लेकर ऊँचे आकाश तक विस्तृत इस पर्वतके प्रासादोंकी शोभा इतनी अद्वितीय है कि यह न कहीं कम तथा न कहीं अधिक दिखाई देती है. इन प्रासादोंमें जलकुण्ड वन-उपवन तथा झूले शोभायमान हैं.

कै नेहरें कै चादरें, कै फल फूल वन सोभित ।

ऊपर झरोखे सब विध तालों, कहूं गिनती न सोभा सिफत ॥ ६७

यहाँ पर अनेक नहरें तथा अनेक जलधाराएँ प्रवाहित होती हैं. यहाँके वनमें अनेक प्रकारके फल तथा फूल सुशोभित हैं. यहाँके भवनोंकी खिड़कियाँ तालके जलके ऊपर सब प्रकारसे सुशोभित हैं. इनकी शोभाकी गणना नहीं हो सकती है.

मानिक मोहोल रतनमय, झलकत जोत आकास ।

नूर पूरन पूर भर्या, रूह खोल देख नैन प्रकास ॥ ६८

इन माणिक्य प्रासादोंकी आभा रत्नमयी है, उनकी ज्योति आकाशमें चमकती है. हे आत्मा ! यहाँके उमड़ते हुए प्रकाशको आत्मदृष्टि खोलकर देख.

मोहोल मध मानिक का, नूर पहाड मोहोल गृदवाए ।

बडे बडे जोडे छोटे छोटे, बराबर जुगत सोभाए ॥ ६९

इस पर्वतके मध्यमें माणिक्य रत्नका विशाल प्रासाद (माणिक मोहोल) है जिसके चारों ओर भवन शोभायमान हैं. यहाँ पर स्थित छोटे-बड़े भवन

संयुक्त रूपमें तथा अलग-अलग रूपमें भी समान रूपसे सुशोभित हैं।

चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारों तरफों हिडोले ।

एक हिडोले माहें झूलें, हक हादी रूहें भेले ॥ ७०

पहाड़के बाहरी भागमें प्रत्येक तालके चारों ओर प्रासाद सुशोभित हैं एवं चारों ओर बड़े-बड़े चार झूले शोभायमान हैं जिनमें-से एक ही झूलेमें श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ एक साथ झूलते हैं।

चारों तरफों ऐसे ही झूलें, हक हादी रूहें खेलत ।

अरस अजीम के बीच में, मोहोल अंबर जोत धरत ॥ ७१

चारों ओर इसी प्रकारके झूले शोभायमान हैं, जिनमें बैठकर श्रीराजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ झूलते हैं। परमधामके मध्यमें स्थित इस विशाल प्रासादकी ज्योतिर्मयी किरणें सम्पूर्ण आकाशको आच्छादित कर देती हैं।

बड़े बड़े पहाड़ मोहोल फिरते, बड़े बड़े के संग ।

छोटे छोटा जोत सों, करे नूर जोत सों जंग ॥ ७२

इस माणिक्य पर्वत पर चारों ओर पर्वतके समान विशाल प्रासाद शोभायमान हैं। बाहरकी ओरके बड़े-बड़े एवं अन्दरकी ओरके छोटे इन प्रासादोंसे निकलने वाली किरणें परस्पर स्पर्धा करती हुई प्रतीत होती हैं।

कै हजारों लाखों दिवालें, जंग करत आसमान ।

कै सागर मोहोलों माहें, गिनती नाही मान ॥ ७३

यहाँके प्रासादोंकी हजारों, लाखों दीवारोंकी किरणें आकाशमें परस्पर द्वन्द्व करती हैं। यहाँके बड़े-बड़े प्रासादोंमें सागरोंकी भाँति अनेक विशाल जलकुण्ड हैं जिनकी गणना नहीं हो सकती है।

ऊपर मोहोल तले मोहोल, बीच मोहोल गृदवाए ।

इन विध मोहोल भर्यो अंबर, फेर विध कही न जाए ॥ ७४

इस पर्वतमालामें ऊपर (टापू महल), नीचे (बीस भूमिकाके), मध्यमें (माणिक महल) तथा चारों ओर (हवेलियाँ) प्रासाद ही प्रासाद शोभायमान

हैं. इस प्रकार इन प्रासादोंकी शोभा आकाशमें छा जाती है, जिनका वर्णन नहीं हो सकता है.

पहाड थंभ जो पहाड थुनी, पहाडै मोहोल मंडान ।

कै मोहोल मोहोलों मिलें, कहूं जिमी न देखिए आसमान ॥ ७५

इस पर्वत पर (चारों ओर) स्तम्भोंकी भाँति बड़े-बड़े प्रासाद शोभायमान हैं, मध्यका जलस्तम्भ भी पर्वतकी भाँति अति विशाल है. यहाँ पर सर्वत्र पर्वतकी भाँति विशाल महल हैं. इस पर्वतमालामें अनेकों प्रासाद परस्पर संलग्न दिखाई देते हैं. जिससे यहाँ पर भूमि तथा आकाश दिखाई नहीं देते हैं.

चौडे देखे चारों तरफों, ऊंचे लग आसमान ।

ऐसे और मोहोल तो कहूं, जो कोई होवे इन समान ॥ ७६

चारों ओरके ये प्रासाद अति चौड़े दिखाई देते हैं. ये इतने ऊँचे हैं कि आकाशको स्पर्श करते हैं. इन प्रासादोंके समान यदि अन्य कोई प्रासाद होते तो इनकी उपमा दी जा सकती.

अंदर बाहेर किनार सब, देख सब ठौरों खूबी देत ।

ए सोभा सांच सोई देखेगा, जाको हक नजर में लेत ॥ ७७

इस पर्वतके अन्दर, बाहर तथा चारों ओरकी शोभा अद्वितीय है. इस सत्य शोभाको वे ही आत्माएँ देख सकती हैं जिन पर श्रीराजजीकी असीम कृपादृष्टि है.

पहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक ।

जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेकसों नेक ॥ ७८

सर्वप्रथम इस पर्वत पर स्थित प्रासादोंके चारों ओरकी दीवारका अवलोकन करें. उनके मध्यमें अनेकों प्रासाद हैं. उनकी शोभाको जितना देखते हैं वे एकसे बढ़कर सुन्दर दिखाई देते हैं.

एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गृदवाए ।

ए खूबी मोमिन देखसी, नजरों आवसी ताए ॥ ७९

यहाँ पर एक प्रासाद वर्गाकार है तो दूसरा वृत्ताकार है. इस शोभाको ब्रह्मात्माएँ

ही देख सकती हैं. क्योंकि यह शोभा उनकी दृष्टिमें ही आ सकती है.

अरस हौज दोऊ बीच में, मोहोल मानिक पुखराज ।

जेता नजीक हौज के, तासों मोहोल मानिक रहे बिराज ॥ ८०

माणिक्य पर्वत तथा पुखराज पर्वत इन दोनोंके मध्यमें रङ्गमहल, हौजकौसर ताल तथा चौबीस पहल (हाँस) का महल शोभायमान हैं. हौजकौसर तालसे रङ्गभवन जितना निकट है उतना ही निकट दूसरी ओर (चौबीस पहलका) महल है एवं उससे उतना ही निकट माणिक पर्वत शोभायमान है.

ए चारों हुए दोरी बंध, सामी अक्षर नूर सोभित ।

ए हक हुकम बोलावत, इत और न पोहोंचे सिफत ॥ ८१

इस प्रकार पुखराज पर्वत, रङ्ग भवन हौजकौसर ताल तथा माणिक्य पर्वत ये सभी एक ही पङ्क्तिमें शोभायमान हैं. रङ्गभवनके सम्मुख अक्षरधाम सुशोभित है. धामधनीकी आज्ञासे ही इतना वर्णन हुआ है. अन्यथा इस शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

ए कह्या कौल थोडे मिने, रूहें समझेंगी बोहोतात ।

दिल मोमिन से ना निकसे, चूभ रहेसी दिन रात ॥ ८२

इस प्रकार संक्षेपमें ही परमधामका वर्णन किया है. ब्रह्मात्माएँ स्वयं इसका विस्तार समझेंगी. ब्रह्मात्माओंके हृदयसे परमधामकी शोभा कभी भी दूर नहीं होगी वह तो दिन रात उनके हृदयमें ही अङ्कित रहेगी.

कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हुकमें तिनकी बात ।

तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात ॥ ८३

धामधनीकी आज्ञासे ही मैंने माणिक्य पर्वतके चारों ओर बारह हजार प्रासाद (महल) का उल्लेख किया है किन्तु प्रत्येक प्रासादोंके मध्यमें बारह-बारह हजार प्रासाद (महल) शोभायमान हैं.

अटक रहे थे इतहीं, बीच आवने मोमिनो दिल ।

इन अरस रूहें वास्ते एता कह्या, विचार करें सब मिल ॥ ८४

इन भवनोंकी शोभाका विस्तार करते हुए मेरी बुद्धि रुक रही थी किन्तु

ब्रह्मात्माओंके हृदयमें यह शोभा अङ्कित हो जाए इसलिए ही इतना भी वर्णन हुआ है. सभी मिलकर इस पर विचार करेंगीं.

जो मोमिन किए हकें बेसक, सो लेंगे दिल विचार ।

अरस दिल एही मोमिनो, तो ल्याए बीच सुमार ॥ ८५

श्रीराजजीने तारतम ज्ञानके द्वारा जिन ब्रह्मात्माओंका सन्देह मिटा दिया है वे ही अपने हृदयमें यह शोभा धारण करेंगीं. इन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा है. इनके लिए ही असीम परमधामका संक्षिप्त वर्णन हुआ है.

आगे आए मिली इत नदियां, चक्राव ज्यों पानी चलत ।

तिन पीछे नदियां मोहोल वन की, जाए सागरों बीच मिलत ॥ ८६

बारह हजार तालोंका जल नहरों एवं नदियोंके द्वारा चक्रीय ढङ्गसे प्रवाहित होता हुआ एक महानदमें समाहित होता है. महानदसे वनकी नहरों (महलों) से होता हुआ यह जल सागरमें जाकर समाहित होता है.

क्यों कर कहूं मैं पौरियां, और क्यों कर कहूं झरोखे ।

देख देख मैं देखिया, न आवे गिनती में ए ॥ ८७

इस पर्वतके प्रासादों एवं मन्दिरोंके तोरण तथा खिड़कियों (झरोखों) की शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? इनको मैंने बार-बार देखा तथापि इनकी गणना सम्भव नहीं हुई.

मैं गृद कही चौरस कही, पर कै हर भांत हवेली ।

जाके आवें ना मोहोल सुमार में, तो क्यों जाए गिनी पौरी ॥ ८८

इस पर्वत पर मैंने अनेक वृत्ताकार तथा वर्गाकार प्रासादों (हवेलियों) का वर्णन किया. किन्तु यहाँ पर प्रासादोंके अन्दर विभिन्न प्रकारके अनेकों प्रासाद हैं. इन प्रासादोंकी ही गणना नहीं हो सकती है तो उनके तोरणोंकी गणना कैसे हो सकेगी ?

जब हक याद जो आवहीं, तब रूह देख्या चाहे नजर ।

दिल अरस मार्या इन घाव से, सो ए मुरदा सहे क्यों कर ॥ ८९

जब धामधनीका स्मरण होगा तभी आत्मा इस दिव्य परमधामका दर्शन करना

चाहेगी. धामहृदया ब्रह्मात्माएँ भी इस आघातसे घायल होती हैं तो मृतकतुल्य यह नश्वर शरीर इसे कैसे सहन कर सकेगा ?

देखो महामत मोमिनो जागते, जो हक इलमें दिए जगाए ।

करे सो बातें हक अरस की, तू पी इसक तिनों पिलाए ॥ ९०

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! जागृत होकर देखो. सद्गुरु प्रदत्त ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) ने तुम्हें जागृत कर दिया है. अब धामधनी तथा अखण्ड परमधामकी बातें परस्पर करते रहो एवं अन्य आत्माओंको भी इस प्रेम रसका पान कराओ.

प्रकरण ४३ चौपाई २४८१

श्री परिक्रमा ग्रन्थ सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहाँ नीतन ।

सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नीतन जेहनु नाम ।

उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

- महामति श्री प्राणनाथ



श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर